وَمَا أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ

अनुवाद-(हे मुहम्मद) आप सर्व-सृष्टियों के लिये करुणा बनाकर भेजे गये हैं।
[क़ुरान सू० २१ आ० १०७]

रह़मतुल्लिल् आलमीन

(पैग़म्बर-इस्लाम का जीवन चरित्र)

लेखकः—
मौलवी क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान साहेब

अनुवादकः—
क़ाज़ी आबिद अली बिल्हौरी

प्रकाशकः—
मुहम्मद अब्दुल् हय्यी
प्रधान मन्त्री सेन्ट्रल जमईयत-तब्लीग़ुल-इस्लाम इन्डियन यूनियन कानपुर।

गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, परेड, कानपुर।

* निवेदन *

हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये जहां राजनीतिक बातों पर दृष्टि रखने की आवश्यकता है वहां इसकी भी आवश्यकता है कि दोनों जातियों को इसका सुअवसर और प्रोत्साहन दिया जाय कि वे एक दूसरे के धर्म सम्बन्धी विश्वासों तथा विचारों की जानकारी प्राप्त कर सकें। इसी उद्देश्य से हमारी जमईय्यत हिन्दी में ऐसा इस्लामी साहित्य प्रकाशित करती रही है जिससे हिन्दू भाइयों को इस्लाम का यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो और दोनों जातियां एक दूसरे के निकट आ सकें।

इस्लाम बताता है कि धर्म ईश्वरीय नियमों का नाम है और ईश्वरीय नियम बिना किसी भेदभाव के समस्त मानव समाज पर समान रूप से लागू होते हैं। अतः धर्म का मार्ग एक विश्वव्यापी ईश्वर निर्दिष्ट मार्ग है और इस मार्ग पर चलने की हिदायत किसी खास देश, जाति अथवा काल के लिये सीमित नहीं, बल्कि स्थायी रूप से समस्त मानव समाज के लिये है।

क़ुरान में बताया गया है कि संसार की सभी जातियों के लिये ईश्वर की ओर से धर्म का मार्ग दिखाने वाले आये हैं। [जैसे:—निस्सन्देह हमने संसार की हर एक क़ौम में एक पैग़म्बर भेजा है। (सू० १६ आ० ३४) हर क़ौम के लिये एक रसूल है। (सू० १० आ० ४८) संसार में प्रत्येक जाति के लिये पथ-प्रदर्शक हुआ है (सू० १३ आयत ८) संसार में कोई क़ौम ऐसी नहीं जिस में डराने वाला न पैदा हुआ हो। (सू० ३५ आ० २५)] इन्हीं को इस्लाम नबी और रसूल (पैग़म्बर अर्थात् ईश्वर की ओर से पैग़ाम लाने वाले) के नाम से पुकारता है।

इन सब धर्म प्रवर्तकों की मूल शिक्षा में कोई भिन्नता नहीं थी। सबकी शिक्षाओं का आधार रूप एकेश्वरवाद रहा और उसी पर धर्म की सारी इमारत खड़ी की गयी और उसका मूल उद्देश्य यह रहा कि मनुष्य ईश्वर भक्त बनकर सदाचार का जीवन व्यतीत करे।

किन्तु समय २ पर लोग अपने स्वार्थाधीन धर्म की मूल शिक्षाओं में काट छांट करते और धर्म के वास्तविक मार्ग से हटकर गुमराहियों में फंसते रहे हैं।

लोगों को शिक्षा दी गई थी कि वास्तविक धर्म तो ईश्वर भक्ति और सदाचरण है किन्तु वे अपनी अभिलाषाओं और अपनी कामनाओं की पूजा करने लगे। उन्हें सनातन से चले आने वाले सत्य धर्म का एक ही मार्ग दिखाया गया था परन्तु उन्होंने नाना प्रकार की राहें ढूंढ़ निकालीं। उन से कहा गया था कि ईश्वर का धर्म मानव कल्याण के लिये है और बिछड़े हुए मनुष्यों को जमा कर देने और उन्हें परस्पर भाई भाई बना देने के लिये है पर वे अलग अलग हो गये और एक दूसरे से घृणा तथा पक्षपात करने और भेदभाव रखने लगे। उन्हें बताया गया था कि सत्य धर्म की वास्तविकता का सम्बन्ध मनुष्य के विश्वास तथा कर्मों से है लेकिन वे इस सचाई को भूल गये और केवल वंशों, जातियों, और उनके रीत रिवाजों को धर्म की असलि..

समझने लगे। उन्हें समझाया गया था कि समस्त विश्व का सृजनहार एक है, सबका पालन पोषण और पथ-प्रदर्शन वही करता है; कुल मनुष्य मात्र उसका परिवार है, परन्तु वे साम्प्रदायक झगड़ों और धर्म के नाम पर की जाने वाली दल-बन्दियों की गुमराही में फंस गये।

अंतकार जब यह गुमराहियां समस्त संसार में फैल गयीं और ईश्वरीय धर्म का मार्ग पाप और अधर्म की अंधेरियों में छुप गया तब ईश्वर ने इस्लाम के अंतिम पैग़म्बर हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) को संसार में भेजा कि आप ईश्वरीय आज्ञाओं द्वारा विश्व में फैल जाने वाली इन सारी गुमराहियों पर प्रकाश डाल दें और समस्त मानव समाज के सामने सत्य धर्म को स्पष्ट रूप से रख दें और ईश्वर के इस मार्ग पर विद्या एवं ज्ञान सहित लोगों का पथ प्रदर्शन करें।

इस महान् कार्य में समस्त सृष्टियों के लिये जो असीम करुणा पाई जाती है, उसकी दृष्टि से कुरान में पैग़म्बर-इस्लाम का एक गुणवाचक नाम "रह्मतुल्लिल् आलमीन" (अर्थात् सर्व सृष्टियों के लिये करुणा स्वरूप) रखा गया है। इसी पवित्र शुभ नाम से स्वर्गीय श्री क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान साहिब मंसूरपुरी (पटियाला स्टेट) ने पैग़म्बर-इसलाम के जीवनचरित्र पर एक ऐसी पुस्तक लिखी है जो इस विषय पर उर्दू में प्रमाणिक होने की दृष्टि से उच्चकोटि की, तथा संक्षिप्त किन्तु व्यापक होने की दृष्टि से अद्वितीय मानी जाती है। इस पुस्तक के तीन भाग हैं।

हमारी जमईय्यत ने स्वर्गीय लेखक महोदय के वारिसों से आज्ञा लेकर श्री क़ाज़ी आबिद अली बिल्हौरी से इसका हिंदी में अनुवाद कराया। यह कार्य यद्यपि सं० १९३८ ई० ही में आरम्भ हो गया था किन्तु आर्थिक कठिनाइयों के कारण उसकी छपाई न हो सकी थी। अन्त में इस महान् कार्य की ओर अजमेर की दरगाह कमेटी का ध्यान गया और उसने १३००) सहायतार्थ प्रदान किये और भाग १ की छपाई हो सकी।

आज मैं इस पुस्तक को सहर्ष हिंदी भाषा भाषी जनता विशेष कर हिन्दू भाइयों की सेवा में इस आशा से उपस्थित करता हूँ कि वे हमारी (अनुवाद, छपाई, कागज आदि की) समस्त त्रुटियों को अपनी कृपा से क्षमा करते हुए "रह्मतुलल्लिल्आलमीन" (पैग़म्बर-इस्लाम) के पवित्र जीवन-चरित्र का प्रेमपूर्वक अध्ययन करेंगे। यदि हमें पाठकों की ओर से प्रेम व प्रोत्साहन मिला तो शीघ्र ही दूसरे भाग भी प्रकाशित कर सकेंगे।

मुहम्मद अब्दुल् हयी

१ मार्च १९४८ } प्रधान मन्त्री सेन्ट्रल जमईय्यत-तब्लीगुल् इस्लाम इन्डियन यूनियन कानपुर।

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्ला हिर्रह्मा निर्रहीम

भूमिका

हज़रत मसीह से लगभग दो हज़ार वर्ष पहले का ज़िक्र है कि बाबिल का राज्य अति उन्नति पर था। राज की आर्थिक अवस्था और फ़ौजी ताक़त मज़बूत थी। धन की अधिकता और राज्य की शांति ने राजा के मन में इतना घमण्ड तथा अभिमान भर दिया था कि उसने राज मन्दिर में अपनी सोने की मूर्ति रखवा कर आज्ञा दे दी कि प्रजा उसी की पूजा करे तथा उसी से मनोकामनायें मांगी और प्रार्थनायें की जायें।

परमात्मा ने उनकी शिक्षा के लिये हज़रत इब्राहीम को पैग़म्बर (प्रेषित) बना कर भेजा। आपकी वंशावली ६ पीढ़ियों द्वारा हज़रत नूह (पैग़म्बर) से जा मिलती है।

राजा को ईश्वर की एकता की ध्वनि नहीं भाई क्योंकि उसके मानने से राजा को ख़ुदा (ईश्वर) के पद से उतर कर बन्दः (सेवक) बनना पड़ता था, और इसी कारण स्वयं हज़रत इब्राहीम का घराना भी जो राजा का मुंह लगा हुआ था अपने कुटुम्ब के इस सपूत से नाराज़ हो गया।

जाति तथा राज्य दोनों का विरोध देख कर हज़रत इब्राहीम ने देश त्याग दिया। "सारा" जो उनकी पत्नी थी, और फ़ारान का पुत्र "लूत" जो उनका भतीजा था, इन दोनों ने उनका साथ दिया।

हज़रत इब्राहीम ने जीविका उपार्जन के लिये भेड़ें पाल ली थीं। ईश्वर ने उन्हें इतना बढ़ा दिया कि बहुत से गल्ले बन गये।

जल वर्षा न होने के कारण वह हरा भरा मैदान जहां उनके पशुओं के गल्ले रहते तथा पलते थे सूखा जंगल बन गया, तब हज़रत इब्राहीम वहां से आगे बढ़े चले गये और मिस्र (देश) पहुँच गये।

मिस्र पर उस समय जो राजा राज करता था उसका नाम "रक़्यून"* था। वह वास्तव में बाबिल का रहने वाला था। (सम्भव है कि मिस्र जाते हुये हज़रत इब्राहीम ने देश-भाई होने के नाते को परिचय का कारण समझा हो)

मिस्र के राजा ने श्रीमती सारा को अपने देश की स्त्री समझ कर अपने लिये पसन्द किया, परन्तु उसे ख़ुदा ने जल्दी ही बता दिया कि वह परमात्मा के सच्चे पैग़म्बर की धर्म पत्नी है।

(तब) उस राजा ने हज़रत इब्राहीम का बड़ा आदर सम्मान किया और जब वे अपने देश को लौटे तो उसने अपनी सुपुत्री "हाजरा" § को भी

---

* इसी राजा ने बीबी हाजरा तक मिस्र से अनाज पहुँचाने के लिये नील नदी से लाल सागर तक नहर निकाली थी जिसे क़ैसर तथा दारा ने ठीक कराया और अन्त में हज़रत उमर ने उसे नये सिरे से निकलवाया था।

§ हाजरा को केवल यही गौरव प्राप्त नहीं है कि वह राजकुमारी है बल्कि तौरात से मालूम होता है कि ख़ुदा के यहां भी उसका पद बहुत ऊंचा है। बाइबिल "उत्पत्ति" १६/७—११ तथा २१/१७ से प्रकट है कि

साथ कर दिया ताकि उसी भले परिवार में उसका पालन-पोषण हो और उसका विवाह भी अपने ही देश तथा प्राचीन कुल में हो जाये। राजा की यह अभिलाषा पूरी करने के अभिप्राय से हज़रत इब्राहीम ने हाजरा से विवाह कर लिया। ईश्वर ने उन्हें पहिलौठा पुत्र उसी से प्रदान किया, उसका नाम 'इसमाईल" रखा गया।

बीबी सारा से दूसरा पुत्र पैदा हुआ, उसका नाम "इस्हाक़" रखा गया। ईश्वर ने अपने प्रिय इब्राहीम को बतला दिया था कि यह दोनों पुत्र† बहुत फूलें फलेंगे, और बड़ी जातियों के पूर्वज होंगे, और उनकी संतान अधिकता के कारण गिनी न जा सकेगी। इसलिये पिता ने ईश्वरादेश तथा कुटुम्बियों के कहने पर उनके लिये अलग २ देश बांट दिये।

शाम का देश इस्हाक़ को दिया, क्योंकि बाबिल उसके पूर्व में था और इस्हाक़ को अपने ननिहाल से निकट होने का अवसर मिला।

अरब का देश इस्माईल को दिया, क्योंकि मिस्र उसके पश्चिम में था और इस्माईल को अपने ननिहाल से निकट रहने का अवसर मिला। इसके अलावा दोनों भाई इस प्रकार आबाद हुये कि उन के बीच में कोई तीसरा देश नहीं था ताकि समय पर एक भाई दूसरे की सहायता ‡ करता रहे।

इस्माईल का विवाह बनू जुरहुम् के सरदार "मुज़ाज़" की पुत्री से हुआ था। बनू जुरहुम अरब

ख़ुदा के फ़रिश्ते हाजरा के सामने स्वयं आते और ख़ुदा का हुक्म पहुँचाया करते थे, परन्तु सारा बीबी के सामने कभी कोई फ़रिश्ता नहीं आया। "उत्पत्ति" १०।१८ से सिद्ध होता है कि सारा को पुत्र का सुसमाचार फ़रिश्ते ने हज़रत इब्राहीम द्वारा सुनाया था।

† हज़रत इस्माईल और हज़रत इस्हाक़ का पद तथा दोनों पर परमात्मा की करुणा का समान होना निम्नलिखित उद्धरणों से भली प्रकार सिद्ध है।

(क) ख़ुदा ने हाजरा का दुःख सुना। उत्पत्ति १६।११
ख़ुदा ने सारा का दुःख सुना। उत्पत्ति १८।१४

(ख) ख़ुदा ने हाजरा के पुत्र इस्माईल का नाम रखा। उत्पत्ति १६।११
ख़ुदा ने सारा के पुत्र इस्हाक़ का नाम रखा। उत्पत्ति १७।१६

(ग) ख़ुदा ने हाजरा के पुत्र इस्माईल को बरदान दिया। उत्पत्ति १७।२०
ख़ुदा ने सारा के पुत्र इस्हाक़ को बरदान दिया। उत्पत्ति १७।१६

(घ) ख़ुदा इस्माईल के साथ था। उत्पत्ति २१।२०
ख़ुदा इस्हाक़ के साथ था। उत्पत्ति २६।२४

(ङ) इस्माईल क़ौमों और बादशाहों का पिता होगा। उत्पत्ति २१।१६
(ङ) इस्हाक़ क़ौमों और बादशाहों का पिता होगा। उत्पत्ति १७।६

‡ उत्पत्ति २५।६ में है कि इब्राहीम को उसके पुत्र इस्माईल और इस्हाक़ ने दफ़्न किया इस से प्रकट है कि दोनों भाई किस प्रकार पिता के दुःख सुख के साथी थे।

का प्राचीन हाकिम क़बीला था और मुजाज़ अपने इलाक़े का एक मात्र हाकिम* था। इस्हाक़ का विवाह अपने ननिहाल में हुआ। इस प्रकार एक ही गोत्र की संतान में शारीरिक अंतर बढ़ता रहा, परन्तु ईश्वर समय २ पर इस अंतर को दोनों जातियों के परस्पर मेल मिलाप व सहायता से दूर करता रहा।

हज़रत मूसा ने फ़िरऔन के भय से भाग कर अरब में आश्रय लिया था। फिर जब वह बनी इस्राईल को मिस्र से निकाल कर लाये तब अरब के जंगलों ही में उन्होंने चालीस वर्ष पूरे किये थे।

हजरत दाऊद भी जब राजा सिमोएल के भय से भाग कर अपने देश से निकले थे तो अरब ही में आकर ठहरे थे। जब बनी इस्राईल को "बुख़्त नस्र" ने नष्ट किया था तो उन्हें 'मअद बिन अद्नान" ने अरब ही में आदर तथा आराम से रखा था।

हज़रत इस्हाक़ की संतान में पैदा होने वाले पैग़म्बरों ने भी अपनी ईश्वरीय प्रेरणा में बनी-इस्माईल के बारे में बहुत कुछ संकेत किये हैं।

इस जगह मेरा अभिप्राय केवल हज़रत इस्माईल के विषय में कुछ लिखने का है।

हज़रत इब्राहीम ने उनको और उनकी माता को उस जगह बसाया था जहां अब मक्कः नगर बसा हुआ है। पिता ने पुत्र की सहायता से इसी स्थान पर एक मस्जिद बना दी थी और ईश्वर से प्रार्थना की थी कि "हे प्रभु! इस मरुभूमि में बसने वाली जाति की जीविका का प्रबन्ध करना, उन्हें खाने के लिये उत्तम २ मेवे, फल और तरकारियां मिलती रहें ‡ और उनके पथ प्रदर्शन के लिये एक महा-प्रतापी पैग़म्बर इसी जगह पैदा हो"।

इस्माईल की संतान में १२ पुत्र पैदा हुये।§ उन्होंने परस्पर अरब को बांट लिया। और वे

* प्रोफ़ेसर सेडियो की हिस्ट्री आफ़ दी अरब पृ० २३।

‡ जो लोग मक्के जाते हैं उन्हें दो बातें बड़ी आश्चर्यजनक दीख पड़ती हैं। (१) मक्के की मरुभूमि में कोई पैदावार नहीं होती। (२) मक्के के बाज़ारों में मेवे और तरकारियां बहुत अधिकता के साथ मिलती हैं। इस से ज्ञात होता है कि खुदा ने इब्राहीम की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। इसी से यह भी सिद्ध होता है कि प्रार्थना के दूसरे भाग अथवा रसूल पैदा करने को भी अवश्य स्वीकार कर लिया गया। आने वाले पैग़म्बर का हज़रत इस्माईल की सन्तान से होना तौरात की पुस्तक "इस्तिसना" १८/१७—१८—१६ से और मक्कः (फ़ारान) से प्रकट होना इस्तिसना ३३/२ से सिद्ध है।

§ हज़रत याक़ूब बिन इस्हाक़ के भी १२ पुत्र हुये, बीबी लियाह से ६, बीबी राख़िल से दो, बीबी लियाह की दासी ज़िल्फ़ः से दो, बीबी राख़िल की दासी बिल्हा से दो। इन्हीं बारह की सन्तान से बनी इस्राईल के १२ क़बीले हैं जिन्हें हज़रत याक़ूब, हज़रत मूसा, हज़रत दाऊद, हज़रत ईसा और योहन्ना ने ईश्वरीय वरदान का पात्र बतलाया है। यदि ईसाइयों का यह कथन ठीक माना जाये कि बीबी हाजरा भी बीबी सारा की दासी थीं जिनका सारा ने अपने पति से विवाह कर दिया था तब भी बनी इस्माईल पर वह कोई आक्षेप नहीं कर सकते जैसा कि वह जद, आशर, दान, नफ़्ताली पर तथा उनकी सन्तान पर कोई आक्षेप नहीं करते जो बिल्हा और ज़िल्फ़ः दासियों के पुत्र हैं।

शीघ्र इतना फैल गये कि पश्चिम की ओर मिस्र से जो उनका ननिहाल था जा मिले और दक्षिण की ओर उनके डेरे यमन तक पहुँच गये जहां पिता ने उनके भाइयों बनी क़तूरा को बसाया था। और उत्तर की ओर उनकी बस्तियां शाम (सीरिया) से जा मिलीं जहां उनके भाई बनी इस्हाक़ आबाद थे। इस प्रकार एक ही पिता की संतान बाबिल और मिस्र की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की स्वामी हो गई।

और हिन्द सागर तथा लाल सागर के ऐसे बन्दरगाहों पर उनका अधिकार हो गया जहां से उस समय के कुल सभ्य संसार के व्यापार पर वे अपना क़ब्ज़ा जमा सकते थे। पुनः अरब का भीतरी भाग भी उनके कब्ज़े में आ गया जो अन्य जातियों से बचाव के लिये सदा एक सुरक्षित गढ़ सिद्ध हुआ है।

क़ीदार का ज़िक्र—हज़रत इस्माईल की संतान में उनका दूसरा सुपुत्र "क़ीदार" अति प्रसिद्ध हुआ है। क़ीदार की संतान मक्के ही में बसीं। वह अपने पूर्वजों की भांति उस पवित्र मस्जिद की सेवा सदा करते रहे जो संसार के लिये ईश्वर की एकता का पहिला पाठशाला थी।

क़ीदार की संतान में ३७ पीढ़ियों के पश्चात् 'अद्नान प्रथम' एक प्रतापी व्यक्ति हुआ है उसके छोटे भाई "अक़" ने यमन में राज्य स्थापित कर लिया था।

अद्नान के पश्चात् उस जाति पर बनी जुरहुम का क़बीला विजयी हुआ। यद्यपि वे उनके मामा थे फिर भी उन्होंने उनको सन २०७ ई० में मक्के से निकाल दिया क्योंकि बनी इस्माईल ने अब तक बनी जुरहुम का मूर्ति पूजा में साथ नहीं दिया था।

परन्तु क़ुसय्यी ने जो "अद्नान द्वितीय" से पन्द्रहवीं पीढ़ी में है फिर मक्के पर क़ब्ज़ा हासिल कर लिया और उसने मक्के में संयुक्त राज की नींव स० ४४ ई० में डाल कर निम्नाङ्कित पद नियुक्त किये।

(१) रिफ़ादः (२) सिक़ायः (३) हिजाबः (४) क़यादः (५) एक क़ौमी झंडा बनाया जिसे "लवाऽ" कहते थे। (६) एक क़ौमी सभा क़ायम की जिसे "नद्वः" या "दारुन्नद्वः" कहते थे।

क़ुसय्यी के पश्चात् उसका पुत्र अब्द-मनाफ़ † फिर उनका पुत्र हाशिम ‡ उसका पुत्र अब्दुल-मुत्तलिब ✱ (४९७ ई०) उसका पुत्र अबूतालिब अपने अपने समय में मक्के के माननीय सरदार और धर्म गुरु होते रहे। हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (स्व) जिनके जीवनचरित्र पर यह पुस्तक लिखी गई है, अब्दुल मुत्तलिब के पोते (पौत्र) थे।

---

† अब्द मनाफ़ का नाम "मुग़ीरः" था। पैदा होने के बाद उन्हें "मनाफ़" देवता के मन्दिर में ले गये थे। इसलिये अब्द मनाफ़ प्रसिद्ध होगये।

‡ हाशिम का नाम "अम्र" था। यह शोरबे में रोटी के टुकड़े भिगोकर दीन दुखियों को खिलाया करते थे, इसलिये "हाशिम" नाम पड़ गया।

✱ इनका नाम "शैबः" था जब पैदा हुये तो सिर के कुछ बाल सफ़ेद थे इसलिये माता ने उनका नाम "शैबः" (वृद्ध) रखा। "मुत्तलिब" उनका चाचा था जिसने अनाथपन में उन्हें पाला था इसलिये उन्हें अब्दुल मुत्तलिब कहने लगे।

उपरोक्त बातों से आप समझ गये होंगे कि अरब में बसने वाले कौन थे और उनका अपने पड़ोसी देशों की जातियों से क्या सम्बन्ध था? परन्तु अभी अरब देश के बारे में कुछ और कहना जरूरी है।

नक़्शा देखने से मालूम होता है कि अरब एक ऐसा देश है जिसके पश्चिम में लाल सागर, दक्षिण में हिन्द सागर, पूर्व में फ़ारस की खाड़ी और उत्तर में शाम देश है। इसे शाम से वह पहाड़ी पृथक करती है जो उसके उत्तर में चली गई है और मिस्र से आबनाये स्वेज़ (जो चालीस वर्ष पूर्व खाकनाए स्वेज़ कहलाती थी) अलग करती है। भारतवर्ष और अरब के मध्य में अरब सागर है।

अरब का रक़्बा फ़ारस से लगभग दुगना है। देश के भिन्न २ भाग अपनी प्रमुख विशेषताओं के कारण प्रसिद्ध हैं।

"यमन की घाटी" और "तायफ़ पहाड़" ऐसे हरे भरे हैं कि भारतवर्ष के उत्तम भाग उनके आगे कुछ नहीं। "अलहुजर" की पथरीली जमीन और मध्य अरब का लम्बा चौड़ा रेगिस्तान ऐसा खुश्क जंगल है कि अफ़्रीक़ा के जंगल से लग्गा खाता है। हम जिन महान् पुरुष के समय से इस पुस्तक का आरम्भ कर रहे हैं उनकी उत्पत्ति के समय अरब की संस्कृति और आचार व्यवहार का यह हाल था:—

अरब की दशा—कि अरब के दक्षिण में हबश का और पूर्वी भाग पर फ़ारस का और उत्तर के भागों पर टर्की का आधिपत्य था*। भीतरी भाग कहने को तो स्वतन्त्र थे परन्तु प्रत्येक राज्य उन पर अधिकार जमाने की चेष्टा करता रहता था।

भीतरी भागों के रहने वालों पर स्वतन्त्रता ने बुरा प्रभाव डाला था, उनमें खुदमुख्तारी के कारण अभिमान पैदा हो गया था, उन्होंने अपनी वीरता का निशाना अपने ही भाइयों को बना रक्खा था। बेकारी और काहिली ने जुए और शराब की आदत पैदा कर दी, जो जड़ पकड़ गई थी। अन्य देशों से अलग थलग रहने के कारण उनकी भाषा और वंश अवश्य खरे थे किन्तु भाषा विज्ञान का प्रयोग वे अभिमान या दूसरों का अपमान करने के लिये किया करते थे तथा अपने कुकर्मों को फैलाने के लिये भाषा का सारा बल खर्च करके अपने साथ अपनी प्रिया को भी खूब बदनाम करते थे। परस्पर पृथक रहने के कारण कन्या (पुत्री) देने की बुराई उनके हृदयांकित होगयी थी, और शराफ़त के दावेदार बड़े साहस और बड़े गौरव के साथ अपनी पुत्रियों को जीवित ही जमीन में गाड़ दिया करते थे।

अज्ञानता ने उन में मूर्ति पूजा फैला दी थी और इस मूर्तिपूजा ने उनके दिलों और दिमाग़ों पर क़ब्ज़ा जमा कर उन्हें भ्रम पूजक बना दिया था। प्रकृति की प्रत्येक वस्तु, पत्थर, दरख़्त, चाँद, सूरज, पहाड़, नदी आदि को वे अपना इष्ट देव मानने लगे थे और इस प्रकार वे परमात्मा की प्रभुताई तथा एकता को भूलने के साथ ही स्वयं अपना मूल्य भी भूल चुके थे। मानव अधिकार के लिये न कोई नियम था और न ऐसे अधिकारों

* 'हिस्ट्री आफ़ दी अरब' प्रोफ़ेसर सेडियो पृ० ४०।

को ठीक मार्ग पर लाने तथा रखने के लिये कोई क़ानून था। लोगों को मार डालना, चोरी, डकैती, धाँधली, स्त्रियों को बलात्कार अथवा बहला फुसला कर भगा ले जाना, कन्याओं को जीवित भूमि में गाड़ देना इसी वृक्ष के फल थे। मूर्ति पूजा ने उन की दृष्टि में सब से गिरा हुआ स्वयं मनुष्य ही को ठहरा रखा था।

वर्षों बलिक पीढ़ियों तथा शताब्दियों के गत्या-विरोध ने उनके दिलों और दिमाग़ों में यह जमा दिया था कि उनकी अवस्था से उत्तम किसी की अवस्था तथा उनकी सभ्यता से अच्छी कोई सभ्यता एवं उनकी धार्मिकता से श्रेष्ठ कोई धार्मिकता हो ही नहीं सकती।

अरब के भिन्न २ भागों का भिन्न २ राज्यों से सम्बन्ध होने के कारण सारे देश में भिन्न २ मत पाये जाते थे। यहूदी,* ईसाई,† साबी ऐसे धर्म हैं जिन के नाम सुनकर कोई अज्ञ धोखा खा सकता है कि उन लोगों में इन धर्मों की अच्छी अच्छी बातें भी पाई जाती होंगी। परन्तु सच बात यह है कि उन लोगों ने अपने आप को धर्म द्वारा सुधारने की जगह अपने द्वारा धर्म को भी बिगाड़ दिया था। यदि हज़रत मूसा या ईसा व शोऐब व स्वालिह पैग़म्बरों को उनके देखने का अवसर मिलता तो वे कदापि न पहचान सकते कि ये हमारे ही सिद्धान्तों व उपदेशों पर चलने वाले लोग हैं।

सार्वजनिक ईसाई हज़रत मसीह को "इब्नल्लाह" (ख़ुदा का बेटा) कहते हैं परन्तु अरब के ईसाई मरियम को ख़ुदा की पत्नी और फ़रिश्तों को ख़ुदा की पुत्रियां भी कहा करते थे। और मूर्ति-पूजक "लात" तथा "उज्ज़ः" को स्त्रीलिंग ईश्वर (देवी) माना करते थे। (आजकल के) सार्व-जनिक यहूदी हज़रत "उज़ैर" को तौरात के इक-दम लिख देने के कारण ईश्वर का पुत्र कहा करते हैं, परन्तु अरब के यहूदी अपनी जाति के कुल स्त्री पुरुषों को ईश्वर के पुत्र, पुत्री, प्रिय, प्रिया कहा करते थे। अग्निपूजक सम्भवतः बेटी और बहिन को घर में डाल लिया करते थे, परन्तु अरब के नास्तिक अपनी सगी माता को छोड़ कर अपने पिता की शेष समस्त पत्नियों को अपनी रखेलियां बना लिया करते थे।

अरब की सम्प्रति जातियाँ (कुछ लोगों को छोड़कर) लिखने पढ़ने से अनभिज्ञ, विद्या से अज्ञान सभ्यता और सदाचार से रहित, क्षमा और संधि से नावाक़िफ़ थीं। नास्तिक लोग भी अरब में आबाद थे वे जीवन और मृत्यु को वक़्त और इत्तिफ़ाक़ पर निर्भर करके प्रत्येक क्रान्ति को काल की गति से सम्बन्धित करते थे।

* यहूदियों को जब यूनानियों और सुर्यानियों ने अपने इलाके से निकाला तो वे अरब की ओर चले आये और बनी इस्माईल ने अपने इन चचेरे भाइयों का शुभागमन किया। उनका धर्म हिजाज़ और ख़ैबर तथा मदीने के आस पास ख़ूब फैला। (हिस्ट्री आफ़ अरब पृ० ३८)।

† बनी ग़स्सान ने ईसाइयत को सन् ३३० ई० में स्वीकार किया। फिर यह धर्म इराक़, अरब, बहरैन और क़ारान के जङ्गली भागों और दौमतुल् जन्दल तथा फ़ुरात व दजला के दोआबे में फैल गया। इस धर्म के प्रचार में नज्जाशी और क़ैसर ने मिलकर ख़ूब प्रयत्न किया। ३६५ ई० और ५१३ ई० में इसके प्रचार पर अधिक ज़ोर दिया गया और यमन में बाइबिलें बड़ी अधिकता से फैलीं। (हिस्ट्री आफ़ अरब पृ० ३६)।

ईश्वरीय सत्ता का इक़रार और पाप पुण्य के प्रति फल का विचार, अच्छे और बुरे कर्मों पर अच्छे और बुरे फल भोगने का विश्वास, उनके आगे हँसी ठट्ठे की बातें थीं।

इन सारी बुराइयों के कारण अरब मानों कुल झूठे धर्मों, और मिथ्यास्पद विचारों की बुराइयों का केन्द्र बना हुआ था।

यदि हम अरब के नक़शे में देखें तो मालूम हो जाता है कि ईश्वर ने उसे एशिया, यूरोप और अफ़्रीक़ा के मध्य * में जगह दी है और वह जल और थल से संसार को अपने दाहिने और बायें हाथ से मिला कर एक कर रहा है। इसलिये ऐसे देश में संसार के कुल धर्मों का पहुंच जाना और अज्ञानता से प्रभावित होकर सब ही का बिगड़ जाना अच्छी तरह समझ में आ सकता है। और इसी प्रकार यह भी समझ में आ सकता है कि यदि संसार के पथदर्शन के लिये एक केन्द्र स्थिर करने में हम किसी स्थान को चुनें तो अरब ही उसके लिये ठीक होगा। विशेषतयः उस समय पर दृष्टि डालते हुये हम कह सकते हैं कि जब अफ़्रीका, यूरोप तथा एशिया के तीन बड़े राज्यों का सम्बन्ध अरब से था तो अरब की आवाज़ इन महाद्वीपों में शीघ्रता पूर्वक पहुंच जाने के साधन मौजूद थे। प्रभु ने (जहाँ तक मैं समझता हूँ) इसीलिये हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह को अरब में पैदा किया और उनको क्रमानुसार जाति, देश व समस्त संसार के पथ प्रदर्शन का कार्य सौंपा।

पैग़म्बर-इस्लाम के उत्तम कार्य—पाठक इस पुस्तक को पढ़कर मालूम कर सकेंगे कि पैग़म्बर इस्लाम का काम कितना कठिन था और उन्होंने इस काम को कैसी उत्तमता, धैर्य तथा सुदृढ़ता सहित आरम्भ किया। किस प्रकार सभ्यता और संस्कृति और विद्या एवं सदाचार को फैलाया, कैसे जातियों और देशों को एक बनाया, किस तरह मनुष्य का पद ऊँचा किया, क्योंकर एक ही प्रमुख अद्वितीय सत्ता अल्लाह की एकता का प्रचार किया और मनुष्य के हृदय में परमात्मा की बड़ाई का नक्श जमा देने के उपरान्त किस तरह समस्त

* (क) पृथ्वी के गोले पर बसे हुये संसार को देखो, दक्षिण में अधिक से अधिक ४० अंश तक और उत्तर में अधिक से अधिक ८० अंश तक आबादी है। दोनों का योगफल १२० और आधा ६० हुआ, जब ६० को ८० उत्तरी अंश से घटायें तब २० रह जाते हैं, और मक्का २१॥ अंश पर है इसलिये कुल भूमि की आबादी में यही मध्यस्थ स्थान है।

यह स्मरण रखना चाहिये कि कोष ग्रन्थों में मक्के का नाम "पृथ्वी की नाभि" है। मनुष्य के शरीर में नाभि भी ठीक मध्य में नहीं होती बल्कि लगभग मध्य में होती है और यही कारण है कि मक्का मध्य के निकटतम है।

(ख) अब इस प्रकार समझो कि अरब देश १५ से ३५ अंश के बीच में है और इन्हीं अंशों में संसार की बड़ी बड़ी और प्रसिद्ध जातियां इस प्रकार बसती हैं कि पूर्व में आर्य तथा मंगोल पश्चिम में हबशी तथा अमेरिका के मूल वासी हैं। अतः जब जातियों में धर्म प्रचार करना हो तो अरब ही उसका केन्द्र ठहराया जा सकता है। सम्भवतः इसीलिये कुरान में बतलाया गया है कि "व जअ़लना कुम उम्मतँव्वसंतल्ले तकूनू शुहदाऽ" अर्थात्—"हमने तुमको मध्यस्थ जाति बनाया है जिसमें कि जातियों के सम्मुख तुम परमात्मा की साक्षी पूरी करो"।

पदार्थों का मनुष्य सेवी होना सिद्ध कर दिया।

मानव समानता तथा भ्रातृ भाव—रसूल-करीम ने किस प्रकार जाति पांति की विशेषताओं, देश काल, अमीरी और ग़रीबी के भेदों, विजयी और पराजित जातियों के अन्तर एवं भिन्न २ भाषाओं और रंगों के फ़र्क़ का अवसान कर सब को एक धर्म के नाते से मिला दिया, सब को एक रंग में रंग दिया, एक विचार, एक विश्वास, एक आवाज का बना दिया।

और जब वे इस महत्व पूर्ण कार्य को समाप्त कर चुके, बन्दों को खुदा से और क़ौमों को क़ौमों से मिला चुके, शत्रुता और खिंचावट की जगह प्रेम और भ्रातृ भाव को स्थिर कर चुके, अज्ञानता और अन्धकार को दूर कर लोगों के दिल और दिमाग़ में विद्या और सच्चाई का प्रकाश फैला चुके तब कैसे संतोष, शांति और प्रसन्नता के साथ इस संसार से पर्दा कर लिया।

पैग़म्बर-इस्लाम के महत्व पूर्ण काम का अनुमान करने के लिये देखो कि इस्लाम का बीज कैसे कैसे पवित्र हृदयों में बोया गया था जो उसका शुभ तथा उत्तम फल लाये थे।

नज्जाशी हबश का बादशाह, जैफ़र उमान का राजा, उकेदर दौमतुल जन्दल का नरेश, नज्द के मूर्खों, तिहामः के बद्दुओं और यमन के ग़रीबों के कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होने में गौरव प्रतीत करते थे। अब्दुलाह इब्न सलाम यहूदी धर्म, वरक़ः बिन नौफ़ल ईसाई धर्म और उस्मान बिन तल्हा इब्राहीमी धर्म के गुरुओं की गद्दी छोड़ इस्लाम के सेवकों में गिने जाने पर अपने लिये गौरव की बात समझते हैं।

यहूदियों का मोल लिया हुआ ग़ुलाम "सल्मान फ़ारसी" "मिन्ना अहलुल् बैत" के पद पर पहुंचता है। और मूर्ति पूजकों के मोल लिये हुये ग़ुलाम बिलाल हबशी को फ़ारूक़—आज़म (हज़रत उमर) भी जिन के प्रताप से कैसर तथा किसरा के शरीर कांपते थे "सय्यद, सय्यद" (स्वामी, स्वामी) कह कर पुकार रहे हैं। मतों की भिन्नता, भाषाओं का फ़र्क़, जाति का भेद, देश तथा काल का अंतर सब कुछ जाता रहा है। कुल, गोत्र की श्रेष्ठता का मुँह पर लाना छिछोरी बात हो गई है। "एक धर्म" ने सब को "एक जाति" बना कर सब के दिलों में एक ही उमंग, सब की तबिय्यतों में एक ही जोश सब के दिमाग़ों में एक ही विचार, सब की जबानों पर इक ही ईश्वर की एकता की आवाज पैदा कर दी है। दुश्मन दोस्त हो गये हैं और प्राण लेने वाले प्राण निछावर करने हारे हो गये हैं।

शत्रु भी मित्र बन गये—वह "अम्रुब्ने आस" जो हब्श में नज्जाशी के पास क़ुरैश का दूत बनकर गया था कि मुसलमानों को भागे हुये अपराधियों की हैसियत से हासिल करे, कुछ वर्षों बाद अमान के राजा के पास इस्लाम का प्रचारक बन कर जाता है और वहां से हज़ारों लोगों के मुसलमान हो जाने का सुसमाचार पैग़म्बर-इस्लाम के पास लाता है।

वही "ख़ालिद बिन वलीद" जो उहद् के युद्ध में मूर्ति पूजकों की सेना की कमान करता हुआ मुसलमानों को घात करना अपने जीवन का मुख्य ध्येय समझता था कुछ समय के बाद हाज़िर होता है, लात तथा उज्ज़ा की मूर्तियों को अपने हाथों से गिराता और इस्लामी विजयतों में "ओजस्वी जनरल का पद पाता है।

वही "उर्वः बिन मसऊद" जो "हुदैबियः" में

आंहज़रत को मक्के में दाखिल होने से रोकने के लिये क़ुरैश का दूत बन कर आया था, मदीने में स्वयं हाज़िर होता है और अपनी जाति को बुलावा देने की आज्ञा लेकर जाता और इसी सेवा में अपने प्राण त्याग देता है।

वही "सुहैल बिन अम्र" जो हुदैबियः की संधि में मूर्ति पूजकों की ओर से एक पंच था और जिसने संधिपत्र में पवित्र नाम मुहम्मद के साथ "रसूलुल्लाह" शब्द लिखा जाना स्वीकार न किया था आंहज़रत की वफ़ात (मृत्यु) के बाद काबे में खड़े होकर इस्लाम की सचाई और ईश्वरीय धर्म के समर्थन में ऐसा ओजस्वी भाषण देता है जो सैकड़ों के हृदयों में ईमान भर देने का हेतु होता है।

वही "उमर" जो तलवार लेकर घर से आंहज़रत का सिर काटने के लिये निकला था, आँहज़रत की वफ़ात के दिन नंगी तलवार लिये हुये (जोश में) कह रहा है कि जो कोई कहेगा हज़रत ने वफ़ात पाई उसका सिर काट डालूंगा।

वही "वहूशी" जिसने अमीर हमज़ः को मारा, कलेजा निकाला, अंग अंग अलग किये, लाश तक का अपमान किया, कुछ दिनों के बाद जब मुसलमान हो जाता है तो लज्जा के मारे मुंह सामने नहीं करता और अंत में "मुसैलिमः" जैसे महा झूठे को क़त्ल करके अपनी पिछली करतूतों का बदला चुकाता है।

वही "अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब" जो सगे चाचा का पुत्र होकर भी आंहज़रत की बुराइयों में कविता किया करता था सेवा में हाज़िर होकर मुसलमान होता है और "हुनैन" के युद्ध में एक मात्र वही ऐसा व्यक्ति होता है जिसे आंहज़रत के घोड़े की रकाब पकड़ने का गौरव प्राप्त था।

वही "अबू सुफ़ियान बिन हरब बिन उमय्यः" जो सात वर्ष तक बराबर आंहज़रत के मुक़ाबिले में सेनायें लाता और मुसलमानों के विरुद्ध सारे देश में झगड़े की आग भड़काता रहा, इस्लाम स्वीकार करता है और नजरान के ईसाई इलाक़े पर इस्लामी हाकिम बना कर भेजा जाता है।

वही "तुफ़ैल दौसी" जो मक्के में रुई की डाट कानों में लगा कर फिरता था कि कहीं मुहम्मद की आवाज़ कानों में न पहुँचे, अंत में अपने देश में घर २ फिरता और मुहम्मद की आवाज़ को पहुँचाता है।

वही "अब्दोयालील-सक़फ़ी" जिसने तायफ़ में दासों और बालकों को पथराव करने के लिये आंहज़रत के पीछे लगा दिया था आख़िर मदीने हाज़िर हुआ और फिर वहां से लौट कर अपनी जाति वालों में सचाई और ईमान के बहुमूल्य रत्न बांटने लगा।

वही "बुरैदा बिन हुसैब अस्लमी" जो क़ुरैश से सौ ऊँट के इनाम का बचन लेकर आंहज़रत की गिरफ्तारी के लिये सत्तर सवारों के साथ निकला था कुछ घंटों के पश्चात् आंहज़रत का झंडे बरदार बन गया।

गरज़ कि ऐसे उदाहरणों के लिये एक अलग ग्रन्थ चाहिये।

यह सब आश्चर्यजनक प्रभाव उस पवित्र शिक्षा का था जो धीरे २ दिलों को विजय करती जाती थी। बहुत से पैग़म्बरों ने मोजिज़े दिखलाये। लाठी, सांप, पत्थर, जल अग्नि की प्रकृति बदलने अथवा उनकी योग्यता समाप्त हो जाने के दृष्टान्त लोगों के देखने में आये परन्तु आंहज़रत ने अद्वितीय मोजिज़ः यह दिखलाया कि लोगों के दिलों को बदल दिया और उनके आत्माओं को पवित्र बना दिया

मनुष्य और लाठी, मनुष्य और सांप, मनुष्य और पत्थर में जितना अंतर है वही अंतर इस मोजिजे और अन्य मोजिजों में है।

और यही वह चीज है जो आज तक उन सब दिमागों के लिये आश्चर्य का हेतु सिद्ध हुई है जिन्हों ने आंहज़रत के विषय में (धार्मिक मतभेद होने पर भी) कुछ कहना अथवा कुछ लिखना चाहा है।

पाठको! पैग़म्बर-इस्लाम के जीवनचरित्र में यह अद्भुत विशेषता है कि उससे प्रत्येक सम्प्रदाय का व्यक्ति शिक्षा पा सकता है।

आंहज़रत संसार के वायुमण्डल में श्वास लेने के पूर्व ही अनाथ हो चुके थे इसलिये ग़रीबी और नम्रता ऐसे गुण हैं जो आप के साथ २ रहे।

पैग़म्बर इस्लाम के जीवन-चरित्र की विशेषता } उम्र के इब्तिदाई वर्ष ग्राम्य जीवन में व्यतीत हुये थे अतः सादगी, हुजूर के साथ पली बढ़ी। बालपन का समय ऐसी अवस्था में व्यतीत हुआ था जब कि क़ौम "फ़िजार" की लड़ाइयों में लगी हुई थी। इसलिये शान्ति और सार्वजनिक सहानुभूति के भाव पहिले ही से हृदय में भरे हुये थे।

२५ वर्ष की आयु तक हुज़ूर ने विवाह नहीं किया। ब्रह्मचर्य का यह समय जो यौवन का समय था पूरी लज्जा और संयम के साथ व्यतीत हुआ। देखने वालों की गवाही मौजूद है कि आंहज़रत लज्जाशील कुमारियों से बढ़ कर शर्मीले थे।

हज़रत ने जीविका के लिये व्यापार को पसन्द किया था और इस तरह उन व्यक्तियों को जिन में दृढ़ता, सूझ बूझ, सहनशीलता और उदारता के गुण पाये जायें शिक्षा दी है कि व्यापार से उत्तम और कोई जीविका का साधन नहीं। सुन्दरता में परिपूर्ण, कुल गोत्र में श्रेष्ठ होने पर भी एक विधवा महिला से जो आयु में आप से १५ वर्ष अधिक थीं पहिला विवाह किया और इस प्रकार विधवा विवाह की आवश्यकता और महत्व पर एक उत्तम आदर्श प्रस्तुत किया और दिखा दिया कि गृहस्थ जीवन में भी हम कैसे कामेन्द्रियों की वासनाओं से बचे रह सकते हैं।

यह बीबी बहुत धनी थीं, परन्तु हज़रत अपने संयम के कारण अपनी धर्म पत्नी अथवा अपने परिवार की आर्थिक सहायता लेने से सदा बेपर्वाह रहे और इस प्रकार "अपनी सहायता आप करो" की शिक्षा क्रियात्मिक रूप से दी। आंहज़रत ने थोड़े ही समय में अपने सचाई और सहानुभूति से भरे हुये आदर्शपूर्ण जीवन का प्रभाव ख़ूनी अरब पर फैला दिया और सब के दिलों में अपने लिये आदर और प्रेम की जगह बना ली और इस प्रकार सत्यवादियों के लिये एक "चमकती हुई मिसाल" क़ायम कर दी कि नेकी और सचाई की ताक़त किस प्रकार अत्याचार और अज्ञानता को दबा सकती है।

आंहज़रत ने सहयोग और समाज की शक्ति व उसके लाभ को समझा और "हल्फ़ुल् फ़ज़ूल" के क़ायम करने से शांति और मानव समाज की रक्षा का नया मार्ग बना दिया, तथा उन प्रबन्धकों को जो सच्चे दिल से किसी देश की उन्नति चाहते हैं उसी देश के लोगों को प्रबन्ध में सम्मिलित कर लेने का उत्तम नियम सिखाया।

हजर-अस्वद को उचित जगह पर रख देने की घटना से आपने बतला दिया कि जब भिन्न २ स्वार्थ तथा उद्देश्य के लोग एक जगह इकट्ठा हो जायें तो उनको कैसे एक केन्द्र पर ला सकते हैं और सिद्ध कर दिया कि युद्ध को टालने और शांति को स्थिर रखने के लिये फ़ौजी ताक़त की नहीं, बल्कि दिमाग़ी ताक़त की आवश्यकता होती है।

समस्त पैग़म्बरों की शान—आंहज़रत की पैग़म्बरी में कुल पैग़म्बरों की शान दिखाई देती है। आप हज़रत मसीह की भांति झुठलाये तथा सताये गये, फिर भी धैर्य्यवान ही पाये गये।

आपने हज़रत यह्या की तरह जंगलों तथा बस्तियों में ईश्वर की आवाज़ को पहुंचाया।

आपने हज़रत ईसा की तरह खुदा के घर के आदर सम्मान को नये सिरे से स्थिर किया।

आपने हज़रत अय्यूब के धैर्य सहित, घाटी में तीन वर्ष तक क़ैद के दिन बिताये, फिर भी आप का हृदय ईश्वर की स्तुति से भरा रहा और ज़बान उसी की महिमा के गीत गाती रही।

आपने हज़रत नूह की तरह जाति के अभागे लोगों को गुप्त तथा प्रकट रूप से, छुपी और खुली जगहों में, मेलों और सभाओं में, सड़कों और गलियों में, पहाड़ों और मैदानों में इस्लाम का सन्देश पहुंचाया और लोगों को उनके कुकर्मों से घृणा दिलाई।

आप हज़रत इब्राहीम की तरह अनाज्ञाकारी जाति से अलग होगये और मातृभूमि को छोड़ कर इस्लाम का पवित्र वृक्ष लगाने के लिये पवित्र ज़मीन खोजने लगे।

आप हिज्रत की रात में (मदीने जाने के लिये मक्कः छोड़ते समय) हज़रत दाऊद की तरह शत्रुओं के झुण्ड से निकलने में सफल हुये।

और हज़रत यूनुस की तरह (जिन्होंने तीन दिन मछली के पेट में रहकर फिर नीनवा में अपनी मुनादी को जारी किया था।) सूर की घाटी में तीन दिन रहकर फिर मदीने में ईश्वर वाणी को प्रचारित किया।

आपने हज़रत मूसा की तरह (जिन्होंने बनी इस्राईल को मिस्र के फ़िरऔन की दासता से मुक्त कराया था) उत्तरी अरब को रूम के साम राज्य से, पूर्वी अरब को ईरान की गुलामी से और दक्षिणी अरब को हबश की दासता से मुक्त किया।

आपने हज़रत सुलैमान की तरह मदीने में खुदा का एक घर बनाया जो सदा के लिये खुदा का स्मरण करने वालों से भरा हुआ तथा परमात्मा की एकता की किरणों से प्रकाशमान रहा है, जिसे कोई बुख्तनस्र जैसा अभागा भी बरबाद न कर सका।

आपने हज़रत यूसुफ़ की तरह अपने कष्ट-दायक अत्याचारी भाइयों के लिये नज्द से (समामः बिन असाल द्वारा) अनाज पहुंचाया और अन्त में मक्का की विजय के दिन "ला तसरीब अलैकोमुल यौम" का सुसमाचार सुनाकर "अन्तेमुत्तलक़ा" के वचनामृत से उन्हें कृतार्थ किया।

ग़रज़ कि एक ही समय में आप मूसा की तरह राज के स्वामी थे और हारून की तरह धर्म-गुरु। हज़रत नूह जैसी सरगर्मी, हज़रत इब्राहीम जैसी नम्रता, हज़रत दाऊद जैसी विजय, हज़रत याक़ूब का सा धैर्य्य, हज़रत यूसुफ़ जैसी क्षमा, हज़रत सुलैमान जैसा प्रताप, हज़रत ईसा जैसी उदारता, हज़रत यह्या जैसा संयम, हज़रत इस्माईल जैसा पवित्रात्मा आप में मौजूद था। पैग़म्बर इस्लाम में यद्यपि सम्प्रति पवित्र उत्तम गुण मौजूद थे परन्तु "रह्मतुल्लिल् आलमीनी" के गुण का वह प्रकाश था जिसने कुल गुणों को अपने अन्दर लेकर संसार को एक पवित्र और अद्वितीय प्रकाश से प्रकाशमान कर दिया था।

मेरे जैसे—तुच्छ व्यक्ति की सामर्थ्य कहां कि उसके पवित्र प्रकाश को भली भांति दर्शा सकूं, साधारण रूप से कुछ हालात पेश कर देता हूँ। परमात्मा मेरे श्रद्धास्पद विचारों पर करुणादृष्टि रखते हुये मेरी भूलों को क्षमा करे तथा मेरे पाठक भाई मेरे ज्ञान की कमी को सामने रखकर मेरी इस सेवा में जो त्रुटियां हैं उन्हें क्षमा करें।

मुहम्मद सुलैमान



"रह्मतुल्लिल् आलमीन"

सय्यदना मुहम्मद* बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल् मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्द-मनाफ़ बिन क़ुसय्यी हमारे पैग़म्बर हैं। दादा ने आंहज़रत का नाम "मुहम्मद" और माता ने स्वप्न में एक फ़रिश्ते से सुसमाचार पाकर "अहमद"† रखा था। ‡

आप हज़रत इब्राहीम § की सन्तान से हैं, जो श्रीमती हाजरा से हुई। बीबी हाजरा मिस्र के राजा "रफ़्यून" की सुपुत्री थीं। ईश्वर के यहां उनका ऐसा पद था कि ईश्वर के फ़रिश्ते सामने आया करते और ईश्वरीय सन्देश पहुँचाया करते थे। ||

हाजरा बीबी के पुत्र का नाम इस्माईल है, जो हज़रत इब्राहीम के पहलौठे पुत्र हैं। पिता ने उनको घाटी में उस जगह बसाया था जहां अब मक्कः नगर है। ख़ुदा ने इस्माईल के लिये ज़मज़म का सोता प्रकट किया था। ¶

---

* मुहम्मद शब्द से "महिमा" की न्यूनाधिकता और अहमद से महिमा का गुण और स्थिति प्रकट होती है।

† हदीस में है कि पृथ्वी पर मेरा नाम "मुहम्मद" और आकाश पर मेरा नाम "अहमद" है, तौरात में शुभ नाम "मुहम्मद" और इञ्जील में "अहमद" है।

‡ श्रीमती आमनः बीबी को नाम रखने का सुसमाचार फ़रिश्ते द्वारा इसी प्रकार मिला था जिस प्रकार फ़रिश्ते द्वारा बीबी हाजरा ने इस्माईल का नाम (उत्पत्ति १६:११ और मरियम ने यीसु का नाम (लूका १।३१) रखा था।

§ हज़रत इब्राहीम का नाम पहिले "अब्राम" था, ख़ुदा ने इब्राहीम रखा। इसका अर्थ "जातियों का पिता" है (उत्पत्ति १७।५) बनी इस्माईल, बनी इस्राईल बनी यीसु, (बनी क़तूरा) इन्हीं की सन्तान हैं। पादरी साहबान जो केवल बनी इस्राईल ही का नाम लेते हैं विचार करें कि उनके कथनानुसार हज़रत इब्राहीम "जातियों के पिता" किस प्रकार सिद्ध होंगे?

|| उत्पत्ति १६।७—११ पर्यन्त तथा २१।१७

¶ ज़बूर ८४।४ व ५ व ६, तथा सहीह बुख़ारी रवायत इब्ने अब्बास तथा उत्पत्ति २०।१६

हज़रत इस्माईल को ईश्वर ने बारह पुत्र प्रदान किये थे। उनमें क़ीदार अति प्रसिद्ध हैं। तौरात में उनका ज़िक्र बहुत आया है।*

क़ीदार की संतान में अद्नान और अद्नान की संतान में क़ुसय्यी बहुत मशहूर हुए जो चार पीढ़ियों से आंहज़रत के दादा हैं।

हज़रत की माता का नाम "आमनः" है जो वह्ब की पुत्री हैं। वह्ब "बनी ज़ुहरा" क़बीले का सरदार था। उसका पूर्वज "फ़िह्र" अर्थात् "क़ुरैश" था। अतः हज़रत ददिहाल और ननिहाल दोनों की ओर से अरब के श्रेष्ठ क़बीले, उत्तम जाति, तथा गोत्र से हैं।

हमारे पैग़म्बर बसंत ऋतु† में सोमवार‡ के दिन ६ रबीउल् अव्वल§ सन १ आमुलफ़ील‖ तदनुसार २२ अप्रैल¶ सं० ५७१ ई० व पहली जेठ** सं० ६२८ बि० को मक्कः नगर में प्रातः काल{}

* यसइयाह ११।१६ व ज़बूर १२०।५ व यर्मिया ४१।२८ आदि।

† हज़रत यह्या तथा हज़रत दाऊद की उत्पत्ति भी बसन्त ऋतु में हुई थी।

‡ आँहज़रत के पवित्र जीवन में सोमवार का दिन विशेष महत्व रखता है उत्पत्ति, पैग़म्बरी, हिजरत, मृत्यु सब इसी दिन हुई हैं। इससे भिन्न २ तिथियों के ठीक मालूम करने में बड़ी सहायता मिलती है।

§ उत्पत्ति की तिथि में इतिहासकारों में मतभेद पाया जाता है। तबरी तथा इब्ने ख़ल्दून ने १२ और अबुल्फ़िदा ने १० लिखी है परन्तु सब सहमत हैं कि सोमवार का दिन था। चूंकि सोमवार का दिन ६ रबीउल् अव्वल के अतिरिक्त अन्य किसी तारीख़ के तदनुसार नहीं पड़ता, अतः ६ रबीउल् अव्वल ही शुद्ध है। "तारीख़ दवलुल्अरब वल् इस्लाम" में मुहम्मद तल्अ़त बक अरब ने ६ तारीख़ ही को शुद्ध माना है।

‖ आमुलफ़ील की घटना से ५५ दिन बाद।

¶ २२ अप्रैल ग्रेगोरियन रूल के अनुसार है, जिस पर सितम्बर स० १७५२ ई० से अँग्रेज़ी तक़वीम (स०) का हिसाब आरम्भ हुआ है परन्तु प्राचीन नियमानुसार ६ रबीऽ १४ अप्रैल सं० ५२८४ जोलियन के तदनुसार थी और ग्रेगोरियन ने इस १६ को २० अप्रैल सं० ५७१ ई० प्राचीन गणनानुसार ठहराया है।

** सूर्य के हिसाब से ३६५ दिन ५ घण्टे ४८ मि० ४६ सि० का एक साल होता है। परन्तु स० प्रोशटः जारी करने वालों ने २३ मि० २३ सि० उस से अधिक माने हैं। इस कारण से स० प्रोशटः स० ईस्वी के मुक़ाबिले में २३ मि० २३ सि० देर से आरम्भ होता है। स० प्रोशटः स० १ का आरम्भ रविवार तदनुसार १४ मार्च ४६५७ जुलियन को हुआ था परन्तु सं० ६२८ प्रोशटः का आरम्भ २२ मार्च ५७१ ई० को हुआ था और हमारे समय में स० १९७२ प्रोशटः १३ अप्रैल १९१५ ई० को आरम्भ हुआ है। भविष्य में भी स० प्रोशटः और स० ई० में यह अन्तर इसी हिसाब से बराबर बढ़ता रहेगा अर्थात् ६१½ वर्ष के बाद स० प्रोशटः का आरम्भ एक दिन पीछे होता रहेगा। इसी लिये स० ६२८ प्रोशटः की पहिली जेठ २२ अप्रैल स० ५७१ ई० को थी।

{} उत्पत्ति के दिन मक्के में प्रातःकाल का उदय ४ बजकर २० मि० (धूप घड़ी के घण्टों के हिसाब से) अथवा ६ बजकर ५७ मिनट पर (अरब के वर्त्तमान प्रचलित हिसाब से) हुआ था और पहिली जेठ आरम्भ हुये १३ घण्टे १६ मिनट व्यतीत हो चुके थे।

सूर्य उदय होने से पूर्व पैदा हुये। हुजूर अपने माता पिता के इकलौते पुत्र * थे। पिता का आपकी उत्पत्ति से पूर्व ही देहान्त हो गया था।

अब्दुलमुत्तलिब जो आप के दादा थे, स्वयं भी अनाथ रह चुके थे। अपने २४ वर्ष के नौजवान पुत्र अब्दुल्लाह की इस यादगार के उत्पन्न होने की सूचना पाते ही घर में आये और बालक को कब्बे में ले गये तथा प्रार्थना करके लौटा लाये। सातवें दिन क़ुर्बानी की और क़रैश को दावत दी। भोजन करके लोगों ने पूछा कि आपने बालक का नाम क्या रक्खा है? अब्दुलमुत्तलिब ने कहा "मुहम्मद" लोगों ने आश्चर्य से पूछा कि आपने अपने परिवार के प्रचलित नामों को छोड़कर यह नाम क्यों रखा? उत्तर दिया "मैं यह चाहता हूँ कि मेरा यह बालक संसार भर की प्रशंसा और महिमा का पात्र सिद्ध हो"।†

मक्के के कुलीन तथा सज्जन व्यक्तियों का दस्तूर था कि अपने बालकों को जब वे आठ दिन के हो जाते थे दूध पिलाने वालियों के सिपुर्द करके किसी अच्छे जलवायु के स्थान में बाहर भेज दिया करते थे।

दूध पिलाई—इसी दस्तूर के अनुसार आंहज़रत को भी "हलीमः सऽदियः" के सिपुर्द कर दिया गया। वह हर छठे महीने लाकर उनकी माता और अन्य नातेदारों को दिखला जाती थीं। दो वर्ष के बाद आप का दूध छुड़ा दिया गया और माता हलीमः आपको लेकर हज़रत आमनः के पास आईं। हज़रत आमनः ने इस विचार से कि वहां का जलवायु हुजूर के अनुकूल है और कदाचित यहाँ का जलवायु अनुकूल न हो पुनः माता हलीमः ही के सिपुर्द कर दिया।

माता का स्वर्गवास—जब आंहज़रत की आयु चार वर्ष की हुई तो माता ने आपको अपने पास बुला कर रख लिया। फिर जब आप की उम्र ६ वर्ष की हुई तो माता का स्वर्गवास हो गया। अब दादा ने आपका पालन पोषण अपने ऊपर लिया।‡ फिर जब आपकी आयु ८ वर्ष १० दिन की हुई तो आपके दादा ने भी ८२ वर्ष की आयु में संसार त्याग दिया।

अबूतालिब की देख रेख—अबूतालिब हज़रत के चाचा और आपके पिता अब्दुल्लाह के सगे भाई थे। अब हज़रत की देखरेख का भार उन्हों ने अपने ज़िम्मे लिया।§

---

* यसइयाह ९।६ में है "हमको एक पुत्र प्रदान किया गया" यह सुसमाचार आँहज़रत के सम्बन्ध में है, हज़रत मसीह के बारे में नहीं हो सकता क्योंकि मत्ती की इञ्जील से प्रकट है कि मसीह की और भी बहिनें और भाई थे, वह मरियम के इकलौते पुत्र नहीं थे।

† अबुल्फ़िदा पृ० ११० व यसइयाह ९।६ "वह इस नाम से कहलाता है अजीब"।

‡ सर सय्यद अहमद खां रचित खुतबात-अहमदियः तथा ज़ादुल मआद।

§ श्री इब्ने क़य्यिम रचित "ज़ादुल मआद"।

बुहैरा राहिब से भेंट—बहुत सी पुस्तकों में वर्णन किया गया है कि हज़रत जब बारह वर्ष के हुए तो आप अपने चाचा अबूतालिब के साथ जब कि वह व्यापार के लिये शाम देश को जा रहे थे यात्रा में गये। मार्ग में बुहैरा नामक एक ईसाई महात्मा ने उन्हें पहिचान लिया कि "आने वाला पैग़म्बर" यही नवयुवक है। उसने आपके चाचा से कहा कि इसे यहूदियों के देश में न ले जाओ, वे इसे पहिचान कर कहीं कष्ट न पहुंचायें। प्रेमी चाचा ने बतरे ही से आप को घर लौटा दिया।*

१—इस बारे में जो हदीस "तिर्मिज़ी" आदि में है उसमें यह भी लिखा है कि चाचा ने लौटाते समय हज़रत के साथ "बिलाल" को भेजा था। श्री इब्ने क़य्यिम कहते हैं कि यह खुली हुई भूल है, प्रथम तो उस समय बिलाल अबूतालिब के पास थे न कि अबूबक्र के पास, दूसरे यह भी सम्भव है कि वह उन दिनों मौजूद ही न हों।†

२—क़ुरान शरीफ़ की आयत "व कानू मिन क़ब्लो यस्तफ़तेहून अल्लज़ीन कफ़रू फ़लम्मा जाऽअहुम् मा अरफ़ू कफ़रू बेही‡" से सिद्ध है कि यहूदी एक आने वाले पैग़म्बर की राह देख रहे थे और समझते थे कि उनके आने पर यहूदियों को विधर्मियों पर विजय प्राप्त होगी।

यह विश्वास उनका उस समय तक रहा जब तक कि हुज़ूर की पैग़म्बरी प्रकट न हुई। इस आयत से यह भी सिद्ध हो गया कि "बुहैरा राहिब" का कथन ठीक नहीं था क्योंकि यदि यहूदी इस बालपन में हज़रत को पहिचान लेते तो अपने विश्वासानुसार आप को अपनी विजय का देवता समझ कर बड़ी सेवा करते। कहने का सारांश यह है कि "बुहैरा राहिब" की कहानी विश्वसनीय नहीं।

व्यापार का विचार—जब आंहज़रत युवक हुये तो आप का ध्यान पहले व्यापार की ओर गया परन्तु घर का रुपया पास न था। मक्के में अति कुलीन घराने की एक विधवा महिला "ख़दीजा" नामक रहती थीं, वे बहुत धनी थीं, तथा अपना रुपया व्यापार में लगाये रखती थीं। उन्होंने हज़रत के गुण सुन कर और आप की सचाई, दियानतदारी तथा योग्यता का हाल मालूम करके स्वयं प्रार्थना की कि आप मेरी सम्पत्ति से व्यापार करें। इस व्यापार में बहुत लाभ हुआ। इस यात्रा में ख़दीजा का दास "मैसरः" भी हज़रत के साथ था। उसने आप की उन सारी ख़ूबियों तथा विशेषताओं का ज़िक्र ख़दीजा को सुनाया जो यात्रा में स्वयं देखी थीं। इन गुणों को सुन कर ख़दीजा ने हज़रत के साथ विवाह कर लिया। यद्यपि ख़दीजा इस से पूर्व बड़े २ सरदारों के साथ विवाह करने की प्रार्थनाओं को अस्वीकार कर चुकी थीं।

* पादरी साहिबों ने इतनी बात पर कि बुहैरा ईसाई पादरी था यह गप्प भी हांक दी कि ४० वर्ष की आयु के पश्चात् जो उपदेश आंहज़रत ने दिये थे वह उसी पादरी की शिक्षा का प्रभाव था। मैं कहता हूं कि यदि आंहज़रत ने तस्लीस और कफ़्फ़ारे तथा मसीह का सलीब पर प्राण देने का खण्डन उसी पादरी की शिक्षा ही के आधार पर किया था तो अब ईसाई अपने उस धर्मगुरु की शिक्षा को स्वीकार क्यों नहीं करते?

† ज़ादुल मआद पृ० १७।

‡ यह लोग नबी के आने से पहिले उसके द्वारा काफ़िरों पर विजय पाने के अभिलाषी रहा करते थे, जब नबी प्रकट हुआ और उन्होंने पहिचान भी लिया तब उसे मानने से इनकार कर दिया।

विवाह—जब यह विवाह हुआ तो हज़रत की आयु २५ वर्ष और ख़दीजा बीबी की ४० वर्ष की थी। वे हज़रत के साथ २५ वर्ष तक जीवित रहीं। आप उनकी मृत्यु के बाद भी बहुधा प्रेम-पूर्वक उनका वर्णन किया करते थे और उनकी सहेलियों तक से आदर तथा सहानुभूति का व्यवहार करते थे।

इस विवाह के बाद हज़रत का सारा समय ईश्वर की अराधना तथा मानव समाज की सेवा और भलाई में व्यतीत होता था।

समाज सेवक सभा की स्थापना—इन्हीं दिनों में हज़रत ने बहुत से क़बीलों के सरदारों और समझदार लोगों को देश की अशान्ति, रास्तों का ख़तरनाक होना, यात्रियों का लूटा जाना, ग़रीबों पर ज़बरदस्तों का अत्याचार वर्णन करके इन सब बातों के सुधार की ओर आकर्षित किया। अंत में एक सभा बनाई गयी जिसमें बनी हाशिम, बनी मुत्तलिब, बनी असद, बनी ज़ुहरा, बनी तमीम, क़बीले सम्मिलित थे। इस सभा के सदस्य निम्नांकित प्रतिज्ञायें किया करते थे :—

(१) हम देश से अशान्ति दूर करेंगे।

(२) हम यात्रियों की रक्षा करेंगे।

(३) हम ग़रीबों की सहायता करते रहेंगे।

(४) हम बलवानों को निर्बलों पर अत्याचार करने से रोकेंगे।*

इस बुद्धियुक्त उपाय से मानव समाज के धन तथा प्राणों की बहुत कुछ रक्षा हो गई थी। आप अपनी पैग़म्बरी के ज़माने में फ़रमाया करते थे कि यदि आज भी कोई इस सभा के नाम से किसी को सहायता के लिये बुलाये तो मैं सब से पहले उसकी सहायता के लिये तैयार मिलूंगा।

देश की ओर से "अमीन" की पदवी—ऐसे ही उपकार युक्त शुभ कर्मों के कारण उस समय भी लोगों के हृदय पर हज़रत के सदाचार तथा संयम का इतना प्रभाव था कि वे हज़रत को नाम लेकर नहीं बुलाते थे बल्कि "अस्सादिक" (सत्यवादी) अथवा "अल्अमीन" (विश्वस्त) कह कर पुकारा करते थे।

हज़रत की आयु जब ३५ वर्ष की थी तब क़ुरैश ने कऽबे की इमारत को † (जिसकी दीवारें जल बाढ़ के कारण फट गई थीं) नये सिरे से बनाया।

* इंग्लिस्तान में नाइटहुड का आर्डर जिसके सदस्य लगभग यही इक़रार किया करते थे इस सभा से कई शताब्दियों बाद क़ायम हुआ था।

† कऽबे की इमारत सर्व प्रथम हज़रत इब्राहीम ने हज़रत इस्माईल सहित बनाई थी। फिर बनी जुरहुम बनू अमालिका, क़ुसय्यी और क़ुरैश ने उसकी पुनरावृत्ति की। इसकी आवश्यकता दीर्घकाल के प्रभाव अथवा बाढ़ से हानि पहुँचने के कारण पैदा हो जाती थी। किसी अन्य जाति के कब्ज़ा करके गिराने तथा ढाने की घटना कऽबे की इमारत के सम्बन्ध में पांच हज़ार वर्ष से नहीं हुई जैसा कि यरोशलीम की इमारत के सम्बन्ध में ऐसी घटनायें बारम्बार और लगातार घटित होती रही हैं। कऽबे के लिये यह ऐसे गौरव की बात है जो संसार में किसी अन्य पूज्यस्थान को प्राप्त नहीं हुआ।

इमारत के बनाने में तो सभी सम्मिलित थे परन्तु जब " हजर-असवद " * की स्थापना का अवसर आया तो बड़ा विरोध हुआ क्योंकि प्रत्येक यही चाहता था कि यह शुभ कार्य उसी के हाथों हो। चार दिन तक बराबर यही झगड़ा रहा अन्त में अबू उमय्यः बिन मुग़ीरः ने जो कुरैश में सबसे अधिक वृद्ध था यह राय दी कि किसी को पञ्च बनाकर उसके फ़ैसले पर अमल करें।

समस्त क़बीलों की ओर से पंच नियुक्त होना—

इस राय को मान लिया गया और बचन दिया गया कि जो कोई सबसे पहले कअ्बे में आयेगा वही सबका पञ्च ठहरेगा।

समय की बात कि आंहज़रत सबसे पहले आये, आपको देखते ही "हाज़ल् अमीनो † रज़ीनाहो " की ध्वनि बलन्द होने लगी अर्थात् " अमीन आगया हम सब उसके फ़ैसले पर राज़ी हैं"।

* हज़रत इब्राहीम और उनकी संतान का नियम था कि मैदान में जिस स्थान को पूज्य स्थान बनाते थे वहां एक लम्बा बिना गढ़ा हुआ पत्थर स्तम्भरूप से खड़ा कर देते थे जैसे अब भी मुसलमान नमाज़ पढ़ते हुये अपनी छड़ी आदि गाड़ लिया करते हैं जिसे " सुतरः " कहते हैं। इसका प्रमाण बाइबिल उत्पत्ति १२/७, ८ व १३/१८ व २६/२५ व २८/१८, १९, २२ तथा ख़ोरूज २४/४ से भली प्रकार मिलता है। हजर-असवद भी इसी प्रकार का पत्थर है और यह भी एक साक्षी इस बात की है कि कअ्बे को इब्राहीम ने बनाया। अब कोने में लगा देने के पश्चात् यह (पत्थर) इतना काम देता है कि तवाफ़ (परिक्रमा) का आदि तथा अन्त इसी स्थान से किया जाता है। मुसलमानों के निकट जो पद इसका है वह उसके नाम हजर-असवद (काला पत्थर) से प्रकट है। एक बार हज़रत फ़ारूक़ आज़म ने लोगों के सुनाने के लिये हजर-असवद को सम्बोधित करते हुये कहा था। " तू एक पत्थर है न किसी को लाभ पहुँचा सकता है और न हानि (सहीह बुख़ारी ज़िक्र—हजर-असवद)।

† हम पहले लिख चुके हैं कि आंहज़रत को अरब के लोग पैग़म्बरी से पूर्व सादिक़ (सत्यवादी) और अमीन (विश्वस्त) कहकर बुलाया करते थे। अत: इस अवसर पर भी उन्होंने " अमीन " ही हुज़ूर को कहा है। पहले नबियों की पवित्र पुस्तकों से इस नाम का समर्थन होता है। बाइबिल के सबसे अन्त में "मुकाशेफ़ात-योहन्ना" (योहन्ना के प्रकाशित वाक्य) की पुस्तक है। इस पुस्तक के आरम्भ में यह पाठ है "यीसु मसीह का मुकाशेफ़ः जो खुदा ने उसे दिया जिसमें कि अपने बन्दों को वे बातें जिनका जल्द होना अवश्य है दिखावे" । और इससे यह सिद्ध है कि मुकाशेफ़ात में उन बातों का वर्णन है जो योहन्ना के बाद संसार में घटित होने वाली थीं। यह भी स्मरण रहे कि सेन्ट योहन्ना मसीह का हवारी है जिसने यह मुकाशिफ़ः हज़रत मसीह के संसार से विदा होजाने के पश्चात् देखा था। योहन्ना कहता है " फिर मैंने आकाश को खुला हुआ देखा और देखो कि (क) एक श्वेत घोड़ा और उसका सवार (ख) अमानतदार और सच्चा कहलाता है और (ग) वह धर्म सहित न्याय करता (घ) और लड़ता है (ङ) और उसके नेत्र आग की ज्वाला की नाईं (च) और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं (छ) और उसका एक नाम लिखा हुआ है जिसे उसके अतिरिक्त किसी ने न जाना (ज) और वह लोहू में डूबा हुआ वस्त्र पहिरे था (झ) और उसका नाम यूं कहलाता है कि ईश्वर की वाणी (ञ) और आकाश में की सेनायें श्वेत घोड़ों

आंहज़रत ने अपनी बुद्धिमता और चतुराई से ऐसा उपाय किया कि सब प्रसन्न होगये। आप ने एक चादर बिछाई उस पर वह पत्थर अपने हाथ से रख दिया और फिर हरएक क़बीले के

पर चढ़े हुये उसके पीछे हो लेती थीं (ट) और उसके मुख मे चोखा खड्ग निकलता है कि उससे वह देशों के लोगों को मारे ठ) और वह लोहे की लाठी लेकर उन पर आज्ञा करेगा (ड) और वह सर्व शक्तिमान ईश्वर के क्रोध की जलजलाहट की मदिरा के कोल्हू में रौंदन करता है (ढ) और उसके वस्त्र तथा उसकी जांघ पर उसका यह नाम लिखा है कि "राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु" (योहन्ना के प्रकाशित वाक्य का पर्व १९ म० ११ से १६ तक)

अब मैं संक्षेप रूप से कुछ व्याख्या कर देना चाहता हूं (क) श्वेत घोड़े और उसके सवार का ज़िक्र मुकाशिफ़ः ६/२ में भी इन शब्दों में है "और देखो एक श्वेत घोड़ा है और जो उस पर बैठा है उसके पास धनुष है और उसे मुकुट दिया गया और वह विजय करता हुआ विजयी होने को निकला"।

मुकाशिफ़ः १९/११ में श्वेत घोड़े के सवार के नाम का और मुकाशिफ़ः ६/२ में उसके धनुषधारी और विजयी होने का चिन्ह वर्णन किया गया है और वे चिन्ह आंहज़रत ही पर सत्य सिद्ध होते हैं।

(१) आपकी सवारी में भी श्वेत घोड़ा था जिसका नाम "बह्" था (देखो सफ़रुस्सआदत)।

(२) आंहज़रत अरबी कमान (धनुष) को हाथ में रखते। प्रायः धार्मिक व्याख्यान के समय धनुष हाथ में होता। मुसलमानों को धनुर्विद्या सीखने का उपदेश भी दिया करते। हदीस (सूक्ति) में फ़रमाते हैं "बाण चलाया करो तुम्हारे पिता इस्माईल बांण चलाया करते थे"।

(३) आंहज़रत के लिये "फ़त्हे मुबीन" (खुली हुई विजय) का वर्णन क़ुरान में भी है सबसे बड़ी विजय यह है कि जिस कार्य के लिये आपका प्रादुर्भाव हुआ था उसे पूर्णतयः समाप्त कर संसार से विदा हुये। जब हम देखते हैं कि हज़रत मूसा अपनी जाति को "वचन की भूमि" में पहुँचाने से पूर्व और हज़रत मसीह अपनी बहुत सी बातें बतलाने से पहले ही संसार से विदा होगये और आंहज़रत धर्म की पूर्त्ति की घोषणा करके यहां से विदा हुये तो आपकी स्पष्ट तम विजय और विजयी होने मे कोई संदेह शेष नहीं रह जाता।

(ख) "अमानतदार और सच्चा कहलाता है"। अमानतदार=अमीन (=विश्वस्त) सच्चा=सादिक़ (=सत्यवादी) का अनुवाद है। "कहलाता है" के अर्थ यह हैं कि लोग इसी नाम से बुलाया करेंगे, और यही बात आंहज़रत के साथ होती रही है।

(ग) 'वह धर्म से न्याय करता"। यसइयाह ११।४ में भी है "वह धर्म से ग़रीबों का न्याय करेगा और पृथ्वी के विनम्र भाव व्यक्तियों के लिये निर्णय करेगा" योहन्ना ने उसी को दुहराकर बतला दिया कि इसका सम्बन्ध मसीह के समय के बाद आने वाले समय से है। क़ुरान शरीफ़ में है " व यसन्अ अन्हुम् इस्रहुम् वल् अग़्लालल्लती कानत् अलैहिम्"।

सरदार से कहा कि चादर को पकड़कर उठायें। इसी प्रकार उस पत्थर को वहां तक लाये जहां उसका स्थापन करना था फिर स्वयं आपने उसे उठाकर कोने पर तथा तवाफ़ के किनारे पर लगा दिया।

(घ) "और लड़ता है" धर्म पूर्वक युद्ध का गुण भी बतलाया है जिसमें कि कोई पादरी धोखे से इस मुकाशिफे को किसी अन्य पर लागू न करे क्योंकि उस सवार के लिये मुजाहिद (धार्मिक योद्धा) ग़ाज़ी (धार्मिक युद्ध में विजय पाने हारा) होना अनिवार्य है।

(ङ) "उसके नेत्र आग की ज्वाला की नाई हैं" आंहज़रत का हुलिय: जो "पवित्र लेखों" में बताया गया है उसमें आपके नेत्रों में ललाहट का होना अवश्य लिखा हुआ है और ऐसा ही था भी, आपकी पुतलियों के आस पास सुर्ख डोरे पड़े हुये थे।

(च) "और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं" नबियों के पवित्र जत्थे को देखो, कोई उपदेशक है (जैसे सुलैमान) कोई सुसमाचार सुनाने हारा है (जैसे ईसा) कोई डराने हारा है (जैसे नूह) कोई मुक्ति दिलाने हारा है (जैसे मूसा) कोई विवादी है (जैसे इब्राहीम) कोई धर्म योद्धा है जैसे (दाऊद) परन्तु आंहज़रत में समस्त गुण पूर्ण रूप से विद्यमान थे। इसीलिये अल्लाह फरमाता है "या अय्योहन्नबिय्यो इन्ना अर्सल्नाक शाहेदँव मुबश्शेरँव नज़ीरँव दाइयन इलल्लाहे बेइज़्नेही व सेराजम्मुनीरा" अर्थात् हे नबी हमने तुमको साक्षी, सुसमाचार सुनाने हारा, डराने हारा, अल्लाह की ओर बुलाने हारा और प्रकाशमान करने हारा दिया, बनाकर भेजा है"। सिर पर राजमुकुट होने के अर्थ यही हैं कि समस्त पैग़म्बरों के प्रमुख गुण उनमें विद्यमान थे।

(छ) "और उसका एक नाम लिखा है जिसे उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जानता" आंहज़रत का पवित्र नाम अहमद व मुहम्मद ऐसा है कि पहले किसी का यह नाम नहीं हुआ। मसीह और यीसु तो हज़रत से पहले बीसियों हुये।

(ज) "और वह लोहू में डूबा हुआ वस्त्र पहिरे था" आंहज़रत के साथ तायफ में धर्म प्रचार करते समय ऐसा ही घटित हुआ कि पवित्र शरीर पत्थर खाते खाते लहू लुहान होगया और वस्त्र लोहू में डूब गये तथा शरीर का रक्त बह बह कर ऐसा जम गया कि वज़ू के लिये जूता उतारना कठिन होगया था और चूंकि इस यात्रा में हज़रत अकेले थे इसलिये यसइयाह ६३।१ व २ व ३ का कथन भी आंहज़रत ही पर सत्य सिद्ध होता है।

(झ) "और उसका नाम ईश्वर की वाणी" आंहज़रत का यह चिन्ह हज़रत मूसा ने अपने सबसे अन्तिम धर्मोपदेश (पुस्तक ५ ३१) और हज़रत ईसा ने अपने अन्तिम धर्मोपदेश (योहन्ना १६।१३) में विशेष रूप से वर्णन किया था, अब योहन्ना हवारी ने भी बताया, जिससे मालूम हुआ कि योहन्ना के मुकाशिफे तक परमात्मा द्वारा बताये हुये चिन्ह का पूरा होना बाकी था सो यह कुरान ही है जिसके सम्बन्ध में स्वयं खुदा फरमाता है "वमा यन्तेक़ो अनिल् हवा इन हुव इल्ला वहर्युंयूहा" अर्थात् नबी अपनी इच्छा से नहीं बोलता यह तो वह

आंहज़रत ने इस युक्ति से एक भारी लड़ाई को रोक दिया नहीं तो उस समय अरब में रेवड़ों के पानी पिलाने, घोड़ों के दौड़ाने, कविता में एक जाति से दूसरी जाति को उत्तम तथा श्रेष्ठ ठहराने जैसी तनिक २ सी बातों पर ऐसा युद्ध होता था कि बीसियों वर्ष तक समाप्त न होता था।

पैग़म्बरी के निकट का समय—"वही" (ईश्वरीय प्रेरणा) आने से सात वर्ष पहले आप को प्रकाश तथा चमक सी दिखाई देने लगी थी*, आप इस प्रकाश को देख कर प्रसन्न हुआ† करते। उस में शब्द अथवा रूप नहीं होता था। पैग़म्बरी के प्रकट होने का समय जितना निकट होता जाता था हज़रत के हृदय में एकांत ग्रहण करने की भावना बढ़ती जाती थी। आप बहुधा पानी तथा सत्तू लेकर नगर से दूर हिरा‡ पहाड़ी की एक खोह में जो ४ गज लम्बी और पौने दो गज

ईश्वरीय वाणी है जो उस पर उतारी गई है।

(ञ) "और आकाश में की सेनायें श्वेत घोड़ों पर चढ़े हुये उजली और शुद्ध मलमल पहिरे हुये उसके पीछे हो लेती थीं" कुरान शरीफ में भी है "वल् मलाएकतो बअद ज़ालेक ज़हीर" अर्थात् फरिश्ते भी उसके सहायक हैं। फरिश्तों के श्वेत तथा शुद्ध वस्त्र आंहज़रत के अनुकरण में हैं, आपको श्वेत वस्त्र ही अधिक भाते थे, आपके झण्डे का रंग भी श्वेत ही था, युद्ध को रोकने और सन्धि की स्थापना करने के लिये भी सफ़ेद झण्डा ही फहराया करते हैं।

(ट) "उसके मुंह से चोखा खड्ग निकलता है" यह धर्म युद्ध है और जिन लोगों से धर्म युद्ध किया गया उनका जिक्र भी इसी मुकाशिफे १६ पर्व के मन्त्र १७ से २१ पर्यन्त में वर्णन कर दिया है।

(ठ) "लोहे की लाठी लेकर शासन करेगा" ज़बूर २।६ में भी इसका वर्णन है। मुकाशिफे में ज़बूर के शब्द दुहराने से यह परिणाम निकला कि यह शब्द जिसके लिये हैं वह योहन्ना के बाद आने वाला है सो वह निःसन्देह "मुहम्मद रसूलुल्लाह" ही हैं क्योंकि फिर आपके अतिरिक्त किसी अन्य में वही (ईश्वरी प्रेरणा) नबुव्वत (पैग़म्बरी) और मज़बूत राज्य एकत्रित नहीं हुये।

(ड) "और वह सर्व शक्तिमान के क्रोध की मदिरा के कोल्हू में रौंदन करता है" झगड़ालू क़बीलों का नष्ट भ्रष्ट होना, कैसर तथा किसरा को आंहज़रत की आज्ञा भंग करने पर दण्ड मिलना ईश्वर के क्रोध ही से था।

(ढ) "उसके वस्त्र तथा जांघ पर राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु लिखा है" आंहज़रत के शुभ नामों में से इमामुल् अम्बिया (पैग़म्बरों के सरदार) और सय्येदुल मुर्सलीन (पैग़म्बरों में श्रेष्ठ) भी हैं और मुकाशिफे के शब्दों से यही अभिप्राय है।

* सहीहैन—में—इब्ने-अब्बास की सूक्ति।

† "सफ़रुस्सआदत"।

‡ अब इसे जबल-नूर कहते हैं। पूर्ण वृत्तान्त हमारी हिजाज़ यात्रा पर लिखी हुई पुस्तक में देखिये।

चौड़ी थी जा बैठते, तपस्या किया करते थे। इस तपस्या में ईश्वर की पवित्रता और महिमा का जिक्र भी सम्मिलित था और ईश्वरीय सामर्थ्य पर चिन्तन भी* । जब तक वह जल और सत्तू समाप्त न होजाते आप नगर में लौटकर न आते थे † ।

अब आपको स्वप्न दिखाई देने लगे। स्वप्न ऐसे सच्चे होते थे कि रात को जो कुछ देखते दिन में वैसा ही प्रकट होजाता ‡ ।

पैग़म्बरी

जब हज़रत की आयु चालीस वर्ष § की हुई तो ९ रबीउल् अव्वल ❋ सं० ४१ उत्पत्ति (तदनुसार १२ फ़रवरी सन् ६१० ई०) सोमवार के दिन रूहुल् अमीन (ईश्वरीय दूत हज़रत जिब्रील) पैग़म्बरी की ईश्वरीय आज्ञा लेकर हज़रत के पास आये, उस समय आप हिरा की खोह में थे।

रूह ने कहा—मुहम्मद ! सुसमाचार और बधाई स्वीकार कीजिये, आप अल्लाह के पैग़म्बर हैं और मैं जिब्रील हूँ ❦ ।

इस घटना के बाद आंहज़रत शीघ्र ही घर आये और लेट गये। फिर पत्नी से कहा "हमें कपड़ा उढ़ा दो" । जब हृदय शान्त हुआ तो पत्नी से कहा, "मैं ऐसी बातें देखता हूँ कि मुझे अपने प्राणों का भय हो गया है ‖ ।"

ख़दीजतुल्कुब्रा ने कहा, नहीं आप को भय किस बात का, मैं देखती हूँ कि आप नातेदारों से भलाई करते, सच बोलते, विधवाओं, अनाथों और असहायों की सहायता करते, अतिथियों का स्वागत करते, पीड़ितों से सहानुभूति रखते हैं, (अतः) ईश्वर आप को कभी दुखी न करेगा ☙ !

अब ख़दीजः को स्वयं भी अपने मन की शांति की आवश्यकता हुई, वह हज़रत को साथ लेकर अपने चचेरे भाई वरक़ः बिन् नौफ़ल के पास गईं।

इस पुस्तक की भूमिका में हम बता चुके हैं कि नज्जाशी और क़ैसर की चेष्टाओं से अरब में ईसाई धर्म आ चुका था इसलिये हज़रत की पैग़म्बरी के प्रादुर्भाव के निकट अरब में ऐसे लोग उपस्थित थे जो यहूदी और ईसाई पंडितों और गुरुवों से बहुत सी बातों का ज्ञान प्राप्त कर चुके थे और यह कहा करते थे कि शीघ्र ही एक पैग़म्बर प्रकट

---

* "सफ़रुस्सआदत" ।

† सहीहैन में हज़रत आएशः की सूक्ति।

‡ सहीहैन तथा मिशकात पृ० ५१३ में हज़रत आएशः की सूक्ति।

§ सहीह बुख़ारी में इब्ने अब्बास से—हज़रत मूसा को भी ४० वर्ष होने पर पैग़म्बरी मिली थी देखो इन्जील की किताब "अअमाल" ।

❋ ज़ादुल मआद पृ०१८ में ८ रबीउल् अव्वल लिखी है। सोमवार का दिन सर्वमान्य है और चूंकि सोमवार का दिन ९ को पड़ता है इसलिये ९ ही ठीक है।

❦ सफ़रुस्सआदत सटीक पृ० ३२ ।

‖ इस वाक्य से आपका अभिप्राय पैग़म्बरी की कठिनाइयों का वर्णन था।

☙ सहीहैन में हज़रत आएशः की हदीस, मिशकात पृ० ५१४ ।

होने वाला है जो शैतान (दुष्टात्मा) और उसकी सेना पर विजयी होगा। इन लोगों में उस्मान बिन हुरैस, उबैद, जैद बिन अम्र और वरकः बिन नौफ़ल के नाम विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।*

जैद बिन अम्र श्री उमर फ़ारूक़ के चाचा थे यह वे व्यक्ति हैं जिन्होंने इस आने वाले पैग़म्बर की तलाश में दूर दूर की यात्रा की थी और अंत को यह जान कर कि वह मक्के में पैदा होगा, इसी इन्तिज़ार में मृत्यु पा चुके थे।

ईसाई विद्वान वरकः की आप की पैग़म्बरी पर साक्षी

ग़रज़ कि हज़रत ख़दीजा की प्रार्थना पर आपने वरकः बिन नौफ़ल के सामने जिब्रील के आने और बात करने की घटना वर्णन की। वरकः तुरन्त बोल उठा "यही है वह नामूस जो मूसा पर प्रगट हुआ था, ईश्वर करता कि मैं युवक होता, ईश्वर करता कि मैं उस समय तक जीवित रहता जब जाति आप को निकाल देगी।"

आप ने पूछा—क्या जाति मुझे निकाल देगी ?

वरकः बोला—हां ! इस संसार में जब किसी ने ऐसी शिक्षा प्रस्तुत की उस से (आरम्भ में) शत्रुता ही की गई। प्रभु ऐसा करें कि मैं हिजरत तक जीवित रहूँ और हुज़ूर की भली भांति सेवा कर सकूँ।†

कुछ दिनों ‡ के बाद फिर फ़रिश्ता आया और आप को, जिन्होंने अब तक लिखना पढ़ना सीखा न था ख़ुदा का वह पवित्र नाम तथा पवित्र कलाम पढ़ाया जो कुल विद्याओं की कुंजी और सारी सच्चाइयों का भण्डार है। रूहुल् अमीन (जिब्रील) ने इन आयतों को पढ़ा था :—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इक़्ऽबिस्मे रब्बेकल्लज़ी ख़लक़, ख़लक़ल् इन्सान मिन अलक़िन्न, इक़्ऽ व रब्बोकल् अक्रमुल्लज़ी अल्लम बिल् क़लमे। अल्लमल् इन्सान मालम् यऽलम्।

अर्थात "अल्लाह के नाम से आरम्भ जो अति दयालु अति कृपालु है। पढ़ अपने प्रभु के नाम से जिसने (सब कुछ) पैदा किया,..जिसने मनुष्य को पानी के कीड़े से बनाया। पढ़ता चला जा, तेरा प्रतिपालक अत्यन्त करुणा वाला है जिसने क़लम

* प्रोफ़ेसर सेडियो की हिस्ट्री आफ़ अरब।

† सहीहैन—हज़रत आएशः से—मिश्क़ात पृ० ४१४ वरकः इस घटना के थोड़े दिनों पश्चात् ही मर गया था, दिखाई भी कम देने लगा था। वरकः ने हज़रत का वर्णन यसइयाह पूर्व ४२ में पढ़ा होगा।

‡ विद्वान सर्व सम्मति से कहते हैं कि हज़रत की उत्पत्ति रबीउल अव्वल मास में हुई। यह भी सर्व-मान्य है कि "वही" का आरम्भ ४१ वें वर्ष में हुआ। इससे यह बात निकलती है कि वही का आरम्भ भी रबीउल् अव्वल में हुआ। परन्तु क़ुरान शरीफ़ से सिद्ध है कि "वही का आरम्भ रमज़ान मास में हुआ"।

कुछ दिनों से आशय इस समय के बीच का अन्तर है जो लगभग ६ महीने है जिसमें वह सच्चे स्वप्न दिखाई देते रहे जो "नबुव्वत" का ४६ वां भाग (नबुव्वत के २३ वर्ष का ४६ वां भाग=६ महीने) थे। इमाम तबरी ने क़ुरान उतरने की तिथि १७ अथवा १८ रमज़ान बताई है। चूंकि १८ रमज़ान स० १ हि० को शुक्रवार (का दिन) था (तदनुसार १७ अगस्त स० ६१० ई०) अतः क़ुरान १८ रमज़ान को शुक्रवार की रात्रि से उतरना आरम्भ हुआ।

द्वारा शिक्षा दी, (जिसने) मनुष्य को वह सब कुछ सिखाया, जो वह नहीं जानता था" ।*

नमाज़ का आरम्भ—इसके उपरान्त रूहुल्-अमीन (जिब्रील) आपको पहाड़ी के नीचे लाया। स्वयं वज़ू किया और हजरत को भी वज़ू कराया। फिर दोनों ने मिल कर नमाज़ पढ़ी। रूहुल् अमीन ने नमाज़ पढ़ाई।

धर्म प्रचार का आरम्भ—आंहज़रत ने घर पहुँच कर धर्म प्रचार आरम्भ कर दिया। ख़दीजा (धर्म पत्नी) अली (भाई) अबू बक्र (मित्र) जैद बिन हारिस (दास) पहले ही दिन मुसलमान हो गये। †

उन लोगों का विश्वास लाना जो हजरत की चालीस वर्ष की तनिक २ सी बात जानते थे पैग़म्बर-इस्लाम की सचाई और सत्यवादिता का पुष्ट प्रमाण है। बिलाल, अम्र बिन अम्बसा ख़ालिद बिन सऽद भी थोड़े दिनों के बाद ही मुसलमान हो गये।

अबूबक्र बड़े धनी थे, व्यापार करते थे, मक्के में उनकी कपड़े की दूकान थी, लोगों से उनका बहुत मेल मिलाप था। उनके प्रचार से हज़रत उस्मान, जुबैर, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, तल्हा सऽद बिन अबी वक़ास मुसलमान हुये। फिर अबूउबैदः, अब्दुल असद, उस्मान बिन मज़ऊन आमिर बिन फ़हीरः, अबू हुजैफः बिन उत्बः, साइब बिन् उस्मान बिन मज़ऊन और अर्कम मुसलमान हुये। स्त्रियों में हज़रत उम्मुल् मोमेनीन ख़दीजा के उपरांत हजरत के चाचा अब्बास की स्त्री उम्मुल् फ़ज्ल, अस्माऽ बिन्त उमैस, अस्माऽ बिन्त अबूबक्र और हज़रत उमर फ़ारूक़ की बहन फ़ातेमः ने इस्लाम स्वीकार किया। उस समय मुसलमान पहाड़ की घाटी में जाकर नमाज पढ़ा करते थे।

आंहज़रत पैग़म्बरी के पहले तीन वर्ष तक लोगों को गुप्त रूप से समझाया करते थे तथा पत्थरों, पेड़ों चाँद और सूरज की पूजा से विमुख कर ईश्वर की अराधना सिखलाया करते थे। अब यह ईश्वरीय आज्ञा प्रकट हुई :—

खुले तौर पर प्रचार की आज्ञा—या अय्योहल् मुद्दस्सेरो क़ुम् फ़अन्ज़िर व रब्बक फ़कब्बिर व सेयाबक फ़तहिर, वर्रुज्ज़ फ़ह्जुर, वला तम्नुन् तस्तक्सिर, वलेरब्बेक

* इस सुन्दरता को देखिये कि ईश्वर का वचन जो मानव समाज के पथ प्रदर्शन के लिये उतरा मनुष्य की आरम्भिक दशा ही से आरम्भ होता है और सबसे प्रथम मनुष्य के लिये शिक्षा की आवश्यकता प्रकट करता है और यह भी बतलाता है कि आंहज़रत को स्वयं परमात्मा ने शिक्षा दी। "माऽलम् यऽलम्" से आंहज़रत का अनपढ़ होना प्रकट होता है। "यसूइयाह" २९।१२ में है।

"अनपढ़ को पुस्तक दी गई कि पढ़े"

कुरान शरीफ़ के शब्दों और उसके अर्थों के ईश्वरीय वाणी होने के लिये देखो इस्तिस्ना १८।१५-२०। पर्यंन्त

† विद्वानों में इस बात पर मतभेद है कि पहले हज़रत अली विश्वास लाये अथवा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़। मैंने इस विषय को छोड़ दिया है क्योंकि यह विषय हज़रत अली अथवा हज़रत अबूबक्र की "जीवनियों" से सम्बन्ध रखता है।

फस्बिर। अर्थात् "हे ठीक करने वाले (संसार के) उठो (कुकर्मियों को) डराओ और अपने प्रभु की महिमा फैलाओ और पवित्रता ग्रहण करो, (ईश्वरातिरिक्त की पूजा की) गन्दगी से पृथक रहो, उपकार इस भाव से न करो कि लोगों से उसका बदला प्राप्त किया जाये, अपने प्रभु के लिये (पैग़म्बरी करते हुये प्रत्येक परीक्षा तथा कष्ट के अवसर पर) सुदृढ़ रहो"। इन आयतों से प्रकट होता है कि आप की पैग़म्बरी के उद्देश्य निम्नलिखित थे।

(१) अनाज्ञाकारियों को उनकी खराब अवस्था से सूचित करना तथा कुपरिणाम से डराना।

(२) अल्लाह की रूबूबिय्यत (पालन-पोषण का गुण) अद्वितीय बड़ाई, श्रेष्ठता तथा प्रताप को प्रकट करना।

(३) लोगों को विश्वास, कर्म तथा आचार की बाहरी व भीतरी बुराइयों से पवित्र रहने की शिक्षा देना।

(४ पवित्रता, संयम और स्वच्छता सिखलाना।

(५) ईश्वरीय शिक्षा मुफ्त देना, न किसी पर उपकार जताना न उन से किसी लाभ की आशा रखना।

(६) इस महत्त्वपूर्ण काम में जितने दुःख और कष्ट भोगने पड़ें सब धैर्यपूर्वक सहन करना।

जो व्यक्ति पैग़म्बर-इस्लाम के पवित्र जीवन पर विचार करेगा उसे मालूम हो जायेगा कि हज़रत ने कैसी उत्तमता से इन सब उद्देश्यों को पूरा किया। आप के धर्म प्रचार का काम धीरे २ बढ़ता तथा क्रमशः व्यापकता प्राप्त करता रहा। जैसे

(१) निकट के नातेदार और मुख्य २ मित्र

(२) जाति और नगर के लोग

(३) मक्के के आसपास के क़बीले

(४) अरब देश के भिन्न २ भाग और कबीले

(५) संसार की कुल जातियां और कुल प्रसिद्ध धर्मों में प्रचार।

हुज़ूर ने इस प्रचार के लिये पूरी स्थिरता, पूरी दृढ़ता और पूरी उदारता सहित सब प्रकार के कष्ट सहन किये और अपनी शिक्षा को युक्ति युक्त पूर्वक प्रस्तुत किया।

पाठक इस पुस्तक में उपरोक्त पांचों श्रेणियों के सम्बन्ध में आंहज़रत के प्रयत्नों का वर्णन पायेंगे।

हज़रत के समय में संसार की दशा — यह स्मरण रखना चाहिये कि जिस समय में हज़रत की पैग़म्बरी संसार में धर्म प्रचार के लिये प्रकट हुई यह वह समय था जब समस्त संसार पर अज्ञानता एवं मूर्खता का अन्धकार छाया हुआ था। मनुष्यता, सभ्यता तथा सदाचार का नाम स्यात उन पुस्तकों में दिखाई दे सकता था जिनका हृदयों पर कोई प्रभाव बाकी नहीं रहा था।

(क) बनी इस्राईल तो मसीह से पहले सांप और सांप के बच्चे कहलाने के पात्र ठहर चुके थे। अब मसीह के श्राप से जाहिरी शक्ल व सूरत के अतिरिक्त उनमें मनुष्यता का कोई चिह्न बाकी न रहा था और पड़ोसी जातियों के प्रभाव से उनमें मूर्ति पूजा भी आ गई थी।

(ख) योरुप में मूर्खता और बर्बरता का राज था। नारथम्बरलेण्ड, नारफ़ोक, मिडलैंड आदि इंगलिस्तान के प्रांतों में "वर्डन" मूर्ति की पूजा होती थी, फ्रांस में पादरियों की आज्ञा से बहुत सी बुराइयां उचित ठहरा ली गई थीं।

फ्रांस सदा सिक्सन जाति से "अलब" नदी पर युद्ध किया करता था। यह लड़ाई ७८२ ई० के अंत तक जारी रही जब कि ४५०० सिक्सन कैदी बड़ी निर्दयता पूर्वक वर्डोन नगर में मार डाले गये। हंग्री इस समय अति असभ्य और जंगली जाति के हाथ में था जिसको बर्बरता पूर्ण तथा अत्याचार युक्त साधनों द्वारा अपने धर्म में लाया गया था।*

(ग) ईरान पर मज़्दोकिया का राज्य था, जिन्हों ने स्त्री, धन तथा पृथ्वी को सर्वाधीन कर सदाचार एवं मानव उन्नति को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था।

(घ) भारत में पौराणिक काल प्रारम्भ हो गया था † और वाममार्गियों का जोर बढ़ता जा रहा था। वे अपने गन्दे नियमों की ओर लोगों को खींचते थे। मन्दिरों में स्त्री पुरुषों की नंगी मूर्तियां बना कर रखी जाती थीं और उन्हीं की पूजा की जाती थी। मन्दिरों की दीवारों तथा द्वारों पर ऐसी नंगी मूर्तियां बनाई जाती थीं जिनका ध्यान करने ही से एक सभ्य पुरुष को घृणा होनी चाहिये।

(ङ) चीन की जनता ने अपने देश को ईश्वरीय पुत्र का राज्य समझ कर ईश्वर से मुख मोड़ लिया था। प्रत्येक कार्य का देवता अलग था। कोई जल वर्षा का, कोई संतान का, कोई युद्ध का, कोई शांति का और प्रत्येक देवता को दण्ड देना भी राजा के हाथ में था।

(च) कनफ्यूशश को चीन का सुधारक समझा जाता है लेकिन उस समय तक उसका भी प्रादुर्भाव न हुआ था।

(छ) मिस्र में ईसाई धर्म का जोर था। हजरत मसीह की सत्ता तथा पैग़म्बरी के विषय में नाना विचारों व मतभेदों और अन्य विषयों के सम्बन्ध में नित नये २ विश्वास गढ़े जाते थे। नये २ सम्प्रदाय बनते थे। और उनमें से प्रत्येक दूसरे को अधर्मी ठहराता, अपने विरोधी को घात करने और आग में जलाने से भी न झिझकता था।

यह हाल उन देशों का है जो प्रभावशाली राज्य और धर्मों के अधीन थे और जिनमें से प्रत्येक को अपनी जगह सभ्य होने का दावा था।

(ज) अब अरब देश की दशा क्या होगी? यह बात उपरोक्त देशों की दशा से भली भाँति प्रकट हो सकती है। इस के अतिरिक्त यह एक ऐसा देश था जहां सैकड़ों वर्ष से कोई राजा जमने न पाया था, न कोई प्रभाव कानून ने डाला था, और न कोई पथ-प्रदर्शक उनके पथ प्रदर्शन के लिये पहुंचा था। इस पाशविक स्वतन्त्रता ‡ के होते हुये अज्ञानता, अविद्या, सभ्य जातियों से पृथक रहने ने, स्थिति को और भी खराब कर दिया।

इस दुरावस्था ने उनको अधिक दयनीय बना दिया था। चुनांचि उस करुणा सागर प्रभु ने भी विश्व के सुधार का नये सिरे से प्रारम्भ होना इसी स्थान से उचित समझा।

अपने कुटुम्ब में धर्म प्रचार—पैग़म्बर-इस्लाम ने ईश्वरादेश के अनुसार धर्म प्रचार का कार्य आरम्भ कर दिया। निकटवर्ती नातेदारों को समझाने का आदेश क़ुरान मजीद में विशेष रूप से दिया गया था :—अर्थात् "व अन्ज़िर अशीरतकल् अक़्रबीन।" आंहज़रत ने एक रोज़ सब को खाने पर इकट्ठा किया। ये सब बनी हाशिम थे। उनकी

* सिविल एण्ड मिलेट्री गज़ट १२ अक्टूबर सन् १६०७ ई०

† मि० आर० सी० दत्त लिखित "भारत की प्राचीन सभ्यता" पृ० ३७ उर्दू एडीशन।

‡ मानव स्वतन्त्रता वह है जो क़ानून और धर्म की पाबन्दी के आधीन प्रत्येक व्यक्ति को हासिल है और पाशविक स्वतन्त्रता वह है जो क़ानून और धर्म के प्रभाव को ठुकरा कर प्राप्त हुई हो।

संख्या चालीस अथवा एक कम या एक अधिक थी। उस दिन अबू-लहब की बकवाद के कारण आपको अधिक वार्तालाप का अवसर न मिला, इस लिये दूसरी रात को फिर उन्हीं को बुलाया। जब सब लोग भोजन कर चुके और दूध पी चुके तब आपने फरमाया :—

कुटुम्बियों में धर्म प्रचार—"उपस्थित सज्जनो! मैं तुम सब के लिये इस लोक और परलोक की भलाई लेकर आया हूँ, और मैं नहीं जानता कि अरब भर में कोई व्यक्ति भी अपनी जाति के लिये इस से उत्तम और श्रेष्ठ कोई वस्तु लाया हो। मुझे परमात्मा ने आज्ञा दी है कि मैं तुम लोगों को उसका निमंत्रण दूं। बतलाओ तुम में से कौन मेरा साथ देगा।"

यह सुन कर सब के सब चुप रह गये, हज़रत अली ने उठ कर कहा "या रसूलुल्लाह! (हे प्रभु प्रेषित) मैं हाजिर हूँ।" फिर हज़रत ने अबूतालिब से कहा "तुम इसकी बात माना करो और जो कहा करे सुना करो।" यह वाक्य सुनकर लोग खिल खिला कर हंस पड़े और अबूतालिब की खिल्ली उड़ाई कि देखो! मुहम्मद ने तुम से कह दिया है कि आज से अपने पुत्र की आज्ञा पालन किया करो।*

पहाड़ी का धर्मोपदेश तथा मक्कः वासियों को बुलावा—एक दिन आपने "सफ़ा" पहाड़ी पर चढ़ कर लोगों को पुकारना आरम्भ किया। जब सब एकत्रित हो गये तो फरमाया "बतलाओ! तुम मुझे सच्चा समझते हो अथवा झूठा जानते हो?" सब एक स्वर बोले "हम ने कोई ग़लत अथवा मिथ्या युक्त बात तुम्हारे मुंह से अब तक नहीं सुनी। निश्चय ही तुम सत्यवादी तथा विश्वस्त हो।†

नबी ने फ़रमाया "देखो मैं पहाड़ की चोटी पर खड़ा हूँ और तुम उसके नीचे हो। मैं पहाड़ के इधर भी देख रहा हूँ और उधर भी दृष्टि डाल रहा हूँ। अब यदि मैं यह कहूँ कि डाकुओं का एक सशस्त्र जत्था दूर से दिखाई दे रहा है जो मक्के पर हमला करेगा तब क्या तुम इस बात पर विश्वास कर लोगे?

लोगों ने कहा "निःसन्देह! क्योंकि हमारे पास तुम्हारे ऐसे सत्यवादी को झुठलाने का कोई कारण नहीं। विशेषतयः जब वह ऐसे ऊँचे स्थान पर खड़ा है कि दोनों ओर देख रहा है।"

नबी ने फ़रमाया "यह सब कुछ समझाने के लिये एक उदाहरण था। अब यह विश्वास कर लो कि मृत्यु तुम्हारे सिर पर खड़ी है और तुम को ईश्वर के सम्मुख जाना है और मैं अन्त लोक को भी ऐसा ही देख रहा हूँ जैसी कि संसार पर तुम्हारी दृष्टि है।"

इस प्रभाव युक्त उपदेश से हज़रत का प्रयोजन यह था कि पैग़म्बरी के लिये एक उदाहरण उपस्थित करें कि किस प्रकार एक व्यक्ति परलोक को देख सकता है जब कि हज़ारों व्यक्ति नहीं देख सकते।

धर्म प्रचार की कोशिश—अब आप ने सब को समझाना आरम्भ किया। प्रत्येक मेले में, हर एक गली कूचे में जा जा कर लोगों को एकेश्वरवाद की महत्ता बतलाते। मूर्तियों, पत्थरों तथा पेड़ों आदि की पूजा से रोकते। पुत्रियों को मार

* अबुल् फ़िदा पृ० ११७।

† मुकाशिफ़ः १२/११।

डालने से बचाते । व्यभिचार से मना करते, जुआ खेलने से रोकते थे। आप फ़रमाया करते थे कि "लोग अपने शरीर को गन्दिगी से, कपड़ों के मैल कुचैल से, जबान को बुरी बातों से, मन को झूठे विश्वासों से पवित्र रखें। बचन और प्रतिज्ञा के पक्के बने रहें। लेन देन में किसी को धोखा न दें। परमात्मा को सब प्रकार की त्रुटि और बुराई और खराबी से पवित्र समझें। इस बात का पक्का विश्वास रखें कि पृथ्वी, आकाश, चन्द्रमा और सूर्य, छोटे बड़े सब ईश्वर के पैदा किये हुये हैं। सब उसी के मुहताज हैं। प्रार्थना का स्वीकार करना, बीमार को चंगा कर देना, मुरादें और मन्नतें पूरी करना, ईश्वर ही के हाथ में है। उसकी मर्ज़ी और आज्ञा बिना कोई भी कुछ नहीं कर सकता। फ़रिश्ते और पैग़म्बर भी उसकी आज्ञा विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते।"

मेलों और मंडियों में धर्म प्रचार—अरब में उकाज़, युऐनः तथा ज़ुलमजाज़ के मेले बहुत प्रसिद्ध थे। दूर दूर से लोग वहाँ आते थे। हज़रत इन स्थानों में जाते और मेले में आये हुये लोगों को इस्लाम का बुलावा देते थे।

क़ुरैशियों का विरोध—अभिमानी क़ुरैशियों को जो अरब में अपने आपको सब से बड़ा समझते थे, जैसे सागर में ह्वेल मछली, उन्हें हज़रत का उपदेश भला न मालूम हुआ इसके कुछ कारण थेः—

(१) वे पैग़म्बरी का अर्थ नहीं समझते थे और इसे असम्भव समझते थे कि ईश्वर की आज्ञा से कोई मनुष्य मनुष्यों के समझाने के लिये आये।

(२) वे कर्मों के प्रतिफल को न मानते थे। इसलिये यह शिक्षा कि मृत्यु के बाद कर्मों का उत्तर देना होगा उनके लिये हंसी ठट्ठे की बात थी।

(३) कुल, गोत्र और पूर्वजों की उच्चता पर उन्हें बड़ा अभिमान था और वे इस्लामी समानता और इस्लामी भाई चारा में एक प्रकार की ज़िल्लत और गिरावट अनुभव करते थे।

(४) उनमें अधिकांश क़बीले, बनी हाशिम से विरोध रखते थे और शत्रु क़बीले के एक व्यक्ति की शिक्षा पर चलना उन्हें बुरा मालूम होता था।

(५) वे मूर्ति पूजा पर जम गये थे और किसी धर्म में उससे उत्तम किसी खूबी का होना उनकीदृष्टि में सम्भव ही न था।

(६) उनमें व्यभिचार, डकैती, क़त्ल प्रतिज्ञा भंग करने, हर एक कायदे क़ानून से स्वतन्त्र रहने अगणित स्त्रियों को घर में डाल रखने की लत थी और इस्लाम का क़नून उनकी अपनी मनभावनी आदतों का शत्रु प्रतीत होता था।

इसलिये उन्होंने हज़रत के विरोध पर कमर बाँध लीं और इस्लाम का नाम निशान मिटा देने का फ़ैसला कर लिया।

इस्लाम के विरुद्ध उपाय—(१) उपाय यह सोचा गया कि इस्लाम लाने वालों को अत्यन्त कष्ट दिया जाये जिसमें कि जो लोग मुसलमान हो चुके हैं वे लौट आयें और नये लोग उसे स्वीकार न करें।

कुरैश ने इस्लाम लाने वालों पर जो जो अत्याचार किये, उन्हें जो दुःख और कष्ट दिये, उन का पूरा २ जिक्र करना भी कठिन है। संक्षेप रूप में उनके कष्ट दायक उपायों और कुछ महात्माओं का हाल बताया जाता हैः—

इस्लाम लाने वालों पर कुरैशियों का अत्याचार (१) हज़रत बिलाल हबशी थे। उमय्या बिन ख़लफ़ के दास थे। जब उमय्यः ने सुना कि बिलाल मुसलमान हो गये हैं नाना प्रकार के कष्ट उनके लिये निकाले गये।

(१) गरदन में रस्सी डाल कर लड़कों के हाथ में दी जाती और वे मक्के की पहाड़ियों में उन्हें लिये २ फिरते। रस्सी का चिह्न उनकी गरदन पर पड़ जाता था। (२) मक्के की घाटी की तपती हुई बालू पर उन्हें लिटा दिया जाता और गर्म पत्थर उनकी छाती पर रख दिया जाता। (३) हाथ पांव बांध कर लकड़ियों से पीटा जाता। (४) धूप में बिठलाया जाता। (५) भूखा रखा जाता। हज़रत बिलाल इन सब कष्टों को भोगते हुये भी "अहद अहद" (ईश्वर एक, ईश्वर एक) पुकारते थे। अबूबक्र सिद्दीक़ ने हज़रत बिलाल को खरीदा और परमात्मा के नाम पर स्वतन्त्र कर दिया।*

(२) अम्मार † तथा उन के पिता यासिर और उनकी माता सुमय्या, मुसलमान हो गये थे। अबूजिहल ने उन्हें नाना प्रकार के कष्ट पहुंचाये। एक दिन आंहज़रत ने उन्हें मार खाते और कष्ट पाते देखा। फरमाया "इस्बेरू या आल-यासिर फ़इन्न मौएदकुल् जन्नः" (यासिर वालो! सब्र करो तुम्हारा विश्राम स्वर्ग में होगा।) पापी अबूजिहल ने बीबी सुमय्या के लज्जा स्थान में बर्छी मार कर उन्हें जान से मार डाला था। ‡

(३) अबूफ़ुकैह (जिन्हें अफ़्लह् भी कहते थे) के पांव में रस्सी बांध कर उन्हें पथरीली भूमि पर घसीटा जाता। §

(४) ख़ब्बाब बिन अरस के सिर के बाल खींचे जाते। गरदन मरोड़ी जाती। गर्म पत्थरों पर कई बार लिटाया गया। ‖

(५) यमीनः, जिन्नीरः, नहदियः और उम्मे उबैस बेचारी दासियां थीं, उनके कठोर हृदय स्वामी उन्हें ऐसा ही बरबरतापूर्ण दण्ड दिया करते थे।

कुरैशियों का यह व्यवहार केवल दासों तथा निर्बलों ही के साथ न था बल्कि अपने पुत्रों तथा नातेदारों के साथ भी वे कठोरता से काम लेते थे। ¶

(६) उस्मान बिन अफ्फ़ान के इस्लाम लाने की सूचना जब उनके चाचा को हुई तो वह हज़रत उस्मान को खजूर की चटाई में लपेट कर बांध देता और नीचे से धुवां दिया करता।

(७) मुसअब बिन उमैर ‖‖ को उसकी माता ने घर से निकाल दिया था अपराध यही था कि उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया था।

(८) कुछ महात्माओं को कुरैशी गाय और ऊँट के कच्चे चमड़े में लपेट कर धूप में डाल देते थे, कुछ को लोहे की ज़िरह् पहिराकर जलते हुये पत्थरों पर गिरा दिया करते थे।

---

* दमिश्क में सं० २० हि० में ६३ वर्ष की आयु पाकर मृत्यु हुई।

† सिफ्फ़ीन के युद्ध में ९१-९२ वर्ष की आयु पाकर शहीद हुये।

‡ मदारेजुन्नुबुव्वत भा० २ पृ० ४०

§ एजाज़ुत्तन्ज़ील पृ० ४३

‖ ६३ वर्ष की आयु में सं० ३१ हि० में मदीने में स्वर्गवासी हुये।

¶ एजाज़ुत्तन्ज़ील पृ० ४३

‖‖ उह्द के युद्ध में शहीद हुये।

गरज़ कि मक्के के अधर्मी ऐसे बर्बरता पूर्ण कष्ट पहुँचाया करते थे कि केवल इस्लाम की सच्चाई ही उसका सामना कर सकती थी। जंगली जातियों के लोगों ने तो खोटे रुपये लेकर पैग़म्बरों को पकड़वा दिया और क़त्ल तक करवा दिया था।*

हज़रत के साथ कुरैशियों का कुव्यवहार } बहुधा आप के मार्ग में कांटे बिछा दिये जाते ताकि रात के अंधेरे में आप के पांव घायल हों। घर के द्वार पर गन्दिगी फेंकी जाती जिस में स्वास्थ्य और शांति में विघ्न पड़े। † आप केवल इतना ही कहते थे "अब्द-मनाफ़ के पुत्रो पड़ोसी का हक़ ख़ूब अदा करते हो।"

इब्ने अम्रुब्ने आस की आंखों देखी घटना है कि एक दिन हज़रत कअ्बे के भीतर नमाज़ पढ़ रहे थे उक़्बः बिन अबी मुईत् आया, उसने अपनी चादर को लपेट कर रस्सी की तरह बनाया और जब हज़रत सिजदे में गये तो चादर को हुज़ूर की गरदन में डाल दिया और कसना आरम्भ किया जिस से गरदन टेढ़ी पड़ गई थी परन्तु फिर भी हज़रत शांत चित्त सजदे में पड़े हुये थे। इतने में अबूबक्र सिद्दीक आये उन्होंने धक्के देकर उक़्बः को हटाया और यह आयत भी पढ़ कर सुनाई "अतक़्तोलून रजोलन्न अँय्यक़ूल रब्बियल्लाहो व क़द् जाअकुम् बिल् बय्येनात।" ‡ अर्थात्—क्या तुम एक महात्मा पुरुष को मारते हो और केवल इस अपराध में कि वह अल्लाह को अपना प्रभु कहता है तथा तुम्हारे निकट अपने खुले हुये चिन्हों सहित आया है।

इस पर कुछ गुण्डे हज़रत अबूबक्र के लिपट गये और इन्हें बहुत मारा।

एक और अन्य घटना है कि आप काबे में नमाज़ पढ़ रहे थे। क़ुरैश भी काबे की आँगनाई में जा बैठे। अबूजिहल बोला "आज नगर में अमुक जगह ऊँट ज़िबह हुआ है, ओझड़ी पड़ी हुई है, कोई जाय उठा लाये और इस (आप) के ऊपर डाल दे" पापी उक़्बः उठा, अपवित्र ओझड़ी उठा लाया, जब हज़रत सिजदे में गये तो उसने पीठ पर रख दी। हज़रत का ध्यान तो परमात्मा की ओर था कुछ ख़बर भी न हुई, काफ़िर हंसी के मारे लोटे जाते थे और एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे।

हज़रत इब्ने-मसऊद भी उपस्थित थे काफ़िरों का जत्था देखकर उनको तो साहस नहीं हुआ, किन्तु इतने में सय्यदः बीबी फ़ातेमः ज़हरा आगई, उन्होंने पिता की पीठ से ओझड़ी को अलग फेंक दिया § और उन अत्याचारियों को बुरा भला भी कहा।

कष्ट पहुँचाने वाली बाक़ायदा कमेटियां— आं हज़रत और मुसलमानों पर जो २ अत्याचार हो रहे थे उन्हें भी मक्के के क़ुरैशियों ने कम समझा, अतः पृथक २ कोशिशें करने की जगह अब बाक़ायदा कमेटियां बनाई गईं।

* ज़ादुल् मआद भाग १ पृ० २४।

† तारीख़ तबरी

‡ सहीह बुख़ारी में अम्रुब्ने आस द्वारा वर्णित हदीस।

§ सहीह बुख़ारी में इब्ने मसऊद से।

ठट्ठा उड़ाने वालों की सभा—एक सभा की स्थापना की गई जिसका सभापति अबूलहब था और मक्के के २५ सरदार उसके सदस्य थे।

इस सभा में एक यह प्रश्न भी रक्खा गया कि जो लोग दूर दूर से मक्के में आते हैं उन से मुहम्मद के विषय में क्या कहा जाये जिसमें कि वे उसके महत्व को न मानें।

एक ने कहा "हम बतलाया करेंगे कि वह ज्योतिषी है।"

वलीद बिन मुग़ीरः (जो एक खूसट वृद्ध था) बोला "मैंने बहुत से ज्योतिषी देखे हैं परन्तु कहां उनकी ऊट पटांग और कहां मुहम्मद की बातें। हम को ऐसी बात नहीं कहना चाहिये जिस से अरब के क़बीले यह समझ लें कि हम झूठ भी बोलते हैं।"

एक ने कहा "हम उसे पागल बताया करेंगे।"

वलीद बोला "मुहम्मद को पागलपन से क्या सम्बन्ध।"

एक बोला "अच्छा हम कहेंगे वह कवि है।"

वलीद ने कहा "हम जानते हैं कि कविता क्या होती है। कविता की सारी बातें हमें मालूम हैं। मुहम्मद की बातें कविता से मेल नहीं खातीं।

एक बोला "हम बताया करेंगे कि वह जादूगर है।"

वलीद ने कहा "जिस पवित्रता और स्वच्छता के साथ मुहम्मद रहता है वह जादूगरों में कहां होती है। जादूगरों की मनहूस सूरतें और अपवित्र स्वभाव अलग देख पड़ते हैं।"

अब सब ने असमर्थ होकर कहा "चाचा तुम ही बतलाओ कि फिर क्या कहा जाय? वलीद ने कहा सत्य बात यह है कि मुहम्मद की बातों में अद्भुत मिठास है। एक विशेष रसीलापन है। कहने को तो बस यही कह सकते हैं कि उसकी बातें ऐसी हैं जिस से पिता पुत्र, भाई भाई, स्त्री पुरुष, में विच्छेद हो जाता है, इस हेतु उस से बचना चाहिये।" * अंत में इस सभा ने निम्न-लिखित प्रस्ताव पास किया "मुहम्मद को सब प्रकार से सताया जाये, बात बात में उसकी हँसी उड़ाई जाये, ठठोलबाज़ी से और कष्ट देकर उसे दुःख पहुँचाया जाये, और जो लोग उसे सच्चा समझें उन्हें भी खूब सताया जाये।"

हबश की हिजरत—जब अधर्मियों ने मुसलमानों को बहुत सताना शुरू किया तो हज़रत ने अपने साथियों को आज्ञा देदी कि जो कोई चाहे वह अपने प्राण और अपना धर्म बचाने के लिये हबश चला जाये।

इस आज्ञा के बाद एक छोटा सा जत्था १२ पुरुष और ४ स्त्रियों का रात के अंधेरे में निकला और शुऐबिया के बन्दर से जहाज़ में सवार होकर हबश को चला गया। †

हज़रत उसमान की बड़ाई—इस छोटे से जत्थे के सरदार हज़रत "उस्मान बिन अफ़्फ़ान" थे। सय्यदह बीबी रुक़य्यः (आंहज़रत की पुत्री) उनके साथ थीं। हज़रत ने फरमाया "लूत और इब्राहीम के बाद यह पहिला जोड़ा है जिसने ईश्वर की राह में घर बार त्यागा। ‡"

कुरैश ने हबश तक पीछा किया, इन के पीछे

* सीरत-इब्ने हिशाम भाग १ पृ० ६० और शिफ़ा-क़ाज़ी अयाज़ पृ० १२६

† ज़ादुल मआद भाग १ पृ० २४

‡ हाकिम की रवायत

और भी मुसलमान (८३ पुरुष और १८ स्त्री) मक्के से निकले और हबश को रवाना हुये। इन में हज़रत के चचेरे भाई हज़रत "जाफ़र तय्यार" भी थे। क़ुरैश ने समुद्र के किनारे तक उनका पीछा किया, परन्तु वे कश्तियों में बैठ कर जा चुके थे।

हबश का बादशाह ईसाई था। मक्के के अधर्मी भी उसके पास भेंट लेकर गये और जाकर कहा कि इन लोगों को हमारे हवाले कर दिया जाये। मुसलमान दरबार में बुलाये गये। तब हज़रत के चचेरे भाई हज़रत जाफ़र ने यह भाषण दिया "हे राजा! हम अज्ञानता में फंसे थे, मूर्तियों को पूजते थे, गन्दिगी में ओत-प्रोत थे, मुरदार खाते थे, असभ्यता युक्त बकवाद करते रहते थे, हम में मनुष्यता तथा सदाचार का निशान भी न था। पड़ोसियों के साथ कोई भलाई नहीं करते थे, कोई क़ायदा क़ानून नहीं था, ऐसी दशा में ईश्वर ने हम में एक महात्मा को पैदा किया। जिस के कुल गोत्र, सच्चाई, ईमानदारी और संयम को हम सब भली पूर्वक जानते थे। उसने हम को ईश्वर की एकता की ओर बुलाया और समझाया कि उस अकेले परमात्मा के साथ किसी को साझी न ठहरायें। उसने हम को पत्थरों की पूजा से रोका, उसने उपदेश दिया कि हम सच बोला करें, बचन और प्रतिज्ञा पूरी किया करें, दया करें, पापों से दूर रहें, बुराइयों से बचें, उसने हुक्म दिया कि हम नमाज पढ़ा करें, सदक़ः (दान पुण्य) दिया करें, रोज़े (व्रत) रखा करें। हमारी जाति हम से इन बातों पर बिगड़ बैठी है। जहां तक हो सका उसने हमें दुःख पहुँचाये जिस में कि हम एक परमात्मा की उपासना छोड़ दें और लकड़ी और पत्थर की मूर्तियों की पूजा करते रहें। हम ने उनके हाथों बहुत अत्याचार और दुःख भोगे और अब मजबूर हो गये तब तेरे राज में शरण लेने के लिये आये हैं।"*

राजा ने यह भाषण सुन कर कहा मुझे क़ुरान सुनाओ। जाफ़र तय्यार ने उसे "सूरए मरियम" सुनाई। राजा पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह रोने लगा और उसने कहा कि "मुहम्मद वही पैग़म्बर है जिसकी सूचना यीसु मसीह ने दी थी, परमात्मा की कृपा से मुझे इस पैग़म्बर का समय मिला।" फिर राजा ने मक्के के अधर्मियों को दरबार से निकलवा दिया। जब मक्के के अधर्मियों ने देखा कि हबश तक जाने से भी कोई लाभ न हुआ तो उन्होंने कहा आओ मुहम्मद को पहिले तो लालच दें फिर धमकी दें, किसी तरह तो मान ही जायगा। यह सलाह करके मक्के का प्रसिद्ध धनवान सरदार जिसका नाम "उत्बः" था पैग़म्बर-इस्लाम के पास आया, और उसने इस प्रकार कहना शुरू किया "मेरे भतीजे मुहम्मद! यदि तुम इस प्रकार धन इकट्ठा करना चाहते हो तो हम स्वयं ही तुम्हारे पास इतना धन इकट्ठा किये देते हैं कि तुम धनी हो जाओगे, यदि तुम मान मर्यादा के भूखे हो तो अच्छा हम तुम को अपना सरदार मान लेते हैं और यदि राज्य की अभिलाषा है तो हम तुम को अरब का राजा बना देते हैं। जो चाहो सो करने को हाज़िर हैं परन्तु तुम अपना यह ढंग छोड़ दो। और यदि तुम्हारा दिमाग़ कुछ ख़राब हो गया है तो बतला दो कि हम तुम्हारा इलाज करायें।"

हज़रत ने फरमाया "जो कुछ तुम ने मेरे विषय में कहा वह ठीक नहीं है। मुझे धन, धाम, मान,

* सीरत इब्ने हिशाम भाग १ पृ० ११६।

मर्यादा, और राजपाट की आवश्यकता नहीं है और मेरा दिमाग़ भी ख़राब नहीं हुआ है मेरी हालत तुम्हें क़ुरान के इस कथन से मालूम होगी:—

बिस्मिल्ला हिर्रह्मा निर्रहीम। हा३मीम तन्ज़ीलु म्मिनर्रह्मानिर्रहीम। केताबुन्न फ़ुस्सेलत आयतोहू क़ुर्आनन्न अरबिय्य ल्ले कौमिय्यँऽलमून बशीरँव्व नज़ीरन्न फ़अऽरज़ा अक्सरोहुम् फ़हुम् ला यस्मऊन व क़ालू क़ोलूबोना फ़ी३ अकिन्नतिम् मिम्मा तदूऊना३ इलैहे.........

अर्थात "यह वाणी ईश्वर की ओर से आई है, जो अति दयालु और अति कृपालु है। यह बराबर पढ़ी जाने वाली पुस्तक है, अरबी भाषा में, समझदार लोगों के लिये इसमें सब बातें खुली खुली लिखी हैं। जो लोग ईश्वर की आज्ञा पालन करते हैं उनके लिये इस में सुसमाचार है और जो नकारने हारे हैं उनको ईश्वर के दण्ड से भय दिलाती है। बहुत से लोगों ने इस आज्ञा से मुख मोड़ लिया है, वे इसे सुनते ही नहीं, और कहते हैं कि इसका हमारे दिल पर कोई प्रभाव ही नहीं और हमारे कान इसको सुनने हारे नहीं, और हम में और तुम में एक प्रकार का पर्दा पड़ा है। तुम अपना उपाय करो और हम अपना उपाय कर रहे हैं। हे पैग़म्बर! इन लोगों से कह दीजिये कि मैं भी तुम ही जैसा मनुष्य हूँ परन्तु मुझ पर वही (ईश्वरीय प्रेरणा) आती है। और ईश्वर के फ़रिश्ते ने बतला दिया है कि सब लोगों का पूज्य देव एक ही है, उसी की ओर झुको और उसी से अपने पापों की क्षमा चाहो। उन लोगों पर शोक है जो साझी ठहराते हैं, और दान नहीं देते, और अंत का इन्कार करते हैं। परन्तु जो लोग ईश्वर पर ईमान लाये, और उन्होंने सद्कर्म किये उनके लिये अंत का बड़ा प्रति फल है।"

यह पवित्र कलाम (वाणी) सुनकर उत्बः चकित रह गया, वह हाथों का सहारा दिये और गरदन पीठ की ओर झुकाये हुये सुनता रहा और अंत में चुपचाप उठ कर चला गया। क़ुरैश जो इस भेंट का परिणाम मालूम करने के लिये उत्सुक थे सरदार उत्बः के आसपास इकट्ठा हो गये। पूछा क्या देखा क्या कहा क्या सुना? उतबः बोला "मैं ऐसा कलाम सुन कर आया हूँ जो न ज्योतिष है, न काव्य है, न जादू है, न मन्त्र है, तुम मेरा कहना मानो, तुम मेरी राय पर चलो, मुहम्मद को अपने हाल पर छोड़ दो।" लोगों ने यह राय सुनकर कहा लो उत्बः पर भी मुहम्मद की जबान का जादू चल गया *। जब लालच का उपाय न चला तब समस्त क़बीलों के सरदार इकट्ठा हुये और हज़रत के चाचा अबूतालिब के पास आकर कहने लगे "हम ने आपका बहुत आदर सम्मान किया, आप का भतीजा हमारे देवताओं और हमारी मूर्तियों को जिन्हें हमारे पूर्वज पूजते चले आ रहे हैं इतना बुरा भला कहने लगा है कि अब हम सहन नहीं कर सकते। आप उसे समझा बुझा कर चुप रहने की ताकीद कर दें नहीं तो हम उसे जान से मार डालेंगे और तुम अकेले हम सब का कुछ नहीं कर सकोगे।" देश भर की शत्रुता को देख कर चाचा का हृदय प्रेम और करुणा से भर गया। उसने हज़रत को बुलाया और समझाया कि "मूर्ति पूजा का खंडन न किया करो नहीं तो मैं भी तुम्हारी कुछ सहायता न कर सकूँगा।"

हज़रत ने फ़रमाया "चाचा! यदि ये लोग सूर्य को दाहिने हाथ पर ला कर रख दें और चंद्रमा को बायें हाथ पर, तब भी मैं अपने काम से न हटूंगा, और ईश्वर की आज्ञा में से एक अक्षर भी कम अथवा अधिक न करूंगा। इस काम में चाहे मेरे प्राण ही क्यों न चले जायें।" †

* इब्न-हिशाम भाग १ पृ० १००

† सीरत इब्न-हिशाम भाग १ पृष्ठ ८६

इस असफलता के उपरान्त मक्के के क़ुरैशियों ने सलाह की कि मुहम्मद को जाति के सामने बुला कर समझाना चाहिये अतः उन्होंने हज़रत से कहला भेजा कि जाति के सरदार आप से कुछ बात चीत करना चाहते हैं और कउबे में इकट्ठा हैं। हज़रत सहर्ष वहां गये क्यों कि आप को उनके ईमान ले आने की बड़ी कामना थी। जब हज़रत वहां जाकर बैठे तो उन्होंने कहा "हे मुहम्मद! हम ने तुझे यहां कुछ बात करने के लिये बुलाया है। परमात्मा की शपथ! हम नहीं जानते कि कोई भी व्यक्ति अपनी जाति पर इतनी कठिनाइयां लाया हो जितनी कि तूने अपनी जाति पर डाल रखी हैं। कोई खराबी ऐसी नहीं जो तेरे कारण हम पर न आ चुकी हो। अब तुम यह बतलाओ कि यदि तुम अपने इस नये धर्म से धन इकट्ठा करना चाहते हो तो हम तुम्हारे लिये धन इकट्ठा कर दें, इतना कि हम में से किसी के पास इतना न निकले, और यदि मान मर्यादा के अभिलाषी हो तो हम तुम्हें अपना सरदार बना लें, और यदि राज्य चाहते हो तो हम तुम्हें अपना राजा बना लें, और यदि तुम समझते हो कि जो चीज़ तुम्हें दिखाई देती है वह कोई जिन्न है तो हम टोने टोटकों के लिये अपना रुपया खर्च करें, जिसमें कि तुम चंगे हो जाओ अथवा जाति के सामने निर्पराध समझे जाओ।" रसूलुल्लाह ने फरमाया "तुमने जो कुछ कहा मेरी हालत के अनुसार नहीं है जो शिक्षा मैं लेकर आया हूँ वह न धन दौलत के लिये है न मान मर्यादा के लिये और न राज पाट के लिये। बात यह है कि परमात्मा ने मुझे तुम्हारी ओर पैग़म्बर बना कर भेजा है, मुझ पर पुस्तक उतारी है, मुझे अपना बशीर (सुसमाचार सुनाने हारा) तथा नज़ीर (डराने हारा) बनाया है। मैंने अपने प्रभु का संदेश तुम को पहुंचा दिया है और तुम्हें भली पूर्वक समझा दिया है। यदि तुम मेरे उपदेश को अंगीकार कर लोगे तो यह तुम्हारे लिये लोक और परलोक की सम्पत्ति है और यदि ठुकरा दोगे तब मैं ईश्वर की आज्ञा का इन्तिज़ार करूंगा कि वह मेरे लिये और तुम्हारे लिये क्या आज्ञा भेजता है।" क़ुरैश ने कहा "अच्छा मुहम्मद! यदि तुम हमारी इन बातों को नहीं मानते तो एक और बात सुनो! आप को मालूम है कि हम कितनी तंगी से दिन काट रहे हैं। जल हमारे पास सब से कम है और जीविका के लिये हमें कठिनायों का सामना करना पड़ता है। अब तुम परमात्मा से यह प्रश्न करो कि इन पहाड़ों * का हमारे सामने से हटा दे जिस में कि हमारे नगर का मैदान खुल जाय और हमारे लिये ऐसी नहरें जारी कर दे जैसे शाम तथा इराक़ में जारी हैं और बाप दादों को जीवित कर दे इन जिन्दा होने वालों में क़ुसय्यी बिन किलाब † अवश्य हो क्यों कि वह हमारा सरदार था और सच बोला करता था हम उससे तेरे विषय में भी पूछ लेंगे, यदि उसने तेरी बातों को सच मान लिया और तूने हमारे दूसरे प्रश्नों को भी पूरा कर दिया तब हम भी तुझे सच्चा जान लेंगे और मान लेंगे कि हां

* मक्के के अधर्मी तो केवल मक्के के पहाड़ों को हटाकर अपना आंगन ही खुलवाना चाहते थे परन्तु ईमान वालों के लिये जिब्राल्टर से क़ाफ़ की पहाड़ी तक कोई पहाड़ भी रोक न बन सका और कुल भूमि उनके घर का आंगन बन गई।

† आंहज़रत के बाबा अब्द मनाफ़ के पिता का नाम है जिसने बनू जुरहुम को मक्के से निकाला और क़ुरैश के क़बीलों को फिर इकट्ठा करके मक्के में बसाया था।

ईश्वर के यहाँ तेरा भी कोई पद है और उसने सच मुच तुझे पैग़म्बर बना कर भेजा है जैसा कि तू कह रहा है।"

हज़रत ने फ़रमाया "मैं इन कामों के लिये पैग़म्बर बना कर नहीं भेजा गया हूँ। और मैंने ख़ुदा के सन्देश तुम्हें सुना दिये हैं यदि तुम इस शिक्षा को स्वीकार कर लोगे तो यह तुम्हारे लिये लोक परलोक की सम्पत्ति है और यदि ठुकरा दोगे तो मैं ईश्वर की आज्ञा का इन्तिज़ार करूंगा जो कुछ उसे मेरा और तुम्हारा निबटारा करना होगा करेगा।"

क़ुरैश ने कहा "अच्छा यदि तुम हमारे लिये कुछ नहीं करते तो स्वयं अपने ही लिये ईश्वर से प्रश्न करो कि :—(१) वह एक फ़रिश्ते को तुम्हारे साथ नियुक्त कर दे, जो यह कहता रहा करे कि यह व्यक्ति सच्चा है और हम को तेरे विरोध से रोक दे। (२) हाँ तुम अपने लिये यह भी प्रश्न करो कि बग़ीचे लग जायें, बड़े बड़े महल बन जायें, ख़ज़ाने में सोना-चांदी जमा हो जाये जिसकी तुझे ज़रूरत भी है, क्योंकि अब तक तू स्वयं ही बाज़ार में जाता और अपनी जीविका तलाश किया करता है। ऐसा हो जाने के बाद ही हम तेरी श्रेष्ठता और बड़ाई को जान सकेंगे और तुझे ईश्वर का पैग़म्बर समझ सकेंगे।*

आपने फ़रमाया "मैं ऐसा न करूँगा, मैं ईश्वर से भी ऐसा प्रश्न न करूँगा। और इन बातों के लिये मैं भेजा भी नहीं गया। मुझे तो अल्लाह ने "बशीर" और "नज़ीर" बनाया है तुम मान लो तो तुम्हारे लिये यह लोक परलोक की सम्पत्ति है नहीं तो मैं धैर्य से काम लूँगा और ईश्वर के फ़ैसले का इन्तिज़ार करूंगा।"

क़ुरैश ने कहा "अच्छा तुम आकाश ही का कोई टुकड़ा तोड़ कर हम पर गिरा दो, क्योंकि तुम्हारा कहना है कि यदि ईश्वर चाहे तो ऐसा कर सकता है, सो जब तक तुम ऐसा न करोगे हम ईमान नहीं लावेंगे।" †

हज़रत ने फ़रमाया "यह ईश्वर के अधिकार में है, वह यदि चाहे तो ऐसा करे।"

क़ुरैश ने कहा "मुहम्मद! यह तो बताओ कि तेरे ख़ुदा ने तुझे पहिले से यह न बतलाया कि हम तुझे बुलायेंगे, ऐसे २ प्रश्न करेंगे, यह चीजें माँगेंगे, हमारी बातों का उत्तर यह है, और ख़ुदा का इरादा ऐसा २ करने का है। चूँकि तेरे ख़ुदा ने ऐसा नहीं किया इस लिये हम समझते हैं कि जो कुछ हम ने सुना है वह ठीक है कि यमामः में एक व्यक्ति रहता है उसका नाम "रह्मान" है, वही तुझे ऐसी बातें सिखलाता है। हम तो 'रह्मान' ‡ पर कभी ईमान नहीं लायेंगे। मुहम्मद! देखो आज हम ने सब बातें सुना दी हैं, अब हम तुम से शपथ खा कर

* लौकिक द्रव्य, ऊंचे ऊंचे मकानों और बग़ीचों ही को मक्के वालों ने सचाई का चिह्न ठहराया था वह चिन्ह भी परमात्मा ने ईमान वालों के लिये पूरा कर दिखाया और मालूम होगया कि आंहज़रत की शिक्षा वास्तविक में इस लोक की भी सम्पत्ति है जैसा कि वह परलोक की सम्पत्ति है।

† जिस दण्ड की प्रार्थना उन लोगों ने की थी बद्र के युद्ध में वह उन पर उतरा और नकारने हारों तथा ठट्ठा उड़ाने वालों में से कोई एक भी जीवित न बचा।

‡ ख़ुदा के जो उत्तम नाम इस्लाम ने सिखाये हैं उनमें 'रह्मान' ऐसा नाम है जिसे अरब लोग कदापि न जानते थे इसलिये वे ख़ुदा के 'रह्मान' नाम से अधिक चिढ़ा करते थे और कहा करते थे कि यह किसी ला पता व्यक्ति का नाम होगा। रह्मान के अर्थ हैं पूर्ण करुणा निधान।

कह देते हैं कि हम तुझे इस धर्म का प्रचार कभी न करने देंगे यहां तक कि हम मर जायें अथवा तू मर जाये।"

यहां तक बात चीत हुई थी कि एक उनमें से बोला "हम फ़रिश्तों की पूजा करते हैं जो ईश्वर की पुत्रियां हैं।" दूसरा बोला "मुहम्मद हम तेरी बात का विश्वास नहीं करेंगे जब तक कि स्वयं ईश्वर और उसके फ़रिश्ते हमारे सामने न आ जांय।" आंहज़रत अन्तिम बात सुनकर उठ खड़े हुये, आपके साथ अब्दुल्लाह बिन अबू उमय्यः बन मुग़ीरः भी उठा, यह आपकी फूफी (बुआ) का पुत्र था। उसने कहा "मुहम्मद देखो तुम्हारी जाति ने अपने लिये कुछ चीज़ों का तुम से प्रश्न किया है वह भी तुमने पूरा न किया, फिर उन्होंने यह चाहा कि तू स्वयं अपने लिये ऐसे चिन्ह प्रकट करे जिनसे तेरी श्रेष्टता सिद्ध हो सके, उसे भी तूने स्वीकार न किया, फिर उन्होंने अपने लिये थोड़ा सा वह दण्ड मांगा जिसका तू भय दिलाया करता है तूने इसका भी इक़रार न किया, अब मैं तुझ पर कभी ईमान नहीं लाऊंगा, हां यदि तू मेरे सामने आकाश को सीढ़ी लगाकर ऊपर चढ़ जाये और मेरे सामने ही उस सीढ़ी से उतरे और तेरे साथ चार फ़रिश्ते भी आयें और वे तेरी साक्षी भी दें तो ईमान ला सकते हैं। और अगर ऐसा भी होगया मैं तो तब भी तुझ पर ईमान नहीं लाऊंगा"। *

आंहज़रत इस प्रकार इनकार करने पर भी बराबर क़ुरैश को इस्लाम की ओर बुलाया करते थे, और फ़रमाया करते थे कि मेरी शिक्षा ही में तुम्हारे लिये सब कुछ मौजूद है। जिन बुद्धिमानों ने ईमान व इस्लाम स्वीकार किया और हज़रत की शिक्षाओं पर अमल किया उन्हें उससे भी अधिक ज्ञान और लाभ प्राप्त हुआ जिसका प्रश्न अधर्मियों ने किया था।

हमें इस अवसर पर इन्जील का वह स्थान याद आता है जिसमें मसीह की जांच के लिये शैतान ने कई प्रश्न किये और मसीह ने उन सबका उत्तर इनकार में दिया। † सच बात यह है कि परमात्मा के पैग़म्बर अपनी सचाई के प्रमाण में अपनी शिक्षा को उपस्थित किया करते हैं मुऽजिज़े अथवा मानव स्वभाव के विरुद्ध किसी बात का पेश नहीं करते। क्योंकि फिर ग़ैब पर ईमान लाने की सुन्दरता तथा विशुद्धता बाक़ी नहीं रहती यद्यपि किसी आवश्यकता के लिये उनसे बहुधा मुऽजिज़े भी प्रकट होते रहते हैं।

अमीर हमज़ः का इस्लाम—नुबुव्वत (पैग़म्बरी) के छठे वर्ष की घटना है कि एक दिन हमारे पैग़म्बर सिफ़ा पहाड़ी पर बैठे हुये थे। अबूजिहल वहां पहुँच गया उसने हज़रत को पहिले तो गालियां दीं और जब हज़रत गालियां सुनकर भी चुप रहे तो उसने एक पत्थर हुज़ूर के सिर पर फेंक मारा जिससे ख़ून बहने लगा। हज़रत

* सीरत इब्नहिशाम भाग १ पृष्ठ १०१। पाठकों ने देखा कि इस्लाम की शत्रुता में अब्दुल्लाह का हृदय कितना कठोर था, परन्तु कुछ वर्षों बाद मक्कः विजय होने से पूर्व यही अब्दुल्लाह आंहज़रत की सेवा में हाज़िर हुआ और इस्लाम लाया। बुद्धिमान जान सकते हैं कि ऐसे व्यक्ति का इस्लाम पर मर मिटना ऐसा अद्भुत कार्य है जो आकाश पर सीढ़ी लगाकर चढ़ जाने, पुस्तक ले आने, फ़रिश्तों की साक्षी देने से भी बढ़कर है क्योंकि यह तो वे बातें हैं जिनके देख लेने के बाद भी अब्दुल्लाह ईमान लाना नहीं चाहता था।

† इन्जील मत्ती ४/१ से ११ तक।

के चाचा हम्ज़ः को भी इसकी खबर हुई, वे अभी मुसलमान नहीं हुये थे, नातेदारी के जोश में अबू-जिहल के पास पहुंचे और उसके सिर पर इस ज़ोर से कमान खींच मारी कि वह घायल हो गया। हम्ज़ः फिर हज़रत के पास गये और कहा 'भतीजे! तुम यह सुन कर प्रसन्न होगे कि मैं ने अबू जिहल से तुम्हारा बदला ले लिया। आप ने फरमाया "चाचा मैं ऐसी बातों से खुश नहीं हुआ करता तुम मुसलमान हो जाओ तो मुझे बड़ी खुशी हो।" हम्ज़ः मुसलमान हो गये।

उमर फ़ारूक़का इस्लाम लाना—अमीर हम्ज़ः से तीन दिन पीछे उमर बिन खत्ताब मुसलमान हुये। यह बड़े वीर और साहसी पुरुष थे, क़ुरैश की ओर से अन्य देशों में दूत बना कर भेजे जाते थे। एक दिन उमर अपनी वीरता के भरोसे हज़रत के क़त्ल करने का इरादा करके घर से निकले, बदन पर सब हथियार सजा रक्खे थे मार्ग में उनको पता चला कि बहिन और बहिनोई दोनों मुसलमान हो गये हैं। यह सुन कर बहिन के घर गये और उन दोनों को खूब मारा।

उनकी बहिन फ़ातिमा * ने कहा "उमर तुम पहिले वह पुस्तक तो सुन लो जिसे सुन हम ईमान ले आये हैं यदि वह तुम को अच्छी न लगे तो हम को मार डालना" उमर ने कहा "अच्छा" उस समय उनके घर में हज़रत के एक साथी भी थे जो उमर के आने से छुप गये थे। उन्होंने क़ुरान शरीफ़ से (सूरए त्वाहः का पहिला रुकू) सुनाया, उमर क़ुरान सुन रहे थे और बे अख्तियार रो रहे थे। ग़रज़ कि उमर उसी समय से पैग़म्बर और क़ुरान पर ईमान ले आये। जो घर से क़ातिल बन कर निकला था वह जांनिसार बन गया। आगे चल कर उनका नाम "फ़ारूक़" हुआ।

इस समय तक मुसलमान नमाज़ अपने घरों में छुप छुप कर पढ़ा करते थे अब काबे में जाकर पढ़ने लगे। अधर्मी यह देख कर और भी जले और मुसलमानों को अति कष्ट देने लगे और आंहज़रत के साथ भी अपमान जनक व्यवहार करने लगे।

तीन साल तक पहाड़ की घाटी में क़ैद—जब अधर्मियों ने देखा कि ऐसी तकलीफों और दुखों में भी हज़रत अपने मिशन पर क़ायम रहे, अनथक परिश्रम और अद्वितीय साहस से अपना काम किये जाते हैं तो मुहर्रम के महीने सन् ७ नबवी में उन्होंने निश्चय किया कि मुहम्मद का क़बीला बनी हाशिम यद्यपि मुसलमान नहीं हुआ परन्तु उनका साथ भी नहीं छोड़ता, आओ उससे नाता रिश्ता करना छोड़ दें, उन्हें गली हाट में फिरने न दें और उनके हाथ कोई चीज़ न बेचें। †

इस बात का मुआहिदा (समझौता) लिखा गया और काबे पर लटका दिया गया।

हज़रत और उनका कबीला मजबूर हुआ। घर बार छोड़ कर पहाड़ की घाटी में बन्दी बन कर रहने लगा। क़ुरैश ने खाने पीने की सामग्री का भी जाना बन्द कर दिया। बनी हाशिम के बालक भूख के मारे बिल बिलाया करते थे, उनके रोने की आवाज़ घाटी के बाहर भी सुनाई देती। ‡

* फ़ातिमा बिन्त खत्ताब हज़रत उमर की बहन और सईद बिन ज़ैद की धर्म पत्नी हैं। हज़रत सईद के पिता ज़ैद वह व्यक्ति हैं जिन्होंने इब्राहीमी धर्म की खोज में शाम तथा फ़िलिस्तीन की यात्रा की थी, अन्त में यहूदियों और ईसाइयों से यह मालूम कर के कि अन्तिम पैग़म्बर मक्के में प्रगट होगा वह मक्के में आ गये थे।

† ज़ादुल्मआद भाग १ पृष्ठ २६६

‡ ज़ादुल् मआद भाग १ पृष्ठ २६६

हज़रत ने तीन बर्ष तक इस कठोरता को पूरी दृढ़ता और धैर्य्य के साथ सहन किया। जब उन अधर्मियों ने घाटी पर से पहरा चौकी हटा लिया और दीमक ने उनके मुआहिदे (प्रतिज्ञा पत्र) के काग़ज़ को खा लिया जो कड़ने पर लटकाया गया था तब हज़रत बाहर निकले और फिर उपदेश आरम्भ कर दिया।

एक दिन आँहज़रत "मस्जेदुल हराम" में दाखिल हुये वहाँ कुछ अधर्मी सरदार इकट्ठा थे अबूजिहल ने आपको देखा और हँसी उड़ाते हुये कहा "अब्दमुनाफ़ वालों। देखा तुम्हारा पैग़म्बर आ गया,,

अक़बा बिन रबीआ बोला हमें क्या इनकार है। हममें से कोई पैग़म्बर बन बैठे कोई फ़रिश्ता कहलाये" हज़रत यह बातें सुन कर लौटे और इनके पास आये पहले अक़ब: से फ़रमाया "तूने खुदा तथा रसूल की सहायता कभी नहीं की तू अपनी ही बात की पच पर अड़ा रहा,,

फिर अबूजिहल से फ़रमाया, तेरे लिये वह समय निकट है कि तू थोड़ा हँसेगा और अधिक रोयेगा फिर क़ुरैश से फ़रमाया तुम्हारे लिये वह घड़ी निकट आ रही है कि जिस धर्म को तुम ठुकराते हो उसी में दाखिल होगे। ☺

पाठक इसी पुस्तक में देखेंगे कि यह बातें क्यों कर पूरी हुईं।

अबूतालिब का देहान्त—सन १० नबवी में हज़रत के चाचा अबूतालिब का जो हज़रत अली के पिता थे देहान्त हो गया। अबूतालिब ने बालपन से हज़रत का पालन पोषण किया था और जब से आपने धर्म प्रचार आरम्भ किया था वह बराबर सहायक रहा था इसलिये आपको उनकी मृत्यु का बहुत शोक हुआ।

खदीज: का देहान्त---उनसे तीन दिन पीछे हज़रत की प्रिय धर्म पत्नी बीबी ताहिरा खदीजतुलकुब्रा भी स्वर्ग को सिधार गईं। इन बीवी ने अपना सारा धन हज़रत की खुशी पर न्यौछावर और ईश्वर के नाम पर ख़र्च कर डाला था वह सबसे पहले इस्लाम लाईं थीं। जिब्रील ने इन बीबी को ईश्वर का प्रणाम पहुँचाया था। इन बीबी की मृत्यु का हज़रत को अत्यन्त शोक हुआ।

अब कुरैशियों ने हज़रत को अधिक सताना आरम्भ किया। एक बार एक गुण्डे ने आपके सर पर कीचड़ फेंक दी आप इसी तरह घर में दाखिल हुये आपकी पुत्री उठीं वह सर धुलाती जाती थीं और रोती जाती थीं आपने फ़रमाया प्रिय पुत्री! तुम क्यों रोती हो स्वयं परमेश्वर तुम्हारे पिता की रक्षा करेगा।☘

अन्य क़बीलों में धर्म प्रचार—यद्यपि अबूतालिब का सहारा जाता रहा, यद्यपि खदीजा जैसी वफ़ादार बीवी जो सब प्रकार के दुखों और कष्टों की साथी थीं स्वर्गधाम को जा चुकी थीं परन्तु हज़रत ने पहले से भी अधिक जोश के साथ उपदेश का काम आरम्भ कर दिया।

चुनाचि थोड़े ही दिनों बाद आप मक्के से निकले और आस पास की बस्तियों में उपदेश के लिये गये इस यात्रा में आपके साथ जैद बिन हारसा थे। मक्के और तायफ़ के बीच जितने क़बीले थे सबको उपदेश देते एकेश्वरवाद की मनादी करते हुए आप पैदल तायफ़ पहुँचे। तायफ़ में बनू सक़ीफ़: बसते थे हरा भरा देश

☺ तिब्री पृ० २२१
☘ तिब्री पृ० २२६

और ठंडे पहाड़ पर रहने के कारण उनके घमण्ड की कोई सीमा न थी अब्दयालैल,मसऊद,और हबीब तीनों भाई वहां के सरदार थे । आंहजरत पहले उन्ही से मिले और उन्हें इस्लाम का निमन्त्रण दिया उनमें से एक बोला मैं कड़बे के सामने दाढ़ी मुँडवा दूं यदि तुझे परमात्मा ने अपना पैगम्बर बनाया हो , दूसरा बोला "क्या खुदा को तेरे सिवा और कोई भी पैगम्बर बनाने को न मिला जिसके पास चढ़ने को सवारी भी नहीं । उसे पैगम्बर बनाना ही था तो किसी हाकिम अथवा सरदार को बनाया होता ।

तीसरा बोला मैं तुझसे कभी बात न करूंगा क्योंकि यदि तू पैगम्बर है तो यह बात बड़ी खतर नाक होगी कि मैं तेरी बातों का खण्डन करूं और यदि तू परमात्मा पर झूठ बोलता है तो मेरे लिये अपमान जनक है कि तुझसे बात करूं ।

हजरत ने फ़रमाया—अब मैं केवल तुमसे यह चाहता हूँ कि अपने विचार अपने ही पास रक्खो। ऐसा न हो कि यह विचार दूसरे लोगों के लिये ठोकर खाने के कारण हो जायें । फिर हजरत ने उपदेश आरम्भ किया । उन सरदारों ने अपने दासों और नगर के बालकों को सिखला दिया। वह धर्मोपदेश के समय नबी पर इतने पत्थर फेंकते कि हुजूर लोहू में तर बतर हो जाते । खून बह बह कर जूते में जम जाता और बजू के लिये पांव से जूता निकालना कठिन हो जाता।

एक बार बदमाशों और गुण्डों ने हजरत को इतनी गालियां दीं' तालियां बजाईं ,चीखें लगाईं कि खुदा का पैगम्बर एक घर में घुस जाने पर मजबूर हो गया। यह स्थान रबीअ: के पुत्र अक़ब: और शैब: का था। उन्होंने दूर से इस दशा को देखा और पैगम्बर पर तरस खाकर अपने गुलाम अदास को कहा कि एक पलेट में अँगूर रखकर इस व्यक्ति को दे आओ । गुलाम ने अंगूर नबी के सामने लाकर रख दिये नबी ने अंगूरों की ओर हाथ बढ़ाया और ज़बान से फ़रमाया "बिस्मिल्लाह " और फिर अंगूर खाने आरम्भ किये ।

अदास ने आश्चर्य से आपकी ओर देखा और फिर कहा यह ऐसा शब्द है कि यहां के रहने वाले नहीं बोला करते आपने फ़रमाया-तुम कहां के हो और तुम्हारा धर्म क्या है । अदास ने उत्तर दिया मैं ईसाई हूँ और नैनवा का रहने वाला हूँ ।

नबी ने फ़रमाया क्या तुम महात्मा पुरुष यूनुस बिन मत्ती के नगर के रहने वाले हो ।

अदास ने कहा" तुम्हें क्या ख़बर है कि यूनुस बिन मत्ती कौन था और कैसा था ।

आपने फ़रमाया—वह मेरा भाई है वह भी नबी था और मैं भी नबी हूँ ।

अदास यह सुनते ही झुक पड़ा और उसने आपका सर हाथ और पांव चूम लिये ।

अक़ब: और शैब: ने दूर से गुलाम को ऐसा करते देखा और परस्पर कहने लगे लो गुलाम तो हाथों से निकल गया । जब अदास अपने स्वामी के पास लौट कर आया तो उसने कहा अभागे तुझे क्या होगया जो इस व्यक्ति के हाथ पांव और सर चूमने लगा ।

अदास ने कहा—श्री मान ! आज इस व्यक्ति से उत्तम पृथ्वी पर कोई नहीं इसने मुझे ऐसी बात बतलाई जो केवल पैगम्बर ही बतला सकता है ।

उन्होंने अदास को डांट दिया कि ख़बरदार ! कहीं अपना धर्म न छोड़ बैठना तेरा धर्म तो उसके धर्म

से अच्छा है।

इस स्थान पर एक बार धर्मोपदेश करते हुये ख़ुदा के रसूल के इतनी चोटें लगीं कि मूर्छित होकर गिर पड़े। ज़ैद ने उनको अपनी पीठ पर उठाया। बस्ती से बाहर ले गये। जल के छींटे देने से होश आया।

इस यात्रा में इतने कष्टों और दुःखों के बाद और एक व्यक्ति तक के मुसलमान न होने के शोक के समय भी हज़रत का दिल परमात्मा के प्रेम और बड़ाई से भरपूर था। उस समय जो आपने प्रार्थना की उसका अर्थ यह है।

हे प्रभु अपनी दुर्बलता और असमर्थता और लोगों के अपमान के सम्बन्ध में मैं तेरे पास फ़रियाद लाया हूँ। तू सब दया करने हारों से अधिक दया करने हारा है। सामर्थ्य का स्वामी तू ही है। और मेरा भी स्वामी तू ही है। मुझे किसके हवाले किया जाता है एक अपरिचित कठोर हृदय व्यक्ति के अथवा उस शत्रु के जो कार्य पर क़ाबू रखता है परन्तु जब मुझ पर तेरा क्रोध नहीं है तो मुझे फिर कुछ चिंता नहीं क्यों कि तेरी शरण मेरे लिये बहुत कुछ है। मैं तेरे प्रकाश से आश्रय चाहता हूँ जिससे कुल अंधेरियां प्रकाशमान हो जाती हैं और लोक परलोक के काम ठीक हो जाते हैं। मुझे तेरी रज़ामन्दी और प्रसन्नता की आवश्यकता है और बुराई भलाई से बचने की शक्ति मुझे तेरी ही ओर से मिलती है।"

हज़रत ने तायफ़ से लौटते हुये यह भी फ़रमाया मैं इन लोगों की बर्बादी के लिये प्रार्थना क्यों करूं यदि यह लोग परमात्मा पर विश्वास नहीं लाते तो क्या हुआ आशा है कि भविश्य में इनकी संतान अवश्य एक ख़ुदा पर विश्वास लाने वाली होगी ※।

भिन्न २ स्थानों में धर्म प्रचार--मक्के लौट कर अब हज़रत ने यह आरम्भ किया कि भिन्न २ क़बीलों की बस्तियों में जाते या मक्के से बाहर चले जाते और जो कोई यात्री आता जाता मिल जाता उसे इस्लाम व ईमान का उपदेश सुनाते। इन्हीं दिनों में बनूकन्द क़बीले में गये। क़बीले के सरदार का नाम "मलीह" था। क़बीला बनू अब्दुल्लाह के पास भी पहुँचे, उनसे कहा तुम्हारे पूर्वज का नाम अब्दुल्लाह था तुम भी अल्लाह के अब्द अर्थात सेवक बन जाओ बनूहनीफ़ क़बीले के घरों में गये इन लोगों ने सबसे अधिक बुरे ढंग पर आपका उपदेश सुनने से इन्कार किया।

क़बीला बनू आमिर के पास भी गये। क़बीले के सरदार ने इस्लाम के निमन्त्रण पर आपसे पूछा भला यदि हम तेरी बात मान लें और तू विरोधियों पर विजयी हो तो क्या तू यह वचन देता है कि तेरे बाद यह काम मुझ से सम्बन्धित होगा' आप ने फ़रमाया "यह तो ख़ुदा के अख़्तियार है वह जिसे चाहेगा मेरे बाद नियुक्त करेगा"। सरदार बोला ख़ूब इस समय तो अरब के आगे सीना तान कर हम जायें और जब तुम्हारा काम बन जाये तो मज़े कोई और उड़ाये। जाओ हम को तुम्हारे काम से कोई मतलब नहीं"। क़बीलों के पास जाने की यात्रा में आपके साथी अबू बक्र सिद्दीक़ थे।

स्वेद बिन सामित का ईमान लाना--इन्हीं दिनों में हज़रत को स्वेद बिन सामित मिला। वह अपनी जाति में कामिल के नाम से पुकारा जाता था आपने उसे इस्लाम स्वीकार करने को कहा वह बोला

※ सहीह मुस्लिम में उम्मुल मोमेनीन आयशः से।

कदाचित आपके पास भी वही कुछ है जो मेरे पास भी है। आपने पूछा तुम्हारे पास क्या है! वह बोला "लुक़्मान का ज्ञान" आपने फरमाया "वर्णन करो" उसने अपनी उत्तम कविता सुनाई। फिर आपने फरमाया यह अच्छा है परन्तु मेरे पास क़ुरान है जो अति उत्तम है और वह शिक्षा और प्रकाश है" फिर आपने उसे क़ुरान सुनाया। इसके उपरान्त बेफ़िक्र उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया। वह जब यसरिब लौट कर गया तो खज़रिज जाति ने उसे क़त्ल कर डाला। ☺

यसरिब वालों में धर्म प्रचार--इन्हीं दिनों में अनस बिन राफ़े मक्के आया उसके साथ बनी अब्दुल अशहल के भी कुछ नवयुवक थे जिन में अयास बिन मआज़ भी था। यह क़ुरैश के साथ अपनी जाति की ओर से सन्धि करने आये थे। हज़रत उनके पास गये और फ़रमाया" मेरे पास ऐसी चीज़ है जिसमें तुम सबके लिये भलाई है। क्या तुम ध्यान दोगे" वह बोले "ऐसी क्या चीज़ है" फ़रमाया" मैं अल्लाह का पैग़म्बर हूँ। बन्दों की ओर भेजा गया हूँ। उनको इधर बुलाता हूँ कि अल्लाह ही की इबादत (उपासना) करें और किसी को उसका साझी न ठहरायें मुझ पर ख़ुदा ने पुस्तक उतारी है" फिर उनके सामने इस्लाम के नियम वर्णन किये। क़ुरान भी पढ़कर सुनाया। अयास बिन मआज़ जो अभी नवयुवक था सुनते ही बोला। ऐ मेरी जाति! निस्सन्देह यह तुम्हारे लिये उस प्रयोजन से उत्तम है जिसके लिये तुम यहाँ आये हो अनस बिन राफ़े ने कंकड़ियों की मुट्ठी भर कर उठाई और अयास के मुख पर फेंक मारी और कहा बस चुप रह हम इस काम के लिये तो नहीं आये। रसूलुल्लाह उठकर चले गये। यह घटना "व आस" के युद्ध से पहले का है जो ओस और ख़ज़रिज में हुआ था। अयास लौट कर थोड़े दिनों में मर गया। मरते समय उसकी ज़बान पर परमात्मा की स्तुति और बड़ाई थी। मृतक के हृदय में हज़रत के उसी उपदेश से इस्लाम का बीज बोया गया था ♣ जो मरते समय फल फूल ले आया।

इन्हीं दिनों में ज़माद अज़्दी मक्के में आया यह यमन का रहने वाला था और अरब का प्रसिद्ध जादूगर था जब उसने सुना कि मुहम्मद पर जिन्नात का प्रभाव है तो उसने क़ुरैश से कहा कि मैं मुहम्मद का इलाज अपने झूमन्त्र से कर सकता हूँ वह नबी की सेवा में आया और कहने लगा मुहम्मद आओ तुम्हें एक मन्त्र सुनायें। हज़रत ने फ़रमाया पहले कुछ मुझसे सुन लो फिर हज़रत ने उसे सुनाया

"अल्हम्दो लिल्लाहे नह्मदोहू व नस्तईनोहू, मँय्यहदेहिल्लाहो फ़ला मुज़िल्ल लहू व मँय्युज़लिलहो फ़ला हादिय लहू व अशहदो अन ला इलाह इल्लल्लाहो वह्दहू ला शरीक लहू व अशहदो अन्न मुहम्मदन अब्दोहू व रसूलोहू। अम्माबअ्द" अर्थात् कुल स्तुति अल्लाह के लिये है। हम उसकी करुणा के लिये अनुग्रहीत हैं और प्रत्येक कार्य में उसी की सहायता चाहते हैं। जिसे ख़ुदा मार्ग दिखाता है उसे कोई कुमार्ग पर नहीं ले जा सकता और जिसे ईश्वर ही मार्ग न

☺ तरीख़ तिब्री पृ० २३२
♣ तारीख़ तिब्री पृ० २३४

दिखलाये उसका पथ प्रदर्शन कौन कर सकता है। मैं साक्षी देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त उपासना के योग्य कोई भी नहीं वह अद्वितीय है उसका कोई साक्षी नहीं। मैं यह प्रकट करता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और पैगम्बर है। इसके उपरान्त आशय यह है।

ज़माद ने यहीं तक सुना था कि वे अख्तियार होकर बोल उठा "इन शब्दों को फिर सुना दीजिये" दो तीन बार उसने इन्हीं शब्दों को सुना फिर बोला "मैंने बहुत से ज्योतिषी और जादूगर देखे और कवि भी देखे परन्तु ऐसा कलाम (वाणी) तो मैंने किसी से न सुना यह कलाम तो एक अथाह समुद्र की नाईं है। मुहम्मद परमात्मा के लिये अपना हाथ बढ़ाओ कि मैं इस्लाम स्वीकार करूं"।☾

मेराज

२७ रजब सन् १० नबवी को मिइराज हुई और अल्लाह ने अपने पैगम्बर को मलकूतुस्समावात वल अर्ज़ (आकाशों और पृथ्वी) की सैर कराई।

पहले मस्जिदुलहराम से बैतुलमुक़द्दस तक गये वहां इमाम बन कर पैगम्बरों को नमाज़ पढ़ाई। फिर आकाशों की सैर करते और नबियों से उनके स्थानों पर मिलते हुये "सिदरतुलमुन्तहा" और बैते-मड़मूर तक पहुँचे और फिर परमात्मा से अति निकट होने का गौरव प्राप्त हुआ।☙

तुफ़ैल बिन उमर दवसी का इस्लाम स्वीकार करना—इन्हीं दिनों में तुफ़ैल बिन उमर मक्के में आया। यह दौस क़बीले का सरदार था और उसके घराने में यमन के आस पास का राज था। तुफ़ैल एक प्रसिद्ध कवि और बड़ा बुद्धिमान व्यक्ति था। मक्के के लोगों ने नगर से बाहर जाकर उसका स्वागत किया। और उसकी बड़ी आवभगत और सेवा की। तुफ़ैल स्वयं वर्णन करते हैं कि "मुझे मक्के के लोगों ने यह भी बतलाया कि यह व्यक्ति (आं हज़रत) जो हम में से निकला है इससे बचना इसे जादू आता है। जादू के जोर से पिता पुत्र, पति पत्नी, और भाई भाई में मन मुटाव और विच्छेद उत्पन्न कर देता है। इसने हमारे जत्थे को तितर बितर और हमारे कामों को खराब कर दिया है। हम नहीं चाहते कि तुम्हारी जाति पर भी ऐसी ही कोई आपत्ति आ पड़े। इसलिये हमारी नसीहत यह है कि उसके पास न जाना न उसकी बात सुनना और न स्वयं उससे बात चीत करना"।

यह बातें ऐसे प्रभाव युक्त ढंग से उन्होंने मेरे मन में जमा दीं कि जब मैं काबे में जाना चाहता तो कानों में रुई ठूस लेता था जिस में कि मुहम्मद की आवाज़ की भनक भी मेरे कानों में न पड़ जाये। एक रोज़ मैं प्रातः काल ही काबे में गया। आं हज़रत नमाज़ पढ़ रहे थे खुदा की मर्ज़ी यह थी कि उनकी आवाज़ मेरे कानों तक पहुँची इसलिये मैंने सुना कि वह एक आश्चर्य जनक कलाम पढ़ रहे हैं। उस समय मैं अपने आप को धिक्कारने लगा कि मैं स्वयं कवि हूँ, पढ़ा लिखा हूं, भले बुरे का ज्ञान रखता हूं, फिर क्या कारण है? कौन सी रोक है कि मैं उसकी

☾ सहीह मुसलिम

☙ इसके बाद मूल पुस्तक में हज़रत शाह वलीउल्लाह साहेब का एक अरबी लेख मिइराज के सम्बन्ध में दिया गया है जिसका अनुवाद हमने यहाँ अङ्कित नहीं किया (अनुवादक)

बात न सुनूं। अच्छी बात होगी तो मानूंगा, बुरी होगी तो न मानूंगा। मैं यह विचार कर के ठहर गया। जब हज़रत लौट कर घर जाने लगे तो मैं भी पीछे पीछे हो लिया और जब घर पहुँचा तो आप से अपने मक्के आने, लोगों के बहकाने, कानों में रुई ठूंसने और आज आप का कलाम सुनने की घटना वर्णन की और प्रार्थना की कि कुछ और सुनाइये। हज़रत ने क़ुरान पढ़ा। ईश्वर की शपथ! मैंने ऐसा पवित्र कलाम कभी सुना ही न था जो इतनी भलाई और न्याय का उपदेश देता हो।"

ग़रज़ कि तुफ़ैल उसी समय मुसलमान हो गया। जिसे कुरैश बात बात में श्रीमान और स्वामी कहा करते थे वह बात की बात में मुहम्मद का सचा दास और सेवक बन गया। कुरैश को ऐसे व्यक्ति का मुसलमान होना बहुत खला।(1)

अबूज़र ग़फ़फ़ारी का ईमान लाना--अबूज़र ग़फ़फ़ारी अपने नगर यसरिब ही में थे कि उन्होंने आपके सम्बन्ध में कुछ उड़ती २ सी सूचना पाई। उन्हों ने अपने भाई से कहा तुम जावो और मक्के में इस व्यक्ति से मिल कर आओ और फिर मुझे बतलाओ। अबूज़र का भाई अनीस एक प्रसिद्ध विद्वान और कवि था, वह मक्के में आया। आंहज़रत से मिला फिर भाइ को जाकर बतलाया कि मैंने मुहम्मद को एक ऐसा व्यक्ति पाया जो भलाइयां के करने और बुराइयों से बचने की आज्ञा देता है।

अबूज़र बोले, इतनी बात से तो कुछ तसल्ली नहीं होती। अन्तकार स्वयं पैदल चल कर मक्के पहुँचे, यह न तो हज़रत को पहचानते थे और न किसी से पूछना चाहते थे। जमज़म् का जल पीकर काबे में ही लेट रहे। हज़रत अली आये। उन्हों ने पास खड़े होकर पूछा "यह तो कोई यात्री मालूम होता है"। अबूज़र बोले "हाँ" अली ने कहा अच्छा मेरे घर चलो यह रात को वहीं रहे। न हज़रत अली ने कुछ पूछा, न अबूज़र ने कुछ कहा। सवेरा हो गया। अबूज़र फिर काबे में आ गये। मन हज़रत की खोज में था, परन्तु किसी से पूछते न थे। अली फिर आये उन्हों ने फ़रमाया "शायद तुम्हें अपना ठिकाना नहीं मिला" अबूज़र बोले "हाँ" हज़रत अली फिर साथ ले गये अब उन्हों ने पूछा "तुम कौन हो और क्यों यहां आये हो?" अबूज़र ने कहा "किसी से कहो नहीं तो मैं बतला दूं।" अली ने बचन दिया अबूज़र ने कहा "मैंने सुना था कि इस नगर में एक व्यक्ति है जो अपने आपको नबी बतलाता है मैंने अपने भाइ को भेजा था वह यहाँ से संतोष जनक बात लेकर नहीं गया इसलिये मैं स्वयं आया हूँ।

हज़रत अली ने कहा "तुम भले आये और अच्छा हुआ कि मुझ से मिले। देखो मैं उन्हीं की सेवा में जा रहा हूँ मेरे साथ चलो। मैं पहले अन्दर जाकर देख लूंगा यदि इस वक्त मिलना उचित न होगा तो मैं दीवार के साथ लगकर खड़ा हो जाऊंगा मानो जूता ठीक कर रहा हूं।"

इस प्रकार अबूज़र अली के साथ हज़रत की सेवा में पहुचे और प्रार्थना की कि मुझे बतलाया जाये कि इस्लाम क्या है?

हज़रत ने इस्लाम के नियम वर्णन किये, अबूज़र उसी समय मुसलमान हो गये।

हज़रत ने फ़रमाया अबूज़र! तुम अभी इस बात को छिपाये रखो और अपने देश चले जाओ।

(1) ज़ादुल मआद भा० १ पृ० ४६३ व ४६४

जब तुम्हें हमारे प्रकट होने की सूचना मिल जाये तब आ जाना। अबूज़र बोले ईश्वर की शपथ मैं तो शत्रुओं में घोषणा कर के जाऊँगा अबूज़र काबे की ओर आये कुरैश इकट्ठा थे इन्हों ने सब को सुना कर ऊंची आवाज़ से कलमा पढ़ा। कुरैश ने कहा इस अधर्मी को मारो। लोगों ने मार डालने के लिये मारना शुरू किया, अब्बास आ गये उन्हों ने झुक कर देखा कहा मूर्खो! यह तो गिफ़ार क़बीले का आदमी है, जहां तुम व्यापार के लिये जाते हो और खजूरें लाते हो। लोग हट गये, अगले दिन उन्हों ने फिर कलमा सब को सुना कर पढ़ा फिर लोगों ने मारा और अब्बास ने उनको छुड़ा दिया और फिर यह अपने देश को चले आये। ☪

हिजरत के कारण

सन् ११ नबवी के हज्ज के समय का ज़िक्र है कि हज़रत ने रात के अंधेरे में मक्का नगर से कुछ मील उधर अक़बा स्थान※ पर लोगों को बातें करते सुना। इस आवाज़ पर हज़रत वहां पहुँचे। यह ६ व्यक्ति 卐 थे और यसरिब से आये थे। उनके सामने हज़रत ने परमात्मा की महिमा और बड़ाई वर्णन की। उन के प्रेम को खुदा के साथ गरमाया, मूर्त्तियों से घृणा दिलाई, सद्कर्म और पवित्रता की शिक्षा देकर पापों और बुराईयों से रोका, क़ुरान शरीफ़ पढ़ कर उनके दिलों को प्रकाशमान किया। यह लोग यद्यपि मूर्त्ति पूजक थे परन्तु उन्हों ने अपने नगर के यहूदियों को बार बार यह ज़िक्र करते सुना था कि शीघ्र ही एक नबी प्रकट होने वाला है *। हज़रत के उपदेश सुन कर वह उसी समय विश्वास ले आये और जब अपने देश लौट कर गये तो सत्य धर्म के सच्चे प्रचारक बन गये।

☪ किताबुलमनाक़िब मदारिजुन्नबुव्वत में है कि हज़रत अबूज़र लगभग एक महीने तक ज़मज़म का पानी ही पीकर रहे इस पानी ने पानी और भोजन दोनों का काम किया।

※ यह स्थान हिरा और मिना के बीच में है।

卐 (१) अबू इमाम: असअद बिन ज़िरार: (२) औफ़ बिन हारिस (३) इब्ने मालिक (४) इब्ने आमिर बिन हदीद: (५) अक़्ब: बिन आमिर (६) सअ़द बिन् रबीऽ।

* ज़ादुल् मआद भा० १ पृ० ३०३

+ पाठक! "वह नबी" का आशय समझने के लिये इन्जील योहन्ना पर्व १ को १६ से २८ तक पढ़ें, "योहन्ना ने इक़रार किया कि मैं मसीह नहीं हूँ उन्हों ने पूछा क्या तू इल्यास है उसने कहा मैं नहीं हूँ सो तू "वह नबी" है उसने उत्तर दिया नहीं' इससे यह मतलब निकला कि यहूदी विद्वान उस समय तीन पैग़म्बरों के आने और प्रकट होने का मार्ग जोह रहे थे। (१) इल्यास (२) मसीह "वह नबी"। इन्जील स सिद्ध है कि योहन्ना ने यीसु को मसीह बतलाया और मसीह ने योहन्ना को इल्यास कहा अब तीसरे का प्रकट होना बाक़ी था जो प्राचीन ग्रन्थों में "वह नबी" और मुसलमानों की भाषा में "मुहम्मद" के प्यारे शब्द से याद किया गया है। यदि आँहज़रत "वह नबी" नहीं तो पादरी बतलायें कि आँहज़रत के अतिरिक्त मसीह के बाद "वह नबी" कहलाने वाला कौन हुआ?

"वह नबी"—वे हर एक को यह सुसमाचार सुनाते थे कि "वह नबी" + जिसका कुल संसार को इन्तिजार था आ गया, हमारे कानों ने उसकी बातें सुनीं, हमारी आँखों ने उसके दर्शन किये और उसने हमको ज़िन्दा रहने वाले ख़ुदा से मिला दिया कि अब संसार का जीवन और मृत्यु हमारे सामने तुच्छ हैं।

बैअते-अक़बा ऊला

अक़बा की प्रथम दीक्षा

इन लोगों के सुसमाचार ले जाने का परिणाम यह हुआ कि मदीने के घर घर में हज़रत की चर्चा होने लगी और अगले वर्ष सन् १२ नबवी में मदीने के १२ व्यक्ति मक्के में आये और हज़रत के पवित्र हाथ पर ईमान लाये। इन लोगों ने जिन बातों की प्रतिज्ञा की थी वे यह हैं।

बैअत की शर्तें-(१) हम एक परमात्मा की अराधना करेंगे और किसी को उसका साझी न ठहरायेंगे।

(२) हम चोरी और व्यभिचार नहीं करेंगे।

(३) हम अपनी संतान (पुत्रियों) को घात नहीं करेंगे।

(४) हम किसी पर झूठा अभियोग (तुहमत) नहीं लगायेंगे।

(५) किसी की चुग़ली न खायेंगे।

(६) हम पैग़म्बर का अनुसरण प्रत्येक भली बात में करेंगे।

जब यह लोग लौट कर जाने लगे तो हज़रत ने उनकी शिक्षा के लिये मुसइब बिन उमरै को साथ कर दिया। मुसइब बिन उमरै अमीर घराने के लाडले पुत्र थे, जब घोड़े पर सवार होकर निकलते तो आगे पीछे दास चला करते थे, शरीर पर दो सौ रुपये से कम के वस्त्र कभी न पहनते, परन्तु अब उनको इस्लाम में आकर आत्मिक सुख प्राप्त हुआ तब उन्होंने शारीरिक सजावटों को त्याग दिया। जिन दिनों यह मदीने में सत्य धर्म का प्रचार किया करते थे उन दिनों उनके कंधे पर केवल कम्बल का एक छोटा सा टुकड़ा होता था जिसे आगे की ओर बबूल के काँटों से अटका लिया करते थे।

बैअते अक़बा-सानिया

अक़बः की द्वितीय धर्म दीक्षा

मुसइब मदीने में असअद बिन ज़िरार के घर जाकर उतरे थे उनको मदीने वाले "अल मुक़री"☙ (पढ़ाने वाला गुरु) कहा करते थे। एक दिन मुसइब व असअद और कुछ मुसलमान "बीर मरक" पर इकट्ठा हुये यह विचार करने के लिये कि "बनी अब्दुल् अशहल" और "बनी ज़फ़र" में किस प्रकार इस्लाम की मनादी की जाये।

सअद बिन मआज़ और उसैद बिन हसीर इन क़बीलों के सरदार थे और अभी मुसलमान न हुए थे उन्हें भी ख़बर हुई सअद बिन् मआज़ ने उसैद बिन् हसीर से कहा "तुम किस ग़फ़लत में पड़े हो। देखो यह दोनों हमारे घरों में आकर हमारे अज्ञानियों को बहकाने लगे हैं तुम जाओ उन्हें भड़क दो और कह दो कि हमारे मुहल्लों में फिर कभी न आयें मैं स्वयं ऐसा करता परन्तु इसलिए चुप हूँ कि असअद मेरी मौसी का पुत्र है।

☙ तिर्मी पृ० २३५

उसैद बिन हसीर अपना हथियार लेकर चला। असुअद ने मुसुइब से कहा 'देखो यह क़बीले का सरदार आ रहा है। ख़ुदा करे कि वह तेरी बात मान जाये, मुसुइब ने कहा कि यदि वह आकर बैठ गया तो मैं उससे जरूर बात करूँगा। इतने में उसैद आ पहुँचा और खड़ा २ गालियां देता रहा और यह भी कहा कि तुम हमारे मूर्ख और अज्ञानियों को फुसलाने आये हो।

मुसुइब के धर्मोपदेश पर उसैद का ईमान लाना--

मुसुइब ने कहा "पहले आप बैठ कर कुछ सुन तो लें। यदि अच्छा मालूम हो स्वीकार करें, बुरा लगे उसे छोड़ जायें। उसैद ने कहा, ख़ैर क्या हर्ज है। मुसुइब ने समझाया कि इस्लाम क्या है? फिर उसे क़ुरान शरीफ़ भी पढ़ कर सुनाया। उसैद ने सब कुछ चुप चाप सुना। अन्त में कहा "हां यह तो बतलाओ कि जब कोई तुम्हारे धर्म में आना चाहता है तो तुम क्या करते हो? उन्हों ने कहा:- अश्नान करा कर पवित्र वस्त्र पहना कर कलमा पढ़ा देते हैं और दो रकअ़त नफ़िल (नमाज़) पढ़वा देते हैं। उसैद उठा, कपड़े धोये कलमा पढ़ा और नफ़िल नमाज़ अदा की। फिर कहा मेरे पीछे एक व्यक्ति और है यदि वह तुम्हारा अनुयायी हो गया तो फिर कोई तुम्हारा विरोधी न रहेगा और मैं जाकर अभी तुम्हारे पास उसे भेजे देता हूँ यह कह कर उसैद चला गया। उधर सअ्द बिन मआ़ज़ उसके इन्तिज़ार में था। दूर से देखते ही बोला "देखो उसैद का वह चिहरा नहीं जो जाते समय था" जब उसैद आ बैठा तो सअ्द ने पूछा कि क्या बात हुई? उसैद बोला "मैंने उन्हें समझा दिया है और वह कहते हैं कि हम तुम्हारी मर्ज़ी के विरुद्ध कुछ न करेंगे परन्तु वहां तो एक और झगड़ा पैदा हो गया। बनू हारिस वहां आ गये थे और वह असुअद बिन ज़रारः को इस लिये क़त्ल करने पर तय्यार हैं कि वह तेरा भाई है। यह सुन कर सअ्द बिन मआ़ज़ क्रोध में भर गया और अपना हथियार सँभाल कर खड़ा हो गया। उसे भय था कि बनू हारिस उसके भाई को मार न डालें। उसने चलते समय यह भी कहा कि उसैद तुम तो कुछ भी काम न बना कर आये। सअ्द वहां पहुँचा देखा कि मुसुइब और असुअद दोनों शान्ति पूर्वक बैठे हुये हैं। सअ्द समझा कि उसैद ने मुझे इनकी बातें सुनने के लिये भेजा है यह विचार आते ही उन्हें गालियां देने लगा और असुअद से यह भी कहा कि यदि मेरे तुम्हारे बीच नातेदारी न होती तो तुम्हारी क्या मजाल थी कि हमारे मुहल्ले में चले आते। असुअद ने मुसुइब से कहा कि देखो यह बड़े सरदार हैं और यदि इनको समझा दो तो फिर कोई दो व्यक्ति भी तुम्हारे विरोधी न रह जायेंगे। मुसुइब ने सअ्द से कहा आइये बैठ जाइये! कोई बात करें। भली मालूम हो स्वीकार कीजिये नहीं तो इन्कार कर दीजिये। सअ्द हथियार रख कर बैठ गया। मुसुइब ने उसके आगे इस्लाम का तत्व वर्णन किया और क़ुरान शरीफ़ भी सुनाया। अन्त में सअ्द ने भी वही प्रश्न किया जो उसैद ने किया था फिर सअ्द भी उठा, अश्नान किया कपड़े धोये कलमा पढ़ा, नफ़िल नमाज़ अदा की, और हथियार लेकर अपनी सभा में आया। आते ही अपने क़बीले के लोगों को पुकार कर कहा हे बनी अब्दुल्अश्हल! तुम लोगों की मेरे विषय में क्या सम्मति है?

सब ने कहा तुम हमारे सरदार हो। तुम्हारी सम्मति तथा तुम्हारी खोज विशुद्ध और उत्तम होती है।

सअ्द बोला :—सुनो चाहे कोई पुरुष हो चाहे स्त्री मैं उस से बात करना हराम समझता हूँ जब तक कि वह अल्लाह और उसके रसूल मुहम्मद पर ईमान न लाये। उसके कहने का यह प्रभाव पड़ा कि बनी अब्दुल्अशहल में कोई व्यक्ति इस्लाम से ख़ाली न रहा और सरा क़बीला एक दिन में मुसलमान हो गया।

मुसअ्ब की शिक्षा से इस्लाम की चर्चा इसी प्रकार अन्सार के कुल कबीलों में फैल गई और उसका परिणाम यह हुआ कि आगामी वर्ष सन् १३ नबवी में ७३ पुरुष और दो स्त्रियां मिल कर मदीने के क़ाफ़िले में मक्के आये उनको मदीने के मुसलमानो ने इसलिये भेजा था कि पैग़म्बर को अपने नगर में आने का निमन्त्रण दें और इस निमन्त्रण की स्वीकृति प्राप्त करें।

सत्यवादियों का यह जत्था उसी पवित्र स्थान पर जहां दो वर्ष पहले मदीने के प्रेमी हाज़िर हुआ करते थे रात की अँधियारी में पहुँच गया। और परमात्मा का सच्चा पैग़म्बर भी अपने चचा अब्बास को साथ लिये हुये वहां जा पहुँचा ☙

हज़रत अब्बास ने (जो अभी मुसलमान न हुये थे) उस समय एक बात काम की कही उन्होंने कहा लोगो तुम्हें मालूम है कि मक्के के क़ुरैश मुहम्मद की जान के शत्रु हैं यदि तुम उन से कोई प्रतिज्ञा करने लगो तो पहले समझ लेना कि यह एक कठिन काम है। मुहम्मद से प्रतिज्ञा करना लाल और काली लड़ाइयों ❦ को बुलावा देना है जो कुछ करो सोच समझ कर करो नहीं तो अच्छा है कि कुछ भी न करो।

इन सत्यवादियों ने अब्बास को कुछ भी उत्तर न दिया तो हज़रत से प्रार्थना की कि "हुज़ूर कुछ फ़रमायें"

अक़बः-सानियः में हज़रत का उपदेश—

हज़रत ने उनको ख़ुदा का कलाम जो ख़ुदा का पैग़ाम मनुष्य के लिये है पढ़ कर सुनाया जिसके सुनने से वह सच्चाई और ईमान के प्रकाश से भरपूर हो गये।

अब सब लोगों ने प्राथना की कि ख़ुदा का नबी हमारे नगर में चल कर बसे जिसमें हमें पूरा पूरा ज्ञान प्राप्त हो सके।

नबी ने फ़रमाया :-(१) क्या तुम सत्य धर्म के प्रचार में मेरी पूरी पूरी सहायता करोगे ?

(२) और जब मैं तुम्हारे नगर में जा बसूं क्या तुम मेरी और मेरे साथियों की सहायता अपने स्त्री बच्चों की नाईं करोगे।

ईमान वालों ने पूछा :--ऐसा करने का हम को बदला क्या मिलेगा ?

नबी ने फ़रमाया "स्वर्ग" (जो मुक्ति और परमात्मा की रज़ामन्दी का स्थान है)।

ईमान वालों ने प्रार्थना की :--ऐ ख़ुदा के रसूल यह तो हमारी तसल्ली फ़रमा दीजिये कि हुज़ूर हमको कभी छोड़ तो न देंगे।

☙ तिब्री पृ० २४४

❦ लाल लड़ाइयों से आशय ऐसी लड़ाइयां हैं जिनमें खूब रक्तपात हों और काली लड़ाइयों से वह लड़ाइयाँ हैं जिनका परिणाम काला भयानक हो।

आपने फ़रमाया :--नहीं, मेरा जीना और मेरा मरना तुम्हारे साथ होगा।

अन्तिम वाक्य सुनने के साथ ही उन सत्य धर्म प्रिय व्यक्तियों ने सहर्ष इस्लाम स्वीकार किया। बराऽ बिन मऽरुर पहले धर्मात्मा हैं जिन्हों नें इस रात सब से पहले इस्लाम स्वीकार किया। एक दुष्टात्मा ने पहाड़ की चोटी से यह घटना देखी और मक्के वालों को पुकार कर कहा :--लोगो! आओ देखो मुहम्मद और उसके जत्थे के लोग तुम से युद्ध के लिये परामर्श कर रहे हैं।

हज़रत ने फ़रमाया :--तुम इस आवाज़ की चिन्ता न करो। अब्बास बिन उबादह ने कहा "यदि हुज़ूर की आज्ञा हो तो हम कल ही मक्के वालों को अपनी तलवार के जौहर दिखा दें।

रसूलुल्लाह ने फ़रमाया :-- नहीं मुझे युद्ध की आज्ञा नहीं"

१२ नक़ीब—इसके उपरान्त हज़रत ने उनमें से १२ व्यक्ति चुने और उनका नाम "नक़ीब" रखा और यह भी फ़रमाया कि जिस प्रकार मरियम के पुत्र ईसा ने अपने लिये १२ व्यक्तियों को चुन लिया था उसी प्रकार मैं तुम्हें चुनता हूँ जिसमें कि तुम मदीने जाकर धर्म का प्रचार करो मक्के वालों में मैं स्वयं यह काम करूंगा।

उनके नाम यह हैं (१) ख़रजज क़बीले के ६ व्यक्ति असअद बिन ज़रारा, रफ़िऽ बिन मालिक, उबादह बिन सामित (यह तीनों अक़ब-ऊला में भी थे) सऽद बिन रबीअ, मुन्ज़िर बिन उमर, अब्दुल्लाह बिन रवाहा बराऽ बिन मारूर, अब्दुल्लाह बिन उमर बिन हराम, सऽद बिन उबादः।

औस क़बीले के तीन व्यक्ति थे उसैद बिन हसीर सऽद बिन खसीमः, अबुलहशीम बिन तीहान।

क़ुरैश ने यसरिब के दो मुसलमानों को पकड़ लिया-क़ुरैश को दिन निकलने के बाद कुछ भनक सी मालूम हुई। वह मदीने वालों की खोज में निकले परन्तु उनका काफ़ला प्रातःकाल ही रवाना हो चुका था। क़ुरैश ने सऽद और मुन्ज़िर को वहाँ पाया। मुन्ज़िर तो भाग गया और उनके हाथ न आया मगर सऽद को उन्हों ने पकड़ लिया। उसकी सवारी के ऊंट का तंग खोल कर उसकी मुश्कें बांध दीं। मक्के में लाकर उसे मारते और उसके सर के लम्बे २ केशों को खींचते रहे। यह सऽद वही हैं जिनको नबी ने १२ व्यक्तियों में से एक नक़ीब बनाया था। उनका अपना कथन है कि "जब क़ुरैश उन्हे मार पीट रहे थे तो एक सुर्ख़ सफ़ेद चिहरे का भला सा मालूम होने वाला व्यक्ति मुझे अपनी ओर आता दिखाइ दिया। मैंने अपने दिल में कहा कि यदि इस जाति में किसी से भलाई हो सकती है तो वह यही होगा। जब वह मेरे निकट आ गया तो उसने बड़े ज़ोर से मेरे मुंह पर तमाँचा लगाया उस समय मुझे विश्वास हो गया कि इनमें कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं जिससे भलाई की आशा की जा सके। इतने में एक और व्यक्ति आया। उसे मेरी दशा पर दया आ गई वह बोला "क्या क़ुरैश के किसी व्यक्ति से तेरा मेल जोल नहीं है और किसी से तेरी प्रतिज्ञा और संध नहीं। मैंने कहा "हां ज़ुबैर और हारिस व्यापार के लिये हमारे यहाँ जाया करते हैं और मैंने कई बार

वह लिखा हुआ पूरा हुआ कि प्रकाश अंधकार में चमकता है इन्जील-यौहन्ना १/५

ज़ादुल मआद भा० १ पृ० ३०४

उनकी रक्षा की है उसने कहा फिर इन्हीं दोनों के नाम से अपने सम्बन्ध की तुझे घोषणा करना चाहिये मैंने ऐसा ही किया फिर वही व्यक्ति उन दोनों के पास गया और उन्हें बतलाया कि ख़ज़रज का एक व्यक्ति पिट रहा है और वह तुम्हारा नाम लेकर तुम्हें पुकार रहा है। इन दोनों ने पूछा वह कौन है? उसने बतलाया "सअ्द" वह बोले हां, उसका हम पर उपकार भी है। उन्हों ने आकर सअ्द को छुड़ा दिया और वह धर्मात्मा मदीने चला गया। ☪

मुसलमानों को देश त्यागने की आज्ञा—अक़ब:-सानिय: की बैअ्त के बाद हज़रत ने उन मुसलमानों को जो अभी मक्के से बाहर न गये थे परन्तु जिन पर अब इतने अत्याचार होने लगे थे कि प्रिय जन्म भूमि अब उनके लिये ज्वालामुखी पहाड़ की नाईं बन गई, मदीने चले जाने की आज्ञा दे दी। इन धर्मात्माओं को घर बार बाप भाई बीबी बच्चे और अन्य नातेदारों के छोड़ने का तनिक भी शोक न था बल्कि ख़ुशी यह थी कि मदीने पहुँच कर एक परमात्मा की आराधना पूरी स्वतन्त्रता से कर सकेंगे।

हिजरत में कठिनाइयाँ--हिजरत केरन वालों और घर छोड़ कर जाने वालों को मक्के के क़ुरैश की कड़ी रुकावटों का सामना करना पड़ा। (१) सुहैब रूमी जब हिजरत कर के जाने लगे तो अधर्मियों ने उन्हें घेर लिया कहा सुहैब! जब तू मक्के में आया था ग़रीब और निर्धन था। यहां ठहर कर तूने हज़ारों कमाया। आज यहां से जाता है और चाहता है कि सब धन लेकर चला जाये। यह तो कभी नहीं होने का।

सुहैब ने कहा "अच्छा यदि मैं अपना सारा धन तुम्हें दे दूँ तब मुझे तुम जाने दोगे।

क़ुरैश बोले "हाँ"

हज़रत सुहैब ने सारा धन उन्हें दे दिया और मदीने चले गये। आंहज़रत ने यह घटना सुन कर फ़रमाया "इस सौदे में सुहैब फ़ायदे में रहा। ☘

(२) हज़रत उम्मे सलम: कहती हैं "मेरे पति अबू सलम: ने हिजरत का इरादा किया मुझे ऊँट पर चढ़ाया मेरी गोद में मेरा पुत्र सलम: था। हम जब चल पड़े तो बनी मुग़ीरह ने आकर अबू सलम: को घेर लिया। कहा तू जा सकता है परन्तु हमारी लड़की को नहीं ले जा सकता। अब बनी अब्दुल् असद

☪ हज़रत सअ्द के वृत्तान्त से क्या परिणाम निकलता है? क्या सबक़ मिलता है? कि इस्लाम के साथ ही परमात्मा की ओर से परीक्षा आरम्भ हो जाती है। भूक प्यास की परीक्षा, जाति और देश की शत्रुता की परीक्षा, शरीर के दुखों और धन सम्पत्ति की हानि की परीक्षा आदि आदि और जब कोई इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो जाता है तब वह परमात्मा के उस अमर वचन का पात्र ठहर जाता है जो क़ुरान इन्जील और तौरेत (आदि) में सत्य पुरुषों से किया गया है कि उसका यह लोक भी सुधर जायेगा। क्या कोई इन धर्मात्माओं के सम्बन्ध में जो ऐसी परीक्षाओं के बाद इस्लाम के मीठे फल सिद्ध हुए कह सकता है कि वह तलवार के जोर से मुसलमान बनाये गये थे अथवा यह कह सकता है कि ऐसे धर्मात्मा किसी दूसरे को तलवार के जोर से मुसलमान किया करते थे।

☘ सीरत इब्ने-हुशाम पृ० १६८—सुहैब सं० ३८ ई० में ७३ वर्ष की आयु में मदीने में स्वर्गलोक सिधारे।

भी आ गये, उन्होंने अबू सलमः से कहा तू जा सकता है मगर बालक को जो हमारे क़बीले का बालक है नहीं ले सकता। ग़रज़ कि उन्होंने अबू-सलमः से ऊंट की मुहार लेकर ऊंट को बिठा दिया, बनी अब्दुल् असद तो गोद के बालक को छीनकर ले गये और बनी मुग़ीरः मुझे छीन ले गये। अबू-सलमः जो धर्म के लिये हिजरत करना आवश्यक समझता था, स्त्री बच्चे के बिना ही चला गया। उम्म-सलमः रोज़ शाम को उसी स्थान पर जहां वह बालक और पति से पृथक की गई थी, पहुँच जाती और घण्टों रो धो कर लौट आती थी। एक वर्ष इसी प्रकार से रोते पीटते व्यतीत होगया। अन्त में उसके एक चचेरे भाई को दया आई, उस ने दोनों क़बीलों से कह सुनकर उम्म-सलमः को आज्ञा दिला दी कि वह अपने पति के पास चली जाये। बालक भी दे दिया गया। उम्म-सलमः एक ऊंट पर सवार होकर अकेले मदीने को चलदी। *

ऐसी ही कठिनाइयों का सामना लगभग प्रत्येक मुसलमान को करना पड़ा था।

(३) हज़रत उमर फ़ारूक़ का कथन है कि अय्याश और हिशाम सहाबी भी उनके साथ मदीने चलने को तैयार हुये थे। अय्याश बिन अबी रबीअः तो रवानगी के समय नियुक्त स्थान पर पहुंच गये परन्तु हिशाम बिन अबी आसी के जाने की ख़बर अधर्मियों को होगई, उनको क़ुरैश ने पकड़ कर क़ैद कर दिया।

अय्याश मदीने जा पहुँचे थे कि अबू जिहल अपने भाई हुरस सहित मदीने पहुँचा। अय्याश इनके चचेरे भाई थे और तीनों की एक माता थीं। अबू जिहल और हुरस ने कहा कि तुम्हारे चले आने के पश्चात् माता की दशा बुरी हो रही है। उसने क़सम खा ली है कि अय्याश का मुख देखने तक न सिर में कंघी करूंगी, न छाया में बैठूंगी। इसलिये भाई तुम चलो और माता को तसल्ली देकर फिर लौट आना। उमर फ़ारूक़ ने कहा "अय्याश! मुझे तो यह धोखा जान पड़ता है। तुम्हारी माता के सिर में कोई लीख भी पड़ गई तो भी वह कंघी कर लेगी और मक्के की धूप ने तनिक भी ख़बर ली तो वह स्वयं ही छाया में जा बैठेगी। मेरी सम्मति तो यह है कि तुम को जाना नहीं चाहिये।"

अय्याश बोले "नहीं मैं माता की क़सम पूरी करके लौट आऊंगा।"

उमर फ़ारूक़ बोले—अच्छा यदि यही राय है तो सवारी के लिये मेरा ऊंट ले जाओ। इसकी चाल तेज़ है यदि मार्ग में तुम्हें तनिक भी सन्देह जान पड़े तो तुम इस सवारी द्वारा सरलता पूर्वक इनके फंदे से बच सकोगे। अय्याश ने ऊंट ले लिया। ये तीनों चल पड़े। एक दिन मार्ग में (मक्के के निकट) अबू जिहल ने कहा भाई हमारा ऊंट तो बोल गया है, अच्छा हो कि तुम मुझे अपने साथ बिठा लो। अय्याश बोले अच्छा। जब अय्याश ने अपनी सवारी बिठाई तो दोनों भाइयों ने उसे पकड़ लिया। मुश्कें कस लीं और मक्के में इसी प्रकार लेकर दाख़िल हुये।

ये दोनों बड़ी शान से कहते जाते थे कि देखो मूर्खों और बेवक़ूफ़ों को इस प्रकार दण्ड दिया करते हैं। अब अय्याश को भी हिशाम के साथ क़ैद कर दिया गया।

जब आंहज़रत मदीने पहुंच गये तब हुज़ूर की अभिलाषा पूरी करने के लिये वलीद बिन मुग़ीरः

* सीरत इब्न हिशाम पृष्ठ १६८।

मक्के में आये और क़ैदखाने से दोनों को रातों रात निकाल कर ले गये। *

इन तीन घटनाओं से पाठक यह जान सकेंगे कि हिजरत के समय भी मुसलमानों को कैसी कड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ता था। घर छोड़ना भी कष्ट और दुःख सहे बिना सरल न था।

हिजरत—जब मुसलमान मक्के में गिनती के रह गये और प्रसिद्ध सहाबियों में से केवल अबूबक्र और अली ही बाकी रहे। तो मक्के के क़ुरैशियों ने कहा कि अब मुहम्मद को घात कर डालने का अच्छा अवसर है। क़त्ल के उपाय पर विचार करने के लिये "दारुन्नदवः" में गुप्त रूप से सभा हुई। दारुन्नदवः को क़ुसय्यी बिन किलाब ने स्थापित किया था। यह मानो क़ुरैश की पार्लियामेंट थी। इस सभा में नज्द का एक अनुभवी बूढ़ा शैतान भी आकर सम्मिलित हुआ था। और क़ुरैश के प्रसिद्ध क़बीलों में से निम्नलिखित प्रसिद्ध सरदार उपस्थित थेः—

(१) बनू अब्द शम्स में से रबीयः के पुत्र, शैबः व उक़्बः, और अबूसुफ़यान बिन हरब।

(२) बनू नौफ़ल में से तुऐमः बिन अदी, जुबैर बिन मुतइम हारिस बिन आमिर।

(३) बनू अब्दुद्दार में से नस्र बिन हारिस बिन कलदा।

(४) बनू असद बिन अब्दुलउज़्ज़ा में से अबुल् बख़्तरी बिन हिशाम, जमअः बिन अस्वद, हकीम बिन हिज़ाम।

(५) बनी मख़्ज़ूम में से अबू जिहल बिन हिशाम।

(६) बनू सह्म में से हज्जाज के पुत्र।

(७) बनू जुमऽ में से—उमय्यः बिन ख़लफ़। †

एक बोला—उसे पकड़ कर गले में तौक़ व जन्जीर डाल कर एक मकान में क़ैद कर दो, और मकान का द्वार "तेग़ा" कर दो जिसमें कि यह भी ज़ुहैर और नाबिग़ा कवियों की मृत्यु का स्वाद चखता हुआ मर जाये।

बूढ़ा नज्दी बोला—नहीं यह ठीक नहीं। मुहम्मद के क़ैद होने की ख़बर बाहर निकले बिना न रहेगी, मुसलमान उसे भी छुड़ा ले जायेंगे और शक्ति पाकर तुम्हें भी मार डालेंगे।

दूसरा बोला—एक दुष्ट ऊँट पर बिठला कर हम उसे यहां से निकाल देंगे। हमारी तरफ़ से कहीं जाये। मरे अथवा जिये।

बूढ़ा नज्दी बोला—नहीं यह राय भी ठीक नहीं है। क्या तुम मुहम्मद की मीठी बातों को भूल गये हो, क्या तुम नहीं देखते कि वह जिससे बात करता है उसको अपना बना लेता है। वह हृदयों पर कैसी सरलता से क़ब्ज़ा जमा लेता है। जहां जायगा वहीं

* सीरत इब्न हिशाम भाग १ पृ० १६७

† क़ुरान शरीफ़ में है "योकीदून कैदंव्व अकीदो कैदा, फ़महहिलिल्काफ़ेरीन अम् हिलहुम् रुवैदा" अर्थात् "वह उपाय करते हैं और ख़ुदा भी उपाय करता है। हे नबी! आप उनको नर्मी के साथ छोड़ दीजिये।" इस आयत के साथ २ उन १४ सरदारों का परिणाम आप देखिये कि ११ सरदार एक दिन में (बद्र के युद्ध में) मारे गये थे, और तीन अबू सुफ़यान बिन हरब जुबैर बिन मुतइम और हकीम बिन हिज़ाम जो मारे जाने से बचे वे अन्त में मुसलमान हो गये थे।

के रहने वाले उसके साथ लग जायेंगे, और वे अन्त में तुम से अपने नबी का बदला लेकर छोड़ेंगे।

नबी के क़त्ल की तदबीर तथा क़ातिलों का चुनाव—अन्त में अबू जिहल ने ऐसी तदबीर बतलाई जिसे कुल सभा ने सर्व सम्मति से स्वीकार कर लिया। तजवीज़ और तदबीर यह थी :—

(१) अरब के प्रत्येक प्रसिद्ध क़बीले से एक एक युवक चुना जाये।

(२) ये सब वीर रात के अंधेरे में मुहम्मद के घर को घेर लें।

(३) जब मुहम्मद सवेरे की नमाज़ के लिये बाहर निकलें उस समय ये सब वीर अपनी २ तलवारों से उस पर वार करें और उसकी बोटी बोटी कर दें।

इस उपाय से यह लाभ बतलाया गया कि जिस क़त्ल में समस्त क़बीले सम्मिलित होंगे उस का बदला न तो मुहम्मद का क़बीला ले सकेगा और न मुहम्मद को सच्चा मानने वाले कुछ झगड़ा उठा सकेंगे।

मनुष्य की तदबीर के सम्मुख परमात्मा की तदबीर—मानव उपाय के सम्मुख अब ईश्वरीय शक्ति तथा सहायता को देखिये कि जब रात को इन लोगों ने नबी का घर आ घेरा, उस समय ख़ुदा के रसूल ने अपने प्रिय भाई अली से फ़रमाया "तुम मेरे बिछौने पर मेरी चादर ओढ़ कर सो रहो। तनिक भी चिन्ता न करना। कोई व्यक्ति तुम्हारा बाल भी टेढ़ा न कर सकेगा।

हज़रत अली तो तलवारों के साये में निश्चिन्त होकर मजे की नींद सो रहे। और ख़ुदा का रसूल ख़ुदा की रक्षा में बाहर निकला और दिल के अन्धों की आंखों में धूल झोंकता हुआ और सूरए 'यासीन' पढ़ता हुआ साफ़ निकल गया। किसी ने आप को जाते न देखा।* यह घटना २७ सफ़र सन १३ नबवी रविवार (१२ सितम्बर ६२१ ई०) की है।

ख़ुदा का नबी अपने प्रिय मित्र अबूबक्र के घर पहुँचा। उन्होंने तुरन्त ही यात्रा का आवश्यक सामान ठीक किया। अबूबक्र की पुत्री असमाऽ ने अपना कमर बन्द काट कर सतुवों के थैले का मुंह बांधा। उसी रात के अंधेरे में दोनों चल पड़े। मक्के से चार पांच मील की दूरी पर "सूर" पहाड़ी है, उसकी चढ़ाई बहुत कठिन है और मार्ग पथरीला है। नुकीले पत्थर हज़रत के नाज़ुक पैरों को घायल कर रहे थे, और ठोकर लगने से भी कष्ट होता था। अबूबक्र ने आप को कंधे पर उठा लिया अन्त में एक ग़ार (खोह) तक पहुंचे। अबूबक्र ने हज़रत को बाहर ठहराया और स्वयं भीतर जाकर उसे साफ़ किया। शरीर पर पहिने हुये वस्त्र फाड़ फाड़ कर ग़ार के सुराख़ बन्द किये, और फ़िर निवेदन किया या रसूलिल्लाह तशरीफ़ लाइये।

* धर्मात्मा पुरुष हज़रत दाऊद की तरह आंहज़रत का यह दृष्टान्त है "दाऊद खिड़की से भाग के बच रहा, मेकल ने एक पुतला चारपाई पर लिटा रक्खा और बकरियों की खाल तकिये की जगह रख दी और ऊपर से चादर उढ़ा दी, जब साऊल ने सिपाही दाऊद को पकड़ने को भेजे तो यह बोली कि वह बीमार है।" (अन्त तक) किताब सिमोएल १।१२—१३—१४।

उधर सवेरा होते ही हजरत अली नींद से चौंके। क़ुरैश ने निकट जाकर उन्हें पहचाना। पूछा मुहम्मद कहां है? उत्तर दिया मुझे क्या खबर। क्या मैं चौकसी कर रहा था। तुम लोगों ने उन्हें निकल जाने दिया और वे निकल गये। क़ुरैश क्रोध और खेद के कारण अली पर पल पड़े उनको मारा, और पकड़कर क़ाबे तक लाये और थोड़ी देर तक कैद रखा फिर छोड़ दिया।*

अब वे लोग अबूबक्र के घर आये। द्वार खटखटाया। अबूबक्र की पुत्री असमाऽ बाहर निकली। अबूजिह्ल ने पूछा लड़की तेरा पिता कहां है? वह बोली मुझे नहीं मालूम। इस पर कठोर हृदय अबू जिह्ल ने ऐसा तमाचा खींच कर मारा कि असमाऽ के कान की बाली नीचे गिर गई।†

एक कन्या की ईमानी शक्ति—हिजरत के विषय में एक छोटी सी बात बताने के योग्य है। अबू बक्र सिद्दीक़ की पुत्री असमाऽ कहती हैं कि "मेरे पिता जाते हुये घर से नक़द रुपया सब उठा ले गये थे यह पांच अथवा ६ हजार रुपये थे। पिता के चले जाने के बाद मेरे दादा अबू क़हाफ़ा‡ ने कहा पुत्री! मैं समझता हूँ कि अबू बक्र ने तुझ को दुहरी मुसीबत में डाल दिया है, वह स्वयं भी चला गया और धन माल भी ले गया"।

मैंने कहा नहीं दादा जान! वह हमारे लिये काफ़ी रुपया छोड़ गये हैं।

असमाऽ ने एक पत्थर लिया उस पर कपड़ा लपेटा और जिस गढ़े में रुपया हुआ करता था। वहां रख दिया। फिर दादा का हाथ पकड़ कर ले गई। अबू क़हाफ़ः की आंखें जाती रही थीं, कहा दादा जान हाथ लगाकर देखो कि धन मौजूद है। बूढ़े ने उसे टटोला फिर कहा खैर जब तुम्हारे पास काफ़ी धन है तो अबूबक्र के जाने का अधिक शोक नहीं। यह अबूबक्र ने अच्छा किया और मैं समझता हूँ कि तुम्हारे लिये काफ़ी प्रबन्ध कर गया है।

असमाऽ कहती है कि "यह उपाय तो मैंने दादा के सन्तोष के लिये किया था, नहीं तो पिता जी तो सब कुछ साथ ले गये थे।"§

वह चांद और सूरज दोनों तीन दिन तक‖ उसी ग़ार में रहे। रात के अंधेरे में असमाऽ घर से रोटी दे जाती। अबूबक्र का पुत्र अब्दुल्लाह मक्के वालों की बातें सुना जाता×। आमिर बिन फ़ुहैरः जो हजरत आयशा के भाई का दास था और जिसके

* तबरी पृष्ठ २४५।

† तबरी पृष्ठ २४७।

‡ अबू क़हाफ़ः इस समय तक मुसलमान न हुये थे। मक्का विजय होने के दिन यह मुसलमान हुये थे अबूबक्र सिद्दीक़ के परिवार को समस्त सहाबियों में यह मुख्य विशेषता प्राप्त है कि उनके परिवार की चार नस्लें सहाबी हैं।

§ इब्ने हिशाम भाग १ पृष्ठ १७३।

‖ "यूनतन नबी ने दाऊद से कहा कि जब तेरी गैर हाज़िरी पर तीन दिन व्यतीत हो जायें तो वहां जाना"। सिमोएल २०।१९।

× इब्ने हिशाम भाग १ पृष्ठ १७०।

पास अबूबक्र का रेवड़ था, वहां बकरियां ले आता आंहज़रत आवश्यकतानुसार दूध ले लेते और फिर वह रेवड़ द्वारा आने वालों के पद चिह्न को मार्ग से मिटा देता । *

ख़ुदा ने अबूबक्र की इस श्रद्धा और प्रेम का यह बदला दिया कि "इन्नल्लाह मअना" फ़रमाकर ईश्वर के जिस अगाध प्रेम में नबी डूबे हुये थे उसी में अबूबक्र को भी सम्मिलित कर दिया ।

ग़ार से प्रस्थान—चौथी रात अबूबक्र के घर से दो ऊंटनियां आगईं जिनको इसी यात्रा के लिये तय्यार और ख़ूब मोटा ताज़ा किया गया था। एक पर आंहज़रत और अबू बक्र और दूसरी पर आमिर बिन फ़ुहैरः और अब्दुल्लाह बिन अरीक़ज़ (जिसे मार्ग बताने पर नौकर रख लिया गया था) सवार हुये और मदीने की ओर १ रबीउल् अव्वल सोमवार के दिन (१६ सितम्बर ६२२ ई० को) चल खड़े हुये। हिजरत द्वारा आंहज़रत ने पिछले नबियों की एक प्रथा को पूरा किया। हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा और हज़रत दाऊद की हिजरत की घटनायें बाइबिल में मौजूद हैं।

आंहज़रत के साथ हिजरत के बाद ईश्वरीय सहायता का प्रादुर्भाव हुआ जैसा कि पहले नबियों के साथ होता रहा था।

मार्ग बताने वाले ने बीच का मार्ग छोड़ कर समुद्र के किनारे किनारे चलना आरम्भ किया। जब हुज़ूर राबिग़ के वर्तमान क़िले और समुद्र के बीच वाले मैदान से गुज़र रहे थे तब सुराक़ः बिन जुऽशम मुदिलजी ने हुज़ूर का पीछा किया। अब्दुल् रहमान बिन मालिक जो सुराक़ः का भतीजा है वर्णन करता है :—

"सुराक़ः सिर पर खोद लगाये, नेज़ा ताने, शरीर पर हथियार सजाये हुये, अपनी घोड़ी पर सवार हवा से बातें करता जा रहा था, कि उसकी दृष्टि हुज़ूर पर पड़ गई। उसने समझा कि वह सफल होगया। इतने में घोड़ी घुटनों के बल गिरी, सुराक़ः नीचे आया, उठा, घोड़ी को उठाया, सवार हुआ, फिर चला। हज़रत क़ुरान शरीफ़ पढ़ते तथा प्रभु में ध्यान जमाये चले जा रहे थे कि आप को शत्रु के सिर पर पहुँच जाने की ख़बर हुई। फ़रमाया "हे प्रभु! हमें इसकी क्रूरता से बचाना।" इधर यह शब्द ज़बान से निकले उधर घोड़ी के पैर पृथ्वी में धंस गये, सुराक़ः गिर पड़ा। अब समझ गया कि ईश्वरीय रक्षा पर विजयी होना सम्भव नहीं। उसने गिड़गिड़ा कर अपने प्राणों के बचाव की प्रार्थना की, प्रार्थना स्वीकार की गई। सुराक़ः आगे बढ़ा और कहा कि अब मैं प्रत्येक आक्रमणकारी को पीछे ही रोकता रहूँगा। फिर उसकी प्रार्थना और हज़रत की आज्ञा पर आमिर बिन फ़ुहैरः ने उसे शरण पत्र भी प्रदान कर दिया।†

* बुख़ारी बाब हिजरत में हज़रत आयशः से।

† सहीह बुख़ारी। सुराक़ः अपने बाबा के नाम से सुराक़ः बिन जुऽशम प्रसिद्ध है। इलाक़े राबिग़ पर उसका क़बीला अधिकारी था। 'इस्तीआब' में है कि जब सुराक़ः लौटने लगा तो आंहज़रत ने फ़रमाया "सुराक़ः उस समय तेरी क्या शान होगी जब तेरे हाथों में किसरा के शाही कंगन पहिनाये जायेंगे।" सुराक़ः उहद की घटना के बाद मुसलमान हुआ। उमर फ़ारुक़ के समय में जब मदायिन विजय हुआ, और किसरा का राज मुकुट और जड़ाऊ जेवर फ़ारुक़-आज़म के सामने धरे गये, तो आपने सुराक़ः को बुलाया और उसके हाथों में जड़ाऊ कंगन पहिना दिये और फ़रमाया 'अल्लाहोअकबर! अल्लाह की शान बहुत बड़ी है जिसने किसरा के कंगन सुराक़ः के हाथों में पहिराये।

ग़ार (खोह) से निकल कर यह पवित्र काफ़िला 'उम्मेमऽबद' के ख़ीमे पर पहुँचा। यह स्त्री ख़ुज़ाअः जाति की थी। यात्रियों की रक्षा और उन की सेवा सत्कार के लिये प्रसिद्ध थी। मार्ग में लोगों को जल पिलाया करती थी और यात्री वहां ठहर कर विश्राम लेते थे।

यहां पहुँच कर वृद्धा से पूछा कि तेरे पास खाने की कोई चीज़ है। वह बोली नहीं, यदि होती तो मांगने से पहले मैं स्वयं ही उपस्थित कर देती।

हज़रत ने रावटी के एक कोने में एक बकरी देखी पूछा यह बकरी क्यों खड़ी है। उम्मेमऽबद ने कहा वह दुर्बल है रेवड़ के साथ नहीं चल सकती। नबी ने फ़रमाया "आज्ञा है कि हम उसे दुह लें।" उम्मेमऽबद ने कहा "आप को दूध मालूम होता हो तो दुह लीजिये।"

हज़रत ने बिस्मिल्लाह कह कर बकरी के थनों में हाथ लगाया। बर्तन मांगा। वह इतना भर गया कि दूध भूमि पर भी गिर गया। यह दूध आप ने और आप के साथियों ने पी लिया। दूसरी बार बकरी को फ़िर दुहा गया, बर्तन भर गया, यह भी साथियों ने पी लिया। तीसरी बार फिर बर्तन भर गया वह उम्मेमऽबद के लिये छोड़ दिया गया, और आगे को चल पड़े।

कुछ देर के पश्चात् उम्मेमऽबद का पति आया। रावटी में दूध का भरा बर्तन देख कर चकित रह गया कि यह कहां से आया। उम्मेमऽबद ने कहा कि एक प्रतापी महात्मा यहां आया था और यह दूध उसी के प्रभाव का फल है। वह बोला यह तो वह क़ुरैश जान पड़ता है जिसकी मैं खोज में हूँ। अच्छा तुम तनिक उसका रंग रूप और गुण तो वर्णन करो। उम्मेमऽबद बोली :—

आंहज़रत की हुलिया—"चकला चौड़ा पवित्र चेहरा, भला स्वभाव, न पेट आगे को निकला हुआ न सिर के बाल गिरे हुये, सुन्दर बड़ी और काली आंखें, बाल लम्बे और घने, आवाज़ में भारीपन, ऊँची गरदन, पुतलियां चमकदार, आंखों में मानो सुर्मा लगा हुआ, घनी और मिली हुई भवें, काले घुँघराले बाल, दूर से देखने में मन मोहन, पास से अति सुन्दर, बात में मिठास, एक एक शब्द स्पष्ट, न एक शब्द कम न अधिक, बात चीत ऐसी जैसे पिरोई हुई मोतियों की लड़ी, ठिगना क़द, न इतना छोटा कि तुच्छ दिखाई दे न इतना लम्बा कि घृणा उत्पन्न हो, जैसे हरे भरे सुन्दर वृक्ष की नई शाखा। उसके साथी ऐसे कि सदा उसके आस पास लगे रहते हैं, जब वह कुछ कहता है तो चुप चाप सुनते हैं, जब आज्ञा देता है तो उसे पूरा करने के लिये झपटते हैं, स्वामी आज्ञादाता, न चुप्पा न बक्की।"

यह आकृति तथा यह गुण सुनकर वह बोला अवश्य यह वही 'क़ुरैश स्वामी' है, जिस की मैं खोज में था, मैं अवश्य उससे जाकर मिलूँगा। *

नुबुव्वत के तेरह वर्ष मक्के में

सर्व प्रथम मुसलमानों की शान—ये तेरह वर्ष जिस प्रकार व्यतीत हुये उसका संक्षेप वृतान्त यह था जो लिखा गया। यह स्मरण रखना चाहिये कि इस समय में यद्यपि मुसलमानों की संख्या कुछ

* ज़ादुल् मआद पृष्ठ ३०७ भाग १। मक्के से बाहर देहात के ग़ैर मुस्लिम क़बीले आंहज़रत को "साहिबे क़ुरैश" अर्थात् 'क़ुरैश स्वामी' कहा करते थे।

अधिक नहीं हुई थी परन्तु यह भी अद्भुत सफलता थी कि इन ईमान लाने वालों में :—

(१) अली, अबूबक्र, उस्मान, उमर के शान वाले धर्मात्मा थे जिनकी अपूर्व विद्वता, उच्च कोटि की योग्यता, पूर्ण ज्ञान, वीरता और आध्यात्मिक शक्ति के गुणों ने सम्प्रति संसार का पथ प्रदर्शन किया।

(२) मुसअब बिन उमैर, जाफ़र तय्यार, अबू उबैदः जैसे उत्तम योग्यता रखने वाले, जिन्होंने मदीने और हबश और नजरान को धर्म उपदेश द्वारा मुसलमान किया।

(३) अथवा अब्दुल्लाह बिन मसऊद और अब्दुल् रह्मान जैसे उच्च पद के थे, जिनकी विद्वता पूर्ण बातें विद्या तथा ज्ञान का भण्डार हैं।

(४) अथवा ज़ुबैर और तल्हा तथा अम्मार बिन यासिर जैसे थे जिन की सत्य प्रियता और सत्यमार्ग में बलिदान का उदाहरण संसार के इतिहास में नहीं मिल सकता।

(५) अथवा बिलाल, सुमय्या, यासिर, कऽब तथा ख़ब्बाब की तरह थे जिन्होंने अपनी सुदृढ़ता और धैर्य्य द्वारा कठोर हृदय अत्याचारियों को अत्याचार करते करते थका दिया था।

(६) अथवा सकूरान, शम्मास उम्मे-हबीबः और खुनैस ऐसे साहस वाले जो सत्य धर्म के लिये बन्धु बान्धव, कुन्बे क़बीले, देश और जन्म-भूमि को छोड़ कर हबश में जा बसे।

(७) अथवा लबीद, सुवैद बिन सामित और उनैस जैसे विद्वान और कवि थे जो एक एक भाषण अथवा एक एक कविता से कई कई कबीलों को वश में कर लेते थे और जो संसार में अपने से अधिक किसी को विद्वान, तात्विक ज्ञान का जानने वाला, और मानव प्रकृति का ज्ञाता, न समझते थे।

इन्हीं दिनों इस्लाम मक्के से बाहर भी फैल गया था जिसके कुछ उदाहरण नीचे लिखे जाते हैं।

(१) तुफ़ैल बिन अम्र दौसी जो यमन के एक भूभाग का स्वामी था मक्के में मुसलमान हुआ और फिर उसके द्वारा उसके देश में इस्लाम फैल गया।

(२) अबूज़र ग़िफ़ारी, उनका भाई उनैस, उनकी माता, और उनका आधा क़बीला।

(३) नजरान के ईसाइयों में से २० व्यक्ति।

(४) जमाद अज़्दी यमन का प्रसिद्ध ज्योतिषी।

(५) बनी अश्हल क़बीला।

(६) तमीम और नुऐम और सीरिया के कुछ लोग।

(७) हबश के बहुत से लोग, आदि आदि।

हज़रत मदीने जा रहे थे कि मार्ग में बुरैदः असलमी मिला। यह अपनी जाति का मुखिया था। कुरैश ने हज़रत की गिरफ्तारी पर एक सौ ऊँट का इनाम नियत किया था और बुरैदः इसी इनाम के लालच में हज़रत की खोज में निकला था। परन्तु जब हज़रत का सामना हुआ और बात चीत हुई तो वह ७० व्यक्तियों सहित मुसलमान हो गया।

उसने अपनी पगड़ी उतार कर नेज़े पर बांध ली जिसका सफ़ेद फरेरा आकाश में उड़ाता और सुसमाचार सुनाता था कि "शान्ति का राजा, सन्धि का सुपक्षी संसार को न्याय से भर पूर कर देने वाला आ रहा है।" मार्ग में हज़रत को ज़ुबैर बिन अव्वाम मिले, यह शाम से आ रहे थे और

मुसलमानों का व्यापारी जत्था भी उनके साथ था। उन्होंने आंहज़रत और अबूबक्र को सफ़ेद कपड़े भेंट किये। *

क़बा में पहुँचना—८ रबीउल् अव्वल † सोमवार के दिन ‡ (२३ सितम्बर सन् ६२२ ई० १० तशरी सन ४३८३ यहूद थी कि) खुदा का नबी "क़बा" पहुंचा। मदीने वालों ने जब से सुना था कि हज़रत मक्के से चल चुके हैं। रोज़ सवेरे से मार्ग पर आकर इन्तिज़ार में बैठ जाते थे और जब तक दोपहर न हो जाती बैठे रहते। उस रोज़ यह लौटे ही थे कि हुज़ूर पहुँच गये। फिर एक व्यक्ति के पुकारने से सब इकट्ठा होगये, और "अल्लाहो अकबर" के नारे लगाते हुये "पैग़म्बर-इस्लाम" के आस पास इकट्ठा होगये। इनमें बहुधा मुसलमान ऐसे थे जो अभी तक पवित्र दर्शन लाभ भी न ले सके थे। उन्हें हज़रत और आपके साथी अबूबक्र सिद्दीक़ की पहिचान में धोखा हो जाता था इसलिये हज़रत सिद्दीक़ इसे ताड़ गये और हज़रत के सिर पर छाया करके खड़े हो गये। खुदा का रसूल जुमेरात (बृहस्पतिवार) तक यहां ठहरा और इस तीन दिन के ठहरने में सर्व प्रथम कार्य यह किया कि परमात्मा की उपासना के लिये एक मस्जिद की नींव रक्खी। ‡‡

इसी जगह शेरे खुदा हज़रत अली भी मक्के से पैदल यात्रा करते हुये नबी की सेवा में पहुंच गये। हज़रत अली कुछ दिन तक मक्के में हज़रत की आज्ञानुसार इसलिये रुक गये थे कि जिन लोगों की धरोहरें हज़रत के घर में मौजूद थीं वह उनके स्वामियों को लौटा दी जायें।

१२ रबीउल अव्वल× स० १ हि० को शुक्रवार का दिन था। नबी क़बा से चलकर बनी सालिम के घरों तक पहुँचे थे कि जुमअ की नमाज़ का समय होगया। यहां सौ व्यक्तियों सहित जुमअ की नमाज़ पढ़ी। यह इस्लाम में पहिला जुमअ था।

खुतबः (धार्मिक भाषण)

रसूलुल्लाह का सर्व प्रथम जुमअ का खुतबः जो मदीने पहुंचकर बनी सालिम बिन औफ़ में आपने पढ़ा था, उसका अनुवाद यह है :—

"सर्व महिमा अल्लाह के लिये है, मैं उसकी स्तुति करता हूँ, मेरा ईमान उसी पर है, मैं उसका अनाज्ञाकारी नहीं हूँ और अनाज्ञाकारियों का विरोधी हूँ। मेरी साची यह है कि अल्लाह के सिवा कोई आराधना के योग्य नहीं, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं। मुहम्मद उसका बन्दा और रसूल है। उसी ने मुहम्मद को पथ प्रदर्शन, प्रकाश तथा शिक्षा सहित ऐसे समय में भेजा है जब कि दीर्घकाल से कोई रसूल संसार में न आया था। ज्ञान घट गया था और पथ भ्रष्टता बढ़ गई थी। उसे अन्तिमकाल में प्रलय के निकट, मृत्यु के समय में भेजा गया है। जो कोई अल्लाह और रसूल की आज्ञा पालन करता है वही मार्ग पाने हारा है।

* बुखारी बाबे हिजरत में हज़रत उर्वः से।

† "सुरूरुल् महज़ून" शाह वलीउल्लाह साहेब लिखित।

‡ सहीह बुख़ारी बाबे हिजरत में।

‡‡ तफ़सीर अल्लामः अबिस्सऊद भाग ८ पृष्ठ १५२।

× तदनुसार २७ सितम्बर सन् ६२२ ई०।

और जिसने उसकी आज्ञा का पालन न किया वह भटक गया। पद से गिर गया और अत्यन्त धोके में फंस गया। मुसलमानो! मैं तुम्हें परमात्मा से डरने तथा संयम का उपदेश देता हूँ। अति उत्तम उपदेश जो एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को दे सकता है यह है कि उसे अंत के लिये तय्यार करे। और ईश्वर से डरने के लिये कहे। लोगो! जिन बातों से खुदा ने तुम्हें बचने के लिये कहा है उनसे बचते रहो इससे बढ़कर न कोई शिक्षा है और न इससे बढ़कर कोई उपदेश है। स्मरण रहे कि अंत सम्बन्धी विषयों में उस व्यक्ति के लिये जो खुदा से डरकर काम कर रहा है संयम * उत्तम सहायक सिद्ध होगा। और जब कोइ व्यक्ति अपने और ईश्वर के बीच प्रकट तथा गुप्त सम्बन्ध ठीक कर लेगा और ऐसा करने में उसकी नियत ठीक होगी तो ऐसा करना उसके लिये इस लोक में उपदेश और परलोक में सम्पत्ति बन जायेगा परन्तु कोई यदि ऐसा नहीं करता तो (उसका वर्णन इस आयत में है कि) "मनुष्य भला समझेगा कि उसके कर्म उससे दूर ही रक्खे जायें। ईश्वर तुम को अपने से डराता है और ईश्वर तो अपने बंदों पर अति दयालु है। और जिस व्यक्ति ने परमात्मा की आज्ञा को सत्य जाना और उसके बचनों को पूरा किया तो उसके लिये स्वयं उसकी यह आज्ञा है "हमारे यहां बात नहीं बदलती और हम अपने सेवकों पर अत्याचार नहीं करते।"

मुसलमानो! अपने उपस्थित तथा भावी गुप्त तथा प्रकट कार्यों में ईश्वर के निमित्त संयम को दृष्टिगोचर रक्खो क्योंकि ईश्वर से डरने हारों के पाप क्षमा कर दिये जाते हैं और प्रतिफल बढ़ा दिया जाता है। संयम वाले वे हैं जो अतिसफलता को प्राप्त होंगे। यह संयम ही है जो परमात्मा की घृणा, दण्ड और क्रोध को दूर कर देता है। यह संयम ही है जो मुखाकृति को प्रकाशमान, प्रभु को प्रसन्न और पद को ऊंचा कर देता है। मुसलमानो! सुख भोगो। परन्तु ईश्वरीय नियमों को पूरा करने में कमी न करो।

खुदा ने इसीलिए तुमको अपनी पुस्तक सिखलाई अपना मार्ग दिखलाया है कि सच्चों और झूठों को अलग २ कर दिया जाये। लोगो! खुदा ने तुम्हारे साथ उत्तम व्यवहार बरता है तुम भी लोगों के साथ ऐसा ही करो। जो परमात्मा के शत्रु हैं, उन्हें शत्रु ही समझो और ईश्वरीय मार्ग में पूरे साहस और ध्यान से कोशिश करो। इसीलिये तुमको श्रेष्ठ किया और तुम्हारा नाम मुसलमान रक्खा जिसमें कि विनाश होने वाला भी स्पष्ट दलीलों पर नाश हो और जीवन पाने वाला भी स्पष्ट तर्कों पर जीवन पाये। और समस्त सद्कर्म अल्लाह की सहायता पर निर्भर हैं। लोगो! अल्लाह का स्मरण करो और भावी जीवन के लिये कर्म करो क्योंकि जो व्यक्ति अपने और खुदा के बीच सम्बन्ध को ठीक कर लेता है अल्लाह उसके और अन्य लोगों के सम्बन्ध को ठीक कर देता है। हां परमात्मा बंदों पर आज्ञा करता है और उस पर किसी की आज्ञा नहीं चलती। खुदा बन्दों का स्वामी है और बंदों का उस पर कुछ अख्तियार नहीं। खुदा सब से बड़ा है और हमें

* संयम मनुष्य की उस आत्मिक शक्ति का नाम है जो मनुष्य को कुकर्म और पापों से रोक देती है।

सद्‌कर्म की शक्ति उसी बड़ाई वाले से मिलती है।"

मदीने में प्रवेश जुमऽ की नमाज समाप्त करके नबी मदीने के दक्षिण की ओर से नगर में दाखिल हुये। पहले इस नगर का नाम यसरिब था परन्तु आज से इस नगर का नाम "मदीनतुन्नबी" हो गया जिसे संक्षेप रूप में मदीनः कहा जाता है। दाखला बड़ा शानदार था। गली कूचे ईश्वर के गुणगान तथा स्तुति से गूंज रहे थे। स्त्री पुरुष बालक वृद्ध सब ख़ुदा के रसूल के दर्शनाभिलाषी होकर इकट्ठा हो गये थे। इस शान और सम्मान को देखकर पुस्तक वालों के विद्वान लोग समझ गये कि हबक़ूक़ नबी की पुस्तक पर्व ३ मन्त्र ३ का अर्थ आज खुला कि–

"ख़ुदा दक्षिण से और वह जो पवित्र है फ़ारान卐 पहाड़ी से आया। उसकी बड़ाई से आकाश छिप गया और पृथ्वी उसकी महिमा से भर गई।"

अनसार की भोली भाली कन्यायें पवित्र और मिठास भरे स्वरों में यह गा रही थीं। ॐ

"दक्षिण की ओर जो पहाड़ियाँ हैं उनसे पूर्णमाशी का चन्द्रमा उदय हुआ। कैसा उत्तम धर्म और कैसी अच्छी शिक्षा है। जिस पर ईश्वर का अनुग्रहीत होना हमारा कर्तव्य है। हे प्रभु प्रेषित! तेरी आज्ञा पालन करना हमारा धर्म है क्यों कि तेरा भेजने वाला परमात्मा है।"

यह अनसार जिनकी कन्याओं ने यह गाना गाया था वही हैं जिन्होंने सन् ११-१२ तथा १३ नबवी में मक्के पहुँच कर इस्लाम स्वीकार किया था अथवा वे जो मुसइब बिन उमैर या इब्ने मक्तूम की शिक्षा से मदीने ही में मुसलमान हो गये।

धर्मात्मा पुरुष अन्सार + कुछ बड़े धनी अथवा कहीं के जागीरदार न थे परन्तु हृदय के ऐसे धनी, इस्लाम के ऐसे फ़िदाई और मुसलमानों पर

卐 बाइबिल में जितनी पुस्तकें नबियों की हैं उनमें मक्के का नाम "फ़ारान" है क्यों कि इस स्थान पर फ़ारान बिन औफ़ ने अपना क़ब्जा किया था। तौरेत की पुस्तक उत्पत्ति २१।२१ में है। "इस्माईल फ़ारान के जंगल में रहा" क़ुरान शरीफ़ से सिद्ध है कि इब्राहीम तथा इस्माईल ने इस जंगल में एक मस्जिद बनाई जो अब कऽबे के नाम से प्रसिद्ध है। सो क़ुरान और तौरात एक दूसरे की पुष्टि करते हुये सिद्ध करते हैं कि फ़ारान मक्के का नाम है फ़ारान का जिक्र तौरात की पुस्तक "गिन्ती" १०।१२ और इस्तिस्ना ३३।२ में भी आया है और इन सब से यही सिद्ध होता है कि फ़ारान मक्के का नाम है।

ॐ पुस्तक यसइयाह ४२।११ में है कि सलऽ के लोग एक गीत गायेंगे। मदीने का नाम प्राचीन नबियों की पुस्तकों में सलऽ है। ऐतिहासिक विद्वान तिब्री के कथन से सिद्ध होता है कि खन्दक़ के युद्ध में मुसलमानों ने जिस स्थान पर खन्दक़ (खाई) खोदी थी वहां एक टीला है जिसका नाम मदीने वालों की बोल चाल में "सलऽ" है।

+ अन्सार के अर्थ हैं सहायक, इस्लाम में मदीने वालों को कहते हैं। मुहाजिर का अर्थ है देश त्याग करने हारे, इस्लाम में मक्के वालों को कहते हैं जो नबी के साथ मक्के से मदीने गये थे।

ऐसे न्यौछावर थे कि जब कोई मुहाजिर नंगी तलवारों, (ु) खिंची हुई कमानों से प्राण बचाकर भूखा प्यासा मदीने जा पहुचता था तो प्रत्येक अन्सारी यह चाहता था कि वह मुहाजिर उसी के पास ठहरे। अंत में क़ुर्अः डाला जाता था और जिसके नाम क़ुर्अः निकल आता वह मुहाजिर भाई को अपने घर ले जाता। घरबार, माल, असबाब, भूमि तथा पशु आदि जो कुछ उसका होता उसका आधा उसी दिन बाँट कर दे देता और इस पर भी रात दिन उसकी सेवा और सत्कार के लिये उत्सुक रहता। अपने भाग्य पर ईश्वर का कृतज्ञ होता कि उसने धर्म के एक भाई को उसका साझीदार बना दिया।

(ु) यसइयाह की पुस्तक २१ में हिजरत का जिक्र है। पहिले हम इस पुस्तक के वह शब्द लिखते हैं फिर उन शब्दों में से कुछ पर टीका टिप्पणी करेंगे।

१३—अरब के विषय में ईश्वरीय वचन। अरब के जंगल में तुम रात काटोगे हे ददानियों के काफ़िलो!

१४—पानी लेके प्यासे के शुभागमन को आवो, हे तीमा की भूमि के रहने हारो, रोटी लेके, भागने वाले के मिलने को निकलो।

१५—क्यों कि वह तलवारों के सामने से, नंगी तलवार से और खिंची हुई कमान से, और युद्ध की तेज़ी से भागे हैं।

१६—क्यों कि प्रभु ने मुझसे कहा अब से एक वर्ष हाँ मजदूर की नाईं ठीक एक वर्ष में क़ीदीर का सारा प्रताप जाता रहेगा।

१७—और धनुषधारियों में जो बाक़ी रहे कीदीर के वीर घट जायेंगे कि ख़ुदा बन्द इस्राईल के ख़ुदा ने यूं फ़रमाया।" उपरोक्त आयतों में आयत १५ में मुहाजिरीन का जिक्र है जो अत्याचारी क़ुरैशियों से धर्म और प्राण बचाकर भागे थे और मदीने गये थे। आयत १३ में ददानियों और १४ में तीमा वालों को आज्ञा है कि उनका आगमन करें और रोटी पानी से उनका सत्कार करें। ददान नाम है हज़रत इब्राहीम के पोते यक़सान के पुत्र सबा के भाई का। सबा और ददान की संतान यमन देश में बसी थी। ओस और ख़ज़रज के क़बीले जो अन्सार कहलाते हैं उन्हीं में से हैं। इब्ने ख़लदून ने इसे अपनी पुस्तक में वर्णन किया है। इन आयतों में जैसे कि यह भविष्य वाणी है कि मुहाजिरीन की हिजरत क़ुरैश की तलवारों और कमानों के कारण होगी वैसे ही यह पेशगोई भी है कि उनके अन्सार ददान गोत्र में से होंगे जैसा कि घटित हुआ। तीमा नाम है हज़रत इस्माईल के आठवें पुत्र का जिनकी संतान मदीने के पीछे बसी। मदीने और उसके आस पास रहने वालों को सहायता की आज्ञा देने के बाद आयत १६ व १७ में उन अत्याचारियों का परिणाम बतलाया है अर्थात् क़ुरैश का परिणाम। इस स्थान पर क़ुरैश को क़ीदीर वाले बतलाया है। कीदीर हज़रत इस्माईल के दूसरे पुत्र का नाम है। क़ुरैश इन्हीं की संतान हैं बतलाया गया कि हिजरत की घटना के एक वर्ष बाद क़ीदीर के वीर धनुषधारी घट जायेंगे और उनका प्रताप कम हो जायगा चुनाचे हिजरत के एक ही वर्ष

मक्के और मदीने के हालात का मुक़ाबिला

मक्के में केवल एक क़ुरैश जाति की हुकूमत थी और सब का धर्म (अधिकतर) मूर्त्तिपूजा था। मदीना भिन्न २ जातियों और धर्मों का संग्रह था। वहां मूर्त्तिपूजक भी थे और यहूदी भी और अल्प संख्यक ईसाई भी, यहूदियों के कई प्रभाव शाली क़बीले बनू नज़ीर, बनू क़ीन्क़ाऽ, बनू क़ुरैज़: थे जो अपने अपने गढ़ों में रहते थे। व्यापार तथा सूद ब्याज के कारण बहुत धनी थे।

जब से ख़ुदा के नबी हज़रत मूसा ने अपने धर्मोपदेश में यहूदियों को यह सुसमाचार ※ सुनाया था कि "ख़ुदा मूसा के भाइयों में से मूसा

बद्र का युद्ध हुआ जिसमें क़ुरैश के प्रसिद्ध वीर योद्धा मारे गये और उनके प्रताप और मान मर्यादा को बहुत छति पहुँची।

※ किताब इस्तिसना १८।१५ यह है "ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे लिये तेरे ही बीच से तेरे ही भाइयों में से मेरी नाईं एक नबी उठायेगा" इसी पब्ब का १८।१६ अधिक स्पष्ट है वह यह है "मैं उनके लिये उनके भाइयों में से तुझ सा एक नबी उठाऊंगा और अपनी वाणी उसके मुंह में डालूंगा और जो कुछ मैं उससे कहूँगा वह सब उनसे कहेगा" "और ऐसा होगा कि जो कोई मेरी बातों को जिन्हें वह मेरा नाम लेकर कहेगा न सुनेगा तो मैं उसका हिसाब उससे लूंगा" इन आयतों को पढ़ कर निम्नाङ्कित युक्तियों पर विचार कीजिये।

(क) बनी इस्राईल के भाई बनी इस्माईल हैं देखो किताब उत्पत्ति १२।१६ व १८।२५

(ख) बनी इस्राईल में मूसा की नाईं कोई नबी नहीं हुआ। (देखो किताब इस्तिसना १०।३४)

इस लिये यह भविष्य वाणी हमारे नबी के लिये स्पष्ट है। आँ हज़रत का चिन्ह यह बतलाया गया है कि अपनी वाणी उसके मुख में डालूंगा। यह चिन्ह विशेष रूप में आँ हज़रत ही का है क्यों कि क़ुरान शरीफ़ के अतिरिक्त कोई पुस्तक तौरेत, इन्जील (अथवा वेदादि-अनुवादक) ऐसी नहीं जिसमें ईश्वरीय वाणी के शब्द सुरक्षित रहे हों अथवा जिसकी वही (प्रेरणा) शब्दों तथा अर्थों सहित पूर्णतय: पहुँची हो। यहूदी और ईसाई मानते हैं और इन्कार नहीं करते कि मूसा की दस आज्ञाओं के अतिरिक्त तौरेत की कोई अराधना प्रभु शब्दों सहित सुरक्षित नहीं है और मूसा के अतिरिक्त अन्य पैग़म्बरों की पुस्तकों में विशेषतय: इन्जील में ईश्वरीय प्रेरणा के शब्द नहीं हैं। इस स्वीकृत द्वारा प्रभु के कुल पैग़म्बरों में केवल हज़रत मूसा ही रह जाते हैं जिनको वाणी की दृष्टि से आँ हज़रत की समानता प्राप्त है। हमारे नबी तथा हज़रत मूसा में यकरंगी अनेक विषयों में पाई जाती है यथा—दोनों ने हिजरत की, दोनों ने एक नया बिधान लोगों के सामने रक्खा, दोनों को धार्मिक युद्ध लड़ने पड़े, दोनों की पैग़म्बरी का आरम्भ ४१ वर्ष की आयु में हुआ, यह वे विषय हैं जो हज़रत मूसा के बाद पूर्ण रूप से बनी इस्राईल के किसी नबी में नहीं पाये जाते परन्तु हमारे नबी में पाये जाते हैं। परन्तु इस स्थान पर केवल इन्हीं बातों पर विचार करना है जिन्हें

जैसा और एक नबी पैदा करेगा।" उस समय से यहूदी आशा लगाये हुये थे और इसी आशा पर मदीने में ठहरे हुये थे कि बनी इस्माईल में पैदा होने वाला नबी, यहूदियों की राष्ट्रीय गिरावट को दूर करने वाला, उनके गत राज्य तथा ऐश्वर्य को पुनः जीवित करने वाला होगा। और जब से यहूदियों को शाम देश से निकाल दिया, तथा दासता और तुच्छता के गढ़े में डाल दिया गया था उस समय से इस आने वाले नबी के प्रादुर्भाव पर उनकी आंखें और भी अधिक लगी हुई थीं।

अब इस्माईली नबी का मदीने में आना सुन कर यहूदी विशेष रूप से अति प्रसन्न हो रहे थे। परन्तु जब उन्होंने देखा कि वह तो मसीह को सत्यवादी ठहराता, उसकी शिक्षा को सत्य बतलाता और मसीह पर ईमान लाने को इस्लाम का एक अनिवार्य अंग ठहराता है तथा उसका आदर सम्मान प्रकट करके यहूदियों को न्याय की दृष्टि में अपराधी ठहराता है। * तो उस समय सब यहूदी हमारे नबी के शत्रु हो गये। जब से खुदा के नबी ईसा मसीह ने सब से अन्तिम धर्मोपदेश में "दूसरे तसल्ली देने वाले" के आने की सूचना दी थी, जो संसार के साथ सदा रहेगा और जो संसार को सब कुछ सिखलायेगा, तथा ईसाइयों को उसकी आज्ञाओं के पालन करने की ताकीद की थी। तब से ईसाई भी उस नबी की प्रतीक्षा कर रहे थे जो यहूदियों से उनके अत्याचारों का बदला लेने वाला, ईसाइयों को प्रताप प्रदान करने हारा, मसीह की सत्यता प्रकट करने वाला हो।" परन्तु जब उन्होंने देखा कि आंहज़रत ने ईसाइयों के स्वयं गढ़े हुये विषयों † जैसे पुत्रत्व (इब्नियत), त्रियी (तसलीस), प्रायश्चित्त (कफ्फ़ारा), संसार का परित्याग

तौरेत ने वर्णन किया है। क़ुरान उसका समर्थन इस प्रकार करता है "वमा यन्तेक़ो अनिल हवा इन हुव इल्ला वहयुंय्यूहा" अर्थात् 'मुहम्मद अपनी इच्छा से नहीं बोल रहा है यह तो वह वाणी है जिसे प्रभु ने उसके तीर पठाया और उसकी जिह्वा पर प्रकट किया।'

आप पुराने "अहदनामे" की समस्त पुस्तकों (तथा अन्य धार्मिक पुस्तकों :- अनुवादक) को देख जायें, क़ुरान शरीफ़ के अतिरिक्त इस भविष्य वाणी का समर्थन कहीं न मिलेगा। यह विशेषता केवल आंहज़रत ही के लिये है। यह स्मरण रहे कि आयत १५ के शब्द "तेरे ही बीच से" बाद को बढ़ाये गये हैं इसके सम्बन्ध में तीन खुली हुई दलीलें हैं:—(१) यूनानी तौरेत में यह शब्द मौजूद नहीं। (२) इसी के पाठ १८ व १९ में सारी पेशगोई को दुहराया गया है उसमें भी यह शब्द नहीं हैं। (३) लूक़ा ने इसी आयत को 'प्रेरित की क्रिया' ३।२२ व २३ में लिखा है और उसमें "तेरे ही बीच से" के शब्द नहीं लिखे।

* "वह संसार को पाप से और सचाई से और न्याय से अपराधी ठहरायेगा। वह मेरा सम्मान करेगा और तुम्हें सारी सचाई का मार्ग बतलावेगा।" योहन्ना १६।१३ व १४।

† डाक्टर ड्रीपर ने अपनी पुस्तक "रिलीजन एण्ड साइंस" में लिखा है कि "ईसाई धर्म अपने आरम्भ काल में वर्षों तीन नियमों का प्रचार करता रहा:—(१) ईश्वर के अधिकार। (२) अपने प्राणों के अधिकार। (३) मानव समाज के अधिकार। अर्थात् मनुष्य को चाहिये कि महान परमात्मा की आराधना करे, स्वयं धर्मात्मा

(रुहबानिय्यत) तथा पोप के ईश्वरीय अधिकारों आदि का खण्डन किया तब वे भी हमारे नबी के शत्रु हो गये। मदीने की स्थिति का अनुभव करने के लिये पाठकों को अब्दुल्लाह बिन उबय्य के वृतांत पर एक दृष्टि डाल लेना आवश्यक है। यहूदियों के अतिरिक्त मदीने का प्रसिद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति यह भी था। ओस और ख़ज़रज के क़बीलों पर उसकी पूरी धाक थी। और उसे आशा थी कि इन शक्तिशाली क़बीलों की सहायता से मदीने की सर्वोत्तम शक्ति मैं ही बन जाऊंगा। जब उसने देखा कि ओस और ख़ज़रज मुसलमान हो रहे हैं, तो स्वयं भी (बद्र के युद्ध के बाद) ऊपरी मन से मुसलमानों से मिल गया। किन्तु जब उसने देखा कि यहूदी आंहज़रत के विरुद्ध हो गये हैं तो उसने चाहा कि यहूदियों पर भी उसका अगला प्रभाव क़ायम रहे और मुसलमान हो जाने वाले क़बीले भी उसके क़ब्जे से न निकलने पायें। इस लिये उसने यह चाल चली कि मुसलमानों में बैठकर उनको मैत्री तथा सहायता का विश्वास दिलाता अपनी और अन्य जातियों के समक्ष उनके साथ अपने मेल जोल और सचाई का दावा किया करता और चूंकि वास्तविक में वह इस्लाम को निज अभिलाषाओं एवं कामनाओं का घातक समझता था इसलिये अवसर पाकर मुसलमानों को हानि पहुंचाने में कोई कमी नहीं करता था। ऐसे लोगों का नाम मुसलमानों ने "मुनाफ़िक़" रखा। मदीने की यह स्थिति थी और इससे विदित है कि इस्लाम के प्रचार और निमन्त्रण के लिये इस जगह भी बहुत सी कठिनाइयों का सामना था।

बने और मानव समाज के साथ भलाई करे। इसके पश्चात् डाक्टर साहब ने लिखा है कि उन सुधारों तथा संशोधनों का ठीक २ अनुमान करने के लिये जो ईसाई धर्म में बाहरी मेल जोल से पैदा हुये और आज तक क़ायम हैं पहिले ट्रेलिटन का लेख (२०० ई० देखना चाहिये जो उसने क़ैसर स्योवर्स के काल में जब कि ईसाइयों पर नाना प्रकार के अत्याचार हो रहे थे रूमा में लिखा था। इस लेख में तस्लीस (त्रिईं) का जिक्र नहीं है, और क़फ़्फ़ारे का तो खण्डन पाया जाता है। क्योंकि उसके शब्द यह हैं "ख़ुदा ने मनुष्य के भले बुरे कर्मों के अनुसार प्रति फल नियुक्त किये हैं, जो सदाचारी होंगे उन्हें अनन्तानन्द प्रदान करेगा और जो दुराचारी होंगे उन्हें सदा के लिये अग्नि में झोंक देगा।" यही डाक्टर फिर लिखते हैं "क़ैसर क़ुस्तुन्तीन" के समय में ईसाई धर्म में मूर्ति पूजा सम्मिलित हुई और पादरियों की पहिली सभा उसी की अध्यक्षता में ३२५ ई० में स्थापित हुई फिर इस प्रकार की सभाओं की प्रथा चल पड़ी। प्रत्येक सभा धर्म और धार्मिक विश्वासों में नये नये संशोधन और सुधार करने लगी। हमने जो मूल लेख में "ईसाइयों के स्वयं गढ़े हुये विषयों" के शब्द लिखे हैं वे सर्वथा ठीक हैं। यह स्मरण रहे कि आँहज़रत ने ईसाइयों के जिन विषयों में सुधार किये थे धीरे धीरे और थोड़ा थोड़ा करके ईसाइयों के भिन्न भिन्न सम्प्रदायों ने उन्हें अपना लिया और उन्हें अपने धर्म का अंग बना लिया, यद्यपि वे अब तक अपने इस सच्चे उपकारक मुहम्मद रसूलुल्लाह के कृतज्ञ नहीं हैं। जैसे योनिटेरियन को देखिये कि वह मसीह को ख़ुदा का बेटा नहीं मानते। प्रोटिस्टेन्ट सम्प्रदाय इस्लाम के बाद पैदा हुआ जो संसार के त्यागने (रुहबानिय्यत) और पोपों के ईश्वरीय अधिकार का विरोधी है। आदि आदि।

एक न्याय प्रिय और विचार शील व्यक्ति समझ सकता है कि इन सब रुकावटों पर विजय प्राप्त करना इस्लाम की सचाई की एक उत्तम दलील है। इस्लाम के प्रचार में जो सफलता आंहज़रत को मक्के की अपेक्षा मदीने में हुई उसका वर्णन क़ुरान ने पहिले ही से कर दिया था:—"व लिल् आख़ेरते ख़ैरुल्लक मिनल् ऊला" 'अर्थात् पिछला तेरे लिये पहिले से अच्छा होगा।'

दूसरा अध्याय

यहूदियों का प्रतिज्ञा भंग करना, शान्ति पुष्टि के लिये अन्तरजातीय सन्धि, क़ुरैश की शरारतें, षड़यन्त्र तथा आक्रमण, मुसलमानों की सफलता, इस्लामी प्रचारकों को धर्म प्रचार की स्वतन्त्रता, इस्लाम की व्यापकता तथा शान्ति की स्थापना। (इन विषयों पर इस अध्याय में प्रकाश डाला गया है। अनुवादक)।

यह बताया जा चुका है कि मदीने में भिन्न २ क़बीलों (गोत्रों) के लोग बसते थे। उनके धर्म भी पृथक २ ही थे। यहूदियों के अनेक क़बीले अत्यन्त शक्तिशाली थे जो अपने २ गढ़ में रहा करते थे।

नबी ने मदीने में पहुंचकर हिजरत के प्रथम वर्ष ही में यह उचित समझा कि समस्त जातियों में एक अन्तरजातीय सन्धि करली जाये जिसमें कि कुल और धर्म की भिन्नता होते हुये भी जाति की एकता बनी रहे, और सभ्यता तथा समाज के कामों में परस्पर एक दूसरे को सहायता मिलती रहे।

इस सन्धि पत्र * की कुछ शर्तें नीचे लिखी जाती हैं:—

(१) यह लेख है मुहम्मद नबी की ओर से मुसलमानों के बीच जो क़ुरैशी अथवा मदीने के रहने वाले हैं, और उन लोगों के साथ जो मुसलमानों से मिले जुले रहते हैं और उनके साथ व्यापार में सम्मिलित हैं कि:—

(२) ये सब लोग एक ही जाति समझे जायेंगे।

(३) बनी औफ़ के यहूदी मुसलमानों के साथ एक जाति हैं।

(४) और जो कोई इस सन्धिकर्त्ता जातियों के साथ युद्ध करेगा तो उसके विरुद्ध सब के सब मिल जायेंगे। मुसलमान उनकी सहायता करेंगे।

(५) इन जातियों का परस्पर मेल भलाई और शिक्षा के हेतु होगा हानि और पाप के लिये नहीं होगा।

(६) युद्ध के दिनों में यहूदी मुसलमानों के साथ युद्धक्षेत्र में शामिल रहेंगे।

(७) यहूदियों की मित्र जातियों के अधिकार यहूदियों के समान समझे जायेंगे।

(८) कोई व्यक्ति इन शर्तों के विरुद्ध कोई कार्य न करेगा।

(९) मदीने के भीतर रक्तपात करना, सन्धि कर्त्ता समस्त जातियों के लिये अलीन होगा।

(१०) शान्ति प्रिय पड़ोसी भी सन्धि करने हारी जातियों के समान होंगे।

* सीरत इब्ने हिशाम भाग १ पृ० १७८।

(११) सताये हुओं की सहायता की जायगी।

(१२) इन मुआहिदा करने वाली जातियों में यदि कोई ऐसी नई बात पैदा हो जाये जिसमें झगड़े का भय हो तो उसका फैसला खुदा और उसके रसूल मुहम्मद पर निर्भर होगा।

आस पास के क़बीले भी मुआहिदे में शामिल हो गये—इस सन्धि पत्र पर मदीने में बसने वाली समस्त जातियों के हस्ताक्षर हो गये। इसके बाद नबी ने यह चाहा कि आस पास के कबीलों को भी इसमें शामिल कर लिया जाये। इससे दो लाभ होंगे:—

(१) जो झगड़े बखेड़े क़बीलों में सदैव होते रहते हैं और निर्पराध लोगों के खून से खुदा की जमीन रंगीन होती रहती है वे समाप्त हो जायंगे।

(२) मक्के के क़ुरैश उन लोगों को जिनसे सन्धि हो जायगी मुसलमानों के विरुद्ध भड़का न सकेंगे।

(क) इसी शुभ तथा शांतिप्रिय इरादे से नबी ने हिजरत के प्रथम वर्ष ही "वुद्दान" (जो मक्के और मदीने के बीच में है) तक यात्रा की और बनी हमज़ा क़बीले को इस मुआहिदे में शामिल कर लिया। इस सन्धि पत्र पर अम्र बिन मखशाज्जमरी ने हस्ताक्षर किये थे। *

(ख) इसी इरादे से रबीउल् अव्वल स० २ हि० में खुदा का नबी रज़्वी की ओर गया और बुआत पहाड़ी के लोगों को मुआहिदे में सम्मिलित किया।

(ग) इसी सम्वत् के जमादियुल्आख़िर महीने में हज़रत ज़ुलउशैरः गये। यह स्थान यम्बूऽ और मदीने के बीच में है और बनू मुद्लिज को मुआहिदे में सम्मिलित करके मदीने लौट आये। †

इस शुभ योजना को पूरा करने के लिये यदि पर्याप्त समय मिल जाता तो संसार को मालूम हो जाता कि "रह्‌मतुल्लिल् आलमीन" संसार में तलवार चलाने को नहीं बल्कि सन्धि और शान्ति फैलाने के लिये आया है। ‡

क़ुरैशियों ने आक्रमण का विचार किया—मक्के के क़ुरैशियों को मुसलमानों और आंहज़रत के साथ ऐसी शत्रुता थी कि अपना देश छोड़ कर ३०० मील दूर चले जाने पर भी चैन से न बैठने दिया। पहिले भी जब मुसलमान हबश गये थे उस समय क़ुरैश ने हबश पहुँच कर उन्हें पकड़ लाने की चेष्टायें की थीं परन्तु वह देश एक राजा के आधीन था और बीच में समुद्र पड़ता था इसलिये वहां कुछ और अधिक कारवाई न कर सके। अब जो मुसलमान मदीने जाकर रहे तो उन्होंने मदीने पर आक्रमण करने का इरादा कर लिया। पहिले तो उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उबय्यी और उसके साथियों को जो ओस तथा ख़ज़रज में से अभी तक मूर्ति पूजक थे लिख भेजा:—

मुसलमानों के विरुद्ध षड़यन्त्र—"तुमने हमारे आदमियों को अपने यहां ठहरा लिया है अब उचित है कि तुम या तो उनसे लड़ो या उन्हें वहां से

* ज़ादुल् मआद भाग १ पृष्ठ ३३४।

† ज़ादुल मआद भाग १ पृ० ३३४।

‡ मसीह का कथन है "मत समझो कि मैं पृथ्वी पर सन्धि करवाने आया हूं, सन्धि करवाने नहीं, बलिक तलवार चलाने आया हूं।" (मत्ती १०।३४)।

निकाल दो नहीं तो हमने क़सम खा ली है कि हम सब यकदम तुम पर धावा बोल देंगे। तुम्हारे युवकों को मार डालेंगे और तुम्हारी स्त्रियों पर क़ब्जा कर लेंगे। इस पत्र के आने पर इब्ने उबय्यी और उसके साथियों ने हज़रत से लड़ने का इरादा किया। हज़रत को इसकी सूचना मिल गई आपने उन आक्रमणकारियों के जत्थे में स्वयं जाकर यह बातचीत की।

आपने फ़रमाया—क़ुरैश ने तुम से ऐसी चाल चली है कि तुम उनकी धमकी में आ गये तो तुम्हारी बहुत हानि होगी इसके सम्मुख कि तुम उनकी बात से इनकार कर दो। क्यों कि यदि तुम मुसलमानों से लड़ोगे तो अपने ही हाथों से अपने भाइयों और बेटों को क़त्ल करोगे (जो मुसलमान हो चुके हैं) और यदि तुम्हें क़ुरैश से लड़ना पड़ा तो वह ग़ैरों का मुक़ाबिला होगा। हज़रत की यह बातें उनके दिल पर ऐसी जम गईं कि जो लोग इकट्ठा हुये थे सब अपने अपने घर चले गये।

दूसरा षड़यन्त्र—इसके उपरान्त मक्के के क़ुरैशियों ने भीतर ही भीतर मदीने के यहूदियों के साथ षड़यन्त्र रचना आरम्भ किया और जब गुप्त रूप से उन्हें अपने साथ मिला चुके तब अपनी सफलता पर पूरा विश्वास करके

क़ुरैशियों की धमकी—मुसलमानों से कहला भेजा तुम इस घमण्ड में न रहना कि मक्के से साफ़ बचकर निकल आये हम मदीने ही पहुँच कर तुम्हारा सत्यानाश किये देते हैं।

क़ुरैश का पहला हमला—इस संदेश के उपरान्त उन्होंने छेड़ छाड़ भी आरम्भ कर दी। रबीउल् अव्वल स० २ हि० की घटना है कि क़ुरैश के सरदारों में से एक व्यक्ति कर्ज़ बिन जाबिर मदीने पहुँचा और मदीने वालों के मवेशी जो बाहर मैदान में चर रहे थे लूट कर ले गया और साफ़ निकल गया मानो मदीने वालों को अपनी वीरता दिखला गया कि हम तीन सौ मील का धावा करके तुम्हारे घरों से तुम्हारे मवेशी ले जा सकते हैं।

फिर रमज़ान के महीने स० २ हि० की घटना है कि अबू जिहल ने मक्के में मशहूर कर दिया कि हमारा क़ाफ़िला जो धन दौलत से भरपूर और शाम से आ रहा है मुसलमान उसे लूटेंगे। इससे उसका प्रयोजन यह था कि वे सब लोग जिनका धन व्यापार में लगा हुआ है और वे सब लोग जिनके नातेदार क़ाफ़िले में हैं और वे सब लोग जो मुसलमानों से घृणा रखते हैं मिल जुल कर मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयार हो जायें। ऐसा ही हुआ।

क़ुरैशियों की सेना और उसका पक्का इरादा—एक हज़ार वीर योद्धाओं की सेना लेकर जिनकी सवारी में सात सौ ऊंट और तीन सौ घोड़े थे अबू जिहल मक्के से निकला जिस क़ाफ़िले की रक्षा का बहाना करके यह सेना इकट्ठा हुई थी वह मक्के सकुशल पहुँच भी गया परन्तु अबू जिहल सेना लिये बराबर मक्के की ओर बढ़ता गया। अब मुसलमानों को कुछ भी संदेह न रहा कि यह क़ुरैशियों की

चढ़ाई असहाय तथा निर्बल मुसलमानों पर है।

पैग़म्बर ने इस विषय में अपने साथियों से परामर्श किया, मुहाजेरीन ने संतोष जनक उत्तर दिया, दुबारा फिर पूछा मुहाजेरीन ने फिर संतोष जनक उत्तर दिया, तीसरी बार फिर पूछा अब अन्सार समझे कि हुज़ूर हमारे उत्तर के इन्तिज़ार में हैं। सअ्द बिन मआ़ज़ ने निवेदन किया "शायद हुँज़ूर ने यह समझा है कि अन्सार अपने नगर से बाहर निकल कर हुज़ूर की सहायता करना अपना धर्म नहीं समझते हैं, मैं अन्सार की ओर से कहता हूँ कि हम तो प्रत्येक अवस्था में आप के साथ हैं किसी से मुआहिदा कीजिये अथवा किसी के मुआहिदे को अस्वीकार कीजिये, हमारे धन से जितना जी चाहे लीजिये जो इच्छा हो सो प्रदान कीजिये धन का जो भाग हम से आप ले लेंगे वह हमारे लिये उस धन से उत्तम होगा जो हमारे पास छोड़ देंगे, हमें जो आज्ञा आप देंगे हम उसका पालन करेंगे, यदि हुज़ूर इम्रान के सोते तक चलेंगे तो हमें स्वीकार है यदि हुज़ूर हमें समुद्र में कूद पड़ने की आज्ञा देंगे तो आप के साथ इससे भी इन्कार न होगा,, ।

मिक़्दाद ने कहा "या रसूलुल्लाह! हम वह नहीं है कि मूसा के साथियों की नाईं "फ़ज़हब अन्त व रब्बोक फ़क़ातेला इन्ना हा होना क़ाएदून,, कह दें, हम तो आपके दाहिने, बाऐं; आगे, पीछे मरने मारने के लिये हाज़िर हैं। *

मुसलमान पहले से कुछ तय्यार न थे। अन्सार और मुहाजिर मिल मिला कर कुल ३१३ व्यक्ति ऐसे निकले जो युद्ध क्षेत्र में जा सकें। अब तक मुसलमानों को युद्ध की आज्ञा न थी क्योंकि इस्लाम को युद्ध से कोई नाता ही नहीं। इस्लाम शब्द की धातु "सिल्म,, है जिसके अर्थ "सन्धि,, तथा नम्रता होते हैं। जो धर्म संसार के लिये सन्धि का संदेश लेकर आया हो, जिस धर्म के अनुयाइयों को नम्र और उदार रहने की आज्ञा हो वह क्यों युद्ध करते।

जिहाद की आवश्यकता—यही कारण था कि उन्हों ने चुप चाप घरों को, जायदाद को, मक्के में छोड़ दिया और हबश तथा मदीने चले गये थे परन्तु अब ऐसी स्थिति आन पड़ी थी कि युद्ध के अतिरिक्त कोई मार्ग शेष नहीं रहा था। यदि हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते तो परिणाम यह होता कि बकरियों की नाईं काट डाले जाते और सब से बड़ी हानि यह थी कि ऐकेश्वरवाद की मनादी करने वाला संसार में कोई भी शेष न रहता। हज़रत मसीह ने अपने पौने तीन वर्ष के धर्मोपदेश के उपरान्त जिस ज़रूरत से मजबूर होकर अपने साथियों को आज्ञा दी थी कि कपड़े लत्तों और माल धन के बदले हथियार मोल लेकर सशस्त्र हो जायें (लूक़ा २२।३६)। उसी ज़रूरत से ख़ुदा ने मुसलमानों की दशा पर तरस खाकर उनको भी १४ वर्ष तक धैर्य्य करने और अत्याचार सहने के उपरान्त इन आक्रमण कारी शत्रुओं से बचाव की आज्ञा देदी।

जिहाद की पहली आज्ञा—वह पहली आज्ञा जिसके अनुसार मुसलमानों को जिहाद की इजाज़त मिली निम्न लिखित है। ओज़ेन लिल्लज़ीन युक़ातलून बे अन्नहुम्, ज़ोलेमू व इन्नल्लाह अ़ला नस्रेहिम् लक़दीर, अल्लज़ीन उख़्रेजू मिन् देयारेहिम बे ग़ैरे हक़, इल्ला अँय्यक़ूलू रब्बुनल्लाह, वलौ ला दफ़उ ल्ला हिन्नास बअ़्ज़-

* ज़ादुल् मआ़द पृ० ३३७ आयत का अनुवाद यह है "जा तू और तेरा ख़ुदा दोनों लड़ो हम तो यहाँ ठहरे हुये हैं,,

हुम् वेब्इज़ि ल्लहुदेमत सवामेओ व बेयउँ व्व सलवातुँ व्व मसाजेदो युज़्करो फ़ी हस्मुल्लाहे कसीरा (हज्ज रु० ६) अर्थात-उनको आज्ञा दी जाती है, जिन से लोग लड़ते हैं क्यों कि उन पर अत्याचार हुआ और अल्लाह उनकी सहायता पर सामर्थ्य वान् है। यह लोग अपने देश से निरपराध निकाले गये इस लिये कि उन्हों ने अल्लाह को अपना प्रभु मान लिया है। और यदि अल्लाह कुछ लोगों (मुसलमानों) से कुछ लोगों (आक्रमण करने हारों) को हटाता न रहे तो अवश्य ईसाइयों के गिर्जा, यहूदियों के पूज्यस्थान और मंदिर और मुसलमानों की मस्जिदें जिनमें अल्लाह का नाम अधिकता से लिया जाता है गिरादी जातीं।

पाठको! इस आज्ञा में विस्तार पूर्वक वे बातें बताई गई हैं जो मुसलमानों को युद्ध करने की आज्ञा मिलने का कारण हुईं। इसी आज्ञा में यह भी दिखलादिया गया है कि यह युद्ध, पहल करने के लिये है अथवा बचाव के लिये।

पहला कारण—"बचाव करने वालों का मज़लूम (जिन पर अत्याचार किये गये) और आक्रमण करने वालों का ज़ालिम (अत्याचारी) होना है,,। और यह कारण ऐसा है जिसे आज कल का प्रचलित कानून भी "आत्म रक्षा,, के नाम से जायज़ ठहराता है।

दूसरा कारण—"उनका घर बार से निकाला जाना, जायदाद से वञ्चित होना, और वह भी केवल विश्वास सम्बन्धी मत भेद के कारण., सब के सब वही मुसलमान थे जिन्हें सब प्रकार के कष्ट, और देश से निकलने का दण्ड केवल परमात्मा को एक मानने के कारण दिया गया था।

तीसरा कारण—ऐसा है जो यह सिद्ध करता है कि मुसलमानों को युद्ध की आज्ञा केवल उन्हीं के धार्मिक और जातीय लाभ की दृष्टि से नहीं दी गई बल्कि इस लिये भी कि मुसलमानों ने जो मुआहिदे यहूदियों ईसाइयों तथा अन्य जातियों के साथ किये थे और जिस उदारता से प्रत्येक धर्म के लिये धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की थी अब यदि उस मुआहिदे की रक्षा में मुसलमान अपनी जानें न लड़ा देंगे तो सब धर्मों की स्वतन्त्रता का सर्व नाश हो जायेगा और सब के मंदिर, सब के गिर्जा, मिट्टी में मिल जायेंगे क्यों कि जब कोई जाति मुआहिदे की रक्षा करने वाली न रहे तो उस पर अमल कैसे हो सकता है।

इन समस्त आवश्यक कारणों ने मुसलमानों के लिये अनिवार्य कर दिया कि अल्प संख्यक होते तथा कुछ सामग्री न रखते हुए भी इन आक्रमण कारियों को मदीने से दूर ही रोक दें। +

मुसलमानों पर क़ुरैश का दूसरा आक्रमण

अथवा बद्र का युद्ध—रमज़ान स० २ हि० में ख़ुदा का नबी अपने साथ मुसलमानों को लेकर मदीने (ॐ) से चला इस सेना के सामान का अनुमान इस प्रकार किया जा सकता है कि सारी सेना में केवल दो घोड़े और साठ ऊँट थे। यह विचित्र घटना देखो कि

+ इस प्रकार के झगड़े कई वर्षों तक मुसलमानों को परेशान करते रहे। तलवार सदा उनके विरुद्ध उठाई गई और इस्लाम का तलवार के बल अवसान कर देने की कुचेष्टा की गई परन्तु इस्लाम सदा फैलता गया। इस पुस्तक में हजरत के समय के प्रसिद्ध युद्धों का उल्लेख भी संक्षेप रूप में किया जायेगा।

(ॐ) मुहाजिर ६६ से और अन्सार २४० से कुछ अधिक थे।

बद्र के लोगों की संख्या भी तालूत की सेना के बराबर थी जब कि वह जालूत के मुक़ाबिले को निकला था ॐ

जब बद्र (के स्थान पर) पहुँचे तो देखा कि शत्रु की सेना संख्या में उन से तीन गुना और सामान में हजार गुना मौजूद है।

युद्ध से एक रोज पहले नबी ने युद्ध क्षेत्र को देखा और बतलाया कि कल अल्लाह चाहे तो अमुक शत्रु इस जगह और अमुक अमुक इस जगह मारे जायेंगे।

१७ रमज़ान शुक्रवार को युद्ध आरम्भ हुआ युद्ध से पहले नबी ने परमात्मा से रोरो कर प्रार्थना की और कहा कि "यदि यह थोड़े से मुसलमान मार डाले गये तो संसार में तेरी एकता की मनादी करने वाला कोई न रह जायेगा,,। मुसलमानों ने भी प्रार्थनायें कीं।

ईश्वर की सहायता और करुणा से मक्के वालों की हार हुई उनके सत्तर प्रसिद्ध व्यक्ति पकड़े गये और सत्तर वीर मारे गये। अबू जिहल भी इसी जगह मारा गया, यही सब को चढ़ाकर लाया था। वे १४ सरदार जो दारुन्नदवः में हजरत के क़त्ल कर डालने के परामर्श में सम्मिलित हुये थे उनमें से ११ मारे गये तीन जो बच रहे थे उन्हों ने अंत में इस्लाम स्वीकार कर लिया था।

(१) उस समय के युद्ध का क़ानून (२) सताये हुये मुसलमानों में बदला लेने का प्रकृतिक जोश (३) अन्य कबीलों पर धाक बिठाने की आवश्यकता का तक़ाज़ा यह था कि क़ैदियों को घात कर दिया जाता परन्तु दयालु परमात्मा के दयालु पैग़म्बर ने तावान लेकर सब को छोड़ दिया पढ़े लिखे क़ैदियों का तावान (बदला) केवल यह था कि वह अन्सार के बालकों को पढ़ना लिखना सिखादें।

इस घटना से वह पेशगोई (भविष्य वाणी) प्रगट हो गई जो यसइयाह नबी की पुस्तक २१/१६,१७ में लिखी हुई है कि "एक बर्ष में जो मजदूर के बर्ष की नाई होगा "क़ीदार,, का सारा प्रताप जाता रहेगा तथा क़ीदार के धनुष धारियों की संख्या धट जायगी,,।

और वह पेश गोई भी प्रगट हुई जो क़ुरान शरीफ़ में मुसलमानों को इस युद्ध की आज्ञा देते हुये की गई थी कि "इन्नल्लाह अला नस्रेहिम् लक़दीर,, अर्थात् परमात्मा इन सताये हुओं की सहायता की शक्ति रखता है,,। यही कारण है कि क़ुरान में इस युद्ध का नाम "यौमुल् फ़ुर्क़ान,, है क्यों कि पुस्तक वालों और मुसलमानों को इन पेश गोइयों के कारण इस्लाम की सचाई पर एक उत्तम प्रमाण मिल गया था।

क़ुरैश का तीसरा षड़यन्त्र—

नबी के क़त्ल की तय्यारी—बद्र के युद्ध से कुछ समय बाद की घटना है कि सफ़वान बिन उमय्यः (जिसका पिता बद्र में मारा गया था) और उमैर बिन वहब (जिसका पुत्र अभी मुसलमानों की क़ैद में था) मक्के से बाहर एकांत स्थान में इकट्ठा हुए और नबी के विरुद्ध बातें करने लगे।

उमैर बोला:—यदि मुझ पर क़र्ज़ न होता जिसे मैं चुका नहीं सकता और यदि मुझे अपने परिवार के असहाय रह जाने की चिंता न होती तो मैं स्वयं मदीने जाता और मुहम्मद को क़त्ल ही करके लौटता।

सफ़वान बोला:—तेरा क़र्ज़ मैं चुका दूंगा और जब तक मैं जीवित रहूँगा तेरे कुटुम्ब का खर्च मेरे जिम्मे होगा।

उमैर बोला:— "अच्छा यह भेद किसी को मालूम

ॐ बुखारी किताबुल् मग़ाजी में बराऽ से।

न हो, फिर उमैर ने अपनी तलवार की धार को तेज़ कराया और विष में उसे बुझवाया और मक्के से चल खड़ा हुआ।

उमैर मदीने पहुँच कर "मस्जिद-नबवी,, के सामने अपना ऊँट बिठा रहा था कि ऊँट बोल उठा उमर फ़ारूक़ ने उसे देखा और पहचाना और मन में ताड़ गये कि यह पापी अवश्य कोई बुरा विचार लेकर आया है, अतः आगे बढ़कर हज़रत से अर्ज़ किया कि उमैर बिन वहब सशस्त्र चला आ रहा है। नबी ने फ़रमाया "उसे मेरे पास आने दो,, हज़रत उमर ने उसकी तलवार का क़ब्ज़ा पकड़ लिया और उसकी गर्दन पकड़ कर नबी के सामने ले गये नबी ने यह देखा तो फ़रमाया "उमर इसे छोड़ दो उमैर तुम मेरे पास आजाओ,, उमैर ने आगे बढ़कर सलाम किया नबी ने पूछा "कहो कैसे आये हो,, उसने उत्तर दिया "अपने पुत्र की ख़बर लेने आया हूँ। नबी ने पूछा "यह तलवार कैसी है,, उमैर बोला "यह क्या तलवार है हमारी तलवारों ने पहले भी आप का क्या कर लिया है,,।

नबी ने फ़रमाया:--"सच सच बताओ,, उमैर ने फिर वही उत्तर दिया हज़रत ने फ़रमाया "देख तू और सफ़्वान मक्के से बाहर एकान्त स्थान पर गया था, सफ़्वान ने तेरा क़र्ज़ और तेरे कुटुम्ब का ख़र्च अपने ऊपर ले लिया है, और तूने मेरे मार डालने की प्रतिज्ञा की है, और इसी इरादे से तू यहाँ आया है, उमैर तू यह न समझा कि मेरा रक्षक अल्लाह है,,।

उमैर का इस्लाम स्वीकार करना—उमैर यह सुनकर चकित रह गया बोला अब मैं मान गया कि आप अवश्य अल्लाह के नबी और रसूल हैं। यह आसान था कि हम आकाश वाणियों तथा प्रेरणाओं पर आप को झुटलाते रहे परन्तु अब मैं इस भेद के सम्बन्ध में क्या कह सकता हूँ जिसकी ख़बर मेरे और सफ़्वान के सिवाय तीसरे को नहीं थी। धन्य है ईश्वर जिस ने मेरे इस्लाम का यह बहाना बना दिया।

नबी ने अपने अनुयायी साथियों से फ़रमाया अपने इस भाई को धर्म सिखलाओ, क़ुरान याद कराओ और उसके पुत्र को छोड़ दो। उमैर ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं मक्के ही लौट जाऊँ और लोगों में इस्लाम का प्रचार करूँ, और मेरे दिल में यह भी आता है कि मैं मूर्त्तिपूजकों को उसी तरह सताया करूँ जिस तरह पहले मुसलमानों को सताता रहा हूँ।

उमैर के मदीने जाने के बाद सफ़्वान का यह हाल था कि क़ुरैश के सरदारों से कहा करता था कि देखना थोड़े दिनों में क्या गुल खिलने वाला है कि तुम बद्र का शोक भूल जाओगे। परन्तु जब सफ़्वान को ख़बर हुई कि उमैर मुसलमान हो गया तो उसे बड़ा दुख हुआ और उसने क़सम खाई कि जब तक जीवता रहूँगा उमैर से बात न करूँगा और न उसे कोई लाभ पहुँचने दूँगा। ☞

उमैर मक्के आया, वह इस्लाम का प्रचार किया करता था और बहुत से लोग उसके हाथ पर मुसलमान हो गये थे।

तीसरा आक्रमण, स्वैक़ का युद्ध—बद्र में पराजित होने के बाद अबू सुफ़ियाँ ने नहाने धोने की क़सम खाली थी जब तक कि मुसलमानों से बदला न लिया जाये, अतः वह दो सौ सवारों को लेकर मक्के से

☞ स० ८हि० के बाद यह सफ़्वान भी जो आँहज़रत का कट्टर बैरी था और मक्के का प्रसिद्ध सरदार था मुसलमान हो गया था (तिब्री)

निकला। जब मदीने के निकट पहुँचा तो सेना को बाहर छोड़ कर स्वयं रात के अँधेरे में मदीने के भीतर आया सलाम बिन मश्कम यहूदी से मिला। रात भर शराब उड़ती रही। दोनों की सलाह से यह निश्चय पाया कि अभी मुक़ाबिले का समय नहीं है इस लिये वह पिछली रात को वहाँ से निकला। मुसलमानों के फलदार वृक्षों और खजूरों को आग लगा कर और एक मुसलमान को और उसके मित्र साथी को घात कर के लौट गया।

ख़बर मिलने के बाद कुछ दूर तक पीछा किया गया अबू सुफ़ियां की सेना सत्तू की थैलियां गिराती गई थी जिसे मुसलमानों ने उठा लिया था इस लिये इस का नाम "स्वैक़ का युद्ध" हुआ।

कुरैश का चौथा आक्रमण अथवा उहद का युद्ध—मक्के के कुरैश ने आगामी वर्ष मदीन पर फिर आक्रमण किया। इस बार उन्हों ने सार्वजनिक चन्दा इकट्ठा किया था। अबू अज़्ज़: कवि ने तहाम: में फेरी लगा कर बनू कनान: को कुरैश की सहायता पर तय्यार कर दिया था। शाम के व्यापार का ५० हज़ार मिस्क़ाल सोना एक हज़ार ऊँट जो अभी बाँटे नहीं गये थे चन्दे में सम्मिलित कर दिये गये।

ग़रज़ कि पाँच हज़ार ♣ वीरों की सेना जिस में तीन हज़ार ऊँट सवार और दो सौ घुड़ सवार और सात सौ जिरह पहने हुये पैदल सिपाही थे मदीने तक बढ़ती चली आई। आँहज़रत की सम्मति यह थी कि मदीने के भीतर रहते हुए बचाव किया जाये परन्तु बहुमत पर फ़ैसला हुआ और मुसलमानों ने उहद के सूखे पहाड़ तक जो मदीने से तीन कोस पर होगा बाहर निकल कर मुक़ाबिला किया।

इस्लामी सेना में एक हज़ार वीर थे। समय पर उब्बी बिन सलोल ने धोका दिया और अपने ३०० व्यक्तियों को मार्ग ही से लौटा ले गया। इस लिये ७०० मुसलमानों का पाँच हज़ार शत्रुओं से (जो क्रोध और बदला लेने के जोश में भरे हुए थे) सामना था मुसलमानों ने पहले धावे में तो शत्रुओं को हटा दिया और उनके १२ प्रसिद्ध योद्धा (जिन में ८ केवल एक हज़रत अली के हाथ से) मारे जा चुके थे परन्तु तीर कमान वाले मुसलमानों ने उस स्थान को छोड़ दिया जहाँ हज़रत ने उन्हें खड़ा किया था। चालाक शत्रु ने मौक़ा ताड़ लिया और चक्कर काट कर, पीछे से होकर मुसलमानों को दो तरफ़ से बीच में ले लिया।

मुसलमानों को उस वक़्त बड़ी हानि पहुँची और सेना का बड़ा भाग तितर बितर हो गया।

आँहज़रत के पास केवल १२ साथी ☉ अबू बक्र, उमर, अली, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सअ्द बिन वक़ास, तल्हा बिन अब्दुल्लाह, ज़ुबैर बिन अवाम, अबू उबैद: बिन जर्राह आदि थे। शत्रुओं ने ख़ुदा के नबी पर पत्थर फेंके। इब्न-क़ुम्य: के पत्थर से हज़रत का माथा और इब्न-शहाब के पत्थर से मोंढा घायल हुआ उत्ब: के पत्थर से चार दाँत टूट गये। उसके बाद हज़रत एक गढ़े में गिर गये। ख़बर उड़ गई कि हुज़ूर शहीद कर दिये गये।

फ़ातिम: और आयश: की युद्ध क्षेत्र में सेवा—मदीने से पूज्य स्त्रियां दौड़ी हुई आगईं यहां आकर फ़ातिम: ने पिता के घावों को धोया, माथे का ख़ून न थमता था उसमें चटाई जला कर भरी।

♣ नासिखुत्तवारीख़—अन्य पुस्तकों में ३००० संख्या लिखी हुई हैं।

☉ बुख़ारी में बराऽ से

हज़रत अली उस समय ढाल में जल भर भर कर लाते रहे आयशा: सिद्दीक़: और उम्मे सलीम ने मशकीजे उठाये, वे घायलों को जल भर भर कर पिलाती थीं + इस युद्ध क्षेत्र में सत्तर मुसलमान शहीद हुए थे। ✻

युद्ध के नुक़सान में बड़ा भारी नुक़सान यह था कि मुसइब बिन उमैर जो मदीने में धर्म प्रचारक बना कर भेजे गये थे और जिनके उपदेश से औस और ख़जरज के क़बीले मुसलमान हुये थे शहीद हो गये। *

उनकी धर्म पत्नी का नाम हमन: बिन्त हजश था उसी दिन उसका भाई और मामा भी शहीद हुये थे पहले उसे भाई के मारे जाने की ख़बर मिली उसने "इन्ना लिल्लाहे वइन्नाइलैहे राजेऊन,,

(अर्थात् हम परमात्मा की ओर से आये हैं और उसी की ओर हमें जाना है) पढ़ा और भाई के लिये दुआ की।

स्त्री के हृदय में पति का पद—फिर उसे बताया गया कि तेरा पति भी शहीद हो गया है यह सुनते ही उसने बे अख़्तियार चीख़ मारी, हज़रत ने फ़रमाया देखो पति के लिये उसके हृदय में कितना प्रेम है ☙

इसी युद्ध में हज़रत के चचा हमज़: भी शहीद हुये शत्रुओं ने उनके अङ्ग अङ्ग अलग कर के उनके शव का भी निरादर किया था। युद्ध के बाद ज़ुबैर की माता सुफ़िय: अपने भाई (हज़रत हम्ज़:) की लाश देखने आई। ज़ुबैर ने दूर ही से माता को रोका, सुफ़िय: ने कहा "मुझे मालूम है कि मेरे भाई की लाश बिगाड़ी गई और उसका निरादर किया गया परन्तु यह तो हमारे लिये गौरव का स्थान है। बेटा! मैं रोऊंगी नहीं न चिल्लाऊंगी केवल दुआ पढ़ कर लौट जाऊंगी,,। ×

अनस बिन नज़र का बलिदान—इसी युद्ध में अनस बिन नज़र भी शहीद हुये थे। इस वीर ने कुछ मुसलमानों को देखा कि उन्हों ने हथियार फेंक दिये हैं और उदास बैठे हैं पूछा क्या हाल है? उन्हों ने उत्तर दिया रसूलुल्लाह मारे गये। अनस ने जोश के साथ कहा "मूतू अला मा माता अलैहे रसुलुल्लाह,, अर्थात् "आओ जहाँ रसूल ने प्राण दिये हम भी उसी काम में अपना जीवन समाप्त कर दें अब जीवित रह कर क्या करेंगे,, यह कह कर रसूल का वह प्रेमी वीर शत्रुओं के झुण्ड में कूद पड़ा और ७० घाव शरीर पर खाने के बाद शहीद हो गया। ⁂

सऽद बिन रबीऽ का संदेश—इसी युद्ध में सऽद बिन रबीऽ शहीद हुये थे। युद्ध समाप्त हो जाने के पश्चात् नबी ने उनकी खोज में आदमी भेजे।

एक ने देखा कि वे घायलों में पड़े हुए दम तोड़ रहे हैं, पूछा क्या हाल है? सऽद ने कहा तुम मुझे अब मृतक ही समझो परन्तु कृपा कर के रसूलुल्लाह की सेवा में मेरा सलाम पहुँचा देना और मेरी ओर से

+ मुस्लिम पृ० १६५३ पर अनस से।

✻ बुख़ारी में सहल बिन सऽद से।

* हज़रत मुसइब पर एक धारीदार चादर का कफ़न डाला गया, पाँव खुले रहे तो उन पर घास रक्खी गई।

☙ तारीख़ तिबरी।

× तारीख़ी तिबरी।

⁂ तारीख़ तिबरी।

कह देना कि परमात्मा आप को वह उत्तम प्रतिफल प्रदान करे जो किसी पैग़म्बर को किसी जाति के पथ प्रदर्शन पर न दिया जाये और जाति को मेरी ओर से यह संदेश पहुँचा देना कि जब तक एक झपकने वाली आँख भी तुम में बाक़ी रहे उस समय तक यदि शत्रु नबी तक पहुँच गया तो परमात्मा के सामने तुम कोई उत्तर न दे सकोगे। *

एक सहाबी का कथन है कि मैं अबूबक्र से मिलने गया उनकी छाती पर एक नन्ही सी बालिका बैठी थी जिसे वे बार बार चूमते और प्यार करते थे, मैं ने पूछा यह कौन है? फ़रमाया यह सऽद बिन रबीऽ की पुत्री है वह मुझ से उत्तम था और प्रलय के दिन वह मुहम्मद के प्रेमियों में गिना जायेगा। +

अमारः बिन ज़याद ने किस सुख से प्राण त्यागे—इसी युद्ध में अमारः बिन ज़याद शहीद हुये थे, जिन्हों ने जान देते हुये अपने गाल नबी के चरणों से लगा दिये थे ◎ इस ऐतिहासिक घटना को इस कविता में भली पूर्वक दर्शाया गया है।

सर बवक्ते जिबह अपना उसके ज़ेरे पाय है।
यह नसीब अल्लाहो अकबर देखने की जाय है॥

अन्य मुसलमानों की वीरता—अबू दुजानः, हन्ज़लः, तल्हः अली मुर्तज़ा की अद्वितीय वीरता, पूर्ण दृढ़ता और आत्म बलि दान की भी अत्यन्त शानदार घटनायें इस युद्ध में घटित हुईं। तल्हा ने अपने हाथ से ढाल का काम लिया और हज़रत की ओर आने वाले तीर हाथ पर रोके। यह हाथ सदा के लिये बेकार हो गया था। ॐ

बनू दीनार की स्त्री का ईमान—बनू दीनार की एक स्त्री थी जिस का पिता, भाई और पति इस युद्ध में शहीद हुये थे। परन्तु वह कहती थी "मुझे रसुलुल्लाह के विषय में बताओ,,। लोंगो ने कहा परमात्मा की दया से वे सकुशल हैं, कहा "मुझे दिखलादो,, जब दूर से पवित्र मुख देख लिया तो बे अख़्तियार कह उठी "अब प्रत्येक कष्ट सहन किया जा सकता है,,। ❀

अत्याचारियों के लिये क्षमा और प्रार्थना—

इसी युद्ध में कुछ साथियों ने हज़रत से (जब कि स्वयं आप के भी कई घाव आये) कहा कि आप इन अधर्मियों के लिये बद दुआ (श्राप) कीजिये नबी ने फ़रमाया "इन्नी लेम अब् अस लऽआनँव्व लाकिन बुइस्तो दाइ यँव रह्मः 卐 अल्लाहुम्म इह्द क़ौमी फ़इन्नहुम् ला यऽलमून,, ✿ मैं श्राप देने के लिये पैग़म्बर नहीं बनाया गया हूँ मुझे तो अल्लाह की ओर बुलाने वाला और साक्षात् करुणा बना कर भेजा गया है। हे परमात्मा! मेरी जाति को समझ दो वे (मुझे) जानते नहीं हैं।

---

* तारीख़ तिब्री।
+ ज़ादुल मआद।
◎ तारीख़ तिब्री।
ॐ तारीख़ तिब्री।
❀ तारीख़ तिब्री।
卐 मुस्लिम में अबी हुरैरः से।
✿ शिफ़ाऽ क़ाज़ी अयाज़ सिद्दीक़ी प्रेस बरेली पृ० ४७।

क़ुरैश का चौथा षड़यन्त्र और दस धर्म प्रचारकों का मारा जाना :— उहद के युद्ध के पश्चात् शत्रु मुसलमानों को हानि पहुंचाने तथा नष्ट करने के भिन्न भिन्न उपाय सोचने लगे। सं० ४ हिजरी में :—

(१) अज़ुल तथा क़ारह जाति के सात व्यक्तियों को सांठ गांठ कर मदीने में नबी के पास भेजा कि हमारे क़बीले इस्लाम स्वीकार करने को तैयार हैं, हमारे साथ कोई धर्म प्रचारक कर दीजिये। हज़रत ने दस सहाबियों * को जिनके नेता आसिम बिन साबित † थे, उनके साथ कर दिया। जब ये धर्मात्मा पुरुष उनके दांव पर पहुँच गये तो उनके दो सौ युवक टूट पड़े कि उन्हें जीवित ही पकड़ लें। आठ सहाबी लड़कर शहीद हो गये और दो सहाबी अर्थात् ख़ुबैब बिन अदी और ज़ैद बिन दसिनः पकड़ लिये गये।

ख़ुबैब तथा ज़ैद क़ैद में— सुफ़यान हुज़ली उन्हें मक्के ले गया और क़ुरैश के हाथ बेच डाला क़ुरैश ने उन्हें हारिस बिन आमिर के घर में कुछ दिनों भूखा प्यासा बन्द रक्खा। एक दिन हारिस का बालक (पुत्र) तेज़ छुरी से खेलता हुआ ख़ुबैब के पास पहुंच गया उन्होंने उसे गोद में बिठा लिया और छुरी उसके हाथ से लेकर अलग रख दी। बालक की माता ने देखा कि उसका बालक छुरी लिये हुये उस क़ैदी के पास पहुँच गया जिसे थोड़े दिनों से बिना अन्न जल के क़ैद कर रक्खा था तो वह मारे भय के चीख़ उठी। ख़ुबैब ने कहा " यह समझती है कि मैं बालक को मार डालूंगा, नहीं जानती कि उपद्रव उठाना मुसलमान का काम नहीं है।"

अत्याचारी क़ुरैशियों ने कुछ समय पश्चात ख़ुबैब को ले जाकर सलीब के नीचे खड़ा किया और कहा "यदि इस्लाम छोड़ दो तो तुम्हारे प्राण बच सकते हैं।" दोनों धर्मात्माओं ने उत्तर दिया कि "जब इस्लाम ही न बाक़ी रहा तो प्राणों को रखकर क्या करेंगे।"

अब क़ुरैश ने पूछा कि "कोई अभिलाषा हो तो बताओ ?" ख़ुबैब ने कहा "दो रकअत नमाज़ पढ़ लेने का अवसर हमें दिया जाये।" अवसर दिया गया, उन्होंने नमाज़ पढ़ी। हज़रत ख़ुबैब ने कहा "मैं नमाज़ में अधिक समय लेता पर यह सोचा कि कहीं शत्रु यह न कहें कि यह मौत से डर गया है।" ‡ फिर उन निर्दयी अधर्मियों ने दोनों को सलीब पर लटका दिया। और बर्छे वालों से कहा कि बर्छे की नोक उनके शरीर के अंगों में चुभोयें। अल्लाहो अकबर! उन का मन इस्लाम पर कितना स्थिर था, उनके हृदय में सच्चे धर्म के बारे में कितनी सुदृढ़ता थी। ख़ुदा की इच्छा और सदा की मुक्ति पर कितना विश्वास था कि इन समस्त अत्याचारों तथा कष्टों को सहन करते हुये दम न मारा।

जीवन की लालसा और रसूल के प्रेम का मुक़ाबिला— एक पापी ने बर्छे से ख़ुबैब का कलेजा छेदते हुये पूछा "कहो अब तो तुम यह

* इब्ने हिशाम में ६ और सहीह बुख़ारी में दस हैं।

† यह आसिम बिन साबित उमर फ़ारूक़ के नाना थे।

‡ बुख़ारी में अब्दुल्लाह बिन अयाज़ से।

चाहते होगे कि मुहम्मद फंस जाय और मैं छूट जाऊँ ?" खुबैब ने उत्तर दिया "खुदा जानता है कि मैं तो इतना भी स्वीकार नहीं कर सकता कि मेरे प्राण बच जाने के लिये नबी के पांव में काँटा भी लगे।" *

खुदा के इस सच्चे उपासक और रसूल के इस प्रेमी वीर ने उन सब अधर्मियों के सामने सलीब के नीचे खड़े होकर निम्नांकित आशय की कविता पढ़ी जिससे इस दृश्य की स्थिति और उस धर्मात्मा का इस्लामी प्रेम भली भांति प्रकट होता है।

"झुण्ड † के झुण्ड लोग मेरे आस पास खड़े हो रहे हैं। उन्होंने बड़े २ जत्थों को बुला लिया है। ये सबके सब शत्रुता निकाल रहे हैं और मेरे विरुद्ध जोश दिखला रहे हैं, और मैं इस बलिवेदी में बंधा हुआ हूँ। क़बीलों ने अपनी स्त्रियों तथा बालकों को भी बुला लिया है, और मुझे एक मजबूत लकड़ी के पास ले आये हैं। उन्होंने कह दिया है कि अधर्म स्वीकार करने से मैं मुक्त हो सकता हूँ। पर इससे तो मृत्यु मेरे लिये अति सरल है। मेरे नेत्रों से बराबर आंसू बह रहे हैं परन्तु मैं अधीर नहीं हूँ। मैं शत्रु के आगे दुर्बलतापूर्ण नम्रता न दिखाऊंगा, और न रोऊंगा न चिल्लाऊंगा। मैं जानता हूँ कि मैं परमात्मा की ओर जा रहा हूँ। मृत्यु से मुझे इसलिये भय नहीं कि मैं मर जाऊंगा बल्कि मैं लपट वाली अग्नि के खून चूसने से डरता हूँ। उस महान सिंहासन के स्वामी ने मुझसे कोई सेवा लेना चाही है, और मुझे धैर्य के लिये आदेश किया है। अब उन्होंने मार मार कर मेरे मास के टुकड़े टुकड़े कर दिये हैं। मेरी आशा जाती रही है। मैं अपनी असमर्थता और असहायता की फ़रियाद और उन इरादों की फ़रियाद जो मेरे प्राण निकल जाने के बाद ये लोग रखते हैं खुदा से करता हूँ। खुदा की क़सम! जब मैं इस्लाम पर प्राण दे रहा हूँ तो मैं यह चिन्ता नहीं करता कि उसके मार्ग में किस अंग के बल गिरूंगा, और क्योंकर प्राण विसर्जन करूंगा। परमात्मा से यदि उसकी इच्छा हो तो यह आशा है कि वह मेरे मास के टुकड़ों में से प्रत्येक टुकड़े को आशीर्वाद प्रदान करे।"

सब से अन्त में यह प्रार्थना की थी "हे परमात्मा! हमने तेरे पैग़म्बर का उपदेश इन लोगों तक पहुंचा दिया। अब तू अपने पैग़म्बर को हमारी अवस्था और इनकी कुकृतियों की सूचना पहुंचा दे।" हजरत सईद बिन आमिर जो हजरत उमर के शासनकाल में आमिल थे, कभी कभी एकाएक मूर्छित हो जाया करते थे। एक दिन हजरत उमर ने कारण पूछा। वे बोले "मुझे कोई रोग नहीं है, जब खुबैब को सलीब (सूली) पर चढ़ाया गया तो मैं लोगों के झुण्ड में मौजूद था। मुझे जिस समय खुबैब की बातें याद आ जाती हैं मैं मूर्छित हो जाता हूँ।"

एक और षड़यन्त्र—अबू बराड आमिर ने भी ऐसी ही मक्कारी से काम लिया था। वह नबी

* तिर्मी तथा इब्ने हिशाम भा० २ पृ० १२३।

† सीरत इब्ने हिशाम भाग २ पृष्ठ १२३।

की सेवा में आया और निवेदन किया कि नज्द देश के पथ-प्रदर्शन के लिये मेरे साथ कुछ प्रचारक भेज दीजिये। उसके भाई का पुत्र नज्द का हाकिम था। आमिर ने विश्वास दिलाया था कि प्रचारकों की रक्षा की जायगी। हज़रत ने मुन्ज़िर बिन अम्र अन्सारी को सत्तर सहाबियों * सहित जो चुने हुये विद्वान तथा क़ुरान पाठी थे उसके साथ कर दिया। जब वे वीर मऊनः पर पहुंचे जो बनी आमिर के इलाक़े में था तो वहां से हराम बिन मलहान को पैग़म्बर का पत्र देकर तुफ़ैल नामक हाकिम के पास भेजा गया। हाकिम ने उस दूत को क़त्ल करा दिया। जब्बार बिन सलमा एक व्यक्ति था जिसने हाकिम के इशारे पर पीठ में बर्छा मारा था जो छाती से साफ़ निकल गया। उन्होंने गिरते हुये अरबी भाषा में कहा "काबे के प्रभु की सौगन्द! मैं सफल हो गया।" ख़ूनी पर इस वाक्य ने ऐसा प्रभाव डाला कि वह नबी की सेवा में आकर मुसलमान हो गया। हाकिम ने बाक़ी सब प्रचारकों को भी क़त्ल करा दिया। क़अब बिन ज़ैद ने जो उन मारे जाने वालों की आड़ में छुप कर बच गये थे इस घटना की सूचना रसूलुल्लाह को दी।

मक्के की विजय

इसी वर्ष (सं० ८ हि०) मुसलमानों को अचानक रमज़ान महीने में मक्के पर धावा बोलना पड़ा। कारण यह हुआ कि सं० ६ हि० में क़ुरैश ने जो समझौता आंहज़रत से हुदैबियः स्थान पर किया था उस की एक धारा यह थी कि :—

दस वर्ष तक युद्ध न होगा, इस बीच में जो जातियां नबी की ओर जाना चाहें उधर मिल जांय और जो जातियां क़ुरैश से मिलना चाहें वे उधर मिल जायें।"

इसी शर्त के अनुसार बनी ख़ुज़ाअः नबी की की ओर और बनी बक्र क़ुरैश की तरफ़ मिल गये थे।

समझौते को अभी दो वर्ष भी न व्यतीत हुये थे कि बनू बक्र ने बनू ख़ुज़ाअः पर धावा बोला और क़ुरैश ने भी बनू बक्र को हथियारों से सहायता दी। इक्रमः बिन अबूजिहल सुहैल बिन अम्र (मुआहिदे पर इसी ने हस्ताक्षर किये थे।) और सफ़वान बिन उमय्यः ने (ये तीनों क़ुरैश के सरदार थे) स्वयं भी नक़ाब ओढ़ कर अपने साथियों सहित बनी ख़ुज़ाअः पर हमला किया। † इन बेचारों ने शरण भी चाही, काबे के भीतर जाकर पनाह भी ली परन्तु उनको हर जगह मारा गया। ये बेचारे जब "इलाहका, इलाहका" (अपने प्रभु के लिये, अपने प्रभु के लिये) कह कर दया की प्रार्थना करते थे तो वे अत्याचारी उनके उत्तर में कहते थे "ला इलाहल् यौम" (आज प्रभु कोई चीज़ नहीं।) ‡

इन सताये हुये लोगों में से बचे खुचे चालीस व्यक्ति जिन्होंने भाग कर अपने प्राण बचाये थे नबी की सेवा में पहुँचे और अपनी दुःख भरी कहानी सुनाई। अम्र बिन सालिम ख़ुज़ाई ने

* ज़ादुल मआद, सहीह बुख़ारी द्वारा पृष्ठ ३६०। इब्ने हिशाम में यह संख्या ४० लिखी है।

† तारीख़ तबरी।

‡ सीरत इब्ने हुशाम भाग २ पृष्ठ २०१।

अपनी एक रोचक कविता में इस दुःख भरी घटना को इस प्रकार वर्णन किया है।

"क़ुरैश ने आप से जो प्रतिज्ञा की थी उसे भंग कर दिया।

उन्होंने उस दृढ़ प्रतिज्ञा को जो आप से की थी तोड़ डाला।

हमें सूखी घास की नाईं नष्ट भ्रष्ट कर दिया।

वे समझते हैं कि हमारी सहायता के लिये कोई न आ सकेगा।

हम तुच्छ हैं और कम हैं।

उन्होंने वतीर (स्थान) में सोते समय हम पर धावा बोल दिया।

हमें (हम में से कुछ के शरीरों को) रुकू और सजदे की अवस्था में टुकड़े २ कर डाला।"

मुआहिदे का पालन करना, फ़रियादी जत्थे की फ़रियाद को पहुँचना, तथा भविष्य में मित्र क़बीलों की रक्षा करना, ये सब बातें थीं जिनके कारण नबी ने मक्के की ओर प्रस्थान किया। दस हज़ार * का जत्था साथ था। दो मन्ज़िल चले थे कि मार्ग में अबूसुफ़ियान बिन हारिस और अब्दुल्लाह बिन अबू उमय्यः हज़रत को मिले, ये वे लोग थे जिन्होंने आपको बड़े दुःख पहुंचाये थे और इस्लाम के मिटाने में कोई कोर कसर न उठा रक्खी थी। हज़रत ने उन्हें देखा और अपना मुख फेर लिया। उम्मुल् मोमेनीन उम्म सलमः ने कहा 'या रसूलल्लाह! अबूसुफ़ियान आपके सगे चाचा

* सहीह बुख़ारी में इब्न-अब्बास से, किताबुल मग़ाज़ी पारा १७। अब पढ़िये तौरात ग़ज़लुल् ग़ज़लात पर्ब्ब ५ पाठ १०—"मेरा प्रीतम सुर्ख़ सफ़ेद है, दस हज़ार व्यक्तियों के बीच वह झण्डे के समान खड़ा होता है"। फिर देखिये इसी पर्ब्ब का पाठ १६, जो उर्दू बाइबिल आजकल देश में फैलाई जा रही है उसके शब्द ये हैं—'हे यरोसलीम की पुत्रियो! यह मेरा प्रिय, प्राणाधार है" किन्तु इब्रानी भाषा के शब्द ये हैं—ख़िल्लो मुहम्मदेम''''''''इसका शुद्ध अनुवाद यह है कि "वह तो ठीक २ मुहम्मद है, मेरा मित्र मेरा प्रिय यही है, हे यरोसलीम की पुत्रियो।" पादरी सहमत हैं कि ग़ज़लुल् ग़ज़लात में किसी आने वाले धर्मात्मा का गीत गाया गया है फिर कहते हैं कि वह धर्मात्मा हज़रत मसीह हैं। परन्तु जब इस गीत के रचेता हज़रत सुलैमान स्वयं ही उसका नाम "मुहम्मद" बताते हैं और यह पता भी देते हैं कि वह हैकल (उपासना ग्रह) में दस हज़ार व्यक्तियों सहित आवेगा तो उस धर्मात्मा के सम्बन्ध में संदेह ही क्या शेष रह जाता है।

कदाचित कोई कहे कि इस भविष्य वाणी से आँहज़रत का दस हज़ार सेना सहित विशेष रूप से मक्के में आना सिद्ध नहीं होता इसलिये मक्के का नाम दिखलाने के लिये दूसरी पेशगोई देखिए। किताब इस्तिसना पर्ब्ब ३३ पाठ १ व २ में है—"यह वह आशीर्वाद है जो ईश्वरीय पुरुष मूसा ने अपनी मृत्यु से पूर्व बनी इस्राईल को प्रदान किया और उस ने कहा 'ख़ुदा वन्द सीना से आया और शईर से उन पर उदय हुआ, फ़ारान ही के पहाड़ से वह प्रकाशमान हुआ, दस हज़ार क़ुद्सियों' (पवित्रात्माओं) सहित आया और उसके सीधे हाथ में एक आतिशी शरीअत (अग्नि स्वरूप विधान) उनके लिये थी"। सीना से आने से मूसा की ओर और शईर से ख़ुदा वंद के आने से ईसा की ओर संकेत है और शेष भविष्य वाणी आँहज़रत के सम्बन्ध में है जो दस हज़ार पवित्र सहाबियों (साथियों) सहित फ़ारान के पहाड़ से फ़ारान वालों पर प्रकट हुए थे, आतिशी शरीअत से आशय प्रकाश युक्त आकाश वाणी शरीअत है क्यों कि मूसा ने अग्नि ही से ख़ुदा का कलाम सुना था, 'उनके लिये' से आशय यह है कि मक्के वाले मक्का विजय होने के समय मुसलमान हो जायेंगे।

का पुत्र है और अब्दुल्लाह सगी बुआ का पुत्र। इतने निकटवर्ती नातेदारों को तो आपकी दया तथा करुणा से वंचित नहीं रहना चाहिये।'

इसके पश्चात् हज़रत अली ने इन दोनों को यह उपाय बताया कि जिन शब्दों में हज़रत यूसुफ़ के भाइयों ने क्षमा की प्रार्थना की थी तुम भी हज़रत की सेवा में जाकर उन्हीं शब्दों का प्रयोग करो, नबी की दया से आशा है अवश्य सफल होगे। उन्होंने नबी की सेवा में उपस्थित होकर यह आयत पढ़ी "तल्लाहो लक़द आसर कल्लाहो अलैना व इन कुन्ना लख़ातेईन" हज़रत ने उत्तर दिया "ला तसरीब अलैकोमुल् यौम, यग़फ़ेरुल्लाहो लकुम् व हुव अरहमुर्राहेमीन"। अर्थात् तुम्हें आज के दिन क्षमा है। अल्लाह तुम पर दया करे। वह सब दया करने हारों से अधिक दयालु हैं।

उस समय अबूसुफ़ियान ने बड़े जोश के साथ निम्न आशय की कविता पढ़ी "क़सम है कि जिन दिनों मैं युद्ध का झगड़ा इसलिये उठाया करता था कि लात (मूर्ति का नाम है) की सेना मुहम्मद की सेना पर विजयी हो उन दिनों मैं उस व्यक्ति की नाईं था जो अंधेरी रात में टक्करें खाता हो, अब वह समय आगया कि पथ-प्रदर्शन पाऊं और सीधे मार्ग पर लग जाऊं। मेरा पथ-प्रदर्शन पथ-प्रदर्शक ने किया, (न कि मेरे मन ने) और अल्लाह का मार्ग मुझे उस व्यक्ति ने दिखलाया है जिसे मैंने दुतकार दिया तथा छोड़ दिया था।"

नबी ने फ़रमाया "हां तुम तो मुझे छोड़ते ही रहे थे"। *

नबी की इच्छा यह थी कि अभी मक्के वालों को हमारे आने की सूचना न होने पाये, सो ऐसा ही हुआ। † जब हज़रत ने मक्के तक पहुंच कर

* ज़ादुल् मआद भा० १ पृ० ४१३।

† सहीह बुख़ारी में इब्ने मअक़िल से। अब देखिये मलाकी नबी की पुस्तक पर्व ३ पाठ १ "और वह ख़ुदावंद जिसकी खोज में तुम हो, हां समय का रसूल जिस से तुम प्रसन्न हो वह अपनी हैकल (उपासनाग्रह) में अचानक आवेगा, देखो वह निश्चिय आवेगा, रब्बुल् अफ़्वाज फ़रमाता है, पर उसके आने के दिन कौन ठहर सकेगा और जब वह प्रकट होगा कौन है जो खड़ा रहेगा।

इस इलहामी लेख से सिद्ध है कि आंहज़रत के आने के इन्तिज़ार और उसके चिन्ह मालूम करने का शौक़ सब को था और प्राचीन पैग़म्बर और नबी अपना कर्तव्य समझते थे कि उसके चिन्ह बता दें। मलाकी नबी की पुस्तक बाइबिल की सब से अन्तिम पुस्तक है अतः यह पेशगोई या तो हज़रत ईसा के बारे में हो सकती है या फिर हमारे दावे के अनुसार हज़रत मुहम्मद के बारे में। निम्न कारणों से यह पेशगोई ईसा के सम्बन्ध में नहीं हो सकती :—

१—मत्ती ने इस पेशगोई को हज़रत ईसा के विषय में नहीं बतलाया, यद्यपि उन्होंने मसीह की भविष्य वाणियों को इन्जील में इकट्ठा कर दिया है।

२—प्राचीन लेखकों में से अन्य किसी विद्वान ईसाई ने भी इसे मसीह के बारे में नहीं बतलाया।

३—मसीह को सब ईसाई ख़ुदा का पुत्र कहते हैं न कि रसूल।

४—हैकल में शत्रु उनके आगे परास्त नहीं हुये बल्कि शत्रुओं ने मसीह को परास्त कर दिया।

हज़रत मुहम्मद पर यह पेशगोई निम्न कारणों से ठीक उतरती है :—

१—'अपनी हैकल' का शब्द मौजूद है इससे प्रकट है कि वह उस स्थान की ओर आयेगा जिसे हैकल

बाहर डेरे डाल दिये और मक्के वालों को सूचित करने के लिये सेना में अलाव जलाने की आज्ञा दी तब उनको ख़बर हुई।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही नबी ने आज्ञा दी कि सेना भिन्न भिन्न मार्गों से नगर में प्रवेश करे और इन आज्ञाओं का पालन करे :—

सैनिक आज्ञायें—(१) जो व्यक्ति हथियार डाल दे उसे क़त्ल न किया जाये।

(२) जो व्यक्ति कअ्बे के भीतर चला जाये उसे क़त्ल न किया जाये।

(३) जो व्यक्ति अपने घर के भीतर बैठ रहे उसे क़त्ल न किया जाये।

(४) जो व्यक्ति अबूसुफ़ियान के घर में चला जाये उसे क़त्ल न किया जाये।

५—जो व्यक्ति हकीम बिन हिज़ाम के घर में चला जाये उसे क़त्ल न किया जाये।

६—भागने वाले का पीछा न किया जाये।

७—घायल को क़त्ल न किया जाये।

८—कैदी को क़त्ल न किया जाये।

नगर में दाखिल होने वाले जत्थों में से केवल उस जत्थे का कुछ मुक़ाबिला हुआ जो ख़ालिद बिन वलीद के आधीन था और इस मुक़ाबिले में भी मक्के वालों को भागना पड़ा। शेष सब जत्थे बिला रोक टोक के नगर में दाखिल हो गये। लड़ाई में दो मुसलमान और २८ विरोधी मारे गये।

ख़ुदा का सच्चा पैग़म्बर जिस समय (२० रमज़ान को) नगर में दाखिल हुआ उस समय सिर झुकाय * क़ुरान शरीफ़ (सूरय फ़ातेहः) पढ़ रहा था, और ऊँट की सवारी पर काबे की ओर † जा रहा था, और ऊँट पर अपने साथ अपने मुक्त किये हुये दास ज़ैद के पुत्र उसामः को बिठाये हुये था। वहां पहुंच कर पहिले ख़ुदा के घर को मूर्तियों

होने का पद स्वयं उसी ने प्रदान किया हो। काबे को आंहज़रत ही ने "क़िब्ला" ठहराया था और मक्का विजय होने से लगभग ७ वर्ष पूर्व ठहरा चुके थे।

२—"अचानक आवेगा" स्वयं हज़रत की यही प्रार्थना थी, (देखो बिलाज्री) और ऐसा ही हुआ।

३—"रब्बुल अफ़वाज" (सेनाओं का स्वामी) का शब्द बताता है कि वह उस समय सेनाओं सहित होगा।

४—मक्के वालों में से कोई भी मुक़ाबिले में न ठहर सका था।

५—शब्द "समय का रसूल" उन्हीं अर्थों में प्रयोग किया गया है जिनमें शब्द "वह नबी" योहन्ना ने प्रयोग किया है और मसीह ने इनकार किया कि मैं वह नबी नहीं हूं। देखो योहन्ना पर्व १ पाठ २२।

* हुकूमत वाले ऐसे अवसर पर बड़ी आन बान से जीते हुये नगर में प्रवेश करते हैं।

† बुख़ारी में अब्दुल्लाह बिन मग़फ़िल से। अब ज़करियाह नबी की पुस्तक पर्व पाठ २१ देखिये जिसमें एक गधे के सवार और एक ऊँट के सवार का ज़िक्र भविष्य वाणी के रूप में किया गया है। गधे के सवार हज़रत ईसा हैं और ऊँट के सवार हज़रत मुहम्मद, (दोनों पर ख़ुदा का आशीर्वाद)। दोनों के हालात का मुक़ाबिला करो, हज़रत ईसा बैतेईल में सवार होकर गये, दूकानदारों और कबूतर बेचने वालों को वहां से निकाला और ख़ुदा के घर को पवित्र ठहराया। हज़रत मुहम्मद बैतुल्लाह में ऊँट पर चढ़ कर गये और मूर्तियों को वहां से निकाला। इन दोनों सत्यवादियों ने यसइयाह नबी की भविष्य वाणी को सच्चा ठहराया।

से पवित्र किया। उस समय काबे के आस पास ३६० मूर्तियां रखी हुई थीं। नबी कमान (अथवा छड़ी) की नोक से प्रत्येक मूर्ति को गिराते जाते थे और यह पढ़ रहे थे "१—जाअल् हक़ व ज़ह-क़ल् बातिल, इन्नल् बातेल कान ज़हूक़ी" (बनी इस्राईल रु० ६) २—"जाअल हक्क़ व मा युब्-दियल् बातेल व मा युईद *" (सबा रु० ६)।

इस काम से छुट्टी पाकर उस्मान बिन अबी-तल्हा को बुलाया। उनके परिवार में प्राचीन काल से काबे की चाभियां रहा करती थीं। नुबुव्वत के आरम्भ में एक बार हज़रत ने इसी उस्मान से कहा था कि काबा खोल दो, उसने इनकार कर दिया था। इस पर हज़रत ने फ़रमाया था कि अच्छा तुम देख लेना एक दिन यह चाभियां मेरे हाथ में होंगी और मैं जिसे चाहूँगा उसे दूंगा। उस्मान ने उत्तर दिया था "क्या उस दिन क़ुरैश के सब वीर पुरुष ज़लील तथा नष्ट हो जायेंगे।"

अब हज़रत ने ताली लेकर काबे का द्वार खोला। भीतर जाकर प्रत्येक कोने में "अल्लाहो अकबर" का नारा लगाया फिर परमात्मा की कृतज्ञता में नमाज़ पढ़ते हुये बड़ी नम्रता सहित उस प्रभु के आगे अपने माथे को पृथ्वी पर रख कर सिजदः किया।

इतनी देर में मक्के के वे सब सरदार और सब बड़े २ लोग पकड़ कर इकट्ठा किये गये। इन लोगों ने :—

(१) बीसियों मुसलमानों को घात किया अथवा कराया था।

(२) सैकड़ों मुसलमानों को दुःख और कष्ट पहुंचा कर घरों से निकाला था।

(३) इस्लाम धर्म को मिटाने और मुसलमानों को नष्ट करने के हेतु शाम, नज्द तथा यमन तक की यात्रा की थी।

(४) कई बार मदीने पर धावा बोला और मुसलमानों को (तीन सौ मील दूर चले जाने पर भी) चैन से नहीं रहने दिया था।

अर्थात् वे सब लोग जो मुसलमानों को मिटाने में साम, दाम, दण्ड के प्रत्येक उपाय में अपनी सारी शक्ति लगा चुके थे और इन्हीं अपवित्र यत्नों में इक्कीस वर्ष तक बराबर लगे रहे थे।

ख़ुदा का रसूल जिसे ख़ुदा ने समस्त सृष्टियों के लिये करुणा समान बना कर भेजा था जब ईश्वर अराधना से छुट्टी पाकर बाहर निकला तो हज़रत अब्बास (आप के चाचा) ने निवेदन किया "काबे की चाभियां बनो हाशिम को प्रदान की जायें।"

हक़ बहक़दार—नबी ने फ़रमाया "अल्-यौमो यौमुल् बिर्रे वल् वफ़ा ("आज का दिन भलाई करने और प्रदान करने का दिन है।" फिर उस्मान को बुलाया और उसी को चाभियां दे दीं। और फ़रमाया "जो कोई तुम से यह चाभियां छीनेगा वह अत्याचारी होगा।"

* बुख़ारी में अब्दुल्लाह बिन मसऊद से। पहिली और दूसरी आयत में मूर्ति पूजा को मिथ्या ठहरा कर यह बतलाया है कि अब इस घर में मूर्तियाँ न रक्खी जायंगी। चौदह सौ वर्ष व्यतीत हो रहे हैं और इस पेशीनगोई की सच्चाई प्रकट होरही है। जो नबी ईश्वरादेश से ऐसी स्पष्ट भविष्य वाणी प्रकट करता था उसके सच्चे और पवित्र होने में कोई किस प्रकार सन्देह कर सकता है।

अब रहमतुल्लिल् आलमीन उस घातक तथा खूनी जत्थे की ओर मुड़े और फ़रमाया "हे क़ुरैश के लोगो ! परमात्मा ने तुम्हारे अज्ञानतापूर्ण अभिमान तथा पूर्वजों पर इतराने का घमण्ड आज तोड़ दिया। (सत्य बात यह है कि) सब लोग आदम के पुत्र हैं और आदम मिट्टी से बनाये गये हैं। अल्लाह फ़रमाता है "लोगो ! हम ने तुम को एक पुरुष तथा एक स्त्री से उत्पन्न किया है और कुल तथा गोत्र पहिचान के लिये बनाये हैं और अल्लाह के निकट बड़ा वह है जो संयमी है।" फिर फ़रमाया "जाओ तुम मुक्त हो और तुम पर आज कोई उत्तर दायित्व नहीं।" *

इस्लाम स्वीकार करने वालों से शर्तें—फिर हज़रत ने सफ़ा पहाड़ी पर बैठ कर मुसलमान होने वालों को अपने हाथ से मुसलमान किया। इस अवसर पर हज़रत उमर एक २ व्यक्ति को पेश करते जाते थे। †

इस्लाम स्वीकार करने वालों को निम्न लिखित बातों का इक़रार करना पड़ता था—

१—मैं अल्लाह के साथ किसी को भी उसकी ज़ात (अस्तित्व), सिफ़ात (गुणों) और इबादत (आराधना) में साझी न ठहराऊंगा।

(२) मैं चोरी न करूंगा, व्यभिचार न करूंगा निरपराध क़त्ल न करूंगा, पुत्रियों को जान से न मारूंगा, किसी पर झूठा अभियोग न लगाऊंगा।

(३) सद्कर्मों तथा सत्य विषयों में अपनी शक्ति भर नबी की आज्ञा का पालन करूंगा। ‡

स्त्रियों से यह भी इक़रार लिया जाता था :—किसी के सोग में मुँह न नोचेंगी, थप्पड़ों से मुख न पीटेंगी, सिर के बाल न खसोटेंगी, कपड़े न फाड़ेंगी, और क़ब्र पर सोग लेकर न बैठेंगी।

स्त्रियों से बैअ्त लेने का ढङ्ग—पुरुषों से बैअ्त लेने में हाथ से हाथ मिलाना पड़ता था। स्त्रियों से बैअ्त लेने का ढंग यह था कि पानी के बासन में हज़रत अपना हाथ डाल कर निकाल लेते फिर बैअ्त करने वाली स्त्रियां उसी बासन में अपना हाथ डालतीं। किसी किसी अवसर पर केवल ज़बान ही से इक़रार लेना काफ़ी समझा गया।

मक्कः विजय होने के दूसरे दिन आंहज़रत क़ाबे का तवाफ़ (विशेष परिक्रमा) कर रहे थे फ़ुज़ाला बिन उमैर ने अवसर पाकर इरादा किया कि आप को क़त्ल कर डाले। जब वह इस इरादे से समीप पहुंच गया तो आपने फ़रमाया "क्या फ़ुज़ाला आता है ?"

फ़ुज़ाला बोला "हां"

नबी ने पूछा "तुम अपने दिल में अभी क्या इरादा कर रहे थे ?"

* तबरी।

† तबरी।

‡ तबरी बैअ्त (धर्म दीक्षा) के इन शब्दों को जो विजयोपरान्त तथा प्रताप की अवस्था में लोगों से कहलाये गये प्रथम बैअ्ते अक़बा के शब्दों से (जो नबी ने अंधेरी रात में नगर से बाहर जाकर मदीने वालों से कहलाये थे) मिलाकर देखोगे तो कोई अन्तर न पाओगे। यही एक कसौटी हज़रत की सचाई को प्रकट कर देती है।

फ़ुज़ाला ने कहा "कुछ नहीं, मैं तो अल्लाह, अल्लाह कर रहा था।"

हज़रत यह सुनकर हंस पड़े और फ़रमाया "अच्छा तुम ख़ुदा से अपने लिये क्षमा की प्रार्थना करो।" यह फ़रमाकर अपना हाथ भी उसके सीने पर रख दिया।

फ़ुज़ाला का कहना है कि "हाथ के रख देने से मेरे हृदय को अत्यन्त शान्ति प्राप्त हुई और हज़रत का प्रेम इतना मेरे हृदय में पैदा होगया कि आपसे अधिक मुझे कोई भी प्रिय न रहा। मैं यहां से घर को चला। मार्ग में मेरी प्रिया मिली जिसके पास मैं बैठा करता था उसने कहा 'फ़ुज़ाला एक बात सुनते जाओ।'

मैंने उत्तर दिया 'नहीं नहीं! अल्लाह और इस्लाम ऐसी बातों से मुझे रोकते हैं।'

अद्वितीय क्षमा—आंहज़रत के पवित्र जीवन का वर्णन अधूरा रह जायगा यदि उस अद्वितीय क्षमा का ज़िक्र न किया जाये जो मक्के में दी गई। मक्के में दाख़िल होने से पहले सेना को हिदायत करदी गई थी कि किसी पर आक्रमण न करे, अलबत्ता उन चार पुरुषों तथा दो स्त्रियों* के सम्बन्ध में जिन्हें उनके अपराधों के कारण प्राण दण्ड देना था घोषणा करदी गई कि उनको क़त्ल किया जा सकता है। परन्तु इन चार पुरुषों में भी केवल एक इब्न ख़तल को क़त्ल किया गया। यह पहले मुसलमान हो चुका था, एक दिन उसने अपने दास को इसलिये क़त्ल कर दिया था कि उसने समय पर भोजन तैयार नहीं किया था और क़त्ल के बाद मक्के भाग आया था। शेष तीन इक्रिमः बिन अबू जिहल, हब्बार बिन असवद और अब्दुल्लाह बिन अबी सर्ह को क्षमा प्रदान की गई। इक्रिमः एक तो अबू जिहल का पुत्र था दूसरे मुसलमानों से बार बार लड़ चुका था और उस समय भी बनू ख़ुज़ाअः को जो मुसलमानों के मित्र थे नष्ट करने का कारण बना था। हब्बार ने नबी की पुत्री सय्यदह ज़ैनब के जब वह मक्के से मदीने जा रही थीं बर्छा मारा तथा हौदज से गिरा दिया जिसके कारण गर्भपात भी हो गया था और अंत में उसी से उनकी मृत्यु हुई। अब्दुल्लाह बिन अबी सर्ह कहने लगा था कि वही (ईश्वरीय वाणी) तो मुझे प्राप्त होती है, मुहम्मद तो मुझ से सुन कर लिखवा देते हैं।

अल्लाहो अकबर! ऐसे अपराधियों पर दया करना "रहमतुल्लिल् आलमीन" ही का काम हो सकता है।

दो स्त्रियों में से एक स्त्री को जो जान बूझ कर ख़ून कर चुकी थी मृत्यु दण्ड दिया गया।

क्षमा पाने हारों में अबूसुफ़ियान की स्त्री हिन्दः भी थी, इस स्त्री ने आंहज़रत के चाचा (हज़रत हम्ज़ः) का कलेजा निकाल कर दांतों से चबाया था तथा उनके नाक कान काट कर तागे में पिरो कर गले का हार बनाया था।

वहशी को भी क्षमा दी गई जिसने अमीर हम्ज़ः को मक्कारी से मारा था, फिर लाश का निरादर किया था।

विचार करने से समझ में आता है कि हज़रत की सेना ने मक्का विजय नहीं किया † था बल्कि

* सुनन-अबू दाऊद में सनद से।

† इस्लामी विद्वानों में मतभेद है कि मक्का विजय हुआ अथवा सन्धि द्वारा उस पर क़ब्ज़ा हुआ।

आप के सदाचार और क्षमा नें मक्के वालों के दिलों को जीत लिया था।

विजय के बाद ग़नीमत के तौर पर धन तथा सम्पत्ति पर कब्जा करने का विषय तो एक तरफ़ रहा, जो मुसलमान मक्के से हिजरत करके चले गये थे और जिनके धन सम्पत्ति पर अधर्मियों ने कब्जा कर लिया था, जब उन मुसलमानों ने अपनी सम्पत्तियां लौटाने के लिये नबी से प्रार्थना की तो आपने उनकी इस प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया। * इससे हुज़ूर का मतलब यह था कि जिन वस्तुओं को तुम ईश्वर के नाम पर छोड़ चुके हो अब उनके लौटाये जाने का प्रश्न क्यों उठाते हो।

मक्के की विजय का वर्णन समाप्त करने से पहले मैं पाठकों का ध्यान एक भारी भविष्य वाणी की ओर आकर्षित करता हूँ। क़ुरान शरीफ़ में सूरय यूसुफ़ है जो मक्के में उतरी थी, इस सूरत के अंत में अल्लाह फरमाता है "ज़ालेक मिन अम्बा-इलग़ैब, नूहीहे इलैक।" यह गुप्त समाचार हैं जिन की वह्यी तेरी ओर भेजी जाती है।

अब पाठक हज़रत यूसुफ़ के वृत्तान्त से आंहज़रत के वृत्तान्त को मिलायें और आश्चर्यजनक समानता का दिग्दर्शन करें।

१—हज़रत यूसुफ़ से उनकी आध्यात्मिक उन्नति के कारण उनके भाई जलन रखते थे इसी प्रकार आंहज़रत पर भी उनके भाइयों को जलन रही।

२—हज़रत यूसुफ़ कुयें के भीतर रहे और आंहज़रत ग़ार के अन्दर रहे।

३—हज़रत यूसुफ़ ने कुछ वर्ष क़ैद ख़ाने में व्यतीत किये आंहज़रत ने भी कुछ वर्ष शअब अबू तालिब में एक प्रकार से बन्दी बनकर काटे।

४—हज़रत यूसुफ़ को जन्म भूमि से बाहर जाकर मिस्र में प्रतिष्ठा व प्रताप प्राप्त हुआ और हज़रत को भी जन्म भूमि से बाहर जाकर मदीने में ऐसी ही सफलता मिली।

५—हज़रत यूसुफ़ के सामने अकाल के दिनों में उनके भाई प्रार्थना लेकर गये। आंहज़रत के सामने भी आपके भाइयों ने ऐसी ही प्रार्थना की। बुख़ारी बाबुल् इस्तिस्क़ा में है कि जब मक्के में भीषण अकाल पड़ा तो अबूसुफ़ियान नबी की सेवा में आया और कहा "मुहम्मद! आप तो अपनी शिक्षाओं में दया और नातेदारों से भलाई की आज्ञा दिया करते हैं दुआ कीजिये कि यह संकट टले" और हज़रत की दुआ से वर्षा हुई और अकाल जाता रहा।

६—हज़रत यूसुफ़ ने मिस्र से कनआन को अपने भाइयों के लिये अनाज भिजवाया और आंहज़रत ने भी समामः बिन असाल को आज्ञा देकर नज्द से मक्के में अनाज भिजवाया था।

७—हज़रत यूसुफ़ की बड़ाई को अन्त कार उनके भाइयों ने माना इसी प्रकार आंहज़रत के भाइयों को भी अन्त कार आपकी बड़ाई को मानना पड़ा।

८—हज़रत यूसुफ़ ने अपने कष्ट दायक भाइयों के लिये "यग़फ़ेरुल्लाह लकुम्" की दुआ फ़रमाई थी हज़रत ने भी अपने चचेरे भाइयों अबी सुफ़ियान बिन हारिस और अब्दुल्लाह बिन उमय्या

* ज़ादुल् मआद भाग १ पृष्ठ ३२०।

को जिन्होंने वर्षों आप को सताया था इसी दुआ से प्रसन्न किया।

९—हज़रत युसूफ़ की महिमा उनके पिता हज़रत याक़ूब ने प्रकट की और हज़रत की पैग़म्बरी पर मक्के की विजय के दिन आपके चाचा हज़रत अब्बास (जो पिता की नाईं थे) ईमान लाये थे।

१०—हज़रत युसुफ़ ने अपने भाइयों को "ला तस्रीब अलैकोमुल् यौम" कह कर क्षमा प्रदान की थी और आंहज़रत ने भी अपने भाइयों को जिन्होंने हज़ारों दुःख पहुंचाये थे इन्हीं पवित्र शब्दों से प्रसन्न चित्त किया।

चूंकि इन सब बातों की सूचना हज़रत को मक्के में दे दी गई थी और सूरय यूसुफ़ की घोषणा मक्के ही में अधर्मियों के बीच की जा चुकी थी, जिसकी सारी बातें मक्के की विजय तक पूर्ण रूप से प्रकट हो गईं। इस लिये सूरय यूसुफ़ का मक्के की विजय से विशेष सम्बन्ध है और समस्त सूरत हज़रत के सम्बन्ध में भविष्य वाणी के तुल्य है।

मक्के की विजय के सुपरिणाम—मक्का विजय होने के उपरान्त इस्लाम स्वीकार करने वालों की संख्या अधिक से अधिकतम हो गई। इसके कुछ कारण हैं:—

१—बहुत से क़बीले इस्लाम स्वीकार करने में इसलिये रुके हुये थे कि वे क़ुरैश के मुक़ाबिले में बहुत कमज़ोर थे और उनकी नातेदारी क़ुरैश से थी और उन का विचार यह था कि इस्लाम स्वीकार करने से यह सारे नाते टूट जायेंगे और उन्हें क़ुरैश के क्रोध का सामना भी करना पड़ेगा।

२—बहुत से कबीलों ने क़ुरैश से समझौता किया था और इस्लाम लाना उसे तोड़ना था।

३—बहुत से कबीलों की सम्मति यह थी कि मुसलमानों का मक्के पर अधिपत्य हो जाना ही उनकी सच्चाई तथा ईश्वर भक्ति का चिह्न है क्योंकि सैकड़ों वर्षों से उनके पूर्वजों द्वारा यह कथन चला आता था कि मक्के पर कोई ऐसा व्यक्ति विजय नहीं पा सकता जिसके साथ परमात्मा की सहायता न हो।

"फ़यक़ूलून उत्रकू होव कौमहू फ़इन्नहू इन्न ज़हर अलैहिम फ़होव नबिय्युन् सादिक़" (बुख़ारी पा० १७) अर्थात्:—"वे कबीले कहा करते थे कि उसे अपनी जाति से निपट लेने दो, यदि वह अपनी जाति पर विजयी हुआ तो अवश्य सच्चा पैग़म्बर है।"

४—अभी तक कबीलों में बीसियों प्रौढ़ अवस्था के व्यक्ति ऐसे मौजूद थे जिन्होंने यमन के विजयी अब्रहः हबशी की चालीस हज़ार * वीर सेना को मक्के पर आक्रमण करते देखा था उस

* फ्रेन्च प्रोफ़ेसर सेडियो लिखित "खुलास-य-तारीख़ अरब" में हबशी सेना की संख्या चालीस हज़ार लिखी है और लिखा है कि सेनापति अब्रहा ने (जो यमन में नजाशी का नायब बन गया था) सुनआ में एक गिरजा बनाया था जिसकी इमारत अद्भुत थी। वह चाहता था कि समस्त अरब देश वासी इस गिरजा में हज के समान आया करें। जब उसे अपने दूसरे उपायों में सफलता न मिली तो काबे को गिराने के लिये आया था। अब्दुल्लाह बिन ज़बअरी एक प्राचीन कवि अपनी कविता में इस घटना के सम्बन्ध में लिखता है—"ज़रा पूछो कि उस सेनापति ने क्या कुछ देखा, जो जानता है वह न जानने वालों को सूचित कर देगा कि साठ हज़ार में से एक भी अपने देश को जीवित न लौटा और यदि कोई मरता पड़ता गया भी तो वह भी न बचा" उक्त प्रोफ़ेसर लिखता है कि "सेनापति

की सेना में हाथी थे और अब्रहः की स्वयं अपनी सवारी का हाथी "महमूद" नस्ल * का था। इन वृद्धों ने अपनी आंखों से साठ वर्ष † पहले इन हबशियों को मक्के पर धावा बोलते हुये देखा था और यह भी देखा था कि मक्के वाले उनके भय से घर बार छोड़ कर पहाड़ों की चोटियों पर चले गये थे और नगर में एक भी व्यक्ति उनका सामना करने को न रह गया था। इस पर भी उन्होंने देखा था कि वह सारी सेना किस प्रकार नष्ट भ्रष्ट हुई और सेनापति घबराकर ऐसा भागा कि साथ में न तो सेना थी और न हाथी बल्कि सब की लाशें मक्के से चार कोस बाहर पड़ी सड़ रही थीं। इन बूढ़ों को अब तक अब्द-मनाफ़ तथा अबरहः की बात चीत भी याद थी कि जब अबरहः की सेना मक्के की सीमा में आकर उतरी तो उसने मक्के वालों के मवेशी जो जंगल में चर रहे थे पकड़ लिये। उन में अब्द-मनाफ़ के भी सौ ऊँट थे। अब्द-मनाफ़ हमारे पैग़म्बर के दादा थे और उस समय वही मक्के के सरदार थे। खूब लम्बे चौड़े, सुर्ख सफ़ेद, मुख से सरदारी का प्रताप टपकता था। यह स्वयं हबशियों की सेना में गये और हाथियों के दारोगा की सहायता से अबरहः तक जा पहुंचे। अबरहः ने उन्हें सम्मान पूर्वक अपने बराबर बिठाया और पूछा "श्रीमान जी आप कैसे पधारे हैं।"

अब्द-मनाफ़ ने कहा :—"हमारे मवेशी आप की सेना ने पकड़ लिये हैं कृपया उन्हें छोड़ देने को आज्ञा दे दीजिये।"

अबरहः बोला :—"जब आप आये थे तब मेरे हृदय में आप के लिये बड़ा आदर था परन्तु आप की बातें सुन कर न तो वह आदर बाकी रहा न सम्मान।"

अब्द-मनाफ़ ने पूछा "यह क्यों ?"

अबरहः बोला "देखो ! मैं इस लिये आया हूँ कि तुम्हारे इस पूज्य स्थान को गिरा दूं जिसे तुम सब से अधिक पवित्र स्थान समझते हो और जिस के सामने मेरे बनाये हुये गिरजा का आदर सम्मान अरब की निगाह में अब तक तनिक भी नहीं हुआ। किन्तु तुम अपने ऐसे पवित्र स्थान के बचाव का कुछ भी वर्णन नहीं करते और अपने मवेशियों को उससे अधिक मूल्यवान समझते हो।"

अब्द मनाफ़ ने कहा "नहीं मैं मवेशियों को उस से बढ़ कर नहीं समझता, बात यह है कि मैं मवेशियों का स्वामी हूँ, मुझे उन की चिन्ता है और इस घर का स्वामी एक और है उसे अपने घर का

अरयात (Aryat) सत्तर हज़ार सेना लेकर सं० ५२५ ई० में आया था इसलिये आश्चर्य की बात नहीं कि अरबी कवि की बताई हुई संख्या ठीक हो और अब्रहा जो अरयात का क़ातिल और नायब था यमन में दस हज़ार फ़ौज छोड़कर साठ हज़ार फ़ौज लाया हो।

* हाथियों की एक भांति थी जो अब संसार में नहीं पाई जाती। अंगरेज़ी भाषा में उसे (Mamatt) कहते थे, अरबों ने इसी शब्द को अरबी में "महमूद" बना लिया है (तारीखुद्दविलल् अरब).

† हमारे समय (सं० १९१२ ई०) में भी दिल्ली के विजेता और लखनऊ का घेरा डालने वाले सिपाही जीवित हैं बल्कि क्रीमिया का युद्ध देखने वाले।

ध्यान होगा, मुझे उसकी चिन्ता की आवश्यकता नहीं।"

गरज जब मक्के पर ऐसी सफलता तथा सरलता के साथ मुसलमानों का आधिपत्य हुआ तो इस्लाम स्वीकार करने वालों के सामने से मुआहिदों (समझौतों) की रोक हट गई। क़ुरैश का दबाव तथा धाक भी समाप्त हो गई और मुसलमानों का ईश्वर भक्त होना भी उन्होंने अपनी कसौटी पर परख लिया था। इन कारणों से इस्लाम स्वीकार करने वालों की अधिकता हुई। सब से अंतिम और चौथा कारण यह है कि अब इस्लाम की सत्यता को समझाने और इस्लाम का प्रचार करने में इस्लाम के प्रचारकों के सामने कोई कठिनाई न रही।

प्रचारक पूरी स्वतन्त्रता से प्रचार करते थे। सुनने वाले स्वतन्त्रता और शांति पूर्वक उपदेश सुनते थे और इस्लाम का आकर्षण बुद्धिमानों तथा सत्यवादियों को स्वयं ही अपनी ओर खींच लेता था।

हुनैन का युद्ध सं० ८ हि०—मक्का विजय हो जाने से हवाज़िन तथा सक़ीफ़ के कबीलों ने जिनकी सीमा मक्के से मिलती थी सोचा कि यदि हम मुसलमानों को हरा दें तो मक्के वालों की जो कुछ जायदादें विशेषतयः बाग़ बगीचे तायफ़ में हैं वे सब निश्चिय ही हमारे हो जयेंगे, * और मुसलमानों को मूर्ति खण्डन के अपराध का दण्ड भी दिया जा सकेगा। उन्होंने बनी मुज़र तथा बनी हिलाल के क़बीलों को भी अपने साथ मिला लिया और चार हज़ार वीरों की सेना लेकर मक्के को चल पड़े, और हुनैन की घाटी में आकर उतरे। उन्होंने अपने सरदार मालिक बिनऔफ़ की राय से अपने परिवार, धन, सम्पत्ति तथा मवेशी भी अपने साथ ले लिये थे। मालिक ने इस तदबीर का यह लाभ बतलाया था कि स्त्री, बालक, धन सम्पत्ति और मवेशियों को छोड़ कर कोई व्यक्ति भी युद्ध क्षेत्र से न भाग सकेगा।

यह सूचना पाकर आंहज़रत भी (काबे के निकट तथा हरम के भीतर युद्ध करना उचित न समझते थे) मक्के से आगे बढ़े।

इस्लामी सेना में मक्के के दो हज़ार व्यक्ति और शामिल होगये थे। इस संख्या में नौमुस्लिम भी थे और वे मूर्ति पूजक भी जिनसे मुआहिदा हो चुका था। इस सेना की कुल संख्या १२ हज़ार हो गई थी सेना को अपनी अधिक संख्या पर घमंड पैदा होगया था, इसीलिये वह अधिक चतुराई और सावधानी से काम नहीं ले सकती थी। शत्रु ने एक तंग तथा भयंकर दर्रे से घात लगाई और अपने सैनिकों को वहां बिठलाया। जब इस्लामी सेना का सर्व प्रथम भाग (जिसमें अधिक संख्या ऐसे व्यक्तियों की थी जिनके पास शस्त्र नहीं थे, अथवा आवश्यकतानुसार नहीं थे †) शत्रु की घात पर पहुँचा तो उन्होंने इतने तीर बरसाये कि उनको भागने ही की सूझी। लगभग एक सौ सहाबी युद्ध क्षेत्र में खड़े रह गये थे। नबी ने जब चारों ओर से आक्रमणकारियों को बढ़ते और अपनी सेना को भागते देखा तो अद्वितीय वीरता तथा साहस

* फ़तूहुल् बुल्दान पृ० ६३

† मुस्लिम बाब "हुनैन का युद्ध" में बराऽ बिन आज़िब से।

का प्रदर्शन किया। आप अपने खच्चर से उतरे और फ़रमाया। "

अनन्नबिय्यो ला कज़्बुन्न।

अना इब्ने अब्दुल मुत्तलिब ॥

अर्थात् मैं नबी हूँ, इस में तनिक संदेह नहीं। और मैं अब्दुल् मुत्तलिब का पुत्र हूँ। *

बताना यह था कि मेरी सच्चाई की कसौटी किसी भी सेना की जीत अथवा हार नहीं है, बल्कि मेरी सच्चाई तो स्वयं मेरे अन्दर है।

इस के उपरान्त अब्बास (हज़रत के चाचा) ने सहाबियों को अन्सार और मुहाजेरीन के पते से बुलाना आरम्भ किया। सब आवाज़ सुनते ही कबूतरों की टुकड़ियों की तरह एक ही आवाज़ पर पलटे। † अब सेना को नये सिरे से ठीक किया गया। अन्सार और मुहाजिर को आगे रखा गया। शत्रु इस धावे से भाग निकला और दो भागों में बट गया।

एक का सरदार मालिक बिन औफ़ योद्धा पुरुषों को लेकर तायफ़ के क़िले में जा छुपा।

दूसरा जत्था जिस में उन के परिवार थे और धन दौलत थी औतास की घाटी में जा छुपा। नबी ने तायफ़ का गढ़ घेर लेने की आज्ञा दी और औतास की ओर अबू आमिर अशअरी को भेजा। आमिर ने वहां पहुंच कर शत्रु के बाल बच्चों और धन सम्पत्ति पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब नबी को औतास का परिणाम मालूम हुआ तो क़िले का घेरा उठा लेने की आज्ञा दे दी। क्यों कि उन लोगों पर बाल बच्चों के जाते रहने की भारी विपत्ति आ पड़ी थी।

औतास में २४ हज़ार ऊँट, ४० हज़ार बकरियां ४ हज़ार ओक़िय: चांदी और ६ हज़ार स्त्री बच्चे मुसलमानों के कब्ज़े में आये थे। ‡

नबी अभी युद्ध क्षेत्र के निकट ही ठहरे हुये थे कि क़बीले हवाज़िन के ६ सरदार आये और उन्होंने दया की प्रार्थना की। इनमें वे लोग भी थे जिन्होंने तायफ़ में नबी पर पत्थरों की वर्षा की थी और अंतिम बार ज़ैद वहां से आंहज़रत को मूर्छित अवस्था में उठा कर लाये थे।

नबी ने फ़रमाया "हां मैं स्वयं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था, (और इसी इन्तिज़ार में लगभग दो सप्ताह व्यतीत हो गये कि अभी युद्ध में हाथ आये हुये माल को भी नहीं बांटा गया था। §) मैं अपने भाग के और अपने परिवार के भाग के कैदियों को सरलतापूर्वक छोड़ सकता हूँ और यदि

---

* सहीह बुखारी पारा १७ बराऽ से।

† सहीह बुख़ारी में इब्ने अब्बास से।

‡ यर्मिया नबी की पुस्तक पर्ब ४८ पाठ २८ देखो जिसमें मक्के की विजय और हुनैन के युद्ध का ज़िक्र और भारी गनीमत मिलने का वर्णन है। पुस्तक में शब्द ये हैं—"उठो क़ीदार पर चढ़ाई करो और पूरब के लोगों को मारो, उनके डेरों और उनके मवेशियों को वे ले लेंगे और उनके सारे बर्तनों और उनके ऊँटों को वे अपने लिये लेते जावेंगे।" इसमें कीदार पर चढ़ाई से अभिप्राय मक्के पर चढ़ाई से है जहां क़ीदार की सन्तान क़ुरैश बसे हुये थे और पूरब वालों से आशय हुनैन एवं तायफ़ के लोगों से है, देखो हुनैन मक्के से पूर्व की ओर है।

§ सहीह बुख़ारी किताबुल् मग़ाज़ी में हुनैन की घटना।

मेरे साथ केवल अन्सार व मुहाजिर ही होते तो सब का छोड़ देना भी कठिन नहीं था परन्तु देखते हो कि मेरे साथ वे लोग भी हैं जो अभी मुसलमान नहीं हुये इसलिये एक उपाय की आवश्यकता है। तुम कल प्रातः काल की नमाज़ के बाद आना और सभा में अपनी प्रार्थना रखना उस समय कोई उपाय निकल आयेगा।

फ़रमाया तुम चाहे धन लौटा लो चाहे स्त्री बच्चों का लौटाना पसन्द कर लो क्योंकि आक्रमणकारी सेना को खाली छोड़ना कठिन है।

दूसरे दिन वही सरदार आये और उन्होंने सभा में अपने क़ैदियों को मुक्त किये जाने की प्रार्थना की।

अद्वितीय दया—नबी ने फरमाया मैं अपने और बनी अब्दुल् मुत्तलिब के क़ैदियों को बिना किसी बदले के मुक्त करता हूँ। अन्सार तथा मुहाजिर बोले "हम भी अपने २ क़ैदियों को बिला कोई बदला लिये छोड़ते हैं। अब बनी सुलैम और बनी फ़ज़ारः रह गये। उनके निकट यह बड़े आश्चर्य की बात थी कि आक्रमणकारी शत्रु पर (जो भाग्य वश पराजित हो गया हो) ऐसी दया की जाये, अतः उन्होंने अपने भाग के क़ैदियों को मुक्त नहीं किया। नबी ने उन्हें बुलाया, प्रत्येक क़ैदी के दाम ६ ऊंट ठहरे। यह क़ीमत स्वयं हज़रत ने चुका दी और इस प्रकार बाक़ी सब क़ैदियों को भी मुक्त करा दिया। फिर सब क़ैदियों को हुजूर ने अपने यहां से कपड़े पहिनाकर विदा किया।

दूध शरीकी बहिन का सम्मान— इन बन्दियों में हुजूर की दूध शरीकी बहिन अर्थात् हलीमः दाई की पुत्री शीमाऽ बिन्त हारिस भी थी। नबी ने उसे पहिचान लिया और उसके बैठने के लिये अपनी चादर भूमि पर बिछा दी। फ़रमाया "यदि तुम मेरे पास ठहरो तो अच्छा है और यदि लौट जाना है तो तुम्हें अधिकार है।" उसने लौट जाना चाहा, आपने उसे आदर सम्मान सहित उसकी जाति में भेज दिया।

प्रेमियों के प्रेम का एक दृश्य—ग़नीमत (युद्ध में हाथ आया हुआ धन) को आपने उसी स्थान पर बटवा दिया। बड़े बड़े भाग उन लोगों को दिये गये जो थोड़े दिनों से इस्लाम लाये थे। अन्सार को जो अति प्रेमी जीव थे उसमें से कुछ न दिया। फ़रमाया "अन्सार के साथ मैं स्वयं हूँ, लोग धन लेकर अपने घर जायेंगे और अन्सार ख़ुदा के पैग़म्बर को लेकर अपने घरों में दाखिल होंगे।" इस पर अन्सार की प्रसन्नता की कोई सीमा न थी।

यहूदियों की शरारतें, प्रतिज्ञा भंग करना, तथा आक्रमण करना और मुसलमानों की ओर से अपने बचाव का प्रयत्न।

'यहूद' शब्द से यद्यपि वही एक क़बीला समझा जाना चाहिये जो यहूद इब्न-यऽक़ूब की सन्तान था। किन्तु बोल चाल में बनी इस्राईल के १२ क़बीलों का क़ौमी नाम यही पड़ गया है। बनी इस्राईल अपने आरम्भिक काल में ख़ुदा की प्रिय जाति थी परन्तु अन्त में वे ख़ुदा से इतने पृथक होते गये कि ख़ुदा के क्रोध के पात्र ठहरे।

हज़रत मसीह जैसे दयालु महात्मा ने उनकी हालत को देखकर उन्हें सांप और सांप के बच्चे बतलाया था और यह भी सूचना दी थी कि ईश्वरीय राज इस जाति से लेकर एक दूसरी जाति को दिया जायेगा जो उसके अच्छे फल लाये।*

जब इस सुसमाचार के प्रकट होने का समय आया और हज़रत मुहम्मद ने अपना प्रचार आरम्भ किया तो यहूदी बड़े क्रोधित हुये। और उन्होंने अन्तिम निर्णय यह किया कि मुहम्मद को भी अत्यचारों तथा कष्टों का वैसा ही शिकार बनाया जाय जैसा कि मसीह को बना चुके थे।

यहूदी यद्यपि हिजरत के प्रथम वर्ष ही समझौते करके सार्वजनिक शान्ति को स्थिर रखने की प्रतिज्ञा कर चुके थे परन्तु जो शरारत कूट कूट कर उनके मस्तिष्क में भरी थी वह अधिक समय तक छुपी न रह सकी। मुआहिदे से डेढ़ वर्ष पश्चात् ही उनकी शरारत का आरम्भ होगया।

यहूदियों की पहली शरारत—जिन दिनों मुसलमान आंहज़रत के साथ बद्र की ओर गये हुये थे उन्हीं दिनों की घटना है कि एक मुसलमान स्त्री बनी कोनक़ाऽ के मुहल्ले में दूध बेचने गई। कुछ यहूदियों ने शरारत की और उसे बाजार में नंगा कर दिया। स्त्री का रोना धोना और चीत्कार सुन कर एक मुसलमान घटना स्थल पर जा पहुंचा। उसने क्रोधित हो कर उस उपद्रवी यहूदी को मार डाला। इस पर सब यहूदी इकट्ठा हो गये और उन्होंने उस मुसलमान को भी मार डाला और दंगा भी किया। आंहज़रत ने बद्र से लौट कर इस दंगे के सम्बन्ध में कुछ जानने के लिये यहूदियों को बुलाया। उन्होंने समझौते का काग़ज़ भेज दिया और युद्ध पर उतारू हो गये। स्थिति अब बग़ावत की सीमा तक पहुंच गई थी अतः उन्हें यह दण्ड दिया गया कि वे मदीना छोड़ दें और ख़ैबर में जाकर बसें।

यहूदियों की दूसरी शरारत—"क़ुरैश के प्रथम षड़यन्त्र" शीर्षक लेख में बताया जा चुका है कि क़ुरैश ने मदीने के मूर्ति पूजकों को आंहज़रत के विरुद्ध युद्ध करने के लिये लिखा था। परन्तु हज़रत की बुद्धिमत्ता से उन का यह उपाय सफल न हुआ। अब बद्र में पराजित होने के बाद क़ुरैश ने यहूदियों को फिर लिखा कि "तुम जायदादों और क़िलों के स्वामी हो, तुम मुहम्मद से लड़ो नहीं तो हम तुम्हारे साथ ऐसा और ऐसा करेंगे, तुम्हारी स्त्रियों की पाज़ेबें तक उतार लेंगे।" इस पत्र के मिलने पर बनू नज़ीर ने प्रतिज्ञा भंग करने और आंहज़रत से दग़ाबाज़ी करने का इरादा कर लिया।†

सं० ४ हिजरी की घटना है कि हज़रत एक क़ौमी चन्दा इकट्ठा कर रहे थे। आप बनू नज़ीर के मुहल्ले में भी गये, उन्होंने हज़रत को एक दीवार के नीचे बिठा दिया और शरारत यह की कि इब्न-हिजाश दीवार के ऊपर जाकर एक भारी पत्थर हज़रत पर गिरा दे और इस तरह हुज़ूर का जीवन समाप्त कर दे। हज़रत को बैठते ही इस शरारत की सूचना अल्लाह की ओर से मिल गई और ईश्वरीय रक्षा के कारण आप बच कर चले आये।

* मत्ती पर्ब्ब २१ पाठ ४३ व ४४।

† अबू दाऊद "बाब फ़ी ख़बरुन्नज़ीर" में अब्दुल् रहमान बिन कअब बिन मालिक से।

अन्त में बनू नज़ीर को यह दण्ड दिया गया कि वे ख़ैबर में जाकर बसें। उन्होंने ६०० ऊँटों पर माल असबाब लादा, अपने घरों को अपने हाथ से गिराया, बाजे बजाते हुये निकले और ख़ैबर में जा बसे। *

यहूदियों का तीसरा षड़यन्त्र, अहज़ाब तथा ख़न्दक़ के युद्ध—सं० ५ हि० की प्रसिद्ध घटना ख़न्दक़ † का युद्ध है। बनू नज़ीर ख़ैबर पहुंच कर भी शान्ति से नहीं बैठे, उन्होंने यह इरादा किया कि मुसलमानों को नष्ट करने के लिये एक प्रयत्न किया जाये जिस में अरब के समस्त क़बीलों तथा सम्मिलित धर्मों के योद्धा शामिल हों।

उन्होंने २० सरदार नियुक्त किये कि वे अरब के सब क़बीलों को आक्रमण के लिये तैयार करें। इस प्रयत्न का परिणाम यह हुआ कि ज़ीक़ऽद सं० ५ हि० को दस हजार की ‡ भारी सेना ने जिसमें मूर्ति पूजक तथा यहूदी आदि सभी सम्मिलित थे मदीने पर धावा बोल दिया। क़ुरान शरीफ़ में इस युद्ध का नाम अहज़ाब का युद्ध है।

१—क़ुरैश, बनू किनानः और तिहामा के लोग सुफ़ियान बिन हरब की अध्यक्षता में थे।

२—बनूफ़ज़ारः उक़बः बिन हसीन की कमान में।

३—बनी मुर्रः हारिस बिन औफ़ के सेनापतित्व में।

४—बनू अशजऽ और नज्द के लोग मसऊद बिन दख़ीला की सेना में थे। §

मुसलमानों ने जब इन सेनाओं से लड़ने की पूरी शक्ति अपने में न देखी तो नगर के आस पास खाई खोद ली। दस २ व्यक्तियों ने चालीस २ गज ख़न्दक खोदी थी। ⁑

सहाबी खाई खोदते जाते थे और यह कविता पढ़ते जाते थे :—

" हम वे हैं जिन्होंने सदा के लिये मुहम्मद के हाथ पर इस्लाम की दीक्षा ली है।" {}

ख़न्दक़ खोदने, पत्थर तोड़ने और मिट्टी हटाने में आंहज़रत स्वयं भी सहाबियों को सहायता पहुंचाते थे, छाती के बाल मिट्टी से छुप गये थे, और आप " इब्ने रवाहा " की यह कविता ऊंची आवाज से पढ़ते जाते थे—

"हे प्रभु ! तेरे अतिरिक्त हमारे लिये पथ-प्रदर्शन कहां था। हम कैसे नमाज पढ़ते और कैसे ज़कात

---

* यसइयाह नबी की पुस्तक ६:३० में यह भविष्य वाणी मौजूद है 'बाग़ी लड़के धन सम्पत्ति लेकर उस जाति के पास जाते हैं जिनसे उनको कुछ लाभ न होगा" कुछ लाभ न होने की बात ख़ैबर के युद्ध में पूरी हुई।

† हमने इस युद्ध की गणना यहूदियों के साथ किये जाने वाले युद्धों में की हैं क्योंकि यहूदी ही समस्त क़बीलों को भड़काने और मदीने पर चढ़ाकर लाने वाले थे यद्यपि लड़ने वालों में क़ुरैश भी थे और अन्य मूर्ति पूजक जातियां भी, किन्तु अधिक संख्या मूर्ति पूजकों ही की थी।

‡ ज़ादुल् मआद भाग १ पृष्ठ ३६७।

§ तबरी भाग २ पृष्ठ २।

⁑ तबरी भाग २ पृष्ठ ३।

{} सहीह बुख़ारी में बराऽ से।

देते। हे भगवन! हमें हृदय की शान्ति प्रदान करो, और यदि शत्रु आ जाये तो दृढ़ता प्रदान करना। ये पापी शत्रु हम पर अकारण ही चढ़ आये हैं। ये उपद्रव मचाना चाहते हैं। जो हमें किसी प्रकार नहीं भारता।" *

मुसलमान केवल ३ हज़ार थे। इस्लामी सेना मदीने ही के भीतर इस प्रकार उतरी कि सामने खन्दक़ थी और पीछे सलऽ † पहाड़ी। बनू क़ुरैज़: यहूदी, जो मदीने में रहते थे (और जिनके लिये समझौते के अनुसार मुसलमानों का साथ देना अनिवार्य था) उनसे रात के अंधेरे में बनू नज़ीर का यहूदी सरदार हुय्यी बिनअख़्तब जाकर मिला, और उन्हें प्रतिज्ञा भंग करने पर तैयार करके अपने साथ मिला लिया। नबी ने अपने कई आदमी उनको बार बार समझाने के लिये भेजे, परन्तु उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कह दिया "मुहम्मद कौन है जो हम उसकी बात मानें, उसका हमसे कोई समझौता नहीं हुआ।" ‡

इसके बाद बनी क़ुरैज़: ने नगर की शान्ति में विघ्न डालना आरम्भ किया और इस तरह मुसलमानों के स्त्री बच्चों को ख़तरे में डाल दिया।

विवश होकर उन तीन हज़ार मुसलमानों में से भी एक भाग को नगर की शान्ति और रक्षा के लिये पृथक करना पड़ा। बनू क़ुरैज़: यह समझे हुये थे कि जब बाहर से दस हज़ार की सेना आक्रमण करेगी और नगर के भीतर हम आतंक फैलाकर मुसलमानों को चारों ओर से घेर लेंगे तो संसार में मुसलमानों का चिन्ह भी शेष न रहेगा।

नबी को चूँकि युद्ध से हार्दिक घृणा थी इस लिये आपने सहाबियों से इस बारे में परामर्श किया कि यदि शत्रुओं से फलों की एक तिहाई पैदावार पर सन्धि करली जाय तो कैसा हो? परन्तु अन्सार ने इस पर युद्ध ही को अच्छा बताया। सऽद बिन मुआ़ज़ और सऽद बिन उबाद: ने इस प्रस्ताव पर अपने विचार प्रकट करते हुये कहा जिन दिनों हम शिर्क की गन्दिगी में भरे और मूर्ति पूजा में फँसे हुये थे उन दिनों में भी हम ने उन को एक छुहारा तक नहीं दिया, आज जब परमात्मा ने हमें इस्लाम से विभूषित किया है तो हम उन्हें पैदावार की एक तिहाई कैसे दे सकते हैं, उन के लिये हमारे पास तलवार के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।" §

आक्रमणकारी सेना २० दिन तक घेरा डाले पड़ी रही। कभी कभी इक्के दुक्के का सामना भी हुआ। अम्र बिन अबदूद जो अपने आप को हज़ार युवकों के बराबर समझता था हज़रत अली के हाथ से मारा गया और नौफ़ल बिन अब्दुल्लाह बिन मुग़ीर: भी मुक़ाबिले में मारा गया। मक्के वालों ने नौफ़ल की लाश के लिये दस हज़ार दिरहम देना चाहे परन्तु हज़रत ने फ़रमाया "लाश दे दो कीमत नहीं चाहिये।" ⁂

* सहीह बुख़ारी में अनस से।

† ज़ादुल मआ़द पृष्ठ ३६७।

‡ इब्ने हिशाम भाग २ पृष्ठ १४१।

§ तबरी तथा सीरत इब्ने हिशाम भाग २ पृ० १४१।

⁂ इब्ने हिशाम।

जब वे इस समय में घिरे हुये मुसलमानों पर कोई हमला न कर सके तो उनका साहस समाप्त हो गया, अन्त में एक रात सारी सेना अपने डेरे डण्डे उठा कर रफ़ू चक्कर हो गई।

बनू क़ुरैजः का परिणाम—इस संकट से छुटकारा पाकर हज़रत ने बनू क़ुरैजः को बुला भेजा कि सामने आकर अपने इस व्यवहार का कारण बतायें। अब बनू क़ुरैजः क़िले का फाटक बन्द करके बैठ रहे और युद्ध की पूरी तैयारी कर ली।

उस समय मुसलमानों को यह सूचना मिली कि बनू नज़ीर का सरदार जो बनू क़ुरैजः को मुसलमानों का विरोधी बनाने आया था अब तक उनके क़िले में मौजूद है। बनू क़ुरैजः की यह शरारत उनकी पहली शरारत नहीं थी बल्कि बद्र के युद्ध में उन्होंने क़ुरैश को (जिन्होंने मुसलमानों पर आक्रमण किया था) हथियारों की सहायता दी थी, परन्तु उस समय दयालु नबी ने उनका अपराध क्षमा कर दिया था। अब उनके क़िला-बन्द हो जाने से मुसलमानों को मजबूर होकर लड़ना पड़ा। ज़िलहज्ज के महीने में घेरा डाल दिया गया, जो २५ दिन तक रहा। घेरे की सख़्ती से बनू क़ुरैजः तंग आ गये। उन्होंने औस क़बीले के मुसलमानों को जिनसे उनका पहले से मेल जोल था, बीच में डाला और नबी से मनवा लिया कि बनू क़ुरैजः के मामले में सअ्द बिन मुआज को (जो औस कबीले के सरदार थे) सरपंच स्वीकार किया जाय और जो फ़ैसला वह कर दें उसी को ख़ुदा का नबी भी मान ले।

बनू क़ुरैजः क़िले से निकल आये और मामला सअ्द बिन मुआज के सिपुर्द किया गया। अल्लाह जाने बनू क़ुरैजः के यहूदियों और औस के मुसलमानों ने सअ्द बिन मुआज को सरपंच बनाते हुये कितनी आशायें उन से लगाई होंगी परन्तु आवश्यक जाँच के बाद उस वीर ने यह फ़ैसला दिया :—

१—बनू क़ुरैजः के चढ़ाई करने हारे पुरुषों को क़त्ल कर दिया जाये।

२—स्त्रियां और बालक दास बनाये जायें।

३—धन बांटा जाये।

इस फ़ैसले को कार्य्य रूप में लाने के बारे में सहीह बुख़ारी में जो रवायत अबूसईद ख़ुद्री से है उससे यह ज्ञात होता है कि चढ़ाई करने हारे अत्याचारी क़त्ल किये गये थे किन्तु इस हदीस में स्त्री बालकों को दास बनाये जाने का कोई ज़िक्र नहीं है।

इस फ़ैसले के बारे में पाठक यह भी याद रक्खें कि यहूदियों को उन के चुने हुये सरपंच ने लगभग वही दण्ड * दिया था जो यहूदी अपने शत्रुओं को अपने धर्मानुसार दिया करते थे।

* लगभग वही दण्ड इसलिये लिखा गया है कि यहूदी अपने बन्दियों को इससे अधिक कड़े दण्ड दिया करते थे। तौरेत में गिनती का पर्व ३१ पाठ ६ से ३५ तक पाठक पढ़कर देखें "बनी इस्राईल ने मदियान की स्त्रियों और उनके बालकों को क़ैद किया, उनके मवेशी भेड़ बकरी धन सम्पत्ति सब कुछ लूट लिया और उनके सब नगरों को जिनमें वे रहते थे और क़िलों को फूंक दिया......मूसा क्रोधित हुआ कि क्या तुमने सब स्त्रियों को जीवित रक्खा......तुम इन बच्चों की जितने लड़के हैं सबको मार डालो और प्रत्येक स्त्री को जो पुरुष को देख चुकी

हमारे पास यह बात स्वीकार करने के लिये कारण तथा उदाहरण हैं कि यदि बनू कुरैज़ः अपना मामला आंहज़रत को सौंप देते तो उन्हें अधिक से अधिक जो दण्ड दिया जाता वह यह होता कि "जाओ खैबर में जाकर बसो।" बनू क़ीनक़ाऽ और बनू नज़ीर का मामला इसका एक उदाहरण है। आंहज़रत ने फिर भी इन बनू कुरैज़ः में से कुछ को इस फ़ैसले से पृथक कर दिया था। उदाहरणार्थ ज़ुबैर यहूदी को स्त्री बच्चों तथा धन सम्पत्ति सहित मुक्त कर दिया गया था और रिफ़ाअः बिन शिमोएल का भी जीवनदान प्रदान किया था। *

ईसाइयों से युद्ध

ईसाई जातियों से आंहज़रत का व्यवहार अच्छा रहा। एक दो शासकों ने अवश्य आपसे शत्रुता रक्खी परन्तु सर्व साधारण जनता उससे अलग ही रही। केवल एक ईसाई सरदार के साथ एक युद्ध हुआ तथा एक यात्रा उनके आक्रमण किये जाने की सूचना पाकर की गई।

मोता का युद्ध सं० ८ हि०—मोता शाम देश की एक बस्ती का नाम है। यहां के सरदार शरजील बिन अम्र ग़स्सानी ने आंहज़रत के दूत हारिस बिन उमैर अज़्दी को जो इस्लाम का निमन्त्रण पत्र लेकर गये थे मरवा डाला था। हारिस के क़त्ल से भविष्य में अन्य दूतों के प्राण संकट में पड़ गये थे, इसलिये हज़रत ने लगभग तीन हज़ार की एक सेना भेजी। ग़स्सान के शासक ने अपनी करनी पर कोई पश्चाताप प्रकट नहीं किया बल्कि उलटा लड़ने पर तैयार होगया। समय की बात कि सम्राट हिरक़िल उसी इलाक़े में आया हुआ था। अरब के लख़म, जुज़ाम, बहरा, बल्क़ी, क़ैस आदि जंगली क़बीलों के भी लगभग एक लाख आदमी सम्राट के आने पर इकट्ठा होगये थे। इसलिये ग़स्सान के हाकिम ने कुछ शाही सेना भी मंगवा ली और कुछ जंगली क़बीलों को भी इकट्ठा कर लिया।

शत्रुओं की संख्या एक लाख तक पहुंच गई। मुसलमान अब युद्ध के लिये विवश हो गये। ज़ैद बिन हारिसः (जो नबी के पालक, अति प्रिय और इस सेना के अध्यक्ष थे) मारे गये; † जअफ़र तैयार

हो जान से मार डालो......परन्तु वे कन्यायें जिन्होंने अभी पुरुषों को नहीं देखा उन्हें अपने लिये जीवता रक्खो।" ऋग्वेद ४-१६-१० में है—"उसने पचास हज़ार काले रंग के शत्रुओं को मार डाला" (प्राचीन भारत पृ० ३४) ऋग्वेद १०-४९-७ में है "हमने दासों को दो भागों में बांट दिया प्रभु ने उन्हें इसीलिये उत्पन्न किया था" (पृष्ठ ३८) ऋग्वेद २-२०-६ व ७ में है—"वह इन्द्र जिसने वृत्रि को घात किया, नगर के नगर और गांव के गांव नष्ट भ्रष्ट कर डाले——वह जो काले दासों को नष्ट करता है। मि० सी० आर० दत्त लिखित "प्राचीन भारत की सभ्यता" का उर्दू अनुवाद पृष्ठ ३७)।

* तारीख़ तबरी पृष्ठ ४७ व ४८।

† ज़ैद बिन हारिसा छाती पर बर्छा खाकर घोड़े से गिरे उनके हाथ में झण्डा था। जअफ़र तैयार ने झण्डा ले लिया। आक्रमणकारियों ने हज़रत जअफ़र के घोड़े की कूचें काट डालीं, वे पैदल होगये एक शत्रु ने उनका सीधा कन्धा तलवार से उड़ा दिया उन्होंने उलटे हाथ से झण्डा संभाल लिया दूसरे शत्रु ने दूसरा बाजू भी उड़ा दिया, इसीलिये उनका उपनाम "ज़ुलजनाहैन" हुआ। (इब्ने ख़लदून)।

(जो नबी के चचेरे भाई और हज़रत अली के सगे बड़े भाई थे) शरीर के अगले अंगों पर ९० घाव खाकर * शहीद हो गये थे और अब्दुल्लाह बिन रवाहः भी (जिन्होंने हज़रत जअ़फ़र के बाद सेना की कमान अपने हाथ में ली थी) शहीद हो गये थे, अन्त में ख़ालिद बिन वलीद ने फ़ौज को संभाला, और डेढ़ दिन के घमासान युद्ध के पश्चात् अपने से चालीस गुना अधिक सेना को मार भगाया। इस युद्ध में ९ तलवारें खालिद के हाथ में चलाते चलाते टूटी थीं। †

नबी ने मदीने में बैठे बैठे इन धर्मात्माओं के मारे जाने और युद्ध के अन्तिम परिणाम का हाल सहाबियों को उसी दिन बता दिया था।

तबूक की यात्रा‡ सं० ९ हि०—एक जत्था शाम से आया और उन लोगों ने कहा कि क़ैसर की सेना मदीने पर आक्रमण करने के लिये तैयार हो रही है, अरब के जंगली क़बीले भी उनके साथ शामिल हैं। शायद वे उस पराजय का बदला लेना चाहते हैं जो मोता में क़ैसर के एक हाकिम और उसकी सेना को हुई थी। हज़रत ने सोचा कि आक्रमणकारी सेना से बचाव उसके अरब में दाखिल होने से पहले ही उचित होगा ताकि देश की शांति भंग न होने पाये।

यह ऐसे राज का सामना था जो आधे संसार पर राज्य कर रहा था और जिसकी सेना अभी ईरान जैसे मज़बूत राज को नीचा दिखा चुकी थी। मुसलमान बेसरो सामान थे, दूर की यात्रा थी, अरब की प्रसिद्ध गर्मी ज़ोरों पर थी, फल पक चुके थे उनके खाने और छांव में बैठने के दिन थे।

आंहज़रत ने युद्ध सम्बन्धी सामग्री की तैयारी के लिये चन्दे की सूची खोली। उस्मान ग़नी ने नौ सौ ऊँट, एक सौ घोड़े और एक हज़ार दीनार चन्दे में दिये। अब्दुल रह्मान बिन औफ़ ने चालीस हज़ार दिरहम दिये। उमर फ़ारूक़ ने घर के समस्त माल असबाब और नक़द धन का आधा जो कई हज़ार रुपये का था दिया। अबूबक्र सिद्दीक़ जो कुछ लाये यद्यपि वह मूल्य में कम था परन्तु मालूम हुआ कि वह घर में अल्लाह और रसूल के प्रेम के सिवाय और कुछ छोड़ कर न आये थे। अबू उक़ैल अनसारी ने दो सेर छुहारे ला कर दिये और यह निवेदन किया कि "रात भर पानी निकाल २ कर एक खेत को सींचने की मज़दूरी ४ सेर छुहारे लाया था, दो सेर स्त्री बच्चों के लिये छोड़ कर शेष दो सेर ले आया हूँ।" हज़रत ने फ़रमाया कि इन छुहारों को सब क़ीमती माल असबाब पर फैला दो।

ग़रज़ कि प्रत्येक सहाबी ने इस अवसर पर ऐसी ही श्रद्धा और दान प्रियता का प्रदर्शन किया। लगभग ८२ व्यक्ति जो दिखावे के मुसलमान थे बहाने करके अपने घरों में बैठे रहे।

---

* सहीह बुख़ारी 'बाब ग़ज़वय-मोता' में इब्ने उमर से।

† बुख़ारी में क़ैस बिन अबी हाज़िम से।

‡ चूंकि कोई युद्ध नहीं हुआ इसलिये मैंने इसका नाम "यात्रा" रक्खा है। इतिहासिक इसे "तबूक का युद्ध" इसलिये लिखते हैं कि यह यात्रा युद्ध में बचाव की नीति से की गई थी।

अब्दुल्लाह इब्न उबय्यी प्रसिद्ध मुनाफ़िक (दिखावे के मुसलमान) ने इन लोगों को यह समझाया था कि अब मुहम्मद और उसके साथी मदीने लौट कर न आ सकेंगे, कैसर (सम्राट) इन्हें कैद कर के भिन्न २ देशों में भेज देगा।

ख़ुदा का नबी तीस हज़ार सेना के साथ तबूक की ओर चला। मदीने पर सबाऽ * बिन उर्फ़ुतः को ख़लीफ़ा बनाया और हज़रत अली को † मदीने में अपने कुटुम्ब की देख भाल तथा रक्षा के लिये नियुक्त किया।

सेना में सवारियों की अति अधिक कमी थी, १८ व्यक्तियों पीछे एक ऊँट रखा गया था। रसद के न होने से बहुधा स्थानों पर पेड़ों के पत्ते खाने पड़े जिससे लोगों के होंठ सूज गये थे। पानी कुछ स्थानों पर मिला ही नहीं, कहीं २ प्यास की अधिकता के कारण ऊँटों को (यद्यपि वह सवारी के लिये पहले ही बहुत कम थे) जिबह करके उनकी आंतों का पानी पिया गया। ‡ ग़रज कि दृढ़ता तथा धैर्य्य पूर्वक समस्त कष्टों को सहन करते हुये तबूक पहुँचे।

अली की प्रशंसा—अभी तबूक के मार्ग ही में थे कि हज़रत अली भी पहुंच गये। मालूम हुआ कि मुनाफ़िक लोग उन्हें चिढ़ाने और खिजाने लगे थे। कोई कहता निकम्मा समझ कर छोड़ दिये गये, कोई कहता तरस खाकर छोड़ दिया। इन सब बातों से उन्हें लज्जा आई। एक दिन में दो दो तीन तीन दिन की यात्रा समाप्त कर के हज़रत अली नबी की सेवा में पहुंच गये। लम्बी यात्रा और गर्मी के कष्ट के कारण पांव सूज गये और उनमें छाले पड़ गये थे। हज़रत ने फ़रमाया "अली! तुम इस पर प्रसन्न नहीं होते कि तुम मेरे लिये वैसे ही हो जैसे मूसा के लिये हारून थे। यद्यपि मेरे बाद कोई नबी नहीं।" यह सुन कर हज़रत अली मदीने लौट गये। §

तबूक पहुंच कर नबी ने एक महीने तक पड़ाव डाले रक्खा। शाम (सीरिया) वालों पर इस साहस तथा वीरता का भारी प्रभाव पड़ा और उन्होंने अरब पर आक्रमण करने का विचार उस समय त्याग दिया और हज़रत की मृत्यु पर इसे उठा रक्खा कि वह उत्तम अवसर होगा।

एक दिन तबूक में ⁕ नमाज़ के बाद हज़रत ने

* तबरी।

† सहीहैन।

‡ मदारेजुन्नुबुव्वत।

§ सहीह बुख़ारी बाब ग़ज़्वयतबूक में मुसअब बिन सऽद से। हज़रत मूसा हज़रत हारून को बनी इस्राईल पर उस समय छोड़ गये थे जब उन्होंने तूर पहाड़ी पर ४० दिन का मीक़ात पूरा किया था। क़ुरान शरीफ़ में इस घटना का पूरा ज़िक्र मौजूद है। हज़रत मूसा की मृत्यु के बाद हज़रत मूसा के जो ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी, हुये उनका नाम "यूशऽ बिन नून" है।

⁕ फिलाडेल्फिया का प्राचीन गिरजा जिसका वर्णन यौहन्ना के प्रकाशित वाक्य पर्व ३ पाठ ६ से १३ तक में है तबूक ही के निकट था। अरब इसे "अलक़स्र" कहते थे। हिजाज रेलवे की सड़क में इसके खँडहर भी पाये गये हैं। आँहज़रत के समय में इस स्थान पर ईसाई जातियाँ बसी हुई थीं। चुनांचि तबूक में ठहरने के दिनों में इन जातियों में इस्लाम का प्रचार भी किया गया और उनसे सन्धि भी की गई। ईसाई धर्म पर कायम रहने

एक संक्षेप किन्तु ओजस्वी भाषण दिया। इस भाषण का सारांश नीचे दिया जाता है :—

नबी का ख़ुत्बा—परमात्मा की महिमा तथा स्तुति के बाद फ़रमाया—

१—सचाई में प्रत्येक वाणी से उत्तम अल्लाह की पुस्तक है।

२—सबसे बढ़कर भरोसे की बात संयम की बात है।

३—सब समुदायों से उत्तम समुदाय हज़रत इब्राहीम का है।

४—सब मार्गों से उत्तम मार्ग मुहम्मद (स०) का है।

५—सब बातों पर ईश्वर की बन्दना श्रेष्ठ है।

६—सब गाथाओं से उत्तम तथा पवित्र क़ुरान है।

७—उत्तम कार्य वे हैं जो साहस के कार्य हैं।

८—निकृष्ट कार्य वह है जो (धर्म में) नया निकाला गया हो।

९—पैग़म्बरों की नीति ही उत्तम नीति होती है।

१०—शहीदों की मृत्यु सब प्रकार की मृत्यु से उत्तम है।

११—सब से बढ़कर अन्धापन वह पथ भ्रष्टता है जो पथ-प्रदर्शन के पश्चात् हो।

१२—कर्मों में वह कर्म अच्छा है जो लाभदायक हो।

१३—उत्तम चाल वह है जिस पर लोग चल सकें।

१४—बुरे से बुरा अन्धापन हृदय का अन्धापन है।

१५—उठा हुआ हाथ गिरे हुये हाथ से उत्तम है।

१६—थोड़ा धन उस अधिक धन से अच्छा है जो गफ़लत में डाल दे।

१७—बुरे से बुरा पश्चाताप वह है जो मौत के समय हो।

१८—बुरी से बुरी लज्जा वह है जो प्रलय में होगी।

१९—कुछ लोग जुमे (की नमाज़) में आते हैं परन्तु उनके मन पीछे लगे होते हैं।

२०—कुछ लोग ऐसे हैं जो कभी कभी अल्लाह का स्मरण किया करते हैं।

२१—सब पापों से बड़ी झूठी ज़बान है।

२२—सब से बड़ी मालदारी हृदय की मालदारी है।

वाली जातियों को धर्म की स्वतन्त्रता भी दी गई और उनके प्राणों तथा उनकी सम्पत्ति की रक्षा भी मुसलमानों ने अपने ज़िम्मे ली। इस तरफ़ कुछ छोटी २ रियासतें भी ईसाइयों की थीं जैसे उकेदर, दौमतुल् जन्दल में हाकिम था, और योहन्ना, अबला का शासक था, उनकी हुकूमतों को कायम रक्खा गया। अज़रज के लोग भी ईसाई और स्वतन्त्र क़बीले के थे, उनको उनकी स्थिति पर छोड़ा गया। सन्धि पत्रों में जिस निष्पक्षता और उदारता बल्कि प्रेम को व्यवहार में लाया गया वह आज दिन भी मान्य है। ईसाइयों ने नई यरोशलीम और ख़ुदा का नया नाम जिसका उल्लेख मुकाशिफ़ात पर्ब ३ पाठ १२ में है इस स्थान पर सुना था।

उकेदर जो दौमतुल् जन्दल का शासक था उसे ख़ालिद बिन वलीद ने शिकार खेलते समय पकड़ा था। नबी की सेवा में आकर और समझौता करने के पश्चात् फिर मुसलमान हो गया था।

२३—सबसे उत्तम पथ सामग्री संयम है।

२४—बुद्धिमत्ता का भेद यह है कि हृदय में परमात्मा का भय हो।

२५—हृदयांकित होने की उत्तम वस्तु विश्वास है।

२६—संदेह उत्पन्न करना अधर्म है।

२७—चीख़ पुकार कर रोना अज्ञानता का काम है।

२८—चोरी करना नरक के दण्ड की सामग्री है।

२९—नशे में होना अग्नि में पड़ना है।

३०—काव्य, दुष्टात्मा (का भाग) है।

३१—शराब सब पापों की जड़ है।

३२—निकृष्ट जीविका अनाथों का धन खा जाना है।

३३—सज्जन वह है जो दूसरे से शिक्षा ग्रहण करता है।

३४—वास्तविक अभागा वह है जो माता के पेट ही में अभागा हो।

३५—कर्म का खज़ाना उसका उत्तम प्रतिफल है।

३६—बुरे से बुरा स्वप्न वह है जो झूठा है।

३७—जो बात होने वाली है वह बहुत निकट है।

३८—मोमिन (ईमान वाले) को गाली देना फ़िस्क़ (बड़ा पाप) है।

३९—मोमिन को क़त्ल करना कुफ़्र है।

४०—मोमिन का मांस खाना (अर्थात् उसकी चुग़ली खाना) परमात्मा के नाम पर पाप है।

४१—मोमिन का धन दूसरे पर ऐसा ही हराम है जैसा उसका लोहू।

४२—जो खुदा से बेपरवाह बनता है खुदा उसे झुठलाता है।

४३—जो किसी की बुराई छुपाता है खुदा उसकी बुराई छुपाता है।

४४—जो क्षमा करता है उसे क्षमा मिलती है।

४५—जो क्रोध को पी जाता है खुदा उसे प्रतिफल देता है।

४६—जो हानि पर धैर्य धरता है खुदा उसे प्रतिफल देता है।

४७—जो चुग़ली को फैलाता है खुदा उसे बदनाम कर देता है।

४८—जो धैर्य से काम लेता है खुदा उसे बढ़ाता है।

४९—जो ईश्वराज्ञाओं को ठुकराता है खुदा उसे दण्ड देता है।

५०—फिर तीन बार "इस्तिग़फ़ार" पढ़ कर हज़रत ने इस भाषण को समाप्त किया। * (ऊपर के नम्बर लेखक ने अपनी ओर से डाले हैं। (अनुवादक)।

"ज़ुल बिजादैन" की मृत्यु—तबूक में ठहरने के दिनों में "ज़ुल बिजादैन" की मृत्यु हुई। इस प्रेमी जीव के हालात से पता चलता है कि आंहज़रत अपने असहाय प्रेमी सहाबियों पर कैसी दया तथा कृपा किया करते थे। इनका नाम अब्दुल्लाह था। अभी बालक ही थे कि पिता का देहान्त होगया, चाचा ने पाला था। जब युवा अवस्था को

* ज़ादुल् मआद भाग १ पृ० ४६२

पहुंचे तो चाचा ने ऊंट, बकरियां और दास देकर इनकी हैसियत ठीक कर दी थी। अब्दुल्लाह ने इस्लाम के बारे में कुछ सुना और हृदय में ऐकेश्वर-वाद की लग्न पैदा होगई, परन्तु चाचा से इतना डरते थे कि इस्लाम को प्रकट न कर सके। जब नबी मक्का विजय करके लौटे तो अब्दुल्लाह ने चाचा से जाकर कहा "प्रिय चाचा! मुझे वर्षों प्रतीक्षा करते गुजर गये कि कब आपके हृदय में इस्लाम की लग्न पैदा होती है और आप कब मुसलमान होते हैं, परन्तु आप का वही अगला रंग चला जा रहा है, मैं अपनी उम्र पर अधिक भरोसा नहीं कर सकता, मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं मुसलमान हो जाऊं।

चाचा ने उत्तर दिया:—देख यदि तू मुहम्मद का धर्म स्वीकार करना चाहता है तो मैं सब कुछ तुझसे छीन लूंगा, तेरे शरीर पर चादर और तहबन्द (धोती) तक बाकी न रहने दूंगा।

अब्दुल्लाह ने उत्तर दिया "मैं मुसलमान अवश्य हूँगा और मुहम्मद का अनुसरण करूँगा, शिर्क और मूर्ति पूजा से मैं घृणा करता हूँ अब जो आप की इच्छा हो कीजिये और जो कुछ मेरे पास धन दौलत है सब संभाल लीजिये, मैं जानता हूँ कि इन चीजों को अंतकार एक दिन यहीं छोड़ कर जाना है अतः मैं इन के लिये सत्य धर्म को छोड़ नहीं सकता।"

अब्दुल्लाह ने यह कह कर शरीर के कपड़े तक उतार दिये और नंगे होकर माता के सामने गये, माता चकित हो गईं। अब्दुल्लाह ने कहा, माँ! मैं मुसलमान हो गया हूँ शरीर ढांकने के लिये कपड़े की आवश्यकता है, कृपा कर के दे दीजिये। माता ने एक कम्बल दे दिया। अब्दुल्लाह ने कम्बल फाड़ा, आधे का तहबन्द बना लिया आधा ऊपर से ढक लिया और मदीने चल खड़े हुये। प्रातः काल मस्जिद नबवी में पहुंचे और मस्जिद से तकिया लगा कर नबी की प्रतीक्षा करने लगे। आंहज़रत जब मस्जिद में आये तो उन्हें देख कर पूछा कौन हो? कहा मेरा नाम अब्दुल् ऊज़्ज़ा है फ़क़ीर तथा भिखारी हूँ, दर्शनाभिलाषी हो कर पथ-प्रदर्शन के लिये सेवा में हाज़िर हुआ हूँ।

नबी ने फरमाया देखो अब तुम्हारा नाम "अब्दुल्लाह" है और "ज़ुलबिजादैन" उप नाम, तुम हमारे पास ही ठहरो और मस्जिद में रहा करो। अब्दुल्लाह "असहाब-सुफ्फः" * में सम्मिलित हो गये। नबी से क़ुरान सीखते और, बड़े ही शौक़ और जोश के साथ पढ़ा करते थे। एक बार हज़रत उमर ने कहा लोग तो नमाज़ पढ़ रहे हैं

* सुफ्फः चबूतरे को कहते हैं। मस्जिद नबवी के आँगन में एक चबूतरा था जो लोग घर बार त्याग और संसार की सम्पत्ति तथा सुख छोड़ कर इस्लाम धर्म की शिक्षा प्राप्त करने आया करते थे वे इस चबूतरे पर ठहरा करते थे इस लिए वे सुफ्फः वाले करके प्रसिद्ध हुए। ये सत्य के प्रेमी भूख प्यास का कष्ट, गर्मी सर्दी क दुःख सहन करते थे किन्तु संसार का कोई कष्ट इस्लाम की शिक्षा प्राप्त करने और क़ुरान पढ़ने से उन्हें न रोक सकता था। इन्हीं में वे लोग तैयार होते थे जो भिन्न २ देशों में जाकर इस्लाम का प्रचार करते थे इन्हीं में एक हज़रत अबूहुरैरः हैं जो इस्लाम के प्रसिद्ध प्रचारक और पाँच हज़ार हदीसोंके रावी हैं। विस्तृत विवरण हमारी पुस्तक "सबीलुर्रशाद" अर्थात हिजाज़ की यात्रा में पढ़ना चाहिये।

और यह व्यक्ति इतनी ऊँची आवाज़ से पढ़ रहा है कि दूसरों के पढ़ने में बाधा पड़ती है। नबी ने फ़रमाया—उमर ! इसे कुछ न कहो यह तो ख़ुदा और रसूल के लिये सब कुछ छोड़ छाड़ कर आया है।

अब्दुल्लाह के सामने जब तबूक के युद्ध की तैयारियां होने लगीं तो यह हज़रत की सेवा में आये और प्रार्थना की "या रसूलल्लाह ! दुआ कीजिये कि मैं ईश्वर के मार्ग में शहीद हो जाऊँ।

नबी ने फ़रमाया—जाओ किसी पेड़ की थोड़ी सी छाल उतार लाओ, जब अब्दुल्लाह छाल ले आये तो नबी ने वह उनके बाज़ू पर बांध दी और फ़रमाया—"प्रभो ! मैं काफ़िरों पर इसका लोहू हराम करता हूँ।" अब्दुल्लाह ने कहा या रसूलल्लाह मैं तो शहीद होना चाहता हूँ। नबी ने फ़रमाया "जब जिहाद (धर्म युद्ध) का इरादा करके निकलो और फिर बुख़ार आ जाये और मर जाओ तब भी तुम शहीद होगे।"

तबूक पहुँच कर यही हुआ कि बुख़ार चढ़ा और स्वर्ग को सिधार गये। बिलाल बिन हारिस का कथन है कि मैं ने उन को दफ़न करते हुये देखा था, रात का समय था, बिलाल के हाथ में चिराग़ था, अबूबक्र और उमर उनकी लाश को क़ब्र में रख रहे थे, हज़रत स्वयं भी उनकी क़ब्र में उतरे थे और अबूबक्र तथा उमर से फ़रमा रहे थे "अपने भाई के आदर सम्मान का ध्यान रक्खो" हज़रत ने क़ब्र पर ईंटें भी अपने हाथ से रक्खीं और फिर दुआ में फ़रमाया :—"हे प्रभु ! आज की शाम तक मैं इससे प्रसन्न रहा हूँ तू भी इससे प्रसन्न हो जा।" *

इब्न-मसऊद फ़रमाते हैं "परमात्मा ऐसा करता कि मैं इस क़ब्र में दफ़न किया जाता।"

आंहज़रत तबूक से सकुशल मदीने पहुँच गये। जो मुनाफ़िक़ यह समझे हुये थे कि अब मुहम्मद और उसके साथी क़ैद होकर दूर कहीं किसी द्वीप में भेज दिये जांयगे और सकुशल मदीने न लौट सकेंगे वे अब बहुत लज्जित हुये और उन्होंने साथ न चलने के झूठे बहाने गढ़े। नबी ने उन सबको तो क्षमा प्रदान की किन्तु तीन प्रेमी भी थे जो साधारण आलस्य के कारण जाने से रह गये थे, उन्हें अपनी सच्चाई सिद्ध करने के लिये परीक्षा से गुज़रना पड़ा उनमें से एक धर्मात्मा ने अपने सम्बन्ध में जो कुछ स्वयं वर्णन किया है मैं उसको इस जगह लिख देना आवश्यक समझता हूँ :—

यह धर्मात्मा कअ़ब बिन मालिक अनसारी हैं। और आदि के इस्लाम स्वीकार करने वाले उन ७३ व्यक्तियों में से एक हैं जो अक़बः की दूसरी बैअ़त (धर्म दीक्षा) में आये थे।

कअ़ब बिन मालिक की परीक्षा—कअ़ब का कथन है कि :—

"इस यात्रा में मेरा घर पर रह जाना मानो एक भारी विपत्ति थी ऐसा करने की न तो मेरी इच्छा थी और न कोई आवश्यकता थी। यात्रा का सारा प्रबन्ध कर लिया गया था, अच्छी ऊंट-नियां मेरे पास थीं, मेरी आर्थिक स्थिति ऐसी

* मदारेजुन्नबुव्वत भा० २ पृ० ४२३।

अच्छी थी कि वैसी पहले कभी न थी। इस यात्रा के लिये मैंने दो मजबूत ऊंट भी मोल ले लिये थे और इससे पहले कभी मेरे पास दो ऊंट न रहे थे। लोग यात्रा की तैयारी करते थे और मुझे कोई चिन्ता ही न थी। मैंने सोच रक्खा था कि जिस दिन कूच होगा चल पड़ूंगा। इस्लामी सेना ने जिस दिन कूच किया उस दिन मुझे कुछ थोड़ा सा काम था मैंने सोचा मैं कल जा मिलूंगा। दो तीन दिन इसी प्रकार आलस्य में व्यतीत हुये। अब सेना इतनी दूर निकल गई थी कि उससे जा मिलना कठिन था। मुझे बड़ा दुःख होता था कि यह क्या हुआ।

मैं एक दिन घर से निकला। मुझे उन दिखावे के मुसलमानों के सिवाय जो झूठे बहाने बनाना जानते थे अथवा जो वास्तविक में मजबूर थे, मार्ग में और कोई न मिला। यह देखकर मेरे शरीर में मानो दुःख की अग्नि सी लग गई। ये दिन मेरे इसी दशा में बीत गये कि नबी लौट भी आये। अब मैं घबराता था कि मैं क्या करूँ, क्या कहूँ और कैसे ख़ुदा के रसूल की अप्रसन्नता से बचूँ। लोगों ने मुझे कुछ बहाने बताये किन्तु मेरा दृढ़ निश्चय यह था कि छुटकारा सत्य से ही हो सकता है।

फिर मैं नबी की सेवा में उपस्थित हुआ, नबी ने मुझे देखा और मुस्कराये। इस मुस्कान में अप्रसन्नता थी, मेरे होश उसी समय जाते रहे। नबी ने पूछा कअ्ब तुम क्यों रह गये थे? क्या तुम्हारे पास कोई सामग्री नहीं थी! मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरे पास तो सब कुछ था, मेरे मन ने मुझे आलसी बना दिया था, दुष्टात्मा ने मुझे गिरा दिया और मुझे ज़िल्लत के गढ़े में डाल दिया। हज़रत ने फ़रमाया तुम अपने घर ठहरो और ईश्वराज्ञा की प्रतीक्षा करो।

कुछ लोगों ने कहा देखो यदि तुम भी कोई बहाना गढ़ लेते तो ऐसा न होता। मैंने कहा वही द्वारा मेरा झूठ खुल जाता और फिर मैं कहीं का न रहता, मामला किसी सांसारिक व्यक्ति से नहीं बल्कि अल्लाह के पैग़म्बर से है। मैंने पूछा जो हुक्म मेरे लिये हुआ है किसी और के लिये भी हुआ है? लोगों ने कहा—हाँ हिलाल बिन उम्या और मुरारः बिन रबीअः का भी यह हाल है। यह सुन कर मुझे कुछ संतोष हुआ कि दो धर्मात्मा पुरुष मेरी जैसी दशा में हैं।

फिर ख़ुदा के रसूल ने यह आज्ञा दी कि कोई मुसलमान हमारे साथ बात चीत न करे और न हमारे पास आकर बैठे। अब जीवन और संसार दोनों ही हमें दूभर प्रतीत होने लगे।

इन दिनों में हिलाल और मुरारः तो घर से भी बाहर न निकले क्योंकि वे बूढ़े थे किन्तु मैं युवक था और मनचला भी, घर से बाहर निकलता, मस्जिद नबवी में जाता, नमाज़ पढ़कर मस्जिद के एक कोने में बैठ जाता। आंहज़रत प्रेम भरी दृष्टि उठाकर मेरी दयनीय दशा को देखते परन्तु जब मैं हुज़ूर की ओर आंख उठाकर देखता तो मुख फेर लेते। मुसलमानों का यह रंग ढंग था कि न तो कोई मुझसे बात करता न कोई मेरे सलाम का जवाब देता। एक दिन मैं अति शोक सहित मदीने से बाहर निकला, अबू क़तादः मेरा चचेरा भाई था और हम दोनों परस्पर प्रेम करते थे, सामने उसका बाग़ था, वह बाग़ में मकान बनवा रहा

था। मैं उसके पास चला गया, उसे सलाम किया तो उसने भी उत्तर न दिया और मुख फेर कर खड़ा होगया। मैंने कहा—अबू क़तादः तुम भली पूर्वक जानते हो कि मैं खुदा और रसूल से प्रेम रखता हूँ और शिर्क और निफ़ाक़ का मेरे हृदय पर कोई प्रभाव नहीं, फिर तुम क्यों मुझ से बात नहीं करते। अबू क़तादः ने अब भी कोई उत्तर नहीं दिया। जब मैंने तीन बार इसी बात को दुहराया तो चचेरे भाई ने केवल इतना ही उत्तर दिया "अल्लाह और रसूल ही भली पूर्वक जानते हैं" मुझे बड़ा ही दुःख हुआ और मैं खूब ही रोया!

मैं नगर में लौटकर आया तो मुझे एक ईसाई मिला, यह मदीने में मुझे ढूंढ रहा था, लोगों ने बतला दिया कि वह व्यक्ति यही है। उसके पास ग़स्सान के शासक का एक पत्र मेरे नाम था, पत्र में लिखा था "हम ने सुना है कि तुम्हारा स्वामी तुमसे अप्रसन्न तथा रुष्ट होगया है, तुमको अपने सामने से निकाल दिया है, हमें तुम्हारा पद भली पूर्वक मालूम है और तुम ऐसे नहीं हो कि कोई तुम्हारे साथ तनिक भी अनादर पूर्ण व्यवहार करे, अब तुम यह पत्र पढ़ते ही मेरे पास चले आओ और आकर देखो कि मैं तुम्हारा कितना आदर सम्मान करता हूँ।"

पत्र पढ़ते ही मैं ने कहा कि यह एक और आपत्ति मुझ पर टूट पड़ी। इस से बढ़कर आपत्ति और क्या हो सकती है कि अब एक ईसाई मुझ पर और मेरे धर्म पर क़ब्जा करने का अभिलाषी है और कुफ़्र की ओर निमन्त्रण दे रहा है। इस विचार से मेरी आंतरिक वेदना बढ़ गई। पत्र को दूत के समक्ष ही मैंने अग्नि में डाल दिया और कह दिया 'जाओ कह देना तुम्हारी कृपा की अपेक्षा मुझे अपने स्वामी का क्रोध भी लाख गुना अच्छा तथा प्रिय है।'

मैं घर पहुंचा तो देखा नबी की ओर से एक व्यक्ति आया हुआ मौजूद है। उसने कहा नबी ने आज्ञा दी है कि तुम अपनी स्त्री से प्रथक रहा करो। मैंने पूछा क्या तलाक की आज्ञा है? कहा नहीं केवल अलग रहने को फरमाया है। यह सुन कर मैंने अपनी स्त्री को उसके मायके भेज दिया। मुझे मालूम हुआ कि हिलाल और मुरारः के पास भी यही हुक्म पहुंचा था। हिलाल की स्त्री नबी की सेवा में आई और निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल! हिलाल बूढ़ा और दुर्बल है और उस की देख रेख के लिये कोई सेवक नहीं है, यदि आज्ञा हो तो मैं उस की सेवा करती रहूँ। फरमाया हां, किन्तु उसके बिछौने से दूर रहो। स्त्री ने कहा या रसूलल्लाह! हिलाल की शोक से यह दशा है कि उसे और कोई ख़्याल नहीं रहा।

अब मुझ से लोगों ने कहा कि तुम भी इतनी आज्ञा ले लो कि तुम्हारी स्त्री तुम्हारा काम काज कर दिया करे। मैंने कहा कि मैं तो ऐसा साहस नहीं कर सकता, न जाने हुजूर आज्ञा दें अथवा न दें और मैं तो युवक हूँ अपना काम स्वयं अपने हाथ से कर सकता हूँ मुझे सेवा की आवश्यकता नहीं।

अतएव इस प्रकार इस कष्ट के पचास दिन *

* तबूक की यात्रा में आँहज़रत को सम्भवतः ५० दिन ही लगे थे। पीछे रह जाने वालों को इतने ही दिन मुसलमानों और स्त्री बालकों से अलग रह कर काटना पड़े।

बीत गये। एक दिन मैं अपने कोठे पर लेटा हुआ था और अपनी मुसीबत पर रो रहा था कि सलऽ पहाड़ी * पर चढ़ कर जो मेरे घर के निकट थी अबूबक्र सिद्दीक़ ने पुकारा "कऽब को मुबारक हो कि उस की तौबः स्वीकार हो गई" यह आवाज़ सुनते ही मेरे मित्र और नातेदार दौड़ पड़े और सब बधाई देने लगे। मैंने यह सुनते ही अपना माथा पृथ्वी पर रख दिया और सजदः करके परमात्मा का धन्यवाद किया और फिर दौड़ा २ नबी की सेवा में पहुँचा।

हज़रत मुहाजेरीन तथा अन्सार के पास बैठे थे, मुझे देख कर मुहाजेरीन ने बधाई दी और अन्सार चुप रहे। मैंने आगे बढ़ कर सलाम किया, उस समय आप का मुख प्रसन्नता और हर्ष से पूर्णिमा की तरह प्रकाशमान था। मुझ से फरमाया "कऽब! मुबारक!! इस शुभ दिन के लिये, जब से तू माता के पेट से पैदा हुआ, कोई ऐसा शुभ दिन तुझ पर नहीं आया, आओ कि तुम्हारी तौबा (पश्चाताप) खुदा ने स्वीकार कर ली है।"

मैंने अर्ज़ किया "या रसूलल्लाह" इस स्वीकृति की कृतज्ञता में मैं अपनी कुल सम्पत्ति ईश्वर के नाम पर दान करता हूँ। फ़रमाया "नहीं" मैंने अर्ज़ किया "आधी" फरमाया "नहीं।" मैंने अर्ज़ किया "तिहाई", फरमाया "हां तिहाई ठीक है और तिहाई बहुत भी है।"

युद्धों की समाप्ति—अब वह उपद्रव जो शत्रुओं ने वर्षों से उठा रक्खा था और जिसने अरब के समस्त क़बीलों को बग़ावत के विष भरे वायुमण्डल में डाल रक्खा था समाप्त हो गया। इन सब युद्धों में रहमतुलल्लि आलमीन की अद्वितीय दयालुता और उदारता ऐसी पराकाष्ठा को पहुँच गई थी कि विश्व ने युद्ध के वीरता युक्त तथा सभ्यतापूर्ण नियम यहीं से सीखे।

ये युद्ध थे जिन में मजबूर तथा विवश होकर अल्लाह का पवित्र पैग़म्बर और मुसलमान सम्मिलित हुये और जो लगभग सात वर्ष तक होते रहे। पाठक किसी युद्ध में ऐसा नहीं पायेंगे कि पहल मुसलमानों ने की हो। ये सारे युद्ध केवल आक्रमणों के रोकने और उपद्रवों से बचने के लिये लड़े गये थे। आंहज़रत की पैग़म्बरी के सम्प्रति काल में एक व्यक्ति भी इस लिये नहीं मारा गया कि वह मूर्ति पूजक, पारसी, ईसाई अथवा यहूदी था। क़ुरान शरीफ़ में इस बात को अल्लाह ने स्पष्टतयः प्रकट कर दिया था कि संसार में धर्म तथा विश्वास के बारे में मतभेद सदा से रहा है और सदैव रहेगा अतः धर्म के लिये किसी पर दबाव डालना जायज़ नहीं।

* सलऽ का ज़िक्र बुखारी की इस हदीस में आया है जिससे ज्ञात होता है कि सलऽ की पहाड़ी मदीने के अन्दर है और कऽब बिन मालिक सहाबी का घर उस के पास था और तबरी ने खन्दक़ के युद्ध के ज़िक्र में इब्ने इस्हाक़ से जो रवायत लिखी है उससे सिद्ध होता है कि खन्दक़ के युद्ध में जब मुसलमानों ने मदीने में घिर जाने के पश्चात शत्रुओं का सामना किया था उस समय इस्लामी सेना सलऽ के निकट उतरी थी और उस समय मुसलमानों का मुख खन्दक की ओर और पीठ सलऽ की ओर थी। हस्सान बिन साबित की कविता में खन्दक के युद्ध का ज़िक्र करते हुये सलऽ का नाम आया है। कऽब बिन मालिक ने भी खन्दक के युद्ध के सम्बन्ध में जो कविता लिखी है उसमें भी सलऽ का उल्लेख है। अब यसइयाह नबी की पुस्तक पर्व ४२ पाठ १९ को देखो जिसमें सलऽ के रहने वालों का ज़िक्र है। इससे विदित होता है कि नबियों की पुस्तकों में मदीने का नाम सलऽ है।

निम्नलिखित आयतों (के भावार्थ) से यह बात भली प्रकार सिद्ध हो जाती है :—

१—धर्म के बारे में कोई दबाव नहीं, भलाई (का मार्ग) बुराई (के मार्ग) से अच्छी तरह प्रकट हो गई है। (२ : ३४)

२—यदि तेरा प्रभु चाहता तो पृथ्वी पर सब के सब ईमान ले आते, क्या तू लोगों पर दबाव डालेगा कि वे ईमान ले आवें। (१० : १०)

३—यदि तेरा प्रभु चाहता तो सब लोगों को एक ही सम्प्रदाय बना देता और वे तो सदा विरोध तथा मतभेद करते रहेंगे। (केवल उन्हें छोड़ कर जिन पर तेरे प्रभु ने दया की।) और उनको इसी लिये पैदा किया है। (११ : १०)

४—तू उसे मार्ग नहीं दिखा सकता जिस से प्रेम करता है, किन्तु परमात्मा जिसे चाहता है उसे मार्ग दिखा देता है। (२८ : ६)

५—ये लोग जो बातें करते हैं हम जानते हैं और तू उन पर जबरदस्ती नहीं कर सकता। हां क़ुरान का उपदेश सुना, फिर जो कोई ईश्वर के कोप से डरता हो डरे। (५ : ३)

६—उपदेश करते रहो क्यों कि (हे पैग़म्बर) तुम उपदेशक हो, दारोग़ा नहीं हो। (८८ : १)

युद्ध के कैदी—युद्ध का वर्णन समाप्त करने से पहले उचित है कि उस व्यवहार का जिक्र कर दिया जाये जो आंहजरत का युद्ध बन्दियों के साथ था।

इस्लाम से पहिले संसार में जितनी जातियां और जितने राज्य थे वे बन्दियों के साथ ऐसा व्यवहार करते थे कि सुन कर शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। नबी का व्यवहार कैदियों के साथ दो प्रकार का था—(क) बदला लेकर मुक्त करना। (ख) बिला किसी बदले के मुक्त कर देना।

सब से पहले बद्र के युद्ध में कैदी मुसलमानों के हाथ लगे, ये मक्के के रहने वाले थे। उन से बढ़ कर मुसलमानों का शत्रु कोई न था। नबी ने पहले इस मामले पर अपने साथियों की सम्मति मांगी।

हज़रत अबूबक्र की राय—साथियों में एक ओर अबूबक्र सिद्दीक़ थे जिन की सम्मति यह थी कि कैदियों से ज़ुरमाना लेकर छोड़ दिया जाये। इस सम्मति की पुष्टि में उन्होंने दो दलीलें दीं :—

१—जुरमाने की रक़म से हम अपनी सैनिक सामग्री ठीक कर लेंगे।

२—मुक्त होने के बाद सम्भव है कि परमात्मा इन कैदियों में से किसी को इस्लाम स्वीकार करने की बुद्धि प्रदान करें।

हज़रत उमर की सम्मति—दूसरी ओर उमर फ़ारूक़ थे, उन की राय यह थी कि कैदियों को क़त्ल कर दिया जाये, वह अपनी सम्मति की पुष्टि में यह कहते थे कि :—

(१) ये लोग काफ़िरों के नेता और मुशरिकों (साझी ठहराने हारों) के अगुवा हैं इनको मार डालना चाहिये।

(२) खुदा ने हमें उन पर विजय दी है तो उन से उन मुसलमानों का बदला लेना चाहिये जिन्हें उन्होंने मार डाला है।

नबी ने अबूबक्र की सम्मति को स्वीकार किया। जो कैदी जुरमाने की रकम न चुका सकते थे उन के लिये यह निश्चय किया गया कि वे अनसार की संतान को लिखना (अथवा और कोई कला) सिखा दें।

कुछ लोग अब तक यह समझते हैं कि उमर फ़ारूक़ की राय अधिक ठीक थी। वे हदीस के अगले भाग से अपनी बात की पुष्टि करते हैं। हदीस में यह है कि अगले दिन उमर ने आंहज़रत और अबूबक्र को रोते हुये देखा था। परन्तु इस्लामी विद्वानों का एक जत्था इस तर्क के पश्चात् भी अबूबक्र सिद्दीक के मत को अधिक ठीक समझता है। इस के कारण हैं।

१—क़ुरान शरीफ़ में भी अबूबक्र की सम्मति के बारे में आज्ञा पहले से विद्यमान थी।

२—इस सम्मति में दया और करुणा को आधार बनाया गया है जो अधिक महत्व रखती है।

३—नबी ने इसी हदीस में अबूबक्र की इब्राहीम तथा ईसा से और उमर की नूह और मूसा से उपमा की है।

४—अबूबक्र की सम्मति हज़रत की सम्मति से मिलती थी।

५—अबूबक्र का विचार ठीक सिद्ध हुआ कि युद्ध के बन्दियों में से बहुत से व्यक्ति बाद में स्वयं मुसलमान हो गये और जुरमाने की रक़म से मुसलमानों ने अपनी सैनिक स्थिति भी कुछ ठीक करली थी।

(क) गरज़ कि बद्र के ७२ युद्ध बन्दियों में से ७० को हज़रत ने जुरमाना लेकर मुक्त कर दिया था। इन क़ैदियों को अतिथियों की तरह रक्खा गया, बहुत से क़ैदियों की साक्षी मौजूद है जिन्होंने माना है कि मदीने वाले अपने बालकों से बढ़कर उनके आराम का प्रबन्ध करते थे। केवल दो बन्दी (उक़बः बिन अबी मुईत तथा नज़र बिन हारिस) क़त्ल कराये गये थे, यह दण्ड उनके गत अपराधों के फल स्वरूप दिया गया था जिसके कारण वे मृत्यु दण्ड के पात्र ही थे।

(ख) बद्र के युद्ध के पश्चात बनू मुस्तलक़ के युद्ध में १०० से अधिक स्त्री पुरुष कैद हुये थे वे सब बिला किसी बदले के छोड़ दिये गये थे और उन में से एक स्त्री श्रीमती जुबैरियः को हज़रत ने "उम्मुल्मोमेनीन" होने का सम्मान प्रदान किया था।

(ग) हुदैबियः के क्षेत्र में तनईम पहाड़ी के ८० आक्रमणकारी कैद हुये थे, उनको भी हज़रत ने बिना किसी शर्त और बिना किसी जुरमाने के मुक्त कर दिया था।

(घ) हुनैन के युद्ध में ६ हज़ार स्त्री पुरुष बन्दियों को बिला किसी शर्त व जुरमाने के मुक्त कर दिया था।

कुछ बन्दियों की मुक्ति का बदला आंहज़रत ने अपनी ओर से कैद करने वालों को चुकाया था और बहुत से कैदियों को धन तथा वस्त्रादि की सहायता देकर विदा किया था।

इन समस्त उदाहरणों से सिद्ध है कि "रहमतुल्लिल् आलमीन" अपने आक्रमणकारियों पर विजय और कब्ज़ा प्राप्त करने पर भी कितनी कृपा किया करते थे।

हदीस की पुस्तकों में एक घटना बन्दियों के आदान-प्रादान के सम्बन्ध में भी मिलती है।

युद्ध और ईश्वरीय नीति—नबी की इस पवित्र शिक्षा ही का प्रभाव था कि खुलफ़ायराशेदीन के समय में यद्यपि इराक, सीरिया, मिस्र, अरब, ईरान तथा खुरासान के सैकड़ों नगर जीते गये

परन्तु किसी जगह आक्रमणकारियों, योद्धाओं अथवा प्रजा में से किसी को दास दासी बनाने का वर्णन नहीं मिलता और पराजित शत्रुओं से युद्ध का तावान लेने का जिक्र भी कहीं लिखा हुआ नहीं दिखाई देता।

मुसलमानों के लिये यह युद्ध यद्यपि एक कड़ी परीक्षा समान थे किन्तु प्रभु की इसमें भी कदाचित यह इच्छा हो कि इस्लाम संसार के लिये युद्ध का एक ऐसा आदर्श उपस्थित करे जो दया, उदारता और मानव सहानुभूति पर आधारित हो।

तीसरा अध्याय

(भिन्न २ देशों और नरेशों को दूत और आज्ञा पत्र द्वारा) इस्लामी निमन्त्रण दिया जाना। उनमें से कुछ का मुसलमान हो जाना, कुछ का आदर सम्मान प्रकट करना, कुछ का विरोध करना।

हजरत मुहम्मद की पैग़म्बरी में कुछ ऐसी विशेषतायें पाई जाती हैं जो अन्य पैग़म्बरों की पैग़म्बरी में नहीं मिलतीं। उन में से एक यह है कि आंहज़रत ने इस्लाम को समस्त संसार का एक मात्र धर्म कहा है। और इसी लिये पैग़म्बरी के आरम्भिक काल ही में जब कि अभी मक्कावासियों को भी इस्लाम की भली पूर्वक जानकारी न हुई थी आंहज़रत ने अन्य जातियों और दूसरे धर्मावलम्बियों में भी प्रचार आरम्भ कर दिया था।

बिलाल हबशी, सुहैब रूमी, सलमान फ़ारसी, अब्बास नैनवी वे धर्मात्मा हैं जो हबश, यूनान, ईरान और मध्य एशिया से सर्व प्रथम इस्लाम में दाखिल हुये थे।

आंहज़रत समस्त संसार के पैग़म्बर हैं— क़ुरान शरीफ़ की आयतें इस विषय में अति स्पष्ट हैं :—

१—"वमा अरसल्नाका इल्ला काफ्फ़तल् लिन्नासे बशीरँव्व नज़ीरा" (सूरय सबा रु० ३) अर्थात् हमने तुझे सब मनुष्यों के लिये सुसमाचार सुनाने द्वारा और डराने द्वारा बनाकर भेजा है।

२—"होवल्लज़ी अरसलऽ रसूलहू बिलहुदा व दीनिलहक़्के लेयुज़हिरहू अलद्दीने कुल्लेही" (सूरय साफ़्फ़ रु० १ व सूरय फ़तह रु० ४) अर्थात्—ख़ुदा वह है जिसने अपने पैग़म्बर को खुले हुये चिह्नों और सत्य धर्म सहित भेजा है जिसमें कि वह सब धर्मों पर प्रबल हो।

३—वमा अरसल्नाकऽ इल्ला रहमतल् लिल् आलमीन (सू० अम्बिया रु० ७) अर्थात—हे पैग़म्बर हम ने तुझे समस्त सृष्टियों के लिये करुणा बना कर भेजा है।

४—"क़ुल् या अय्योहन्नासो इन्नी रसूलल्लाहे इलैकुम् जमीआ (सू० अऽराफ़ रु० २०) अर्थात्—कह दो (हे पैग़म्बर) कि हे समस्त लोगो ! मैं तुम सब के लिये अल्लाह का रसूल हूँ।

इन पवित्र आयतों की आज्ञा पालन करते हुये ही आंहज़रत ने निम्नलिखित आज्ञा पत्र भिन्न २ जातियों तथा धर्मों के नेताओं के पास भेजे थे और प्रत्येक को लिख दिया था कि इस्लाम के स्वीकार न करने का अभिशाप केवल इसलिये ही न पड़ेगा कि तुमने स्वयं अपने लिये अस्वीकार किया बल्कि तुम्हारे अस्वीकार करने से तुम्हारी जाति तथा

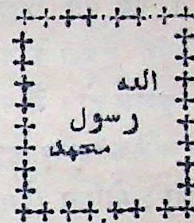
प्रजा भी पथ-प्रदर्शन प्राप्त न कर सकेगी इसलिये उन की पथ-भ्रष्टता का पाप भी तुम ही पर पड़ेगा क्योंकि इस आज्ञा पत्र में तुम से जो कुछ कहा गया है वह जाति के प्रतिनिधि होने के नाते कहा गया है।

आंहज़रत ने इस्लामी प्रचार के बारे में यह ऐसी कार्रवाई की है जिसका उदाहरण संसार के किसी पिछले धार्मिक इतिहास में नहीं पाया जाता कि उन के धर्म प्रवर्तकों ने भी ऐसा ही किया हो।

चूंकि हम प्रत्येक सत्यधर्म के पथ-प्रदर्शक का हृदय से आदर सम्मान करते हैं इसलिये उनके चुप रहने से यह नतीजा निकालते हैं कि वे धर्मात्मा अपने धर्म को स्वयं भी उसी जाति से विशेष समझते थे, जिसके लिये वे भेजे गये थे। * अब यदि उनके अनुयायी उनकी सीमा से आगे बढ़ते हैं तो यह उनकी अपनी गढ़ंत होगी, जो धार्मिक दृष्टि से किसी तरह मान्य नहीं समझी जा सकती।

सं० ७ हि० के मुहर्रम मास की पहली तिथि को आंहज़रत ने संसार के नरेशों के नाम इस्लामी निमन्त्रण के पत्र अपने विशेष दूतों द्वारा भेजे। जो दूत जिस जाति के पास भेजा गया वह वहां की भाषा जानता था ताकि भलीपूर्वक धर्म प्रचार कर सके। †

आंहज़रत ने अब तक कोई मोहर नहीं बनवाई थी। जब नरेशों को पत्र लिखे गये तो उन पर मोहर करने के लिये अंगूठी (मुद्रा) तैयार की गई। यह चांदी की थी, उस पर तीन पंक्तियों में यह शब्द इस प्रकार खुदे हुये थे। ‡



इन पत्रों के देखने से विदित होता है कि जो पत्र ईसाई नरेशों के नाम थे उनमें विशेषतयः यह आयत भी थी—

क़ुल या अह्लल् किताबे तआलौ इला कलेमतिन्न सवाइम् बैनना व बैनकुम् अल्ला नऽबोदा इल्लल्लाह, वला नुश्रेका बेही शय्यंऽव लायत्तख़ेज़ा बऽज़ोना अरबाबम्मिन दूनिल्लाह। (आल इम्रान रु०)

अर्थात्—"हे पुस्तक वालो! आओ ऐसी बात पर इकट्ठे हो जायें जो हमारे तुम्हारे बीच समान है, अर्थात् अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे की उपासना न करें और किसी को भी उसका साझी न ठहरायें और मनुष्यों में किसी को भी प्रभु का पद न दें।" अब हम संक्षेप रूप से इन पत्रों तथा उन के ले जाने वाले दूतों का उल्लेख करते हैं—

हबश के बादशाह के नाम—हबश के बादशाह नज्जाशी के नाम अम्र बिन उमया ज़म्री

* मसीह फरमाते हैं कि "मैं केवल बनी इस्राईल की खोई हुई भेड़ों के लिये भेजा गया हूं।

† ख़साएसुल् कुब्रा भा० २ पृ० १ इब्ने अबी शैबः से।

‡ बुख़ारी में अनस बिन मालिक से। नबी के बाद यह अंगूठी हज़रत अबूबक्र, उमर, उस्मान, अपनी २ ख़िलाफ़त के समय में पहिनते रहे। हज़रत उस्मान से ख़िलाफ़त के अन्त काल में यह अंगूठी मदीने के एक कुयें "अरीस" नामक में गिर गई थी। बड़ी खोज की गई किन्तु नहीं मिली। (बुख़ारी शरीफ़)

आंहजरत का पत्र लेकर गये। यह बादशाह ईसाई था। तारीख़ तबरी से इस पत्र (के अनुवाद) को यहां लिखा जाता है—

"अल्लाह के नाम से (आरम्भ), जो अति दयालु अति कृपालु है। यह पत्र अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद की ओर से, हबश के बादशाह नज्जाशी के नाम है। तेरी कुशल हो। मैं पहले अल्लाह की स्तुति करता हूँ जो मलिक (बादशाह) क़ुद्दूस (पवित्र) सलाम (रक्षा वाला) मोमिन (ईमान प्रदान करने हारा) और मुहैमिन (रक्षा करने हारा) है। और प्रकट करता हूँ कि मरियम के पुत्र ईसा अल्लाह के पैदा किये हुये और उसकी आज्ञा हैं, जो विदुषी पवित्र मरियम की ओर भेजी गई और उनका उससे गर्भ ठहरा। खुदा ने ईसा को अपने आत्मा और फूंक से इसी प्रकार पैदा किया जिस प्रकार आदम (प्रथम मनुष्य) को अपने हाथ तथा अपनी फूंक से पैदा किया था। अब मेरा निमन्त्रण यह है कि तू खुदा पर जो अकेला है और उसका कोई साझी नहीं, ईमान ले आ, और सदा उसकी आज्ञा पालन कर, और मेरा अनुकरण कर, और मेरी शिक्षा को सच्चे हृदय से स्वीकार कर, क्योंकि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। मैं इससे पहले तेरे देश में अपने चचेरे भाई जअफ़र को भेज चुका हूँ, उसे आराम से ठहराना। नज्जाशी! अभिमान न करना, क्योंकि मैं तुमको और तुम्हारी प्रजा को ईश्वर की ओर बुलाता हूँ। देखो मैंने तुम्हें ईश्वरादेश पहुंचा दिया और तुम्हें भली पूर्वक समझा दिया, अब उचित है कि मेरी शिक्षा मान लो। आशीर्वाद उसके लिये जो सीधे मार्ग पर चलता है।"

नज्जाशी इस आज्ञा पत्र को पढ़ कर मुसलमान हो गया और उत्तर में यह चिट्ठी लिखी :—

अनुवाद—"खुदा के नाम से आरम्भ, जो अति दयालु अति कृपालु है। अल्लाह के रसूल मुहम्मद की सेवा में नज्जाशी की ओर से। हे अल्लाह के पैग़म्बर! आप पर अल्लाह की करुणा तथा कृपा हो, उस अल्लाह की जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और जिसने मुझे इस्लाम का पथ दिखलाया। आगे निवेदन यह है कि आप का आज्ञा पत्र मुझे मिला। ईसा के सम्बन्ध में जो कुछ आप ने लिखा है आकाश तथा पृथ्वी के प्रभु की शपथ वे उससे कण मात्र भी अधिक नहीं हैं, उन का पद उतना ही है जो आपने वर्णन किया। हम ने आप की शिक्षा ग्रहण कर ली, और आपके चचेरे भाई और मुसलमान हमारे पास कुशल पूर्वक हैं। मैं इक़रार करता हूँ कि आप अल्लाह के पैग़म्बर हैं, सच्चे हैं और सत्यवादियों की सत्यता की पुष्टि करते हैं। मैं आपका आज्ञाकारी होता हूँ। मैंने आपके चचेरे भाई के हाथ पर आप पर ईमान लाने और अल्लाह का आज्ञाकारी होने का इक़रार कर लिया है। मैं श्रीमान जी की सेवा में अपने पुत्र "अरहा बिन असहमः" को भेजता हूँ। मैं तो अपने ही प्राणों का स्वामी हूँ। यदि श्रीमान की आज्ञा होगी कि मैं स्वयं सेवा में उपस्थित हूँ तो अवश्य हाज़िर हो जाऊंगा क्योंकि मैं विश्वास करता हूँ कि श्रीमान जो फ़रमाते हैं वही सत्य है। हे खुदा के पैग़म्बर! आप पर आशीर्वाद।"

बहरैन के बादशाह ने इस्लाम स्वीकार किया—(२)मुन्ज़िर बिन साबी बहरैन का हाकिम था। वह फ़ारस के सम्राट के आधीन था। अलाऽ

बिन हज़र्मी उसके पास पत्र लेकर गये थे। यह हाकिम भी मुसलमान हो गया था। उसकी प्रजा का भी बड़ा भाग मुसलमान हो गया। उसने उत्तर में आंहज़रत की सेवा में लिखा था कि "कुछ लोगों ने इस्लाम को बहुत पसन्द किया तथा कुछ लोगों ने उससे खिचावट प्रकट की और कुछ ने विरोध भी किया है। मेरे इलाक़े में यहूदी और मजूसी बहुत हैं उनके लिये जो आज्ञा हो किया जाये। "नबी ने उत्तर देते हुये यह भी लिखा "जो शिक्षा ग्रहण करता है सो अपने लिये करता है और जो यहूदी अथवा मजूसी मत पर स्थिर रहे वह जज़िय: (एक प्रकार का प्रजा सम्बन्धी टैक्स) दिया करे।"

इस्लामी दूत की बात चीत—(३) उमान के हाकिम जैफ़र तथा अब्द के नाम अम्र बिन आस के हाथ पत्र भेजा गया। अम्र का कथन है कि जब मैं उमान पहुंचा तो पहले अब्द से मिला। यह सरदार था और अपने भाई के मुक़ाबिले में अधिक सभ्य और भले स्वभाव का व्यक्ति था। मैंने उसे बताया कि मैं अल्लाह के पैग़म्बर का एलची हूँ और तुम्हारे तथा तुम्हारे भाई के पास आया हूँ।

अब्द बोला—मेरा भाई आयु में मुझ से बड़ा और मुल्क का हाकिम है, मैं तुम्हें उसकी सेवा में पहुँचा दूंगा, परन्तु यह तो बतलाओ तुम किस बात का निमन्त्रण देते हो?

अम्र बिन आस ने कहा—"एकेश्वरवाद की ओर बुलाता हूँ, उस ईश्वर की ओर जिसका कोई साझी नहीं और इस साक्षी की ओर बुलाता हूँ कि मुहम्मद खुदा का बन्दा और पैग़म्बर है।"

अब्द ने कहा—"अम्र तू एक जाति के सरदार का पुत्र है बता कि तेरे पिता ने क्या किया क्योंकि हम उसे आदर्श बना सकते हैं।"

अम्र बिन आस ने उत्तर दिया—"वह मर गया, नबी पर ईमान न लाया, अल्लाह ऐसा करता कि वह ईमान लाता और मुहम्मद की सचाई का इक़रार करता। मैं भी अपने पिता ही की सम्मति पर था यहां तक कि परमात्मा ने मुझे इस्लाम का पथ दिखा दिया।"

अब्द—तुम कबसे मुहम्मद के अनुयायी बने?

अम्र—अभी थोड़ा ही समय हुआ।

अब्द—कहां?

अम्र—नज्जाशी के दरबार में, और नज्जाशी भी मुसलमान होगया।

अब्द—वहां की प्रजा ने नज्जाशी के साथ क्या व्यवहार किया।

अम्र बिन आस—उसे शासक ही बना रहने दिया और उन्होंने भी इस्लाम स्वीकार कर लिया।

अब्द—(आश्चर्य से) क्या पादरियों ने भी?

अम्र—हां

अब्द—उमर! देखो मनुष्य के लिये कोई चीज भी झूठ से अधिक तुच्छ नहीं।

अम्र बिन आस—मैंने झूठ नहीं कहा और इस्लाम में झूठ बोलना जायज़ भी नहीं।

अब्द—हिरक़िल ने क्या किया? क्या उसे नज्जाशी के मुसलमान होने का हाल मालूम है।

अम्र बिन आस—हां

अब्द—तुम किस आधार पर ऐसा कह सकते हो?

अम्र—नज्जाशी हिरक़िल को खिराज दिया करता था। जब से मुसलमान हुआ कह दिया है

कि अब यदि वह एक दिरहम मांगे तो न दूंगा। हिरकिल तक बात पहुंच गयी, हिरकिल के भाई नबाक़ ने कहा 'यह नज्जाशी महराज का तुच्छ दास अब ख़िराज देने से इनकार करता है और आप के धर्म को भी उसने छोड़ दिया है।' हिरकिल ने कहा फिर क्या हुआ उसने अपने लिये एक धर्म स्वीकार कर लिया इसे मैं क्या करूं। ख़ुदा की कसम यदि इस राजपाट का मुझे विचार न होता तो मैं भी वही करता जो नज्जाशी ने किया।

अब्द—देखो अम्र क्या कह रहे हो ?

अम्र—क़सम है अल्लाह की सच कह रहा हूँ।

अब्द—अच्छा बतलाओ वह किन कामों के करने की आज्ञा देता है और किन बातों से रोकता है ?

अम्र बिन आस—वे अल्लाह की उपासना और आज्ञा पालन का हुक्म देते हैं, और पापों से रोकते हैं, वे व्यभिचार और शराब और पत्थरों (मूर्तियों) तथा सलीब की पूजा से रोकते हैं।

अब्द—कैसे अच्छे कार्य हैं जिन का वे प्रचार करते हैं, ख़ुदा करे मेरा भाई मेरी बात मान ले और हम दोनों मुहम्मद की सेवा में जाकर ईमान ले आयें। मैं समझता हूँ कि यदि मेरे भाई ने इस संदेश को ठुकरा दिया और संसार की ओर झुका रहा तो वह अपने देश के लिये भी हानिकारी सिद्ध होगा।

अम्र बिन आस—यदि वह इस्लाम स्वीकार करेगा तो आंहज़रत उसी को इस देश का हाकिम मान लेंगे, केवल इतना करेंगे कि यहां के अमीरों से सदक़ा (दान) वसूल करके यहां के गरीबों में बांट देंगे।

अब्द—यह तो अच्छी बात है मगर दान से क्या आशय है ?

अम्र बिन आस ने ज़कात का विधान बताया। जब यह बतलाया कि ऊंटों में भी ज़कात है तो अब्द बोला क्या वह हमारे पशुओं में से भी ज़कात देने को कहेंगे यद्यपि वे स्वयं ही वृक्षों के पत्ते खा कर पेट भर लेते तथा स्वयं ही जाकर पानी पी लेते हैं।

अम्र बिन आस ने कहा हां ऊंटों में से भी ज़कात ली जाती है।

अब्द—मैं नहीं जानता कि मेरी जाति के लोग जो अधिक संख्या में हैं और दूर २ तक फैले हुये हैं इस आज्ञा को मान लेंगे।

गरज़ अम्र बिन आस वहां कुछ दिन ठहरे। अब्द रोज की बातें अपने भाई को पहुंचा दिया करता था। एक दिन अम्र बिन आस को हाकिम ने बुलाया। चोबदारों ने दोनों ओर से पकड़ कर उन्हें हाकिम के सामने पेश किया। हाकिम बोला—इसे छोड़ दो, चोबदारों ने छोड़ दिया, यह बैठने लगे, चोबदार ने फिर टोका, इन्होंने हाकिम की ओर देखा, हाकिम ने कहा "बोलो तुम्हारा क्या काम है ? अम्र बिन आस ने पत्र दिया जिस पर मोहर लगी हुई थी, जैफ़र ने मोहर तोड़ कर पत्र खोला, पढ़ा, भाई को दिया, उसने भी पढ़ा, अम्र बिन आस ने देखा कि भाई अधिक विनम्र हृदय का है।

बादशाह ने पूछा—क़ुरैश का क्या हाल है ?

अम्र ने कहा—सब ने प्रसन्नता अप्रसन्नता सहित उसका आज्ञाकारी होना मान लिया है।

हाकिम ने पूछा—उसके साथ रहने वाले कौन लोग हैं ?

अम्र बिन आस—ये वे लोग हैं जिन्होंने इस्लाम को सहृदय स्वीकार किया है, सब कुछ त्याग कर नबी ही को प्राप्त किया है तथा विचार, बुद्धि और अनुभव द्वारा उसकी पूरी जांच कर ली है।

बादशाह ने कहा—अच्छा तुम कल फिर मिलना। अम्र बिन आस दूसरे दिन पहले हाकिम के भाई से मिले, वह बोला कि यदि हमारे राज्य को हानि न पहुंचे तो बादशाह मुसलमान हो जायेगा।

उमान का बादशाह मुसलमान हुआ—अम्र बिन आस फिर बादशाह से मिले, बादशाह ने कहा—मैंने इस विषय में विचार किया। देखो यदि मैं ऐसे व्यक्ति का अधिकार स्वीकार करता हूँ जिसकी सेना हमारे देश तक नहीं पहुंची तो मैं सारे अरब में कायर तथा निर्बल समझा जाऊंगा, यद्यपि उसकी सेना इस देश में आये तो ऐसा भीषण युद्ध हो कि ऐसे युद्ध से तुम्हें कभी सामना ही न पड़ा हो।

अम्र बिन आस ने कहा—अच्छा मैं कल चला जाऊंगा।

बादशाह बोला—नहीं, कल तक ठहरो।

दूसरे दिन बादशाह ने उन्हें आदमी भेज कर बुलाया और दोनों भाई मुसलमान होगये और प्रजा का अधिक भाग भी इस्लाम ले आया।*

दमिश्क के गवर्नर ने इनकार किया—(४)मुन्जिर बिन हारिस बिन अबू शिम्र दमिश्क़ का हाकिम और शाम का गवर्नर था। शजाऽ बिन वहूब उसके पास दूत बनाकर भेजे गये थे। वह पहले तो पत्र पढ़कर बहुत बिगड़ा, कहा:मैं स्वयं मदीनेपर चढ़ाई करूंगा पर अन्त में दूत को सादर विदा किया किन्तु मुसलमान नहीं हुआ।

५—हौज़ः बिन अली यमामः का शासक ईसाई धर्म रखता था। सलीत बिन अम्र पत्र लेकर उसके पास गये। उसने कहा यदि इस्लाम पर मेरा आधा राज मान लिया जाय तो मैं मुसलमान हो जाऊंगा। हौज़ः इस उत्तर के थोड़े दिनों बाद मर गया।

६—जरीह बिन मत्ती (मुक़ौक़िस)† इस्कन्द्रिया और मिस्र का बादशाह ईसाई धर्म का अनुयायी था। हातिब बिन अबी बल्तअः उसके पास एलची होकर गये थे। आंहज़रत ने उसके पत्र के उत्तर में लिखा था कि "यदि तुमने इस्लाम से इनकार किया तो कुल मिस्रियों के मुसलमान न होने का पाप तुम्हारी गरदन पर होगा।"

मिस्र के दरबार में इस्लामी प्रचारक का भाषण—एलची ने पत्र पहुंचाने के अतिरिक्त स्वयं भी बादशाह को इन शब्दों में समझाया था:—"श्रीमान् जी! आपके देश में आप से पहले एक व्यक्ति हो चुका है जो "अना रब्बोकोमुल् अऽला" (मैं तुम लोगों का बड़ा प्रभु हूँ) कहा करता था और ख़ुदा ने उसे लोक परलोक में अपमानित और तुच्छ किया। जब परमात्मा का

* जादुल् मआद पृ० ५२२।

† "मुक़ौक़िस" शब्द के बारे में मिस्र, यूरोप और अरब के विद्वानों में बड़ा मतभेद पाया जाता है। सम्भवतः यह अरबी भाषा का शब्द है। जरीह बिन मत्ती को कुछ यूरोपीय इतिहासिकों ने चोर्च बिन मीना भी लिखा है। यह रूमी जाति का था, इसकी माता सम्भवतः क़िब्ती जाति की थी।

कोप भड़का तो राज पाट कुछ न रहा। इस लिये उचित है कि तुम दूसरों को देखो और शिक्षा ग्रहण करो। ऐसा न हो कि दूसरों की आंखें तुम्हें देख कर खुलें।"

बादशाह ने कहा "हम स्वयं एक धर्म रखते हैं, उसे नहीं छोड़ सकते जब तक कि उस से उत्तम धर्म कोई न मिले।"

हातिब बोले—मैं आप को इस्लाम धर्म की ओर बुलाता हूँ जो अन्य धर्मों के समक्ष पर्याप्त है, नबी ने सब को इस्लाम का निमन्त्रण दिया है, कुरैश ने विरोध किया, यहूदियों ने शत्रुता की, परन्तु ईसाई मित्रता तथा सहयोग में निकट रहे हैं। खुदा की कसम! जिस प्रकार मूसा ने ईसा के लिये सुसमाचार दिया था उसी प्रकार ईसा ने मुहम्मद के लिये सुसमाचार सुनाया है। क़ुरान शरीफ़ की ओर हम आप को इसी तरह बुलाते हैं जिस तरह आप तौरेत वालों को इंजील की ओर बुलाया करते हैं। जिस पैग़म्बर को जिस जाति का समय मिला वही जाति उसकी "उम्मत" समझी जाती है। अतः आप के लिये अनिवार्य है कि उस पैग़म्बर का अनुसरण करें जिस का समय आप को मिल गया है, और यह समझ लें कि हम (मानो) आप को हज़रत मसीह के धर्म ही की ओर बुला रहे हैं।"

मुक़ौक़िस ने कहा—"मैंने इस पैग़म्बर के विषय में विचार किया, अभी तक मेरा हृदय उधर झुका नहीं। यद्यपि वे किसी मनभावनी वस्तु से रोकते नहीं हैं। मैं जानता हूँ कि वे हानिकारी जादूगर नहीं है और न झूठे ज्योतिषी हैं और उन में सचमुच पैग़म्बरी के चिन्ह पाये जाते हैं। जो कुछ हो, मैं इस बारे में भली पूर्वक विचार करूंगा।"

फिर हज़रत के पत्र को हाथी दांत के एक डिब्बे में रखवाकर और अपनी मोहर लगवाकर ख़ज़ाने में रखवा दिया। और आंहज़रत के लिये उपहार भेजे, और पत्र के उत्तर में यह भी लिखा कि "यह तो मुझे मालूम है कि एक पैग़म्बर का आविर्भाव होना शेष है किन्तु मैं यह समझता रहा कि वह पैग़म्बर शाम देश में प्रकट होगा"। दुलदुल (प्रसिद्ध खच्चर) इसी बादशाह ने उपहार रूप भेंट दिया था। *

७—कुस्तुन्तुनिया का शासक अथवा रूम के पूर्वीय भाग का प्रसिद्ध सम्राट हिरक़िल ईसाई धर्म रखता था। दिह्या कल्बी † उसके पास आज्ञा पत्र लेकर गये थे। वे सम्राट से बैतुलमुक़द्दस नगर में मिले। हिरक़िल ने एलची के आदर सम्मान में बड़ा शानदार दरबार स्थापित किया, और एलची से नबी के सम्बन्ध में बहुत सी बातें पूछीं। तत्पश्चात् हिरक़िल ने कुछ और जांच भी आवश्यक समझी। आज्ञा हुई कि यदि देश में कोई व्यक्ति मक्के से आया हुआ हो तो उसे दरबार में लाया जाये। समय की बात कि उन्हीं दिनों में अबूसुफ़यान मक्के के कुछ व्यापारियों सहित शाम में आया हुआ था। ‡ उसे बैतुलमुक़द्दस पहुंचाया और दरबार में पेश किया गया। सम्राट

* जादुल मआद पृ० ३२०।

† दिह्या का पूर्वज सूर बिन कल्ब था जो क़ुज़ाअः की एक बड़ी शाख़ है। यह दिह्या आँहज़रत के बड़े सहाबियों में से हैं।

‡ सहीह बुख़ारी किताबुल जिहाद में इब्ने अब्बास से पृ० १०६।

ने उसके साथी व्यापारियों से कहा मैं अबूसुफ़यान से कुछ प्रश्न करूंगा यदि यह कोई उत्तर ठीक न दे तो मुझे बतला देना।

रूम के सम्राट से अबूसुफ़यान का वार्तालाप—अबूसुफ़यान उन दिनों नबी का प्राण घातक शत्रु बना हुआ था, उसका अपना कथन है कि यदि मुझे यह भय न होता कि मेरे साथ वाले मेरा झूठ प्रकट कर देंगे तो मैं बहुत बातें गढ़ता परन्तु उस समय क़ैसर के आगे मुझे सत्य सत्य ही कहना पड़ा।

वे प्रश्न तथा उत्तर ये हैं—

क़ैसर—मुहम्मद का कुटुम्ब तथा गोत्र कैसा है?

अबू सुफ़यान—उत्तम और श्रेष्ट।

यह उत्तर सुनकर हिरकिल ने कहा "सच है नबी शरीफ़ घराने में होते हैं जिसमें कि उनकी आज्ञा पालन करने में किसी को रुकावट न हो।

क़ैसर—मुहम्मद से पहले किसी ने अरब में अथवा क़ुरैश में पैग़म्बर होने का दावा किया है?

अबूसुफ़यान—नहीं।

यह उत्तर सुन कर हिरकिल ने कहा यदि ऐसा होता तो मैं समझ लेता कि मुहम्मद अपने पहले की रेस करता है।

कैसर—नबी होने के दावे से पूर्व क्या यह व्यक्ति झूठ बोला करता था अथवा उस पर झूठ बोलने का झूठा अभियोग ही लगाया गया।

अबूसुफ़यान—नहीं

हिरकिल ने इस उत्तर पर कहा यह नहीं हो सकता कि जिस व्यक्ति ने लोगों पर झूठ न बोला हो वह ख़ुदा पर झूठ बांधे।

क़ैसर—उसके पूर्वजों में से कोई व्यक्ति बादशाह भी हुआ है?

अबूसुफ़यान—नहीं।

हिरकिल ने इस उत्तर पर कहा—यदि ऐसा होता तो मैं समझ लेता कि पैग़म्बरी के बहाने बाप दादा का राज्य प्राप्त करना चाहता है।

कैसर—मुहम्मद के अनुयायी ग़रीब लोग अधिक हैं अथवा प्रभावशाली सरदार लोग?

अबूसुफ़यान—ग़रीब तुच्छ लोग।

हिरकिल ने कहा—प्रत्येक पैग़म्बर के सर्व प्रथम अनुयायी ग़रीब लोग ही होते हैं।

कैसर—इन लोगों की संख्या प्रति दिन बढ़ रही है अथवा कम हो रही है?

अबूसुफ़यान—बढ़ रही है।

हिरकिल ने कहा—ईमान का यही गुण है कि धीरे २ बढ़ता है और फिर पराकाष्ठा को पहुँच जाता है।

कैसर—कोई व्यक्ति उसके धर्म से हट भी जाता है?

अबूसुफ़यान—नहीं।

हिरकिल ने कहा—ईमान का आनन्द ही ऐसा है कि जब हृदयांकित हो जाता है और आत्मा पर अपना प्रभाव डाल देता है तो अलग नहीं होता।

कैसर—यह व्यक्ति कभी प्रतिज्ञा भंग भी करता है।

अबूसुफ़यान—नहीं, परन्तु इस वर्ष हमारा समझौता उस से हुआ है सो देखें उसका परिणाम क्या होता है।

अबूसुफ़यान कहता है कि मैं इस उत्तर पर केवल इतना वाक्य ही बढ़ा सका था परन्तु कैसर

ने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया और बोला— निःसन्देह पैग़म्बर कभी अपनी प्रतिज्ञा भंग नहीं करते संसार में फँसे हुये लोग ही ऐसा करते हैं, पैग़म्बर लौकिक विषयों के माया जाल में नहीं फँसा करते।

कैसर—कभी इस व्यक्ति के साथ तुम्हारी लड़ाई भी हुई है ?

अबूसुफ़यान—हां।

कैसर—लड़ाई का परिणाम क्या हुआ ?

अबूसुफ़यान—कभी वह जीता (बद्र में) और कभी हम जीते (उहद में)।

हिरकिल ने कहा, ख़ुदा के नबियों का यही वृत्तान्त होता है, किन्तु अन्त में विजय और ईश्वरीय सहायता उन्हीं को प्राप्त होती है।

कैसर—उसकी शिक्षा क्या है ?

अबूसुफ़यान—एक ख़ुदा को पूजो, बाप दादा के मार्ग (मूर्ति पूजा) को छोड़ दो, नमाज़, रोज़ा, सचाई, पवित्रता और नातेदारों के साथ भलाई पर सदा अमल करो।

हिरकिल बोला, आने वाले पैग़म्बर के यही चिन्ह हैं जो हमें बतलाये गये हैं। मैं जानता था कि पैग़म्बर प्रकट होने वाला है किन्तु यह नहीं समझता था कि वह अरब में होगा।

अबूसुफ़यान यदि तुम ने सत्य २ उत्तर दिये हैं तो वह एक दिन इस स्थान का जहां मैं बैठा हुआ हूँ (अर्थात शाम तथा बैतुलमुक़द्दस का) अवश्य ही अधिकारी हो जायगा। ईश्वर ऐसा करता कि मैं उसकी सेवा में पहुंच सकता और उस के चरणों को धोया करता।

इस के पश्चात आंहज़रत का पत्र पढ़ा गया। दरबार के सरदार उसे सुन कर बहुत बिगड़े और हमें (अबूसुफ़यान को) दरबार से बाहर निकाल दिया। मेरे हृदय में उसी दिन से अपने अपमान और आंहज़रत के भावी सम्मान का पूर्ण विश्वास जम गया।

किसरा को सत्य धर्म का निमन्त्रण—

ईरान का सम्राट किसरा आधे पूर्वीय संसार का शासक तथा स्वामी बना हुआ था। वह पारसी धर्म का अनुयायी था। अब्दुल्लाह बिन ख़दामः उसके पास आज्ञा पत्र लेकर गये थे। इस आज्ञा पत्र का अनुवाद यह है :—

"अल्लाह के नाम से आरम्भ जो अति दयालु अति कृपालु है। अल्लाह के रसूल मुहम्मद की ओर से फ़ारस के महान किसरा के नाम। आशीर्वाद उसके लिये जो सीधे मार्ग पर चलता है और अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाता है, और यह साक्षी देता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं है, और मुहम्मद उस का बन्दा और पैग़म्बर है। मैं तुझे अल्लाह का संदेश पहुंचाता हूँ और मैं ख़ुदा का रसूल हूँ, मुझे कुल मानव समाज की ओर भेजा गया है, कि जो कोई भी जीवता है उसे ईश्वरीय कोप का डर सुना दिया जाये और जो नकारने हारे हैं उनपर अल्लाह का कथन पूरा हो। तू मुसलमान हो जा ! कुशलता पूर्वक रहेगा नहीं तो मजूस जाति का पाप तेरी गरदन पर होगा।"

सम्राट ने आज्ञा पत्र देखा और अति क्रोधित होकर फाड़ डाला, और बोला—मेरी प्रजा का एक तुच्छ सेवक मुझे पत्र लिखता है और अपना नाम मेरे नाम से पहले लिखता है।

इसके बाद खुसरो ने 'बाज़ान' को जो यमन में उसकी ओर से शासक था और अरब का सारा देश उसी के आधीन समझा जाता था, यह आज्ञा भेजी कि इस व्यक्ति (आंहज़रत) को क़ैद करके मेरे पास भेज दो।

यमन के गवर्नर का फौजी जत्था— बाज़ान ने एक फौजी जत्था नियुक्त किया, उसका सैनिक अध्यक्ष खर खुसरो नामक एक व्यक्ति था। एक अन्य सरदार को भी साथ भेजा गया जिसका नाम बानवियः था, उसे यह आदेश दिया गया था कि हज़रत के हालात पर गहरी दृष्टि रक्खे और उन्हें किसरा के पास पहुँचा दे। यदि वे साथ जाने से इनकार करें तो लौटकर सूचना दे।

जब यह सैनिक जत्था तायफ़ पहुंचा तो तायफ़ वालों ने बड़ा हर्ष प्रकट किया कि अब मुहम्मद अवश्य बर्बाद हो जायगा क्योंकि सम्राट किसरा ने उसे गुस्ताख़ी का दण्ड दिये जाने की आज्ञा दे दी है।

खुसरो के क़त्ल की भविष्य वाणी— जब यह जत्था मदीने पहुंचा और नबी की सेवा में उपस्थित हुआ तो हज़रत ने फरमाया "आज रात को तुम्हारे सम्राट को ख़ुदा ने मार डाला, जाओ और मालूम करो।" यह फ़ौजी जत्था यमन लौट गया। उधर वहां बाज़ान के पास यह सूचना आ चुकी थी कि खुसरो को उसके पुत्र शेरवियः ने क़त्ल करा दिया है, और अब स्वयं राजसिंहासन का स्वामी है। *

यमन का गवर्नर मुसलमान हुआ— अब बाज़ान ने आंहज़रत के स्वभाव, आचार विचार तथा शिक्षा के सम्बन्ध में पूरी जांच पड़ताल की और अंत में मुसलमान हो गया। उसके साथ उसके दरबार और देश का बड़ा भाग भी मुसलमान हो गया।

उधर जो एलची नबी ने भेजा था उसने लौट कर निवेदन किया कि ईरान के सम्राट ने पत्र फाड़ डाला, उसी समय नबी ने फरमाया "मज़्ज़क़ा मुल्कहू" अर्थात् उसने अपने राज्य को फाड़ डाला।

पाठक इन दो शब्दों के छोटे से वाक्य को देखें और सवा तेरह सौ वर्ष के इतिहास में ढूँढें कि किसी स्थान पर भी उस जाति के राज्य का कोई चिन्ह भी मिलता है जो इस घटना से पूर्व चार पांच हज़ार वर्ष से आधी पृथ्वी पर राज-पताका उड़ा रही थी, और जिसकी विजय शक्ति बार बार यूनान तथा रूमा के साम्राज्य को नीचा दिखा चुकी थी? कदापि नहीं।

कुछ अन्य नरेशों तथा शासकों का मुसलमान होना— उचित जान पड़ता है कि इस स्थान पर उन कतिपय नरेशों तथा शासकों के नाम भी लिख दिये जायें जिन्हें नबी के भेजे दूतों द्वारा इस्लाम की सत्यता मिली और वे मुसलमान हो गये।

१—समामः नज्द का शासक था, सं० ६ हिजरी में मुसलमान हुआ। †

* पाठक आँहज़रत का पवित्र पत्र देखें उसमें लिखा था कि "मुसलमान हो जायगा तो सुरक्षित रहेगा" यह भय दिलाना नहीं था बल्कि एक भविष्य वाणी थी।

† समामा ने मुसैलिमा कज़्ज़ाब द्वारा उठाये जाने वाले उपद्रव में इस्लाम की बड़ी सेवा की थी, नबी ने उनके पास इस सम्बन्ध में फ़ुरात को एलची बनाकर भेजा था।

२—जबलः—अरब के एक प्रसिद्ध तथा प्राचीन राज्य ग़स्सान का राजा था, सं० ७ हि० में मुसलमान हुआ।

३—फ़र्वः इब्ने अम्र खुज़ायी—कैसर की ओर से शाम का गवर्नर था। जब यह मुसलमान हुआ तो कैसर ने सामने बुलाया और हुक्म दिया कि इस्लाम छोड़ दे। उसने इनकार किया। कैसर ने उसे कैद कर दिया और फिर क़त्ल करा दिया। खुदा के प्रिय बन्दे ने धन, धाम राजपाट, प्रताप तथा प्राण सब कुछ तज दिये किन्तु इस्लाम न त्यागा।

४—उकेदर, दौमतुल्जंदल का शासक था, सं० ६ हि० में मुसलमान हुआ।

५—जुलकलाऽ—यमन और तायफ़ के कुछ प्रान्तों का हाकिम तथा एक शक्ति शाली क़बीले हिमयर का शासक था। यह अपने आप को खुदा कहलाता और लोगों से अपनी पूजा कराया करता था। उसने मुसलमान हो जाने के पश्चात् एक दिन में १८ हज़ार दास मुक्त किये थे। उमर फ़ारूक़ के समय में राजपाट भी छोड़ दिया और मदीने में आकर साधुवों की तरह जीवन व्यतीत करने लगा था।

चौथा अध्याय

आंहज़रत के समय में इस्लाम का प्रचार जिस उत्तम ढंग पर हुआ था उसका संक्षेप वृतांत उन डिपोटेशनों (प्रतिनिधि मण्डलों) से विदित हो सकता है जो समय समय पर हुज़ूर की सेवा में दूर दूर से आया करते थे।

डिपोटेशन का आना, लौटकर जाना, मार्ग में भिन्न भिन्न जातियों तथा क़बीलों से मिलना, और इस्लाम की आवाज़ को जन समूह के कानों तक पहुँचाना बड़े उत्तम ढंग पर होता था। नबी के वे युद्ध जो बचाव के निमित्त विवश होकर लड़े गये, देश के एक छोटे तथा सीमित क्षेत्र ही में थे परन्तु इन प्रतिनिधि मण्डलों को देखो जो देश के प्रत्येक कोने तथा प्रत्येक भाग से चले आ रहे थे। इस्लाम और उसके पथ-प्रदर्शन ही के वे सोते थे जो पैग़म्बर इस्लाम ने चटियल मैदान में बहा दिये थे जिसकी ओर प्यासे खिंचे चले आरहे थे।

सार्व जनिक हित सम्बन्धी प्रचार का दूसरा प्रमाण उन डिपोटेशनों का आना है। जिन क़बीलों के डिपोटेशन नबी की सेवा में आये उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं। इस सूची में उन प्रतिनिधि मण्डलों के नाम सम्मिलित नहीं हैं जो राजनैतिक आवश्यकता अथवा अपने किसी लाभ के लिये नबी की सेवा में आये थे।

दौस, सदाऽ, सक़ीफ़, अब्दुल्क़ैस, बनीहनीफ़ः, तै, अश्अरीन, अज़्द, फ़र्दः जुज़ामी, हम्दान, तारिक़ बिन अब्दुल्लाह, तजीब, बनी सऽद, हुज़ैन, बनू असद, बहराऽ, उज़रा, खौलान, मुहारिब, ग़स्सान, बनी हारिस, बनी ईश, ग़ामिद, बनी फ़ज़ारा, सल्मान, नज्रान, नखऽ। उपरोक्त प्रतिनिधि मण्डलों का संक्षिप्त वृत्तान्त नीचे लिखा जाता है।

दौस—तुफ़ैल बिन अम्र दौसी के इस्लाम लाने का जिक्र किया जा चुका है। इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात् जब यह धर्मात्मा अपने देश जाने लगा तो उसने निवेदन किया या रसूलल्लाह! दुआ

कीजिये कि मेरी जाति मेरे निमन्त्रण पर मुसलमान हो जाये। नबी ने दुआ फ़रमाई कि प्रभु! तुफ़ैल को एक चिन्ह बना दे।

तुफ़ैल घर पहुंचा तो बूढ़ा पिता मिलने के लिये आया, तुफ़ैल ने कहा पिताजी! अब न मैं तुम्हारा हूँ न तुम मेरे हो। बूढ़े ने कहा, यह क्यों? तुफ़ैल ने उत्तर दिया "मैं तो मुहम्मद का धर्म स्वीकार करके और मुसलमान होकर आया हूँ। बाप ने कहा, बेटा! जो तेरा धर्म है वही मेरा भी है। तुफ़ैल ने कहा, खूब तब आप उठिये, स्नान कीजिये, पवित्र वस्त्र धारण कीजिये कि मैं इस्लाम की दीक्षा दूं। फिर तुफ़ैल की स्त्री आई उससे भी इसी प्रकार बात चीत हुई और वह भी मुसलमान होगई। अब तुफ़ैल ने इस्लाम का प्रचार आरम्भ कर दिया, किन्तु लोग मुसलमान नहीं हुये। तुफ़ैल फिर नबी की सेवा में आया, अर्ज़ किया "मेरी जाति में व्यभिचार बहुत है (चूंकि इस्लाम व्यभिचार को सख़्ती से हराम ठहराता है) इसलिये लोग मुसलमान नहीं होते, हुजूर उनके लिये दुआ करें। नबी ने फ़रमाया "अल्लाहुम्मा अह्दद दौसन्न" अर्थात् हे प्रभु दौस को सीधा मार्ग दिखा, फिर तुफ़ैल से फ़रमाया "जाओ लोगों को ईश्वरीय धर्म की ओर बुलाओ, उनसे नर्मी तथा प्रेम का व्यवहार करना।" इस बार तुफ़ैल को सफलता प्राप्त हुई। वह सं० ५ हि० में दौस के सत्तर अस्सी परिवार को जो मुसलमान हो चुके थे साथ लेकर मदीने पहुंचा। सुना कि हुज़ूर ख़ैबर गये हुये हैं इसलिये ख़ैबर ही पहुंच कर उन सब ने नबी के दर्शन किये। हज़रत के चचेरे भाई भी हबश से कुछ हबशी परिवारों को जो मुसलमान हो चुके थे लेकर ख़ैबर ही जा पहुँचे।

जाफ़र का हबश से वहां के नौमुस्लिमों को और तुफ़ैल बिन अम्र का यमन से दौस के नौमुस्लिमों को लेकर ख़ैबर में पहुँच जाना मानों यहूदियों को ख़ुदा की ओर से बतला देना था कि जिस पैग़म्बर की शिक्षा इतनी दूर दूर के देशों में हृदयों को जीत रही है उसका विरोध करना निराधार सी बात है।

सदाऽ का डिपोटेशन—यह प्रतिनिधि मंडल सं० ८ हि० में नबी की सेवा में उपस्थित हुआ था। इस जाति का एक व्यक्ति जियाद बिन हारिस नामक सबसे पहले आया था फिर दूसरी बार वही जियाद अपनी जाति के १५ सरदारों सहित आया। सऽद बिन उबादा उनकी सेवा सत्कार के लिये नियुक्त किये गये। इनके लौट जाने के पश्चात् इस क़बीले में इस्लाम फैल गया। जियाद ने नबी से अर्ज़ किया कि हमारे यहां केवल एक कुआं है, सर्दी में उसका जल खूब होता है परन्तु गर्मी में वह सूख जाता है, तब सारा क़बीला जत्थों में बंट कर इधर उधर यह समय बिताता है, दुआ कीजिये कि कुयें का पानी कम न हुआ करे। नबी ने फ़रमाया तुम सात कंकड़ियां उठा लाओ, जियाद ले आया, नबी ने उनको अपने हाथ में लेकर फिर लौटा दिया और फ़रमाया एक एक कंकड़ी उस कुयें में गिरा देना, प्रत्येक कंकड़ी पर अल्लाह अल्लाह कहते जाना। जियाद का कथन है कि फिर उस कुयें में इतना जल बढ़ गया कि कभी उसकी थाह न मिली। *

* जादुल मआद पृ० २१०।

सकीफ़ का डिपोटेशन—सकीफ़ में सर्व प्रथम व्यक्ति जो मुसलमान होने के लिये नबी की सेवा में आया वह उर्वः बिन मसऊद सक़फ़ी था। वह अपनी जाति का सरदार था। हुदैबियः की सन्धि में मक्के के काफ़िरों की ओर से वकील बन कर आया था। हवाज़िन और सकीफ़ के युद्ध के पश्चात् ईश्वर की कृपा से मदीने में हाज़िर हुआ और मुसलमान हो गया। उर्वः के घर दस स्त्रियां थीं, नबी ने फ़रमाया तुम उनमें से चार को * रख लो शेष अलग कर दो, चुनांचि उसने ऐसा ही किया। †

जब उर्वः इस्लाम सीख चुके तो उन्होंने हज़रत से निवेदन किया "अब मुझे अपनी जाति में जाने और उसमें इस्लाम का प्रचार करने की आज्ञा

---

* इस घटना से पाठकों को विदित होगा कि अरब में बहुविवाह पूर्व काल से प्रचलित था और उस पर कोई रोक न थी कि एक पुरुष इस से अधिक स्त्रियां न रख सके। इस्लाम ने इस मनमानी को रोका। अपरिमित को सीमित बनाया और अधिकता के लिये अन्तिम संख्या ४ नियुक्त की। आज कल बहुत से लोग इस पर आक्षेप करते हैं कि इस्लाम ने चार को भी क्यों जायज़ रक्खा, ऐसा एतराज़ करने वाले बहुधा ईसाई हुआ करते हैं। हम पूछते हैं कि क्या मसीह ने यहूदियों की बहुविवाह सम्बन्धी प्रथा में कोई सुधार किया था, यदि नहीं तो यह भी इस्लाम ही की विशेषता है कि उसने समस्त धर्मों की अपेक्षा इस सम्बन्ध में एक सीमा नियुक्त की। मत्ती की इन्जील पर्व्व २५ को आरम्भ से पढ़ कर देखिये जिस में एक वर के साथ १० कन्याओं के विवाह का उल्लेख है जिनमें ५ तो वर के साथ जाती और ५ अपनी मूर्खता से पीछे रह जाती हैं। यह उदाहरण बहु विवाह की एक दलील है। क़ुरान शरीफ़ में दो तीन चार तक की इजाज़त देकर फिर यह भी कह दिया है कि "व इन् ख़िफ़्तुम अँल्ला तऽदिलू फ़वाहेदतन्" अर्थात्:—"यदि यह भय हो कि तुम अपनी स्त्रियोंके बीच न्याय न कर सकोगे तो केवल एक स्त्री ही काफ़ी है।" फिर यह भी फरमा दिया कि "व लन तस्ततीऊ अन् तऽदिलू बैनन्निसाऽ व लौ हरस्तुम्" अर्थात् :—"तुम कभी अपनी स्त्रियों के बीच न्याय न रख सकोगे यद्यपि तुम स्वयं ऐसा करना चाहो।" सो यह इस्लाम ही है जिसने संसार की सब धार्मिक पुस्तकों से पहले "तब केवल एक स्त्री" के शब्द को विधान, व्यवस्था तथा आज्ञा के तौर पर वर्णन किया है, यह बात इस्लाम के लिये गौरवप्रद है।

एक से अधिक स्त्रियों के जायज़ होने पर वाद-विवाद इस पुस्तक के उद्देश्य से अलग है तथापि संक्षेप रूप में यहां इतना लिख देना आवश्यक है कि जब सामाजिक उन्नति एवं राष्ट्रीय सम्मान जन संख्या की अधिकता पर निर्भर है तब उस के लिये एक से अधिक विवाह क्यों आवश्यक न समझ लिया जाये, यद्यपि एक से अधिक स्त्रियों से विवाह करने में व्यक्तिगत रूप से सुख नहीं मिलता, किन्तु संसार के बुद्धिमान जानते हैं कि वे लोग धन्य हैं जो जाति तथा राष्ट्र के लिये अपना बलिदान देते हैं।

† तलाक़ शब्द से भी पाश्चात्य विद्वान बहुत चिढ़ा करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि ईसाइयों के धर्म सम्बन्धी क़ानून में तलाक़ की स्वतन्त्रता रक्खी गई है। वे यह भी भूल जाते हैं कि आज संसार में केवल यूरोप ही ऐसा देश है जहां तलाक बहुत ज्यादा दी जाती है और जहां तलाक स्वीकार करने वाली अदालतें इस काम के लिये अलग हैं। इस्लाम ने तो यहूदियों, ईसाइयों तथा अरब के मूर्ति पूजकों की बे रोक टोक वाली तलाक पर बहुत सी पाबन्दियां लागू कर दी हैं जिस से तलाक की प्रथा नष्ट प्राय सी हो गई है जैसे :—

(१) स्त्री का मिह्र तलाक की रोक है। शरई (वैधानिक) तलाक तीन हैं, प्रत्येक एक हैज़ (रजस्वला होने) के बाद होनी चाहिये, यह तीन महीने का समय भी तलाक के प्रति एक रोक है।

दीजिये" नबी ने फ़रमाया "तुम्हारी जाति तुम्हें मार डालेगी" उर्वः ने कहा या रसूलल्लाह! मेरी जाति मुझसे इतना प्रेम करती है जितना किसी प्रेमी को अपने प्रीतम से होता है। यह धर्मात्मा अपनी जाति में आया और इस्लाम का प्रचार आरम्भ कर दिया। एक दिन वह धर्मात्मा अपनी अट्टालिका पर विश्राम कर रहे थे कि किसी पापी ने तीर चलाया जिससे वे शहीद होगये। यद्यपि उर्वः बच न सके किन्तु जो आवाज उन्होंने अपनी जाति तक पहुंचा दी थी वह हृदयों पर प्रभाव डाले बिना न रही। थोड़ा समय ही व्यतीत हुआ था कि जाति के लोगों ने कुछ सरदारों को चुना और नबी की सेवा में इसलिये भेजा कि इस्लाम के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त करें! यह डिपोटेशन सं० ६ हि० में नबी की सेवा में उपस्थित हुआ था। इस प्रतिनिधि मण्डल का अध्यक्ष "अब्दो यालील" था

(२) अन्तिम तलाक़ तक स्त्री पुरुष एक घर में रहें, यह उपाय भी तलाक की एक रोक है।

(३) तलाक के दो साक्षी आवश्यक हैं। यह बात भी लज्जा शील व्यक्तियों के लिये जो ग़ैरों पर अपना भेद प्रकट होने देना नहीं चाहते तलाक़ की रोक है।

(४) तलाक दी हुई स्त्री पहले पति से विवाह नहीं कर सकती जब तक कि कोई दूसरा उससे विवाह न कर ले और अवसर पाकर छोड़ न दे। यह अत्यन्त कठिन शर्त भी तलाक के लिये रोक है।

(५) "इन्नाअबग़ज़ुल हलालुज़ इन्दल्लाहित्तलाक़" सब से ज्यादा तलाक को रोकने वाली है, इस हदीस का अनुवाद यह है "जायज़ कामों में सब से अधिक घृणास्पद कार्य्य खुदा के निकट तलाक़ है।"

(६) क़ुरान शरीफ़ में है कि हज़रत ने अपने सहाबी ज़ैद से फरमाया 'अमसिक् अलैका ज़ौजका वत्तक़िल्लाह' अर्थात् अपनी स्त्री को अपने पास रहने दे और (इसे तलाक देने में) खुदा से डर। और क़ुरान शरीफ़ भर में कहीं भी नहीं कि किसी को तलाक देने के बारे में कहा गया हो।

(७) क़ुरान शरीफ़ ने "ज़िहार" को व्यर्थ ठहराया यद्यपि अरबों के निकट यह भी एक प्रकार की तलाक थी, इस से भी तलाक की क़मी हो गई।

(८) क़ुरान शरीफ़ ने "ईला" का सुधार किया यद्यपि इसका प्रयोग अरब में तलाक के लिये होता था, इससे भी तलाक में क़मी पैदा हुई।

(९) क़ुरान शरीफ़ ने उचित ठहराया है कि "परस्पर मन मुटाव की अवस्था में एक पंच पति के कुटुम्ब से और एक पंच स्त्री के कुटुम्ब से नियुक्त किये जायें और यह दोनों मिलकर स्त्री, पुरुष की शिकायतें सुनें और उन में सन्धि करा दें।" यह उपाय भी तलाक रोकने के लिये है।

यदि किसी धर्म ने तलाक़ की रोक में इतनी और ऐसे प्रभावशाली उपायों की शिक्षा दी है तो वह उपस्थित करे।

इन आज्ञाओं का क्रियात्मिक परिणाम देखो कि मुसलमानों में तलाक का प्रयोग बहुत कम किया जाता है किन्तु यूरोप में जो तलाक के जायज़ न होने के निज धार्मिक विधान पर गौरव प्रकट करता है कोई बस्ती, कोई नगर, कोई मुहल्ला, ऐसा न मिलेगा जहां तलाक की दो चार घटनायें न मिल सकें।

जिसके समझाने को आंहज़रत सं० १० नबवी में तायफ़ गये थे, और उसने उपदेश सुनने से इनकार कर दिया था, और बस्ती के बालकों तथा गुण्डों को पैग़म्बर का अपमान करने पर लगा दिया था, और जिसके इशारे पर तायफ़ में आंहज़रत पर पत्थर बरसाये गये और कीचड़ फेंकी गई।

आंहज़रत ने तायफ़ लौटते हुये यह फ़रमा दिया था कि 'मैं उनकी बरबादी के लिये दुआ नहीं करूंगा क्योंकि यदि वे इस्लाम स्वीकार न करेंगे तो उनकी सन्तान शिक्षा ग्रहण करेगी' अब वही इस्लाम के शत्रु स्वयं ही इस्लाम के प्रति अपने हृदयों में स्थान पाते और हार्दिक इच्छा सहित हज़रत की सेवा में उपस्थित होते हैं।

मुग़ीरः बिन शुअ्बः ने नबी से अर्ज़ किया कि ये (सक़ीफ़ वाले) मेरी जाति के लोग हैं क्या मैं उन्हें अपने घर उतार लूं और उनकी सेवा सुश्रूषा करूं? नबी ने फ़रमाया "अमनअक अन् तकरमा क़ौमोका" (मैं तुम्हें अपनी जाति का आदर सत्कार करने से नहीं रोकता) परन्तु उन्हें ऐसी जगह ठहराओ जहां क़ुरान की आवाज़ उनके कानों में पड़े। अतएव उनकी छोलदारियां मस्जिद के आंगन में लगादी गईं जहां से वे क़ुरान भी सुनते थे और लोगों को नमाज़ पढ़ते भी देखते थे। इस उपाय से उनके हृदयों पर इस्लाम की सत्यता का प्रभाव पड़ा और उन्होंने नबी के हाथ पर इस्लाम स्वीकार कर लिया। उन्होंने इस्लाम स्वीकार करने से पूर्व यह निवेदन किया "हमें नमाज़ न पढ़ने की इजाज़त दी जाये" नबी ने फ़रमाया "ला ख़ैरा फ़ी दीनिन्न लैसा फ़ीहे रुकूऽ" अर्थात् (जिस धर्म में नमाज़ नहीं उसमें कोई ख़ूबी नहीं) फिर उन्होंने कहा अच्छा हमें जिहाद (धार्मिक युद्ध) के लिये न बुलाया जाये, और न हमसे ज़कात (दान) ली जाये। हज़रत ने यह शर्त स्वीकार करली और सहाबियों से फ़रमाया "इस्लाम के प्रभाव से ये स्वयं ही दोनों काम करने लगेंगे।*

अब्दो या लील ने जो उनका नेता था समय समय पर आंहज़रत से निम्नलिखित विषयों पर वार्तालाप किया :—

१—व्यभिचार—या रसूलल्लाह! व्यभिचार के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं? हमारी जाति के लोग बहुधा अपने देश से दूर रहते हैं इसलिये इसके बिना गुज़ारा नहीं।

नबी ने फ़रमाया कि "व्यभिचार तो हराम है और उसके लिये अल्लाह की यह आज्ञा है "ला तक़रबुज़िना इन्नहू काना फ़ाहेशतँ व्व साअ सबीला (बनी इस्राईल रू० ४) अर्थात तुम व्यभिचार के निकट भी न जाओ, यह अति निर्लज्जता की बात और बुरा मार्ग है।

२—ब्याज—या रसूलल्लाह ब्याज के विषय में आप क्या फ़रमाते हैं? यह तो पूर्णतया हमारा

* आंहज़रत के पवित्र पथ प्रदर्शन का ढंग देखो कि किस बुद्धिमानी से नवमुस्लिमों पर इस्लामी विधान का बोझ डाला करते थे। "दावते इस्लाम" पृष्ठ ४६२ में है कि "वालदेमर" नामक ज़ार रूस (सम्राट) इस शर्त पर मुसलमान होने पर तैयार था कि वह शराब का पीना न छोड़ेगा। उस समय के आलिम ने इस शर्त को स्वीकार न किया। ज़ार जो मूर्ति पूजा से घृणा करने लगा था निराश होकर ईसाई होगया। यदि उस विद्वान को आंहज़रत के पथ प्रदर्शन की नीति का पूरा पूरा ज्ञान होता तो आज रूस में लगभग सब मुसलमान होते।

धन है। नबी ने फरमाया तुम अपना मूलधन ले सकते हो, देखो अल्लाह फरमाता है "या अय्योहल्लजीना आमनुत्तक़ुल्लाह वज़रू मा बक़ेया मिनर्रिबा (बकरः रु० ३८) अर्थात् हे ईमान वालो खुदा से डरो और व्याज में से जो लेना रह गया है वह भी छोड़ दो।

३-शराब हराम है—या रसूलल्लाह! खम्र (शराब तथा नशे) के सम्बन्ध में आप क्या फरमाते हैं? यह तो हमारे ही देश का रस है और उसके बिना तो हम रह नहीं सकते। नबी ने फरमाया, शराब को खुदा ने हराम कर दिया है देखो अल्लाह फ़रमाता है "या अय्योहल्लाजीना आमनू इन्नमल् खम्रो वल्मैसेरो वल् अन्साबो वल् अज़्लामो रिज्सुम्मिन अमलिश्शैताने फजतनेबूहो लअल्लकुम् तुफ्लेहून" (मायदः रु० १२) अर्थात् हे विश्वासियो शराब, जुआ, पांसे और अजलाम गन्दे, दुष्टात्मा के काम हैं उन से बचा करो जिस में कि भलाई पाओ।

दूसरे दिन उसने आकर कहा "अच्छा हम आप की सब बातें मान लेंगे "रब्बह" (रब अर्थात् प्रभु का स्त्रीलिंग जिसे वे देवी समझ कर पूजते थे) को क्या करें?

नबी ने फरमाया "उसे गिरा दो"

डिपोटेशन के लोगों ने कहा "हाय हाय, यदि रब्बह को खबर हो गयी कि आप उसे गिरा देना चाहते हैं तो वह हम लोगों को नष्ट ही कर डालेगी।

हज़रत उमर ने कहा "इब्ने अब्दो या लील! शोक की बात है कि तुम इतना भी नहीं समझते कि वह तो केवल पत्थर ही है।" उसने खिजा कर कहा "उमर! हम तुमसे बात करने नहीं आये।" फिर नबी से अर्ज़ किया उसे गिराने की ज़िम्मेदारी आप स्वयं अपने ऊपर लें क्यों कि हम तो उसे कभी नहीं गिरायेंगे। नबी ने फरमाया, अच्छा मैं गिराने वाले को भी भेज दूंगा।

उन में से एक ने अर्ज़ किया कि उसे हमारे जाने के बाद भेजियेगा वह हमारे साथ न जाये। *
गरज़ जितने लोग आये थे वे मुसलमान होकर अपने देश को लौट गये। उन्होंने चलते समय कहा कि हमारे लिये कोई इमाम (धर्म गुरु) नियुक्त कर दीजिये। इन्हीं में एक व्यक्ति उसमान बिन अबुलआस नामक था जो उम्र में सब से छोटा था वह छुप छुपकर क़ुरान शरीफ और धर्म की बातें सीखता रहा, कभी स्वयं हज़रत से कभी अबूबक्र सिद्दीक से। आंहज़रत ने उसी को उनका इमाम बना दिया।

डिपोटेशन ने मार्ग में यह निश्चय किया कि अपना इस्लाम छुपा कर पहले जाति को निराश कर देना चाहिये। जब यह लोग अपने देश पहुंच गये तो जाति के लोगों ने पूछा कहो क्या सूचना है? डिपोटेशन ने कहा हमें एक कठोर हृदय व्यक्ति का सामना करना पड़ा जो हमें अनहोनी बातों की आज्ञा देता है, उदाहरणार्थ लात तथा उज़्ज़ा मूर्तियों को तोड़ देना, व्याज को छोड़ देना,

* जान पड़ता है कि इब्न अब्दो यालील जो तायफ़ का हाकिम था एक बुद्धिमान व्यक्ति था वह स्वयं अपने को मूर्ख जाति का निशाना बनने से बचाने के लिये दिखावे के प्रश्न करता था जिसमें कि जाति के लोग यह न कहें कि बिना वाद विवाद के मुसलमान होगया। मूर्खों को समझाने की यह भी एक अच्छी चाल है।

शराब और व्यभिचार को हराम समझना। लोगों ने शपथ खाकर कहा कि हम इन बातों को कदापि न मानेंगे। डिपोटेशन ने कहा "अच्छा हथियारों को ठीक करो और युद्ध की तैयारी करो, क़िलों की मरम्मत करलो। दो दिन तक सकीफ़ वाले इसी इरादे पर जमे रहे, तीसरे दिन स्वयं कहने लगे भला मुहम्मद के साथ हम कैसे लड़ सकेंगे? सम्पूर्ण अरब तो उन के आधिपत्य को स्वीकार कर रहा है। फिर डिपोटेशन के सदस्यों से कहा जाओ जो कुछ वह कहता है, मान लो। डिपोटेशन वालों ने कहा अब हम तुम से सत्य सत्य बतलाते हैं, हमने मुहम्मद को संयम में, प्रतिज्ञा में, दया में और सचाई में सब से बढ़ कर पाया है, हमें सब को इस यात्रा से बड़ा लाभ प्राप्त हुआ है। जाति ने कहा तुम ने हम से यह भेद क्यों छुपाया और हमें ऐसी चिन्ता में क्यों डाला? डिपोटेशन ने उत्तर दिया कि हमारा अभिप्राय यह था कि अल्लाह तुम्हारे हृदयों से घमण्ड को निकाल दे। इस के पश्चात वे सब मुसलमान हो गये।

कुछ दिनों बाद आंहज़रत के भेजे हुये कुछ व्यक्ति ख़ालिद बिन वलीद की अध्यक्षता में वहां पहुंचे, उन्होंने लात को गिरा देने की कार्रवाई आरम्भ करना चाही। सकीफ़ के सब स्त्री, पुरुष, बूढ़े, बालक इस कार्य को कठिन समझे हुये थे, स्त्रियां भी यह तमाशा देखने के लिये इकट्ठा हो गईं।

मुग़ीरः बिन शउबः ने उसके तोड़ने के लिये तीर चलाया परन्तु अपने ज़ोर में स्वयं ही गिर पड़े। यह देख कर सकीफ़ वाले पुकार उठे देव ने मुग़ीरः को गिरा दिया, रब्बह देवी ने उसे मार डाला, तुम कैसी ही कोशिश करो परन्तु उसे गिरा नहीं सकते।

मुग़ीरः बिन शउबः ने बिगड़ कर कहा सकीफ़ वालो! तुम निरे मूर्ख हो, यह पत्थर का टुकड़ा क्या कर सकता है हे लोगो! अल्लाह की शरण प्राप्त करो और उसी की उपासना करो। फिर मन्दिर में घुस कर मुग़ीरः ने पहले उस मूर्ति को तोड़ा फिर मन्दिर की दीवारों पर चढ़ गये और उस इमारत का एक एक पत्थर गिरा कर छोड़ा।

मन्दिर का पुजारी कहने लगा कि मन्दिर की नीव उसे डुबो देगी। यह सुन कर मुग़ीरः ने नीवें भी खोद डालीं और इस प्रकार उस जाति के सारे भ्रम तथा चिंता को दूर कर दिया और अब इस्लाम की नीव उनके हृदयों में गड़ गई। *

अब्दुल् कैस का डिपोटेशन—अब्दुल् कैस क़बीले का डिपोटेशन नबी की सेवा में आया। नबी ने पूछा तुम किस जाति के लोग हो? उन्होंने अर्ज़ किया "रबीअः" जाति के। फिर उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमारे और आप के बीच मुज़र क़बीले के लोग बसते हैं, इसलिये हम हज्ज ही के दिनों में आ सकते हैं अतः हमें स्पष्टतयः समझा दिया जाये जिस पर हम और हमारी जाति के लोग अमल करें। फरमाया मैं तुम्हें चार चीज़ों के करने की और चार चीज़ों से बचने की आज्ञा देता हूँ। जो बातें करने की हैं वे यह हैं:—

१—एक ख़ुदा पर ईमान लाना अर्थात् "ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" की साक्षी देना।

---

* ज़ादुल् मआद पृ० ४८१।

२—नमाज

३—जकात

४—रमजान के रोजे और युद्ध में शत्रु के लूटे हुये धन से पांचवां भाग निकालना।

चार चीजें जिन से बचने की आज्ञा है ये हैं:—

१—दुब्बा (भीख मांगने का तोंबा)

२—हन्तम (लाखी अथवा काला बरतन)

३—नक़ीर (शराब के लिये लकड़ी का एक बासन)

४—मुज़फ्फ़त (जिस बरतन में शराब रक्खी गयी हो) *

इन बातों को याद रखो और पिछलों को भी बता दो। उन्होंने अर्ज़ किया हुज़ूर को क्या मालूम है कि नक़ीर क्या होती है? फरमाया "जानता हूँ, खजूर के पेड़ में घाव लगा कर रस निकालते हो, और उसमें खजूरें डाला करते हो, उस पर पानी डालते हो उसमें उफान पैदा होता है जब उफान बैठ जाता है तब पिया करते हो। सम्भव है कि तुम में से कोई अपने चचेरे भाई को (नशे में) मार डाले।" आश्चर्य की बात यह कि इसी डिपोटेशन में एक व्यक्ति ऐसा भी था जिसने नक़ीर के नशे में अपने चचेरे भाई को मार डाला था। इन लोगों ने पूछा या रसूलल्लाह! हमारे यहां चूहे बहुत होते है इसलिये वहां चमड़े की मशकें ठीक नहीं रह सकतीं फरमाया चाहे ठीक न रहें।

इसी डिपोटेशन के साथ एक ईसाई जारूद बिन अला भी था उसने कहा या रसूलल्लाह! मैं इस समय भी एक धर्म रखता हूँ यदि हम उसे छोड़कर आपके धर्म में दाखिल हो जायें तो क्या आप हमारे रक्षक बन सकते हैं? फरमाया हां मैं रक्षक बनता हूँ क्योंकि जिस धर्म की ओर मैं बुला रहा हूँ वह उससे उत्तम है जिस पर अब तुम हो। जारूद के साथ और भी ईसाई मुसलमान हो गये थे। †

बनी हनीफ़: का डिपोटेशन—बनी हनीफ़: का प्रतिनिधि मण्डल नबी की सेवा में हाजिर हुआ सम्मामः बिन असाल के प्रयत्न से इस इलाक़े में इस्लाम फैला था। यह डिपोटेशन मदीने आकर मुसलमान हुआ था। इसी डिपोटेशन के साथ मुसैलिमा कज्जाब (झूठा मुसैलिमा) भी था। वह मदीने में आकर लोगों से कहने लगा कि यदि मुहम्मद साहेब यह स्वीकार करलें कि उनका स्थानापन्न मुझे बनाया जायेगा तो मैं मुसलमान हो जाऊं। नबी ने सुना, हुज़ूर के हाथ में उस समय खजूर की एक छड़ी थी फरमाया "मैं तो इस छड़ी के देने की शर्त पर भी मुसलमान बनाना नहीं

---

* सहीह बुख़ारी में इब्ने अब्बास से रवायत। इस जाति में शराब बहुत पी जाती, बनाई जाती और रक्खी जाती थी। नबी ने शराब के हराम होने की आज्ञा देते समय उन बर्तनों का प्रयोग भी रोक दिया था जिनमें शराब पी जाती अथवा रक्खी जाती थी। जब जाति से शराब पीने की आदत जाती रही तब इन बरतनों के प्रयोग का निषेध भी दूर कर दिया गया था। इससे मुसलमान सरलता पूर्वक समझ सकते हैं कि हज़रत कैसे ज्ञान तथा उत्तम ढंग से शिक्षा दिया करते थे।

† जादुल मआद पृ० ४८७। सहीहैन में इब्ने अब्बास से।

चाहता, यदि वह मुसलमान न होगा तो खुदा उसे नष्ट कर देगा। उसका परिणाम मुझे दिखा दिया गया है, अर्थात् मैंने स्वप्न में देखा है कि मेरे हाथों में सोने के कंगन हैं, मुझे वे बुरे जान पड़े, स्वप्न ही में "वही" द्वारा ज्ञात हुआ कि उन्हें फूंक से उड़ा दूं, मैंने फूंक मारी तो वे उड़ गये। मैं विचार करता हूँ कि यह संकेत यमामः केसरदार मुसैलिमा और सुनआ के सरदार अन्सी की ओर है।*

मुसैलिमः कज़्ज़ाब ने यद्यपि पैग़म्बरी का दावा किया था किन्तु आंहज़रत को भी पैग़म्बर मानता था। इससे उसका प्रयोजन कदाचित यः था कि उस इलाके के मुसलमान विरोधी न हो जायें। सं० १० हि० में मुसैलिमः और आंहज़रत के बीच निम्नलिखित पत्रों का आदान प्रदान हुआ।

"खुदा के रसूल मुसैलिमः की ओर से खुदा के रसूल मुहम्मद के नाम। ज्ञात हो कि आधी पृथ्वी हमारी और आधी कुरैश की है परन्तु कुरैश न्याय नहीं करते, आप पर सलाम हो।"

आंहज़रत ने उसका उत्तर दिया—

"अल्लाह † के नाम से आरम्भ जो अति दयालु अति कृपालु है। अल्लाह के रसूल मुहम्मद की ओर से झूठे मुसैलिमः के नाम। विदित हो कि पृथ्वी अल्लाह की है, वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है देता है, और उसका वारिश बनाता है। और मुक्ति खुदा से डरने हारों के लिये है। सलाम उस पर जो. सीधे मार्ग पर चलता है।"

आंहज़रत का पत्र लेकर हबीब बिन ज़ैद बिन आसिम गये थे। कज़्ज़ाब ने उनके दोनों हाथ पांव कटवा दिये थे। ‡

तै का डिपोटेशन—तै का डिपोटेशन जिस का नेता ज़ैद था आंहज़रत की सेवा में आया। नबी ने फरमाया, अरब के जिस व्यक्ति की प्रशंसा मेरे सामने हुई वह देखने के समय उस से कम ही निकला हां केवल एक ज़ैद उन से प्रथक है। फिर उसका नाम "ज़ैदुल् खैर" रक्खा। यह सब लोग आवश्यक वार्तालाप के पश्चात् मुसलमान हो गये। §

* सहीहैन में इब्ने अब्बास से नाफ़े बिन जुबैर की रिवायत। मसैलिमः और अन्सी दो ऐसे झूठे गुज़रे हैं जिन्होंने आंहज़रत की देखा देखी नुबुव्वत, का दावा किया था। खुदा ने दोनों को नष्ट कर दिया। सफलता और सचाई उसी को प्राप्त हुई जो खुदा का सच्चा पैग़म्बर था। क़ुरान शरीफ़ में भविष्य वाणी मौजूद है कि खुदा ने अपने पैग़म्बर को हिदायतों और सचाइयों सहित इसलिये भेजा है कि वह सब धर्मों पर प्रकट तथा प्रबल हो।

† फ़तूहुलबुल्दान।

‡ फ़तूहुलबुल्दान पृ० ९१।

इस स्थान पर पाठकों की जानकारी के लिये इतना लिख देना आवश्यक है कि मुसैलिमा पर अबूबक्र सिद्दीक की खिलाफ़त के ज़माने में खालिद बिन वलीद सेना लेकर गये थे। मुसैलिमा वहशी के हाथों मारा गया था। यह वहशी वही हैं जिन्होंने हज़रत हम्ज़ः को मारा था। यह कहा करते थे कि यदि कुफ़्र में मैंने एक प्रभाव शाली मुसलमान को मारा था तो इस्लाम में आकर एक बड़े भारी काफ़िर को भी मारा है। खुदा ने मेरे पाप का प्रायश्चित्त करा दिया।

§ ज़ादुल मआद पृ० ४६१ ज़ैदुल खैर एक कवि और विख्यात सुवक्ता थे। उन के दो पुत्र मुकनिफ़ और हुरैस भी सहाबी हैं।

अशअरीन का डिपोटेशन—अशअरीन (यमन वाले) क़बीले का डिपोटेशन भी आया। उसके आने पर हजरत ने फरमाया था "यमन वाले आये जिनके हृदय नम्र और कमज़ोर हैं, ईमान और ज्ञान यमन वालों का है और नम्रता बकरियों वालों की है और अभिमान तथा गौरव ऊँट वालों का है जो पूर्व की ओर रहते हैं।

मदीने में प्रवेश करते समय ये लोग यह कविता पढ़ रहे थे—"कल हम अपने मित्र अर्थात मुहम्मद और उनके साथियों से मिलेंगे।"

अज़्द का डिपोटेशन—यह डिपोटेशन जो ७ व्यक्तियों पर सम्मिलित था नबी की सेवा में हाजिर हुआ। हुज़ूर ने उनके आचार व्यवहार को पसन्द किया, पूछा तुम कौन हो? उन्होंने कहा "हम ईमान वाले हैं।" फरमाया प्रत्येक कथन का एक प्रमाण होता है बताओ तुम्हारे कथन और ईमान की सत्यता क्या है? उन्होंने अर्ज किया कि हम १५ बातें रखते हैं पांच वे हैं जिन पर विश्वास रखने की आज्ञा तथा पांच वे हैं जिन पर अमल करने की आज्ञा आप के भेजे हुये लोगों ने दी है और पांच वे जिन पर हम पहले ही से चलते आ रहे हैं।

ईमान की कसौटी—वे पांच बातें जिन पर हुज़ूर के प्रचारकों ने ईमान लाने की आज्ञा दी है ये हैं—१—ईमान एक अल्लाह पर। २—अल्लाह के फ़रिश्तों पर, ३—अल्लाह की पुस्तकों पर, ४—अल्लाह के पैग़म्बरों पर, ५—मृत्यु के पश्चात् पुनः जीवित होने पर। वे पांच बातें जो कार्यरूप में लाने के लिये हमें बताई गई हैं ये हैं—१—"ला इलाह इल्लल्लाह" कहना, २—पाँच वक्त की नमाज़ को स्थिर रखना, ३—ज़कात देना, ४—रमज़ान के रोज़े रखना, ५—काबे का हज्ज करना जब कि यात्रा की सामर्थ्य हो। वे पांच बातें जिन्हें हम पहले ही से जानते हैं ये हैं—१—सुख के समय ईश्वर का धन्यवाद करते रहना, २—कष्ट के समय धैर्य से काम लेना, ३—ईश्वर की जो इच्छा हो उस पर राजी रहना, ४—परीक्षा के समय सत्यवादी बने रहना, ५—शत्रु के साथ बुराई न करना।

आंहजरत ने फरमाया, जिन्होंने इन बातों की शिक्षा दी थी वे विद्वान और ज्ञानी थे और उन की बुद्धिमत्ता से पता चलता है कि वे मनो नबी थे। अच्छा पाँच बातें और बतला देता हूँ कि पूरी २० हो जायें।

१—वह चीज इकट्ठा न करो जिसे खाना न हो।

२—वह मकान न बनाओ जिसमें बसना न हो।

३—ऐसी बातों में बड़ाई न जताओ जिन्हें कल छोड़ना है।

४—खुदा से डरो जिस की ओर लौटना और जिस के सामने जाना है।

५—उन चीजों की अभिलाषा करो जो अन्त में जहां तुम सदा रहोगे तुम्हारे काम आयेंगी।"

इन लोगों ने हजरत के फरमाने पर पूरा पूरा अमल किया।*

फ़र्वा बिन अम्र का डिपोटेशन—अरब का जितना उत्तरी भाग रूमा के अधिकार में था उस

* जादुल मआद पृ० ५१२।

सारे इलाक़े का गवर्नर फर्वा बिन अम्र था। उस की राजधानी "मआन" थी। पेलिस्टायन से मिला हुआ भाग भी उसी के आधीन था। हजरत ने उसे भी इस्लाम का निमन्त्रण दिया था। फर्वा ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था और हजरत की सेवा में एक सफ़ेद रंग का बहु मूल्य खबर उपहार रूप भेजा था। जब रूमा के सम्राट को उसके मुसलमान होने की सूचना मिली तो उसे सम्राट ने अपने पास बुलाया। बादशाह ने पहले तो उसे इस्लाम छोड़ देने के लिये लालच दिलाया जब फर्वा ने इनकार किया तो उसे क़ैद कर दिया गया। अन्ततः यह निश्चय किया गया कि उसे फांसी दे दी जाये चुनांचि पेलिस्टायन नगर के एक प्रसिद्ध तालाब अफ़्राऽ नामक के किनारे उसे फांसी पर लटका दिया गया।

हम्दान का डिपोटेशन—यह कबीला भी यमन में बसता था। उनमें धर्म प्रचार के लिये खालिद बिन वलीद को भेजा गया था। खालिद वहां बहुत दिनों तक रहे परन्तु इस्लाम नहीं फैला। फिर नबी ने हजरत अली को नियुक्त किया उनके आध्यत्मिक प्रभाव से सारा कबीला एक दिन में मुसलमान हो गया। हजरत अली का पत्र जब आंहजरत ने सुना तो परमात्मा को साष्टांग प्रणाम किया और फरमाया "अस्सलामो अला हम्दान" हम्दान को आशीर्वाद। यह डिपोटेशन उन्हीं लोगों का था जो हजरत अली के हाथ पर मुसलमान हो चुके थे और नबी के दर्शनाभिलाषी हो कर आये थे।

तारिक बिन अब्दुल्लाह का डिपोटेशन—तारिक बिन अब्दुल्लाह का कथन है कि मैं एक दिन सूकुल् मजाज (मक्के के एक बाजार) में खड़ा था इतने में एक व्यक्ति वहां आया जो पुकार पुकार कर कहता था "या अय्योहन्नसो कूलू ला इलाहा इल्लल्लाह तुफ़लेहू" (लोगो कहो अल्लाह एक है, उस के सिवाय कोई उपासना के योग्य नहीं, (इसी तरह) भलाई पाओगे। एक दूसरा व्यक्ति उसके पीछे पीछे आया जो उसे कंकड़ियां मारता था और कहता था "या अय्योहन्नासो ला तुसद्देकूहो फ़इन्नहू कज़्ज़ाब" (लोगो! इसे सच्चा न समझो यह झूठा आदमी है) मैंने पूछा यह कौन लोग हैं? लोगों ने कहा यह तो बनी हाशिम में से एक है जो अपने आप को ईश्वर प्रेषित समझता है और यह दूसरा उसका चाचा अब्दुल् उज़्ज़ा* (अबूलहब का नाम था) है। तारिक कहता है कि उसके बाद वर्षों गुजर गये और नबी मदीने जाकर रहने लगे।

उस समय हमारी जाति के कुछ लोग जिनमें मैं भी था मदीने गये कि वहां का खजूरें मोल लायें। जब मदीने के निकट पहुंचे तो हम इस लिये रुक गये कि यात्रा वाले वस्त्र उतारकर दूसरे वस्त्र पहिन कर नगर में दाखिल होंगे। इतने में एक व्यक्ति आया जो दो पुरानी चादरें पहिने था, उसने सलाम के बाद पूछा "किधर से आये हो और कहां जाओगे? हमने कहा रबज़ा से आये हैं और यहीं

* इस घटना से अनुमान किया जा सकता है कि आंहज़रत ने कैसे परिश्रम, धैर्य तथा दृढ़ता पूर्वक जातियों को ईश्वरीय एकता का बुलावा दिया था। शत्रु कहते हैं कि इस्लाम तलवार के जोर से फैलाया गया।

तक का इरादा है। पूछा मतलब क्या है ? हमने कहा खजूरें मोल लेना है। हमारे पास एक लाल ऊंट था जिसके मुहार पड़ी हुई थी। उस व्यक्ति ने कहा यह ऊंट बेचते हो ? हमने कहा हां इतनी खजूरों के बदले में दे देंगे। उस व्यक्ति ने यह सुन कर दाम घटाने के बारे में कुछ नहीं कहा और ऊंट की मुहार पकड़कर नगर के भीतर चला गया। अब परस्पर लोग कहने लगे कि हमने यह क्या किया, ऊंट एक ऐसे व्यक्ति को दे दिया जिसे हम जानते तक नहीं और खजूरों के वसूल करने का कोई प्रबन्ध भी नहीं किया। हमारे साथ जाति के सरदार की स्त्री भी थी वह बोली "मैंने उस व्यक्ति का मुख देखा था पूर्णिमा के चन्द्रमा की नाईं प्रकाशमान था, यदि ऐसा व्यक्ति दाम न दे तो मैं चुका दूंगी।

हम यही बातें कर रहे थे कि इतने में एक व्यक्ति आया और बोला मुझे अल्लाह के रसूल ने भेजा है और (ऊंट के मोल की) खजूरें भी भेजी हैं, (तुम्हारे खाने पीने के लिये भी कुछ अलग से हैं) और मोल की खजूरों को तौल लो। जब हम खा पीकर निश्चिन्त हुये तो नगर में गये देखा कि वही व्यक्ति मस्जिद के मिम्बर पर खड़ा उपदेश दे रहा है। हमने यह शब्द सुने—(अनुवाद) लोगो ! दान दिया करो, दान करना तुम्हारे लिये अति उत्तम है, उठा हुआ हाथ गिरे हुये हाथ से अच्छा है, माता को पिता को बहिन को भाई को फिर निकटवर्ती नातेदारों को फिर अन्य नातेदारों को दो।" *

तजीब का डिपोटेशन—तजीब कबीले के १३ व्यक्ति हाजिर हुये थे। ये अपनी जाति के पशुओं की जकात लेकर आये थे। नबी ने फरमाया कि इसे लौटा ले जाओ और अपने कबीले के दीन दुखियों में बांट दो ! उन्होंने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! दीन दुखियों को देकर जो बच रहा है वही लेकर आये हैं। अबू बक्र सिद्दीक़ ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! इस से अच्छा कोई डिपोटेशन अब तक नहीं आया। नबी ने फरमाया पथ-प्रदर्शन ईश्वर के हाथ में है वह जिसकी भलाई चाहता है उसके हृदय को ईमान के लिये खोल देता है।

इन लोगों ने आंहज़रत से कुछ प्रश्न किये जिनके उत्तर आपने उन्हें लिखवा दिये। † ये लोग कुरान और धर्म की बातें सीखने के बड़े ही इच्छुक थे इसलिये हज़रत ने बिलाल को इस काम के लिये विशेष रूप से नियुक्त कर दिया था।

यह लोग लौट जाने की आज्ञा के लिये उत्सुक थे, लोगों ने पूछा कि तुम यहां से जाने के लिये क्यों घबराते हो ? कहा मन में यह जोश है कि रसूलल्लाह के दर्शन से जो प्रकाश हमें मिला है, नबी से बात करके जो प्रभाव हम पर पड़ा है, यहां आकर जो लाभ हमें प्राप्त हुये हैं उनकी सूचना तथा ज्ञान शीघ्र ही अपनी जाति तक पहुंचायें। हज़रत ने उनको उपहार प्रदान कर विदा किया।

* जादुल मआद पृ० २०४, एकेश्वरवाद का पाठ तारिक़ ने मक्के में और सदाचार का पाठ मदीने में पढ़ा था और अंततः अपनी जाति सहित मुसलमान हो गया था।

† जो लोग समझते हैं कि हदीसें हज़रत के समय में नहीं लिखी गयीं वह इस घटना पर अधिक विचार करें।

पूछा कोई व्यक्ति तुम में बाक़ी रहा है ? उन्होंने कहा हां एक नवयुवक है जिसे सामान के पास हम ने छोड़ दिया था फरमाया उसे भी भेज देना । वह हाजिर हुआ तो उसने कहा या रसूलल्लाह ! हुजूर ने मेरी जाति के लोगों पर बड़ी कृपा की है मुझे भी कुछ प्रदान कीजिये ।

नबी ने फरमाया—तुम क्या चाहते हो ?

कहा या रसूलल्लाह ! मेरा प्रयोजन अपनी जाति के प्रयोजन से अलग है । यद्यपि मैं जानता हूँ कि वे यहां इस्लाम का प्रेम लेकर ही आये हैं और जकात का धन लेकर भी आये थे। हजरत ने फरमाया—तुम क्या चाहते हो ?

कहा—मैं अपने घर से केवल इसलिये आया हूँ कि हुजूर मेरे लिये दुआ फरमायें कि ईश्वर मुझे क्षमा प्रदान करे, मुझ पर दया करे, और मेरे हृदय को धनी करदे । आंहजरत ने उसके लिये दुआ फरमा दी । सं० १० हि० में जब नबी ने हज्ज किया तो उस कबीले के लोग फिर आपसे मिले नबी ने पूछा वह नवयुवक किस हालत में है ? लोगों ने कहा या रसूलल्लाह ! उस जैसा व्यक्ति कोई देखने में ही नहीं आया, और उस जैसा संयमी कोई सुना ही नहीं गया । यदि संसार भर का धन उसके सामने बांटा जा रहा हो तो वह आंख उठाकर भी न देखे । *

बनी सऽद हुज़ैम का डिपोटेशन— यह कबीला कुज़ाअः जाति में से था जिस समय यह डिपोटेशन मस्जिद नब्वी में पहुँचा तो देखा कि हजरत एक जनाज़े (मृतक) की नमाज पढ़ा रहे हैं। उन्होंने परस्पर निश्चय किया कि नबी की सेवा में हाजिर होने से पूर्व हमें कोई काम नहीं करना चाहिये, इसलिये एक ओर अलग बैठे रहे । जब हजरत ने उधर से छुट्टी पाई उनको बुलाया पूछा क्या तुम मुसलमान हो ? उन्होंने कहा "हां" फरमाया अपने भाई के लिये दुआ में सम्मिलित क्यों नहीं हुये । अर्ज़ किया हम समझे थे कि बैअत करने (धर्म दीक्षा लेने) से पूर्व हम कोई काम करने के अधिकारी नहीं । फरमाया जिस समय तुमने इस्लाम स्वीकार किया उसी समय से तुम मुसलमान होगये हो । इतने में वह मुसलमान भी आ पहुंचा जिसे ये लोग अपनी सवारियों के पास बिठा आये थे । डिपोटेशन ने कहा या रसूलल्लाह ! यह हमसे छोटा है और इसीलिये हमारा सेवक है। हुजूर ने फरमाया हां "असग़रुल् क़ौमे खादेमोहुम्" छोटा अपने बड़ों का सेवक होता है, खुदा इसे बरकत दे । इस दुआ का यह परिणाम निकला कि वही जाति का धर्म गुरु और जाति में कुरान का सबसे धुरन्धर पण्डित हुआ । जब यह डिपोटेशन लौटकर अपने देश गया तो समस्त कबीलों में इस्लाम फैल गया । †

बनू असद का डिपोटेशन—ये दस व्यक्ति थे जिनमें वाबिसा बिन मऽबद और तलहः बिन ख़ालिद भी थे। रसूलल्लाह अपने साथियों सहित मस्जिद नब्वी में थे उनमें से एक ने कहा या रसूलल्लाह ! हम साक्षी देते हैं कि खुदा एक है,

* ज़ादुल् मआद भाग १ पृष्ठ ४०४ । जो लोग इस्लाम के प्रचार का भार अपने ऊपर लेते हैं उन्हें इस नवयुवक के आदर्श पर अमल करना चाहिये ।

† ज़ादुल् मआद पृष्ठ ४०१ ।

उसका कोई साझी नहीं, और आप उसके बन्दे और रसूल हैं। देखिये या रसूलल्लाह! हम स्वयं ही हाजिर होगये हैं और आपने तो हमारे पास कोई आदमी भी नहीं भेजा। इस पर यह आयत उतरी "यमुन्नूना अलैका इन् अस्लमू कुल् ला तमुन्नू अलय्या इस्लामकुम् बलिल्लाहो यमुन्नो अलैकुम् अन हदाकुम् बिल् ईमान इन कुन्तुम् सादेक़ीन।" (सू० हुजरात रु० २) अनुवाद—ये लोग आप पर उपकार जतलाते हैं कि इस्लाम ले आये हैं कह दो कि अपने इस्लाम का मुझ पर उपकार न जताओ बल्कि खुदा तुम पर इस बात का उपकार जतलाता है कि उसने तुम्हें इस्लाम का मार्ग दिखलाया यदि तुम इस दावे में सच्चे भी हो।"

फिर उन लोगों ने प्रश्न किया कि जानवरों की बोलियों और अशगुनादि का विचार करना कैसा है? हज़रत ने इन सब से उन्हें रोका। उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! एक बात शेष रह गई है "लकीरें खींचना" (रमल) इसके विषय में आप क्या फ़रमाते हैं? आंहज़रत ने फरमाया "इसे एक नबी ने लोगों को सिखाया था जिस किसी को ठीक ठीक यह विद्या मिल गई निःसन्देह वह तो विद्या है।"

बहराऽ का डिपोटेशन—यह लोग मदीने में आये। मिक़दाद के घर के आगे उन्होंने अपने ऊँट बिठलाये। मिक़दाद ने घर वालों से कहा कि इनके लिये कुछ तैयार करो और स्वयं उनके पास गये और शुभागमन कह कर अपने घर ले आये। उनके आगे (खाने को) हीश रक्खा गया। यह एक प्रकार का भोजन है जो खजूर और सत्तू मिला कर घी में बनाया जाता है, घी के साथ कभी चर्बी भी डाल दिया करते हैं। इसी भोजन में से थोड़ा नबी के लिये भी मिक़दाद ने भेजा, नबी ने कुछ खाकर वह बर्तन लौटा दिया। अब मिकदाद दोनों वक़्त वही बासन अतिथियों के सामने रख देते वे सानन्द खाया करते, खूब खाया करते परन्तु भोजन कम न होता था उन लोगों को यह देख कर आश्चर्य हुआ एक दिन पूछा मिक़दाद *! हमने तो सुना था कि मदीने वालों के भोजन में भी सत्तू अधिक होते हैं तुम तो हमें प्रत्येक समय वह भोजन देते हो जो हमारे यहां अति उत्तम समझा जाता है और रोज़ हमें मिल भी नहीं सकता फिर ऐसा स्वादिष्ट कि ऐसा हम ने कभी खाया भी नहीं।

मिक़दाद ने कहा मित्रो! यह सब आंहज़रत की कृपा है क्योंकि आपकी पवित्र उंगलियां इस बासन में लग चुकी हैं।

यह सुनते ही सब ने बहुमत से कहा और अपना विश्वास भी ताज़ा किया कि "निस्सन्देह वे अल्लाह के रसूल हैं।"

ये लोग कुछ दिनों मदीने में ठहरे, क़ुरान और धर्म की बातें सीखीं और फिर लौट गये।

अज़्रः का डिपोटेशन—सं० ९ हि० में यह डिपोटेशन हाजिर हुआ था। १९ व्यक्ति इस में थे उनमें हम्जः बिन नोमान भी था। हज़रत ने उन लोगों से पूछा—तुम कौन हो?

* मिक़दाद बिन उमर बिन सऽलिबा बड़े सहाबी हैं सं० ३५ हि० में ७० वर्ष की आयु में मृत्यु हुई मदीने में दफ़न किये गये।

उन्होंने कहा—हम बनी अज़रः हैं और (माता की ओर से) कुसय्यी के भाई हैं। हमने ही कुसय्यी को उन्नति पर पहुंचाया और खुज़ाअः और बनी बक्र को मक्के से निकाला था अतः हम नातेदार भी हैं और सहगोत्र भी। हज़रत ने उन्हें शुभागमन कहा और यह भी सुसमाचार सुनाया कि शीघ्र ही शाम विजय हो जायगा तथा हिरक़िल उनके इलाक़े से भाग जायगा। फिर आंहज़रत ने आज्ञा दी "ज्योतिषियों" से जाकर प्रश्न न किया करो और अब तक तुम जो कुर्बानियां करते (भेंट देते) रहे हो भविष्य में वह न करना, अब केवल बकर-ईद की कुर्बानी शेष रह गई है।

ये लोग कुछ दिनों मदीने में रहे फिर रसूल से उपहार तथा आशीर्वाद पाकर विदा होगये।*

खौलान का डिपोटेशन—यह दस व्यक्ति थे जो शऽबान के महीने सं० १० हि० में नबी की सेवा में हाजिर हुये थे। उन्होंने आकर निवेदन किया कि हम अपनी जाति के बचे हुये लोगों की ओर से प्रतिनिधि बना कर भेजे गये हैं, खुदा और रसूल पर हमारा ईमान है, हम हुज़ूर की सेवा में बड़ी दूर से लम्बी यात्रा कर के आये हैं और इक़रार करते हैं कि खुदा और रसूल का हम पर उपकार है, हम यहां केवल दर्शन के हेतु आये हैं। हज़रत ने फ़रमाया "मन ज़ारनी बिल् मदीनते काना फ़ी जवारिया यौमल् क़यामह" (अर्थात्—जिस ने मदीने आकर मेरे दर्शन किये वह प्रलय के दिन मेरा पड़ोसी होगा)। फिर नबी ने पूछा "अम्मे अनस" (यह एक मूर्ति का नाम है जिसे वह जाति पूजती थी) का क्या हाल है? डिपोटेशन ने कहा—ईश्वर का धन्यवाद कि उसने हुज़ूर की शिक्षा को हमारे लिये उससे उत्तम ठहरा दिया। कुछ वृद्ध पुरुष और वृद्धा स्त्रियां रह गईं हैं जो उसकी पूजा किये जाती हैं, अब खुदा ने चाहा तो हम जाकर उसे गिरा देंगे, हम अधिक समय तक धोखे में रहे। हज़रत ने फ़रमाया किसी दिन की कोई घटना तो सुनाओ।

डिपोटेशन ने अर्ज़ किया एक बार हमने सौ सांड इकट्ठा किये और वे सब एक ही दिन अम्मे अनस पर भेंट चढ़ा दिये गये और दरिन्दों के लिये छोड़ दिये गये, यद्यपि स्वयं हमें पशुओं और उनके मांस की अत्यन्त आवश्यकता थी। उन्होंने यह भी कहा कि पशुओं और पैदावार में से "अम्मे अनस" का भाग बराबर निकाला जाता था जब कोई खेती करता तो अम्मे अनस के लिये मध्यस्थ भाग नियुक्त कर दिया जाता था और एक किनारे का खुदा के नाम नियुक्त कर दिया जाता था। यदि खेती मारी जाती तो खुदा का भाग भी अम्मे अनस के नाम कर देते मगर अम्मे अनस का भाग खुदा के नाम कभी न करते।

आँहज़रत ने उन्हें धर्म के नियम सिखलाये और विशेषतः इन बातों की शिक्षा दी :—

१—प्रतिज्ञा पूरी करना, २—अमानत (धरोहर) का लौटा देना, ३—पड़ोसियों से भला व्यवहार करना, ४—किसी व्यक्ति पर अत्याचार न करना, यह भी फ़रमाया कि प्रलय के दिन अत्याचार अंधकार बन जायेगा।†

* ज़ादुल् मआद पृ० २०६।
† ज़ादुल् मआद पृ० २०६।

मुहारिब का डिपोटेशन—यह दस व्यक्ति थे जो जाति के प्रतिनिधि बनकर सं० १० हि० में आये थे, बिलाल उनकी सेवा सत्कार के लिये नियुक्त हुये थे शाम और सवेरे का भोजन वही कराया करते थे। एक दिन जुह्र से अस्र तक का पूरा समय आंह्जरत ने उन्हीं को दिया। उन में से एक व्यक्ति को नबी ने ध्यान से देखा फिर फरमाया मैं ने तुम को पहले भी देखा है। यह व्यक्ति बोला ख़ुदा की कसम हुजूर ने मुझे देखा भी था और मुझ से बात भी की थी और मैं ने अनुचित शब्दों में हुजूर को उत्तर भी दिया था और असभ्यतापूर्ण ढंग से आप की बात को ठुकरा दिया था। यह बाजार उकाज की घटना है जहां हुजूर लोगों को समझाते फिरते थे। नबी ने फरमाया ठीक है।

उस व्यक्ति ने कहा या रसूलल्लाह! उस दिन मेरे साथियों में मुझसे अधिक विरोध करने वाला और इस्लाम से पृथक रहने वाला कोई भी न था, परन्तु वे सब तो अपने पूर्वजों के धर्म पर मर गये परन्तु ईश्वर का धन्यवाद कि उसने मुझे आज तक जीवित रक्खा और मेरे सौभाग्य कि हुजूर पर ईमान लाया।

आंह्जरत ने फ़रमाया सबके हृदय उस तेजमान प्रभु के हाथ में हैं। उस व्यक्ति ने कहा या रसूलल्लाह! मेरी पूर्व स्थिति के लिये क्षमा की प्रार्थना करें आपने फ़रमाया इस्लाम उन सब बुराइयों (पापों) को मिटा देता है जो अधर्म की अवस्था में हुई हों। *

ग़स्सान का डिपोटेशन—ग़स्सान कबीले के तीन व्यक्ति सं० १० हि० में नबी की सेवा में हाजिर हुये थे। वे इस्लाम स्वीकार करने के बाद अपनी जाति की शिक्षा का इरादा करके लौट गये थे। कदाचित उन्हें इस्लाम के प्रचार में सफलता प्राप्त नहीं हुई। उनमें से दो पहले ही स्वर्ग जा चुके थे और एक उस समय तक जीवित थे जब कि हजरत अबू उबैद: बिन जर्राह ने शाम को विजय किया था। †

बनी हारिस का डिपोटेशन—यह डिपोटेशन शव्वाल मास सं० १० हि० में नबी की सेवा में आया था। उनके इलाक़े में खालिद बिन वलीद को धर्म प्रचार के लिये भेजा गया था।

उनके उपदेश पर लोग मुसलमान होगये थे। हज़रत खालिद ने नबी की सेवा में सूचना भेज दी और स्वयं उनकी शिक्षा के लिये वहां ठहर गये। नबी ने लिख भेजा कि तुम लौट आओ और जाति के कुछ सरदारों को भी साथ लाओ। इसी प्रतिनिधि मण्डल में कैस और अब्दुल्लाह भी थे। नबी ने उनसे पूछा क्या कारण है कि अज्ञानता के समय तुमने जिस किसी से युद्ध किया वह पराजित ही हुआ? उन्होंने अर्ज किया या रसूलल्लाह! हम स्वयं किसी पर चढ़ाई नहीं करते‡ और जब लड़ाई के लिये इकट्ठा हो जाते हैं तो फिर किसी तरह छिन्न भिन्न नहीं होते, अपनी ओर से अत्याचार में पहल नहीं करते। नबी ने फ़रमाया ठीक कहते हो यही कारण है।

* ज़ादुल मआद पृ० ५०६।

† जादुल मआद पृ० ५०६

‡ जादुल मआद भाग १

बनी ईश का डिपोटेशन—ये लोग नबी की वफ़ात (मृत्यु) से चार महीने पहले आये थे। यह नजरान * के रहने वाले थे और मुसलमान हो कर आये थे। उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! हमने इस्लाम के प्रचारकों से सुना है कि श्रीमान् यह फ़रमाते हैं "ला इस्लामा लेमन ला हिज्र-तालहू " परन्तु हमारे पास धन भी है, सम्पत्ति भी है और पशु भी हैं जिन पर हमारी जीविका निर्भर है सो यदि हिजरत के बिना हमारा इस्लाम ही ठीक नहीं तो धनधाम हमारे क्या काम आवेंगे और मवेशी हमें क्या लाभ पहुंचावेंगे ? इससे यह अच्छा होगा कि हम लोग सब कुछ बेच बांच कर आपकी सेवा में हाजिर होजायें। नबी ने फरमाया "इत्तक़ुल्लाह हैसो कुन्तुम् फलय्यंलितकुम मिन अऽमालिकुम् शय्या " अर्थात् तुम जहां बसे हो वहीं रहकर खुदा से डरते रहो, तुम्हारे कर्मों (के प्रतिफल) में कणमात्र भी कमी न होगी।

इस उत्तर में नबी ने यह फ़रमा दिया है कि सब मुसलमानों को इस्लामी केन्द्र में इकट्ठा होकर इस्लाम के क्षेत्र को सीमित तथा सकरा कर लेना उचित नहीं। मुसलमानों को भिन्न २ और दूर दूर के देशों में पहुंचना और इस्लाम का प्रचार करना चाहिये। जो लोग निज देश त्याग कर इस्लामी देशों में जा बसने को अच्छा समझते हैं उन्हें याद रखना चाहिये कि ऐसा करना आंहजरत की शिक्षा के विरुद्ध है और धर्म सम्बन्धी नीति की दृष्टि से भी अनुचित है।

ग़ामिद का डिपोटेशन—यह डिपोटेशन भी सं० १० हि० में आया था। इसमें १० व्यक्ति थे, ये मदीने से बाहर आकर उतरे। एक बालक को बिठा कर नबी की सेवा में हाजिर हुये। नबी ने पूछा तुम असबाब के पास किसे छोड़ कर आये हो ? लोगों ने कहा एक बालक को। फ़रमाया तुम्हारे आने के बाद वह सो गया, एक व्यक्ति आया, खुर्जी चुरा कर ले गया। एक व्यक्ति बोला या रसूलल्लाह ! वह ख़ुर्जी तो मेरी थी फ़रमाया घबड़ाओ नहीं। उधर वह बालक उठ बैठा और चोर के पीछे पीछे भागा, उसे जा पकड़ा, सब असबाब ठीक ठीक मिल गया।

यह लोग हज़रत की सेवा से जब लौट कर गये तो बालक से पता चला कि ठीक उसी तरह घटना घटी थी। ये लोग इसी बात पर मुसल-मान हो गये। नबी ने उबय्यी बिन कऽब को नियुक्त फ़रमाया कि उन्हें क़ुरान याद करावें और धर्म की बातें सिखावें। जब वे लौट कर जाने लगे तो उन्हें इस्लामी विधान की आवश्यक बातें एक काग़ज़ पर लिख कर दे दी गई थीं। ‡

बनी फज़ारः का डिपोटेशन—जब आं-हजरत तबूक से लौटे तो बनी फज़ारः का एक डिपोटेशन जो १५ व्यक्तियों पर सम्मिलित था, सेवा में हाजिर हुआ। वे इस्लाम स्वीकार कर चुके थे। उनकी सवारी में कमजोर और दुबले पतले ऊँट थे। आंहजरत ने पूछा कि तुम्हारी बस्तियों का क्या हाल है ? एक ने अर्ज किया

* जादुल मआद पृ० ४३३।

† जादुल मआद पृ० ५११।

‡ जादुल मआद पृ० ५१२।

"या रसूलल्लाह! बस्तियों में अकाल है, पशु मर गये, बगीचे सूख गये, बाल बच्चे भूखों मर रहे हैं आप खुदा से दुआ करें, कि हमारी फरियाद सुने, आप हमारी सिफ़ारिश खुदा से करें, खुदा हमारी सिफारिश आप से करे" रसूलल्लाह ने फ़रमाया खुदा इन बातों से पवित्र है, खराबी हो तेरे लिये, भला मैं तो खुदा के पास सुफ़ारिश करूँगा किन्तु खुदा किस के पास सुफ़ारिश करे। वह उपास्य है उस के सिवा कोई उपासना का पात्र नहीं, वह सब से बड़ा और श्रेष्ठ है, आकाशों तथा पृथ्वी पर उसी के आदेश प्रचलित हैं।

फिर नबी ने जाति में वर्षा की दुआ की वह दुआ यह है:—(अनुवाद) हे प्रभू! अपने सेवकों और पशुओं को छका दे, अपनी करुणा को फैला दे, और अपनी मृतक बस्तियों को जीवित कर दे। प्रभो! वर्षा जो आनन्द मंगल लाये और लाभदायक सिद्ध हो शीघ्र ही हो जाये, देरी न हो, ऐसी वर्षा जो लाभ दे, हानि न पहुँचाये हे प्रभु! हमें अपनी करुणा से भर दे, दण्ड और कष्ट से नहीं। प्रभो! जल वर्षा से हमारा कल्याण करो और शत्रुओं पर हमें विजय हो। *

सलामान का डिपोटेशन—ये १७ व्यक्ति थे जो हज़रत की सेवा में उपस्थित होकर इस्लाम लाये थे। इन्हीं में हबीब बिन अम्र था। इन लोगों ने प्रश्न किया था कि कौन सा कर्म सर्वोत्तम है? नबी ने फ़रमाया "समय पर नमाज़ पढ़ना।" इन लोगों ने निवेदन किया हमारे यहां वर्षा नहीं हुई है दुआ फ़रमाइये। नबी ने दुआ के शब्द उच्चारण किये। "अल्लाहुम्मस्क़ाहोमुल ग़ैसा फ़ी दारेहिम् हबीब ने अर्ज किया या रसूलल्लाह इन पवित्र हाथों को भी उठाकर दुआ कीजिये। आप मुस्कराये और हाथ उठा कर दुआ कर दी। जब डिपोटेशन लौट कर अपने देश गया तो मालूम हुआ कि ठीक उसी दिन वर्षा हुई थी जिस दिन नबी ने दुआ फ़रमाई थी। †

नजरान का डिपोटेशन—हदीसों का अध्ययन करने से विदित होता है कि नजरान के ईसाइयों का प्रतिनिधि मण्डल दो बार नबी की सेवा में उपस्थित हुआ था, क्रमानुसार उनका वर्णन किया जाता है।

अबू अब्दुल्लाह हाकिम का कथन है कि नबी ने नजरान वालों को इस्लामी निमन्त्रण का पत्र भेजा था। जब उस्कुफ़ (ईसाइयों के धर्म गुरु) ने उस पत्र को पढ़ा तो उसका शरीर काँप उठा। उसने तुरन्त ही शर्जील बिन वदाआ को बुलाया। यह हम्दान कबीले का एक व्यक्ति था। कोई बड़ा काम बिना उसकी सम्मति के हाकिम अथवा पादरी नहीं किया करते थे। उस्कुफ़ ने उसे पत्र दिया और जब उसने पढ़ लिया तो बोला अबू मरियम! बोलिये आपकी सम्मति क्या है? शर्जील ने कहा—यह तो आप जानते ही हैं कि खुदा ने इब्राहीम को यह बचन दिया है कि इस्माईल की सन्तान में ‡ नबी भी होगा, सम्भव

* जादुल मआद पृष्ठ २०२।

† जादुल मआद पृष्ठ २१।

‡ इस्माईल की संतान में नुबुव्वत होने के बारे में बायबिल में बहुत से उद्धरण पाये जाते हैं।

इस्माईल की संतान में नुबुव्वत होने के बारे में बायबिल में बहुत से उद्धरण पाये जाते हैं।

(क) इसहाक़ और इस्माईल को खुदा ने एक से बचन दिये हैं।

है कि यह वही व्यक्ति हो, परन्तु पैग़म्बरी के बारे में मेरी सम्मति ही क्या, कोई लौकिक विषय होता तो मैं उस पर विचार करता और अपनी सम्मति दे सकता था।

पादरी ने कहा—अच्छा बैठ जाओ।

अब उस्कुफ़ ने एक दूसरे व्यक्ति को जिसका नाम अब्दुल्लाह बिन शर्जील था बुलाया और आंहज़रत का पत्र दिखा कर उस की सम्मत्ति पूछी। उसने भी शर्जील की तरह उत्तर दिया। उस्कुफ़ ने फिर एक व्यक्ति हब्बार बिन क़ैस को बुलाया यह बनू हारिस बिन कअब कबीले का था। उस्कुफ़ ने उसे भी पत्र दिखलाया और सम्मति पूछी उसने भी उन दोनों का सा उत्तर दिया।

जब पादरी ने देखा कि उनमें से कोई भी अपनी सम्मति नहीं देता तो उसने हुक्म दिया कि घण्टे बजाये जायें। और टाट के परदे गिरजा पर लटका दिये जायें। यह एक प्रथा थी यदि कोई जटिल समस्या होती तो लोगों को बुलाने का उपाय दिन के लिये यह था कि घण्टे बजाते और टाट के परदे गिरजा पर लटका देते और रात के लिये यह थी कि घण्टे बजाते और पहाड़ी पर अग्नि जलाते। इस गिरजा से सम्बिन्धित ७२ गांव थे जिसमें एक लाख से अधिक सैनिक रहते थे। घाटी के ऊपरी तथा निचले भागों का फासला एक तेज़ घुड़सवार के एक दिन की यात्रा थी। जब सम्पूर्ण इलाके के लोग इकट्ठा हो गये तो उस्कुफ़ ने वह पत्र सब को सुनाया और सम्मति मांगी। बहुत कुछ सोचने समझने के पश्चात् यह निश्चिय किया गया कि शर्जील और अब्दुल्लाह और हब्बार को नबी की सेवा में भेजा जाये, वे जाकर वहां के पूरे २ हालात मालूम कर के बतलायें।

ये लोग मदीने पहुँचे और कुछ दिनों नबी की सेवा में रहे। उन्होंने आंहज़रत से हज़रत ईसा के बारे में भी बातचीत की। इसी बातचीत पर यह आयतें उतरीं:—

"इन्न मसल ईसा इन्दल्लाहे कमसले आदम ख़लक़हू मिन् तुराबिन्न सुम्म काल लहू कुन्

(ख) अरब में पैदा होने वाले पैग़म्बर के चिन्हों की भविष्यवाणियां अधिकांश नबियों ने की हैं और चूंकि अरब में केवल इस्माईल ही की संतान बसी थी अतः इन भविष्यवाणियों के आधार पर यह फल निकलता है कि आने वाला नबी इस्माईली होगा।

(ग) हज़रत मूसा की वर्णन की हुई भविष्यवाणी इस विषय में अति स्पष्ट है, पाठ ८१ में है—"उनके लिये उनके भाइयों में से तुझ सा एक नबी उठाऊंगा और अपनी वाणी उसके मुख में डालूंगा और जो कुछ मैं उसे कहूंगा वह सब उनसे कहेगा (इस्तिस्ना पर्व १८)।

यह जाहिर है कि बनी इस्राईल के भाई बनी इस्माईल हैं और मूसा जैसे नबी हज़रत मुहम्मद ही हैं जो पुस्तक, धर्म, विधान, जिहाद, हिजरत और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के विषयों में मूसा के समान हैं और मुख में वाणी से अभिप्राय वही के मूल शब्दों का स्वरक्षित रहना है। यह विशेषता केवल कुरान शरीफ़ ही की है बाइबल की किसी पुस्तक को यह पद प्राप्त नहीं हुआ कि उसके मूल शब्द स्वरक्षित रहे हों। इस भविष्यवाणी के साथ मूसा की दूसरी भविष्यवाणी पढ़ो "खुदा सीना से निकला और सईर से चमका और फ़ारान की पहाड़ी से प्रकट हुआ, उसके हाथ में प्रकाशमान धर्म विधान है, फ़रिश्तों की सेना के साथ आया है।" इसमें फ़ारान का पता लिखा है जो मक्के का नाम है। शरजील ने इन्हीं भविष्यवाणियों का विचार करके उपरोक्त वाक्य का प्रयोग किया था।

फयकून। अल्‌ हक़ो मिर्‌ब्बेका फला तकुम्‌ मिनल्‌ मुम्तरीन, फमन्‌ हाजका फ़ीहे मिन बऽदे मा जऽका मिनल्‌ इल्म, फक़ुल्‌ तआलौ नद्‌ओ अब्नाअना व अब्नाअकुम्‌ व निसाअना व निसाअकुम्‌ व अन्फ़ोसना व अन्फ़ोसकुम्‌ सुम्म नबतहिल फ़नजअल्‌ लऽनतल्लाहे अलल्‌ काजेबीन" (आल इम्रान रु० ६) अनुवाद—ईसा का दृष्टांत खुदा के निकट आदम का सा है। खुदा ने उसे मिट्टी से बनाया फिर फरमाया कि (जीवित मनुष्य) बन जा, वह जीवित हो गया, तेरे प्रभु की ओर से सत्य बात यही है सो जो कोई तुम से इस ज्ञान के बाद झगड़ा करे उससे कह दो कि हम अपनी संतान को बुलाते हैं तुम अपनी संतान को बुलाओ इसी प्रकार हमारी स्त्रियां और तुम्हारी स्त्रियां, और हम भी और तुम भी इकट्ठा हों फिर खुदा की ओर ध्यान लगायें और झूठे पर खुदा का श्राप डालें।" *

इन आयतों के उतरने पर आंहजरत ने हसन, हुसैन को भी बुलाया और फ़ातेमः भी पिता की पीठ के पीछे आकर खड़ी हो गईं। †

अब उन ईसाइयों ने अलग जाकर बातचीत की, शर्जील ने अपने साथियों से कहा कि इस व्यक्ति के बारे में कोई बात निश्चित करना सरल नहीं है। देखो सारी घाटी के लोग इकट्ठा हुये, तब उन्होंने हमें भेजा है। मैं समझता हूँ कि यदि यह बादशाह है तब भी उस से मुबाहिला करना ठीक न होगा क्योंकि सारे अरब में हम ही उस की दृष्टि में खटकते रहेंगे और यदि यह पैग़म्बर है तो उसके श्राप से हमारा एक तिनका भी पृथ्वी पर बाकी न रहेगा। इसलिये मेरी सम्मति में तो यही उत्तम है कि हम उसके आधीन होना स्वीकार कर लें और जज़िये की रक़म का फ़ैसला उसी पर छोड़ दें। क्योंकि जहां तक मैंने समझा है वह कठोर हृदय नहीं है। दोनों साथी सहमत हो गये और उन्होंने जाकर अर्ज़ किया कि मुबाहिले से अच्छा हमारे लिये यह है कि जो कुछ श्रीमान के विचार में कल सवेरे तक हमारे लिये उचित जान पड़े वह हम पर लागू कर दिया जाये।

* ईसाइयों की शिक्षा तथा कथन है कि तसलीस (त्रयी) को बिना प्रमाण के मान लेना चाहिये। कुरान शरीफ़ ने पहला प्रमाण यह दिया कि यदि ईसा बिना पिता के उत्पन्न हुये तो वे इससे खुदा अथवा खुदा के पुत्र नहीं हो सकते। देखो आदम बिना पिता और माता के उत्पन्न हुये थे। चूंकि यह विश्वास था कि यह प्रमाण उनके लिये अधिक प्रभावशाली न होगा अतः निर्णय के लिये एक नवीन योजना यह निकाली कि "ईश्वर से प्रार्थना करना और झूठे को श्रापित करना" यह स्पष्ट है कि ईसा यदि वास्तव में खुदा या खुदा के पुत्र हैं तो वह ऐसे लोगों की अवश्य सहायता करेंगे जो उनका वास्तविक पद संसार पर प्रगट कर रहे हैं परन्तु यदि यह ग़लत है तो खुदा स्वयं ही निर्णय कर देगा। आंहज़रत ने यह "मुबाहिला" ऐकेश्वरवाद की पुष्टि के लिये निकाला है जब कि वाद-विवाद का द्वार ही बन्द हो जाय। यह उचित नहीं कि जरा जरा मतभेद तथा विरोध को हम मुबाहिले से तै कराने की इच्छा करें।

† अन्य रवायतों में हज़रत अली की उपस्थिति भी बतलाई गई है। उनके इकट्ठा करने से उद्देश्य ईसाइयों को यह दिखला देना था कि हम इस समय मुबाहिले पर तत्पर हैं यद्यपि उनके स्त्री बालक उस समय मदीने में मौजूद नहीं थे।

अगले दिन हज़रत ने उन पर जज़िया मुकर्रर कर दिया और एक प्रतिज्ञापत्र जिसे मुग़ीरः ने लिखा था और अबूसुफ़ियान बिन हरब, ग़ीलान बिन अम्र, मालिक बिन औफ़ अक़रअ बिन हाबिस सहाबियों की गवाहियां उस पर थीं। वह प्रतिज्ञा पत्र उन्हें दे दिया गया। प्रतिज्ञापत्र का एक वाक्य विशेषतयः पाठकों के लिये पठनीय है जिस से पता चलता है कि हज़रत अन्य धर्मावलम्बियों और ईसाइयों के साथ कैसा उदारतापूर्ण व्यवहार करते थे। "नजरान वालों को खुदा और खुदा के रसूल मुहम्मद की रक्षा प्राप्त होगी। प्राण और धर्म और पृथ्वी और सम्पत्ति के सम्बन्ध में उन सब को जो उपस्थित अथवा अनुपस्थित हैं, क़बीले वाले अथवा उनका अनुसरण करने वाले हैं, उन की अवस्था में तथा उनके अधिकारों में कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा और जो कुछ कम अथवा अधिक उनके आधिपत्य में है उसे बदला नहीं जायेगा, पिछले अभियोगों और कत्ल के झगड़ों के मामले उन पर न चलाये जायेंगे, वे बेगार में भी न पकड़े जायंगे, उन से दसवां भाग न लिया जायगा, उनके इलाके से सेना न गुज़रेगी।"

फ़रमान (आज्ञापत्र) प्राप्त करके ये लोग नजरान को लौटे। उस्क़ुफ़ और अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने एक मंज़िल आगे आकर उनसे भेंट की। प्रतिनिधि मण्डल ने वह फ़रमान उस्क़ुफ़ के सामने पेश कर दिया, वह उसे चलते २ पढ़ने लगा, उसका चचेरा भाई बिश्र बिन मआवियः, जिसका उपनाम अबू अल्क़मः था उसके साथ चल रहा था। वह (इस लेख के पढ़ने में और उसके अर्थ समझने में) इतना बेसुध हो गया कि उसकी ऊँटनी ने उसे भूमि पर गिरा दिया। उसने गिरते ही कहा—ख़राबी हो उस व्यक्ति पर जिसने हमें इतने कष्ट में डाल दिया है, बिश्र ने इस प्रकार नबी की ओर संकेत किया।

उस्क़ुफ़ बोला—देख तू क्या कहता है? ख़ुदा की कसम वह तो पैग़म्बर है।

बिश्र ने उत्तर दिया—ख़ुदा की कसम अब मैं भी ऊँटनी का पालान उसी के पास जाकर उतारूंगा। यह कह कर उसने अपना मार्ग बदल दिया और मदीने की ओर चल पड़ा। उस्क़ुफ़ ने उसके पीछे अपनी ऊँटनी लगायी, चिल्ला २ कर कहता था। "ज़रा मेरी बात तो सुनो, मेरा मतलब तो समझो, मैं ने यह वाक्य इस लिये कहा था कि इन कबीलों में फैल जाये जिस में कोई यह न कहे कि हमने इस सनद की प्राप्ति में कोई मूर्खता दिखाई अथवा उदारता स्वीकार कर ली है यद्यपि अन्य कबीलों ने अब तक उसकी कोई उदारता स्वीकार नहीं की है और हमारी शक्ति और हमारा प्रताप तो औरों से अधिक है।

बिश्र बोला—नहीं नहीं ख़ुदा की कसम अब मैं कदापि न रुकूँगा तेरे मस्तिष्क से ऐसी ग़लत बात निकल ही नहीं सकती थी।

बिश्र न माना और मदीने चला आया। वह नबी की सेवा में पहुँचकर वहीं रहा और अन्त में एक युद्ध में शहीद होगया। अब इस डिपोटेशन का बाकी हाल सुनो:—

जब वे लोग नजरान पहुंच गये तो वहां के गिरजा में रहने वाले एक राहिब (पादरी) ने भी किसी से यह सारी घटना सुनी कि एक नबी तिहामा में पैदा हुआ है, उसका पत्र आया था,

यहां से तीन व्यक्ति भेजे गये थे, वे उससे सनद लेकर आये थे, उस्कुफ़ वह सनद पढ़ रहा था, उसका भाई सवारी से गिर गया, उसने नबी को बुरा भला कहा, उस्कुफ़ ने रोका और बतलाया कि वह सच्चा नबी है, उसे बुरा न कहो, वह यह सुनकर मदीने को चला गया, उस्कुफ़ ने बहुत रोका न रुका।

यह राहिब गिरजा के ऊपरी भाग में वर्षों से रहता था, उसने हाहाकार मचाई कि मुझे उतारो नहीं तो मैं ऊपर से कूद पड़ूँगा चाहे मेरे प्राण ही क्यों न चले जायें। अंत में उसे उतारा गया वह थोड़े से उपहार लेकर नबी की सेवा में जा पहुंचा। एक प्याला, एक लाठी, और एक चादर उसने नबी को भेंट की थी। वह चादर अब्बासी खलीफ़ों के समय तक बराबर सुरक्षित रही थी। राहिब ने कुछ समय मदीने में ठहर कर इस्लामी शिक्षा प्राप्त की फिर आंहजरत से आज्ञा लेकर और लौट आने का बचन देकर नजरान चला गया था। परन्तु नबी के जीवन पर्यन्त लौट कर नहीं आया था।

इस डिपोटेशन से कुछ समय पश्चात् उस्कुफ़ अबुल हारिस जो गिरजा का धर्म गुरु था और रूमा के सम्राट उसका बड़ा आदर सत्कार किया करते थे और सर्व साधारण लोग उसकी करामातों के बहुत कायल थे, और यह व्यक्ति अपने धर्म का धुरन्धर पंडित गिना जाता था, वह नबी की सेवा में उपस्थित हुआ। उसके साथ ऐहम नामक इलाके का जज तथा हाकिम भी था। उसे "सय्यद" कहकर पुकारते थे और उस का उपनाम अब्दुल मसीह था। वह सारे इलाके का गवर्नर और सरदार भी था। ये दोनों अस्र के वक्त मस्जिद नबवी में पहुंचे थे, जब कि उनकी प्रार्थना का समय था। (रविवार का दिन होगा)। नबी ने उन्हें मस्जिद ही में प्रार्थना की आज्ञा दे दी और उन्होंने पूर्व की ओर मुंह करके अपनी नमाज पढ़ी। कुछ मुसलमानों ने उन्हें मस्जिद नबवी में ईसाई धर्म की नमाज पढ़ने से रोकना चाहा था, नबी ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया! यहूदी भी इन्हें देखने आया करते थे और कभी २ किसी विषय पर वाद-विवाद भी हो जाता था।

एक बार हजरत के सामने यहूदियों ने कहा कि हजरत इब्राहीम यहूदी थे और उन ईसाइयों ने कहा कि नहीं वह ईसाई थे। इस विवाद पर कुरान शरीफ़ की यह आयतें उतरीं:—

"या अहलल् किताबे लेमा तोहाज्जूना फ़ी इब्राहीमा, वमा उन्ज़ेलतित्तौरातो वलइन्जीलो इल्ला मिन् बऽदेही अफ़ला तऽक़ेलून। हा अन्तुम् हाओलाये हाजजतुम फ़ीमा लकुम् बेही इल्मुन्न, फ़लेमा तोहाज्जूना फ़ीमा लैसा लकुम् बेही इल्म। वल्लाहो यऽलमो व अन्तुम् ला तऽलमून। मा काना इब्राहीमो यहूदिय्यंव्वला नस्रानिय्यंव्व लाकिन काना हनीफ़म्मुस्लिमा वमा काना मिनल् मुश्‌रेकीन, इन्ना औलन्नासे बिइब्राहीमा लल्लज़ीनत्तबऊहो व हाजन्नबिय्यो वल्लज़ीना आमनू वल्लाहो वलिय्युल् मोमेनीन। (आल इम्रान रु० ७) अनुवाद—" पुस्तक वालों से कहो कि इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ा करते हो तौरेत और इन्जील तो उसके बाद उतरीं हैं। जिन बातों में तुम्हारे पास ज्ञान था उन बातों में तो झगड़ते ही थे, परन्तु जिस विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं उसमें झगड़ा क्यों करते हो? इब्राहीम

न यहूदी था न ईसाई था वह तो पक्का ईश्वरवादी था और मुसलमान था, और वह साक्षी ठहराने वालों में से नहीं था। * लोगों में इब्राहीम से निकट वे हैं जो उसका अनुसरण करते हैं और मुहम्मद रसूल और उन पर ईमान रखने वाले! देखो ईश्वर विश्वासियों का मित्र है।"

एक बार यहूदियों ने (मुसलमानों और ईसाइयों दोनों पर कटाक्ष करने के प्रयोजन से) कहा—मुहम्मद साहेब! क्या आप यह चाहते हैं कि हम आपकी भी पूजा करने लगें जैसा कि ईसाई ईसा की पूजा किया करते हैं।

नजरान का एक ईसाई बोला—हां मुहम्मद बतला दीजिये क्या आपका यही इरादा है और इसी विश्वास की ओर आप हमें बुलाते हैं। नबी ने फरमाया—अल्लाह की शरण कि मैं अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की पूजा करूं? अथवा किसी दूसरे को अल्लाह के सिवा किसी अन्य की पूजा की आज्ञा दूं? खुदा ने मुझे इस काम के लिये नहीं भेजा है और न मुझे ऐसी आज्ञा दी है।"

इस घटना पर क़ुरान शरीफ़ की यह आयतें उतरीं:—

नबी के लिये उचित नहीं—मा काना लेबशरिन्न अय्यीं यूतिया हुल्लाहुल् किताबा वल् हुक्मा वन्नुबुव्वता सुम्मा यक़ूला लिन्नासे कूनू इबादल्ली मिन् दूनिल्लाहे। वला किन कूनू रब्बानिय्यीन बिमा कुन्तुम तोअल्लेमूनल् किताबा व बिमा कुन्तुम तद्रेसून। वला यामोराकुम् अन तत्तखेज़ुल् मलाएकता वन्नबिय्यीना अर्बाबन्, अयामोरोकुम् बिल् कुफ़्रे बअ्दा इज़ अंतुम् मुस्लेमून। (आल इम्रान रु० ८) अनुवाद—"जिस मनुष्य को खुदा पुस्तक, आदेश और नुबुव्वत प्रदान करे, यह उसके पद के योग्य नहीं कि फिर वह लोगों से कहने लगे कि खुदा के सिवा मेरे बन्दे बन जाओ। वह तो यही कहा करता है कि ईश्वरीय पुस्तक को सीख कर और ईश्वरीय विधान का ज्ञान हासिल करके तुम अल्लाह वाले बन जाओ। यह नबी तो नहीं कहता कि फ़रिश्तों को या नबियों को भी प्रभु ठहरालो, भला वह कुफ़् के लिये कह सकता है, तुम लोगों से जो इस्लाम ला चुके हो।"

मुहम्मद बिन सुहैल द्वारा वर्णित है कि आल इम्रान की आदि से ८० पर्यन्त आयतें इसी डिपोटेशन की उपस्थिति में उतरीं। जब यह लोग लौट कर जाने लगे तो उन्होंने आंहज़रत से फिर एक सनद प्राप्त की। जिसमें गिरजाओं और पादरियों के सम्बन्ध में अधिक सुविधायें थीं। इस फरमान की पूरी नक़ल (का अनुवाद) यह है:—

"अल्लाह के नाम से आरम्भ जो अति दयालु अति कृपालु है। मुहम्मद नबी की ओर से उस्क़ुफ़ अबुल् हारिस के लिये। नजरान के अन्य उस्क़ुफ़ों काहिनों, राहिबों, उन के अनुयाइयों, दासों, उस धर्म वालों और पुलिस वालों के सम्बन्ध में, उन न्यूनाधिक वस्तुओं के सम्बन्ध में जो उनके हाथ में हैं, सब को खुदा और रसूल की रक्षा प्राप्त होगी। गिरजा के छोटे बड़े अध्यक्षों में से किसी

* अरब के मुशरिक जो मूर्ति पूजक थे कहा करते थे कि हमारा धर्म हज़रत इब्राहीम के धर्म पर है। इस वाक्य में मुशरिकों का खण्डन है।

को हटाया नहीं जायगा। किसी के अधिकारों में विघ्न न डाला जायगा। उनकी वर्तमान स्थिति में कोई परिवर्तन न किया जायगा। शर्त यह है कि वे प्रजा के शुभचिंतक बने रहें और न तो अत्याचारों का साथ दें न स्वयं अत्याचार करें।" *

चलते समय उन्होंने अर्ज़ किया कि किसी विश्वासपात्र व्यक्ति को हमारे साथ भेज दिया जाये जिसे हम जज़िया † दे दिया करें। नबी ने अबूउबैद: बिन जर्राह को उनके साथ भेज दिया और फ़रमाया कि यह व्यक्ति मेरी उम्मत का अमीन है। हज़रत अबूउबैद: के आध्यात्मिक प्रभाव से इलाके में इस्लाम फैल गया था।

नख़्ड का डिपोटेशन—यह मुहर्रम सं० ११ हि० में नबी की सेवा में हाज़िर हुआ था। इसके बाद फिर कोई प्रतिनिधि-मंडल नहीं आया। यह दो सौ व्यक्ति थे और मुआज़ बिन जबल के हाथ पर मुसलमान होकर आये थे। उन्हें अतिथि-गृह में ठहराया गया था।

एक व्यक्ति उनमें ज़ुरार: बिन अम्र था उसने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैंने मार्ग में स्वप्न देखे जो आश्चर्यजनक थे।

नबी ने फ़रमाया—वर्णन करो

प्रथम स्वप्न और उसका फल—कहा:—मैंने देखा कि एक बकरी ने बच्चा दिया है जो सफ़ेद और काले रंग का है।

नबी ने पूछा—क्या तुम्हारी स्त्री के बालक पैदा होने वाला था?

उसने कहा—हां।

नबी ने फ़रमाया—उसके बालक उत्पन्न हुआ है जो तेरा पुत्र है।

ज़ुरार: ने कहा—या रसूलल्लाह! अबलक़ (सफ़ेद व काला) होने के क्या अर्थ हैं?

नबी ने फ़रमाया—पास आओ।

फिर धीरे से पूछा क्या तुम्हारे शरीर पर कुष्ट रोग के दाग़ हैं जिन्हें तुम जन समाज से छुपाते रहे हो?

ज़ुरार: ने कहा—क़सम है उस ख़ुदा की जिस ने आप को पैग़म्बर बना कर भेजा। मेरे इस भेद की किसी को ख़बर नहीं थी।

नबी ने फ़रमाया—बालक पर इसी का प्रभाव पड़ा।

---

* फ़तूहुल् बुलदान बिलाज़री।

† जज़िय: अरबी में ईरानी शब्द गज़िय: से बनाया गया है। यह प्रथा ईरान से अरब में पहुँची थी जबकि अरब का एक भाग इस्लाम से पूर्व ईरान के आधीन था और ईरान का राज्य इस विषय में रोमन इम्पायर के क़ानून पर चलता था। किन्तु आजकल जज़िये पर बहुत से एतराज़ किये जाते हैं, यद्यपि मुसलमानों की ओर से उनके स्पष्ट उत्तर दिये जा चुके हैं। फिर भी इस स्थान पर मैं केवल एक रवायत पेश करूंगा जिससे ज्ञात होगा कि इस्लामी जज़िय: किस नियम के अनुसार लगाया जाता था, और जज़िय: चुकाने वालों को किस प्रकार विजयी लोगों के समान पूर्ण अधिकार प्राप्त हो जाते थे। फ़िक़ा की प्रसिद्ध पुस्तकों में है "यदि वे लोग जिनसे जज़िय: लेना चाहिये जज़िया देना स्वीकार करलें तो (क) उनकी रक्षा उसी प्रकार करना चाहिये जैसे मुसलमानों की। (ख) उनके लिये वही क़ायदे होंगे जो मुसलमानों के लिये हैं, क्योंकि हज़रत अली ने फ़रमाया है कि काफ़िर जज़िय: इसलिये देते हैं कि उनके खून को मुसलमानों के खून का और उनके धन को मुसलमानों के धन का पद प्राप्त हो जाये।" (हिदाया कलकत्ता छाप पृष्ठ ४१२ व चार्लस हमिलटन कृत अनुवाद भाग २ पृष्ठ १४२)।

दूसरा स्वप्न और फल—ज़ुरारः ने दूसरा स्वप्न सुनाया कि मैंने नुअमान बिन मुन्ज़िर * को देखा कि गोशवारे, बाजूबन्द और छागल पहिने है।

नबी ने फ़रमाया कि इसका मतलब अरब देश से है जो इस समय आनन्दित तथा आभूषित हो रहा है।

तीसरा स्वप्न और फल—ज़ुरारः ने अर्ज़ किया, मैंने देखा एक वृद्धा है जिसके कुछ बाल सफेद कुछ काले हैं और भूमि से बाहर निकली है।

नबी ने फ़रमाया यह दुनिया (माया रूपी संसार) है जितनी कि शेष रह गई है।

चौथा स्वप्न और फल—ज़ुरारः ने अर्ज़ किया कि मैंने देखा एक अग्नि पृथ्वी से प्रकट हुई, मेरे और मेरे पुत्र उमर के बीच आगई। अग्नि कह रही है "झुलसो, झुलसो, अंध्यारे हो कि अन्धे, लोगो ! अपना भोजन, अपना परिवार, अपना धन मुझे खाने के लिये दो।"

नबी ने फ़रमाया—यह एक उपद्रव है जो अन्त काल में प्रकट होगा।

ज़ुरारः ने अर्ज़ किया यह कैसा उपद्रव है ?

नबी ने फरमाया—लोग अपने इमाम (धर्मगुरु) को क़त्ल कर देंगे, परस्पर फूट पड़ जायेगी, एक दूसरे से ऐसे गुथ जांयगे जैसे हाथों की उंगलियां पंजा डालने में गुथ जाती हैं, पापी उन दिनों अपने को धर्मात्मा समझेंगे, धर्मात्मा का लोहू जल से अधिक भला समझा जायेगा। यदि तेरा पुत्र मर गया तब तू इस उपद्रव को देख लेगा और तू मर गया तो तेरा पुत्र देख लेगा।

ज़ुरारः ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! दुआ कीजिये कि मैं इस उपद्रव को न देखूं।

नबी ने दुआ फरमाई प्रभो ! यह इस उपद्रव को न देखे।

ज़ुरारः की तो मृत्यु हो गई और उसका पुत्र जीवित रहा, उसने हज़रत उस्मान की बैअ़त को तोड़ दिया था। †

—

पांचवां अध्याय

मदनी जीवन के दस वर्ष

महत्वपूर्ण घटनायें

आंहज़रत जब मक्के से निकल कर मदीने पहुंचे तो अभी शांतिपूर्वक ठहरने भी न पाये थे कि मक्के के शत्रुओं ने लगातार षड्यन्त्रों, आक्रमणों और युद्धों से नबी तथा मुसलमानों को सताना आरम्भ कर दिया।

लेखक को चूँकि हिजरत के पश्चात ही यह हालात लिखने पड़े इसलिये विषय क्रम में थोड़ी गड़बड़ी हो गई है।

पुस्तक के इस भाग में उन महत्वपूर्ण घटनाओं को संक्षेप रूप से वर्णन किया जाता है जो नबी के मदनी जीवन में विघटित हुईं। मैंने संक्षेप में लगभग प्रत्येक वर्ष की एक घटना अवश्य लिखी है।

* यह अरब का प्रसिद्ध और प्राचीन शासक गुज़रा है जिसका राज्य और ज्ञान कहावत बन गया है।

† ज़ादुल् मआ़द पृ० २१८।

इस अध्याय पर विचार करने से पाठकों को हज़रत मुहम्मद के पवित्र जीवनचरित्र सम्बन्धी बहुत सी बातों का ज्ञान होगा। आवश्यकता इस की है कि मुसलमान उनका अनुसरण करके अपने आचार व्यवहार ठीक करें।

मस्जिद नबवी का बनाया जाना—मस्जिद नबवी जिस स्थान पर बनाई गई है उस स्थान पर नबी की ऊँटनी स्वयं ही उस समय बैठ गई थी, जब हज़रत मक्के से मदीने आये थे। यह स्थान अनाथ बालकों का था, जो असअ़द बिन ज़ुरारः की देख रेख में थे। असअ़द ने पहिले ही से यहां नमाज़ के लिये थोड़ी सी जगह निकाल रक्खी थी। जब नबी ने मस्जिद के लिये इस स्थान को पसन्द किया तो उन अनाथ बालकों ने उसकी कीमत लेने से इनकार किया, और बनूनज्जार (कबीले) वालों की इच्छा थी कि कीमत चुकाने की उन्हें आज्ञा दी जाये। नबी ने दोनों बातें अस्वीकार कीं। ज़मीन की क़ीमत १० दीनार तै हुई। यह कीमत नबी ने अबूबक्र से दिला दी। फिर ज़मीन को बराबर और ठीक करके मस्जिद बनाई गई, जिसकी लम्बाई १०० गज थी।

मस्जिद के बनाये जाने में स्वयं आंहज़रत भी ईंट, पत्थर ढोकर लाते थे, और फ़रमाते जाते थे "हे प्रभु! जीवन तो अन्त ही का जीवन है। अनसार और मुहाजेरीन को क्षमा प्रदान करो।"

सहाबी भी ईंट, गारा लाते थे और यह कहते जाते थे "खुदा का रसूल काम करे और हम बैठे रहें, यह बड़े पाप की बात होगी।"

मस्जिद की दीवारें जो कच्ची ईंटों की थीं तीन गज़ ऊँची थीं, खजूर के तने खम्भों की जगह और खजूर के पट्ठे कड़ी और शहतीर की जगह डाले गये थे।

सहाबियों ने कहा कि छत पड़ जाये तो अच्छा है।

नबी ने फ़रमाया नहीं मूसा जैसा अरीश ही भला है। यह छत ऐसी थी कि जब वर्षा होती तो पानी टपकता, मिट्टी गिरती, फर्श कीचड़ की तरह हो जाता, मुसलमान उसी पर सिजदः किया करते थे।

अब्दुल्लाह बिन सलाम का इस्लाम लाना-हज़रत अब्दुल्लाह यहूदियों के महान विद्वानों में से एक थे। हज़रत यूसुफ़ उनके पूर्वजों में थे। उन्होंने कहीं नबी को उपदेश देते हुए सुन लिया और निम्न लिखित अनुवाद के मूल शब्दों को याद कर लिया—"लोगो! अपने पराये सब को सलाम किया करो, खाना खिलाया करो, नातेदारों से अच्छा व्यवहार रक्खो, रात को जब लोग सो रहें तुम परमात्मा की उपासना किया करो।"

यह वाक्य सुनकर उनके हृदय में इस्लाम का दीपक प्रज्वलित होगया। नबी की स्थिति पर विचार किया तो अगले नबियों की पुस्तकों में जो भविष्य वाणियां पाई जाती हैं उन्हें आपकी स्थितियों के अनुसार पाया। फिर हज़रत की सेवा में आये और कुछ ऐसे कठिन प्रश्न पूछे जिनका उत्तर उनकी सम्मति में एक पैग़म्बर ही दे सकता था। नबी से अपने प्रश्नों के ठीक ठीक उत्तर सुन कर उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! मैं आप पर ईमान ले आया हूँ, परन्तु इस्लाम प्रकट करने के लिये चाहता हूँ कि पहले मेरी जाति के लोगों को बुलाकर पूछ लिया जाये कि उनकी राय मेरे बारे में क्या है।

हजरत ने प्रतिष्ठित यहूदियों को बुलाया। अब्दुल्लाह बिन सलाम आड़ में होगये। हजरत ने उनसे पूछा तुम्हारी जाति में अब्दुल्लाह बिन सलाम कैसे व्यक्ति हैं?

सबने कहा—वे विद्वान पिता के विद्वान पुत्र और श्रेष्ठ पिता के श्रेष्ठ पुत्र और हम सबसे उत्तम हैं। *

वे अभी यह कह ही रहे थे कि हजरत अब्दुल्लाह आड़ से कलमः पढ़ते हुये सामने आ गये। जब यहूदियों ने देखा कि वह तो मुसलमान होगये हैं तो उसी समय कहने लगे 'तू मूर्ख पिता का मूर्ख पुत्र और तुच्छ पिता का तुच्छ पुत्र है और हम सब से निकृष्ट हैं। खुदा ने इस धर्मात्मा के इस्लाम लाने से समस्त यहूदियों पर एक निर्णयात्मक प्रमाण उपस्थित कर दिया।

विद्वान पादरी का इस्लाम स्वीकार करना—हजरत अब्दुल्लाह बिन सलाम के बाद अबू कैस बिन अबी अनस ने भी इस्लाम स्वीकार किया। यह ईसाई धर्म का पादरी, बड़ा विद्वान, कवि, उपदेशक और देव विद्या का प्रकाण्ड पंडित था। इस धर्मात्मा के इस्लाम स्वीकार करने से परमात्मा ने समस्त ईसाइयों पर निर्णयात्मक प्रमाण उपस्थित कर दिया था।

नमाज—स० १ हि० में फर्ज नमाज में दो रकऽतें और बढ़ाई गयीं, दो रकऽतें यात्रा के लिये रक्खी गयीं और यात्रा में न हो तब जुहू, अस्र और इशा की नमाज में चार रकऽतें कर दी गयीं। मक्के में रहने के समय में दो ही रकऽतों की आज्ञा थी। जब यह विचार किया जाता है कि मक्के में कैसे प्रत्येक मुसलमान एक यात्री के समान बन जाता था, किस प्रकार समस्त मित्र और नातेदार अपरिचित और शत्रु बन जाते थे। किस तरह प्रत्येक मुसलमान हर वक्त मक्का छोड़ देने पर तैयार रहता था, तो हम कह सकते हैं कि मक्के में सब मुसलमान यात्रियों के समान ही रहते थे, और यही कारण है कि खुदा ने भी उन्हें मदीने में पहुंच जाने के बाद ही "मुक़ीम" (ठहरने वाला) माना है।

नमाज इस्लाम का वह स्तम्भ है जो मुसलमानों पर सब से पहले फ़र्ज होता है, (सात वर्ष की आयु के बालक को पढ़ना मुस्तहब और दस वर्ष के बालक पर पढ़ना फ़र्ज है) और अन्त पर्यन्त फ़र्ज रहता है (अर्थात मृत्यु काल तक)। नमाज का फर्ज होना रोग और स्वास्थ्य, सुख और दुःख, घर और बाहर, शोक और भय प्रत्येक अवस्था में अनिवार्य है, चाहे हम गर्म देश में हों चाहे ठण्डे से ठण्डे देश में, कोई स्थान, कोई ऋतु कोई रोग ऐसा नहीं जो मुसलमान को नमाज पढ़ने से रोक सकता हो।

(१) जीवन भर परमात्मा की उपासना पर जमे रहना पूर्ण दृढ़ता दर्शाता है। प्रति दिन पांच वक्तों की नमाज की रक्षा करना समय को पाबन्दी के साथ काम में लाने की उत्तम शिक्षा है। शरीर और वस्त्र और स्थान को गन्दिगी और अपवित्रता से स्वच्छ और पवित्र रखने का प्रबन्ध, शरीर के स्वास्थ्य का उत्तम उपाय है। हृदय, जिह्वा मस्तिष्क एवं शरीर के अन्य अंगों को ईश्वर की महिमा तथा प्रताप के आगे सभ्य और आदरपूर्ण रखना आध्यात्मिक उन्नति का एक मात्र साधन है।

* सहीह बुखारी बाब हिजरतुन्नबी में अनस बिन मालिक से।

(२) नमाज में जो पाबन्दी है वह शीघ्र सो जाने और शीघ्र जाग उठने की जैसी शिक्षा देती है, तथा जिस प्रकार हर एक टाइम टेबिल को अपने आधीन कर लेती है, उस से यह भी जान पड़ता है कि इस्लाम में कामवासना के विचारों को नमाज द्वारा कैसा मलियामेट किया गया है।

(३) नमाज के लिये मस्जिद की हाजिरी और जमाअत की पाबन्दी, सस्कृतिक एवं सामाजिक उन्नति की ओर अग्रसर करती है। परस्पर मेल जोल, समानता तथा विचार परिवर्तन का पवित्र साधन है। एक मूर्ख बहुत सी बातें इस आदर्श को प्राप्त कर सीख सकता है और एक विद्वान सरलतापूर्वक धर्म प्रचार कर सकता है। एक अमीर गरीब के कंधे से कंधा मिला कर समानता की क्रियात्मिक शिक्षा पा सकता है और एक ग़रीब अमीर के बराबर बैठ कर सत्य धर्म के न्याय द्वारा अपनी आत्मा को आनन्दित करता है।

(४) जो लोग नमाज छोड़ देते हैं अथवा मस्जिद की हाजिरी और जमाअत की पाबन्दी में कायरता दिखाते हैं वे सदाचार युक्त गुणों से वंचित रहते हैं, और यह स्पष्ट है कि जिस जाति के व्यक्ति ऐसे उत्तम सदाचार से खाली होंगे वे क्या होंगे।

प्रभु कहते हैं—"इन्नस्सलाता तन्हा अनिल् फ़हशाय वल्मुन्करे वला जिकरुल्लाहे अकबर।" अर्थात नमाज, नामाज पढ़ने वालों को भ्रष्ट कर्मों तथा अनुचित कर्मों से रोक देती है और अल्लाह का स्मरण तो महान् तथा नाना प्रकार के लाभों और आशीर्वाद से परिपूर्ण है।

भ्रातृत्व—अल्लाह ने एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान का भाई बतलाया है। फ़रमाया—"फ़अस्बहतुम बेनिऽमतेही इख़वाना व कुन्तुम अला शफ़ा हुफ़रतिम् मिनन्नारे फ़नक़ज़ाकुम् मिनहा।" अनुवाद—और तुम सब अल्लाह की करुणा से भाई भाई बन गये। तुम लोग तो अग्नि के एक गढ़े के किनारे पर थे जिस से ख़ुदा ने तुम्हें मुक्ति प्रदान की।

(१) इस भाईचारे का प्रभाव यह था कि एक मुसलमान यदि किसी विरोधी जाति अथवा सम्प्रदाय से कोई समझौता कर लेता था तो सब मुसलमान उसकी पूरी २ पाबन्दी करते थे। एक मुसलमान यदि किसी सुदूरदेश में चला जाता था तो सारी जाति उसकी कुशलता के लिये चिंतित रहती थी, और यदि वह किसी अत्याचारी के अत्याचार में फँस जाता था तो सारी जाति उसका बदला लेना अपना परम कर्तव्य समझती थी। जाति के प्रत्येक अनाथ, विधवा और विद्यार्थी की आवश्यकताओं का पूरा करना प्रत्येक मुसलमान अपने लिये ऐसा ही कर्तव्य समझता था जैसा कि अपनी संतान, सगे भाई की संतान और उसकी विधवा स्त्री के प्रति समझता था।

(२) इस साधारण भ्रातृत्व से भी उत्तम एक और भाईचारा था जिसे नबी व्यक्तिगत रूप से लागू किया करते थे। ऐसा भाईचारा मक्के में मक्के वालों के बीच और मदीने में अन्सार व मुहाजिरीन के बीच और स्वयं मदीने वालों के बीच स्थिर किया गया था। जो भाईचारा अन्सार तथा मुहाजिरीन में कायम हुआ था वह अधिक प्रसिद्ध है। इस भाईचारे के पश्चात परस्पर मेल जोल यहां तक बढ़ा कि एक भाई दूसरे के दाय

धन * में भी भागी होता था, और भाई बनने से पहला घंटा भी न व्यतीत होता था कि धनी भाई निर्धन भाई को अपनी सारी सम्पत्ति का आधा भाग बांट कर दे देता था। इतिहासज्ञों ने उन धर्मात्माओं के नाम भी लिखे हैं जिन के बीच यह भाईचारा स्थिर किया गया था। हम कुछ नाम नीचे लिखते हैं :—

१—मुहम्मद रसूलल्लाह—अली मुर्तज़ा

२—अबूबक्र सिद्दीक—खारजः बिन ज़ैद

३—उमर फ़ारूक—उतबान बिन मालिक

४—उस्मान ज़िन्नूरैन—औस बिन साबित

५—जऽफ़र बिन अबीतालिब—मुआज़ बिन जबल।

६—अबू उबैदः बिन जर्राह—सऽद बिन मुआज़

७—अब्दुल रहमान बिन औफ़—सऽद बिन रबीऽ।

८—ज़ुबैर बिन अव्वाम—सल्मा बिन सलामत

९—तल्हा बिन उबैदुल्लाह—कऽब बिन मालिक

१०—सईद बिन ज़ैद—उब्बी बिन कऽब

११—मुसअब बिन उमैर—अबू अय्यूब

१२—अबूहुज़ैफ़ा बिन उतबः—इबाद बिन बशीर

१३—अम्मार बिन यासिर—हुज़ैफ़ः बिन यमान

१४—सलमान फारसी—अबू दरदाऽ

१५—मुन्ज़िर बिन उमर—अबूज़र गिफ़ारी †

संसार में (Brotherhood) भाईचारे का ऐसा उच्च आदर्श इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान में दिखाई नहीं देता।

अज़ान—सं० २ हि० में अज़ान देना आरम्भ हुआ। सर्व प्रथम अज़ान की आवश्यकता इस कारण महसूस हुई कि सब लोग मिल कर एक समय पर नमाज पढ़ सकें। सोचना यह था कि लोगों के इकट्ठा करने के लिये कौनसा तरीक़ा प्रयोग में लाया जाय। किसी की राय यह थी कि किसी ऊँचे स्थान पर आग जला दी जाया करे, (जैसा कि मजूसियों की प्रथा थी)। किसी की सम्मति थी शंख (अथवा बिगुल) बजाया जाया करे (जैसा कि यहूदियों का नियम था)। किसी का कहना था कि घण्टे बजाये जाया करें, (जैसा कि ईसाई किया करते हैं)। आंहज़रत ने इन में से किसी राय को स्वीकार नहीं किया।

दूसरे दिन अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी और हज़रत उमर फ़ारूक़ ने क्रमशः नबी से आकर अर्ज़ किया कि उन्होंने स्वप्न में इन शब्दों को सुना है (जो अब अज़ान में कहे जाते हैं)।

* इस भांति दाय बांटने की प्रथा उस समय तक प्रचलित रही जब तक कि जाति की आर्थिक स्थिति न सुधर गई, इसके पश्चात् दाय धन वारिसों में बांटा जाने लगा।

† तारीख़ इब्ने खलदून व इब्ने तैमियः तथा इब्ने क़य्यिम का कहना है कि भाई चारे में एक मुहाजिर और एक अन्सारी को शामिल किया गया था इसलिये वे कहते हैं कि यह ठीक नहीं है कि आंहज़रत ने हज़रत अली को भाई चारे में अपने साथ सम्मिलित किया था क्योंकि हज़रत अली भी तो मुहाजिर हैं। अन्य आचार्यों ने इस मत को स्वीकार नहीं किया है और उन्होंने और भी ऐसे उदाहरण दिये हैं जिनमें दोनों मुहाजिर थे और यही मत ठीक है। इस भ्रातृत्व में नबी ने अली को अपना भाई बनाया, प्रथम तो इसलिये कि वे नाते में भाई होते थे दूसरे इसलिये कि यदि किसी ऐसे मुसलमान को भाई बनाते जो नाते में न होता तो भविष्य में नाना प्रकार की कठिनाइयां पैदा होजाने की सम्भावना थी।

आंहज़रत ने इन्हीं शब्दों को ऊँचे स्वर में पुकारे जाने की आज्ञा दे दी। यह शब्द आंहज़रत के उस उद्देशानुसार हैं जो इस्लामी विधान में सदा आपके सामने रहा है। अज़ान सूचना का वह सादा और सरल तरीक़ा है जो विश्वव्यापी धर्म के लिये होना उचित था। अज़ान वास्तविक में इस्लामी नियमों की घोषणा और उनका प्रचार है। मुसलमान इसके द्वारा प्रत्येक बस्ती के लोगों के कानों तक अपने धार्मिक सिद्धांत पहुँचा देते तथा मुक्ति मार्ग से सूचित कर देते हैं। छोटी २ पुस्तकों का बांटना अथवा नगर कीर्तन का तरीक़ा भी इस उत्तमता को नहीं पहुंच सकता। अज़ान सिद्ध करती है कि इस्लाम ने घोघों और घातों को मानवस्वर पर बड़ाई नहीं दी। मूर्ति पूजा के रोकने और एकेश्वरवाद के फैलाने का यह भी एक तरीक़ा है।

सल्मान का इस्लाम स्वीकार करना—सं० २ हि० में सल्मान फ़ारसी मुसलमान हुये। यह असफ़हान के रहने वाले थे। उनके प्राचीन धर्म में अबलक़ घोड़ा पूजा जाता था। सत्य धर्म की खोज में घर से निकले, और अरब तक आये, किसी ने उन्हें पकड़ कर दास बनाकर बेच डाला था। दस से अधिक धर्मों के पश्चात् यह अंत में यहूदी धर्म में आ गये थे। जिस यहूदी के पास रहा करते थे वह बहुधा भविष्य में एक आने वाले पैग़म्बर के गुण वर्णन किया करता था। जब हज़रत सल्मान ने मदीने में आंहज़रत को देखा तो उन चिन्हों और लक्षणों से जो उनका स्वामी वर्णन किया करता था हज़रत को पहचान लिया और मुसलमान हो गये। फ़ारस देश के भाग्य का पहला सितारा चमका।

काबे का क़िब्ला बनना—नबी की यह आदत थी कि जिस विषय में कोई ईश्वरीयाज्ञा न होती उसमें "अहले किताब" (ईश्वरीय धर्म ग्रन्थ वालों) के अनुसार किया करते थे। *

पैग़म्बरी के आरम्भ ही से नमाज़ फ़र्ज़ हो चुकी थी, परन्तु क़िब्ले के सम्बन्ध में कोई आज्ञा न उतरी थी इसलिये मक्के में तेरह वर्ष तक नबी ने बैतुल मुक़द्दस ही को क़िब्ला बनाये रखा। मदीने पहुंच कर भी यही तरीक़ा जारी रहा। परन्तु हिजरत के दूसरे वर्ष (अथवा १७ महीने बाद †) खुदा ने इस बारे में आज्ञा उतारी। यह आज्ञा आंहज़रत की हार्दिक इच्छानुसार थी, क्योंकि आप चाहते यह थे कि मुसलमानों का क़िब्ला वह मस्जिद बनाई जाये जिसके बनाने वाले हज़रत इब्राहीम थे जिसे मुकअब (रूप) इमारत होने के कारण "कअबा" और ईश्वरीय उपासना के लिये बनाये जाने के कारण "बैतुल्लाह" और महिमा तथा पवित्रता के कारण "मस्जेदुल् हराम" कहा जाता है। वह आज्ञा क़ुरान में इस प्रकार है—व लिल्लाहिल् मश्रेक़ो वल्मग्रेबो, फ़एेनमा तोवल्लू फ़सम्मा वजहुल्लाह। फ़स्तबेक़ुल ख़ैराते ऐना मा तकूनू याते बिकुल्लाहो जमीआ।

१—इस आज्ञा में यह बताया गया है कि अल्लाह का सम्बन्ध तो समस्त दिशाओं से समान है।

* इब्ने अब्बास से।

† इब्ने ख़लदून भाग २ पृष्ठ १६।

२—और यह भी बताया गया है कि अराधना के लिये किसी न किसी ओर मुख करना आवश्यक और मानव स्वभाव में दाखिल रहा है।

३—और यह भी बताया गया है कि किसी ओर मुख करना मूल उपासना से कोई वास्तविक सम्बन्ध नहीं रखता।

४—और यह भी बताया गया है कि क़िब्ला नियुक्त करने का एक बड़ा प्रयोजन यह भी है कि रसूल के अनुगामियों के लिये एक परिचित चिन्ह ठहरा दिया जाये। जैसा कि फ़रमाया—ले नऽलमा मँय्यत्तबेउरसूला मिम्मँय्यनक़लेबो अ़ला अक़बैहे।"

यही कारण था कि जब तक नबी मक्के में रहे उस समय तक बैतुल मुक़द्दस मुसलमानों का किब्ला रहा क्योंकि मक्के के अनीश्वरवादी बैतुल-मुक़द्दस का आदर सम्मान नहीं करते थे और काबे को तो उन्होंने अपना मन्दिर बना रखा था। इसलिये शिर्क छोड़ देने का खुला हुआ चिन्ह मक्के में यही रहा कि मुसलमान होने वाला बैतुल मुक़द्दस की ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ा करे। फिर जब नबी मदीने पहुँचे, वहां अधिकांश यहूदी तथा ईसाई ही बसते थे, वे मक्के की मस्जिदुल्हराम (काबे) की पवित्रता को नहीं मानते थे और बैतुल् मुक़द्दस को वे "बैतेईल" अथवा "हैकल" (मन्दिर) मानते थे। इसलिये मदीने में इस्लाम स्वीकार करने और पूर्वजों का धर्म छोड़ देने का चिन्ह यह ठहराया गया कि मक्के की मस्जिदुलहराम की ओर मुख करके नमाज़ पढ़ी जाया करे।

फिर ईश्वरादेश के अनुसार यही मस्जिद सदा के लिये मुसलमानों का किब्ला ठहरा दी गई। इस मस्जिद को किब्ला ठहराने का कारण अल्लाह ने स्वयं बता दिया है:—

"इन्ना अव्वला तिंव्वुजेआ लिन्नासे लल्लज़ी बेबक्कता मुबारकँव्व होदल्लिल आलमीन" अर्थात् "यह मस्जिद संसार की सर्व प्रथम इमारत है जो ईश्वरोपासना के निमित्त बनाई गई।"

चूंकि काबे की इमारत को प्राचीनता और धार्मिक महत्ता प्राप्त है इसलिये उसे किब्ला बनाया जाना उचित है:—"व इज यर्फ़ओ इब्राहीमुल् क़वाइदा मिनल् बैते व इस्माईल" द्वितीय यह कि इस मस्जिद के बनाने वाले हज़रत इब्राहिम हैं और वही यहूदियों, ईसाइयों तथा मुसलमानों के पूर्वज हैं अतः इन शानदार जातियों के पितामः की मस्जिद को किब्ला ठहराना मानो तीनों जातियों को शारीरिक एवं पैत्रिक एकता की याद दिला कर आध्यात्मिक एकता के लिये निमन्त्रण देना और परस्पर एक हो जाने के लिये "उद्खुलू फ़िस्सिलम" का संदेश सुना देना था।

मैं विश्वास करता हूँ कि कऽबे की प्राचीनता तथा ऐतिहासिक महत्ता का निषेध कोई धर्म भी नहीं कर सकता। यहूदी और ईसाई दोनों मानते हैं कि यरूसलीम की नींव हज़रत दाऊद ने डाली और हज़रत सुलैमान ने उसे बनाया, अतः कऽबे की इमारत यरुसलीम की इमारत से लगभग ६२१ वर्ष और हज़रत मसीह से १९२१ वर्ष पूर्व बनाई गई। मि० आर० सी० दत्त ने अपने इतिहास "सिवेलइज़ीशन आफ़ इन्शीएन्ट इण्डिया" में बहुत से विद्वानों की सम्मतियां इकट्ठा करके यह परिणाम निकाला है कि भारतवर्ष की सभ्यता का सर्व प्रथम काल जो वेदों का आरम्भिक काल है

मसीह थे १४०० से लेकर २००० * वर्ष पूर्व का था। यह भी लिखा है कि इस काल में कोई भी मन्दिर * न था। इससे सिद्ध होता है कि कऽबे के बनाये जाने के समय आर्यवर्त में भी कोई मन्दिर मौजूद नहीं था।

बाइबिल से पता चलता है कि अल्लाह ने पुस्तक वालों को पहले से बतला दिया था कि जो मस्जिद अन्त में क़िब्ला ठहराई जायगी वह पहले क़िब्ले से श्रेष्ठ होगी। निम्नलिखित उद्धरण देखिये—

(१) यसइयाह नबी की पुस्तक पर्व ६० में सारा लेख मक्के की प्रशंसा में है, विशेषतयः पांचवे पाठ से—

"समुद्र की व्यापकता तेरी ओर फिरेगी और जातियों की सम्पत्ति तेरे पास इकट्ठा होगी। ऊट-नियां अधिकता से तुझे आकर छुपा लेंगी। मद-यान और ईफ़ा के ऊट वे सब जो सबा के हैं आवेंगे, वे सोना और लुबान लावेंगे और खुदा वन्द का सुसमाचार सुनावेंगे, कीदार की सारी भेड़ें तेरे पास इकट्ठा होंगी। नबीत के मेंढे तेरी सेवा में उपस्थित होंगे। वे मेरी स्वीकृति के लिये मेरे आल्टर पर भेंट चढ़ाये जावेंगे और मैं अपने शौकत के घर को बड़ाई प्रदान करूंगा।"

विदित हो कि "शौकत का घर" ठीक ठीक अनुवाद "बैतुल् हराम" का है और कऽबे का यही नाम कुरान शरीफ़ में आया है जिससे पहले की ईश्वरीय ग्रन्थों की तसदीक़ होती है। इस घर को बड़ाई देने का मतलब उसे क़िब्ला ठहराना है।

यह बात कि इस जगह शौकत के घर से आशय कऽबा है अन्य कोई स्थान नहीं, इस दलील से भी स्पष्ट हो जाती है कि पाठ ६ व ७ में मदयान ईफ़ा, सबा, कीदार और नबीत के लोगों का इकट्ठा होना और कुर्बानियां करना बतलाया गया है। ये पांचों हज़रत इब्राहीम के पुत्र अथवा पौत्र हैं, जो अरब में आकर बसे और जिनकी संतान के कबीले ही आंहज़रत के धर्म (इस्लाम) में दाखिल हुये। यह न तो ईसाई थे न यहूदी थे, उन सब ने मिल कर केवल एक ही आल्टर "मिना" में कुर्बानियां पेश की थीं। जातियों के नाम, मिना का पता, अरब का पूर्ण रूप से मुसलमान हो जाना हज्जतुलवदाऽ में सब का नबी की सेवा में हाजिर होना, ऐसी ऐतिहासिक घटनायें हैं जो उपरोक्त लेख के अर्थों को ठीक २ सिद्ध करती हैं।

(२) "हज्जी नबी" (क़-म ५२० वर्ष) की पुस्तक में है—

"इस पिछले घर का प्रताप पहिले घर के प्रताप से अधिक होगा, सेनाओं का प्रभु कहता है। और मैं इस मकान को आर्शीवाद दूगा, † सेनाओं का प्रभु कहता है।"

* ए० बी० अहमद साहेब जैपुरी कृत अनुवाद पृष्ठ ७ व ८।

† अरबी बाइबिल प्रकाशित आक्सफ़ोर्ड सं० १८७१ ई० के पृ० १३३६ पर इस आयत में शब्द "सलाम" है और उर्दू बाइबिल प्रकाशित मिर्ज़ापुर स० १८७१ में शब्द "सलामती" है अतः मुसलमानों को अधिकार है कि उसका अनुवाद "इस्लाम" करें क्योंकि प्रत्येक नमाज़ के बाद मुसलमान इसी शब्द सलाम का प्रयोग इस दुआ में करते हैं "अल्लाहुम्मा अन्तस्सलामो व मिन्कस्सलामो वर्ज़कनस्सलाम, तबारकूतो रब्बना व तआलैतो या ज़ुल्-जलाले वल् इक्राम।

(३) मुकाशेफ़ात—यहन्ना (योहन्न के प्रकाशित वाक्य) पर्व्व ३ पाठ १२ में है—"जो विजयी होता है उसे मैं अपने ईश्वर के मन्दिर का स्तम्भ बनाऊंगा और अपने ख़ुदा के नगर अर्थात नई यरुशलीम का नाम जो मेरे ख़ुदा के पास से उतरती है और अपना नया नाम उस पर लिखूँगा जिसका कान है सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है।"

योहन्ना ने नई यरुशलीम और नये नाम का जिक्र किया है। नई यरुशलीम कऽबा है और ख़ुदा का नया नाम जिससे अरब वाले भाषा के पंडित होते हुये भी अनभिज्ञ थे पवित्र नाम "रहमान" है † जिसे इस्लाम ही ने प्रकट किया है। नई यरुशलीम का आकाश से उतरने का यह आशय है कि कऽबे को क़िब्ला बनाने का हुक्म आकाश से उतरेगा। क़ुरान शरीफ़ में भी इसी ओर इशारा है—क़द् नरा तक़ल्लोबा वज्हेका "फ़िस्समाऽ फलऽनोवल्लेयन्नका क़िब्लः तन्ना तर्जाहा" अर्थात हम (ईश्वर) ने देखा कि तुम आकाश की ओर अपना मुख करके देख रहे हो इस लिये आज्ञा दी जाती है कि जो क़िब्ला तुम्हें पसन्द है उसी की ओर फिर जाओ।

(४) ज़बूर ८४ में है (उर्दू बाइबिल से)

४—वे धन्य हैं जो तेरे घर में बसते हैं वे सदैव तेरी स्तुति करेंगे। ५—धन्य वे मनुष्य जिनमें शक्ति तुझ से है, उनके हृदय में तेरे मार्ग हैं। ६—वे "बका" की घाटी में वास करते हैं उसे एक कुआं बनाते, यही वर्षा उसे बरकतों से ढांप लेती। (किताबुल मुक़द्दस)

इस लेख से निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं

१—पाठ ४ के अनुसार कि यह ख़ुदा का एक घर है और वहां के रहने वालों को मुबारक (आशीर्वाद युक्त) बतलाया गया है और उनका परिचय इस प्रकार दिया गया है कि वे सदा प्रभु की स्तुति एवं महिमा करते रहेंगे।

२—पाठ ५ के अनुसार उन लोगों के मान मर्यादा और शक्ति का आधार स्वयं परमात्मा होगा। लौकिक द्रव्य उनके मानमर्यादा और शक्ति के कारण नहीं होंगे।

३—पाठ ६ के अनुसार "बकाऽ" अरबी, उर्दू, अंग्रेज़ी तीनों भाषाओं (की अनुवादित पुस्तकों) में मौजूद है जिससे सिद्ध होता है कि बकाऽ वह प्रोनाउन (Propar Noun) है जो किसी भाषा में नहीं बदला गया; और अंग्रेज़ी लिपि में प्रोपर नाउन का पहला अक्षर बड़े अक्षर (कैपिटल) में लिखे जाने का जो नियम है उसी के अनुसार अंग्रेज़ी की बाइबिल में "बकाऽ" (Baca) शब्द का पहला अक्षर बी (B) भी कैपिटल में लिखा हुआ है।

४—अरबी उर्दू में 'वादी" शब्द और अंग्रेज़ी में (Valle) शब्द जो वादी (घाटी) के अर्थों में बोला जाता है "बकाऽ" से पहिले मौजूद है।

† अरब के अधर्मी "रहमान" नाम से जो क़ुरान में उतारा गया था बहुत चिढ़ते थे जैसा कि स्वयं क़ुरान में है कि "जब उनसे कहा जाता है कि रहमान को सिजदह करो तो वे कहते हैं कि रहमान क्या होता है (सू० फ़ुर्क़ान) रहमान का ज़िक्र आजाने पर वे इनकार कर देते हैं। (सू० अम्बिया) सुहैल ने हुदैबिया: सन्धिपत्र लिखे जाने के समय कहा था अल्लाह की कसम हम नहीं जानते कि रहमान कौन है।

५—लेख से यह प्रकट है कि वहां बसने वाले "बक्काऽ" घाटी में एक कुआं भी बनायेंगे। अब हम इन सब का प्रमाण देते हैं—

(क) खुदा के घर के रहने वाले जिनका उल्लेख पाठ ४ में है वे इस्माईल की संतान हैं। हजरत इब्राहीम की दुआ क़ुरान में है "रब्बे इन्नी असकन्तो मिन् जुर्रिय्यती बेवादिन्न ग़ैरे जी जरइन्न इन्द बैतकल् मुहर्रम" (अर्थात्—"हे प्रभु मैं ने अपनी संतान को इस निरुपजाऊ घाटी में तेरे आदरणीय घर के पास बसाया है।")

(ख) यह घाटी जिसका गुण उपरोक्त आयत में "ग़ैर ज़ी जरइन्न" है उसी का नाम क़ुरान शरीफ़ की दूसरी आयत में "बक्काऽ" है—"इन्ना अव्वला बैतिन्न वुज़ेआ लिन्नासे लल्लजी बेबक्कता" ("पहिला घर जो लोगों की उपासना के निमित्त बनाया गया है वह है जो बक्काऽ में है") अब क़ुरान और ज़बूर सहमत हैं कि मक्के का नाम खुदा के यहां बक्काऽ है।

(ग) अब एक कुआं बनाने का प्रमाण शेष रह जाता है, जो बक्का की घाटी में हो। बुखारी (किताबुल अम्बिया पृ० ३३) में इब्ने अब्बास से हजरत इस्माईल और उन की माता के यहां आने और बसने के सम्बन्ध में एक लम्बी हदीस है, उसके वाक्य २० में लिखा है कि (अनुवाद) "जब हाजरः इस घाटी में पहुंची तो वहां (पानी के लिये) दौड़ी" फिर वाक्य २८ में है, (अनुवाद) "(फरिश्ते ने) एड़ी पृथ्वी पर मारी, पानी उबल पड़ा, इस्माईल की माता चकित होकर रह गयी फिर उसे खोद कर कुआं बनाने लगी।" पाठक वृन्द! आपने देखा कि ज़बूर में बक्का का नाम भी निकल आया, वहां की मस्जिद का नाम बैतुल्लाह भी सिद्ध हो गया, वहां एक कुआं का होना भी निश्चय हो गया और वहां के रहने वालों का मुबारक होना, तथा सदैव प्रभु की याद में रहना भी सिद्ध हो गया।

इसके बाद इतना और निवेदन करना चाहता हूँ कि पाठ ५ में अरबी लेख का मतलब उर्दू तथा अंग्रेजी ज़बूर के लेख और मतलब से अधिक स्पष्ट है। अरबी में है—"तुरोको बैतेका फ़ी क़ुलूबेहिम" इसका अनुवाद है "उनके हृदयों में तेरे घर की राहें हैं" किन्तु उर्दू ज़बूर में है "उनके हृदय में तेरी राहें हैं" और अंग्रेजी में है "IN whose heart are the Ways of them" उर्दू और अंग्रेजी में "बैत" (घर) शब्द का अनुवाद उड़ा दिया गया है। उर्दू में तेरी राहें और अंग्रेजी में them उन की राहें लिखा है। क़ुरान शरीफ़ इस सम्बन्ध में स्पष्ट है—(अनुवाद)—"हे प्रभु! मैं ने अपनी संतान को उस घाटी में जो उपजाऊ नहीं है तेरे प्रताप वाले घर के पास बसाया है, हे प्रभु! यह इस लिये किया कि वे सब (बसने वाले) नमाजें स्थिर रक्खें, अब आप लोगों के हृदयों में इन बसने वालों का प्रेम डाल दीजिये और उन्हें सब प्रकार के फलों की जीविका दिया कीजिये कि यह कृतज्ञ बने रहें।

दूसरा निवेदन यह है कि पाठ ५ का पहिला वाक्य यह है "तूबा लेउनासिन्न इज्जोहुम् बिका" इस में "उन्नास" (मनुष्यों) शब्द बहुवचन है किन्तु उर्दू में है—"मुबारक वह इन्सान जिस में क़ुव्वत तुझ से है" और अंग्रेजी शब्द ये हैं—Blessed is the Man whose Strength is in

thee" उर्दू में शब्द "इन्सान" और "जिस" अंग्रेजी में शब्द "Man" और "Whose" का प्रयोग एक बचन के लिये किया गया है। अरबी अनुवाद का शुद्ध और उर्दू व अंग्रेजी अनुवाद का अशुद्ध होना इस प्रकार सिद्ध होता है—कि इसी पाठ के दूसरे भाग में उर्दू में "उनके" और अंग्रेजी में "them" बहुवचन के लिये मौजूद है। अरबी तौरात का वाक्य "तूबा लेउनासिन्न इज़्ज़ोहुम् बेका" वास्तविक में वाक्य नं० ४ "तूबा लिस्सा-केनीना फी बैतेका" ही का विशेषण है।

ग़रज़ कि तौरात के इस स्थान से बक्काऽ, बैतुल्लाह, ज़मज़म् और इस्माईल की सन्तान स्पष्टतः सिद्ध हैं।

वास्तव में यह अल्लाह का उपकार है कि उसने अपने इसी घर को जो बक्काऽ की घाटी में है हमारा क़िब्ला बनाया न कि यरूशलीम को। क्योंकि एक ऐसे धर्म (इस्लाम) के लिये जिसके विषय में "ले युज़हेराहू अलद्दीने कुल्लेही" (वह सब धर्मों पर विजयी और प्रबल होगा) फ़रमाया गया है इसी घर का क़िब्ला होना उचित था न कि उसका किब्ला होना जिसे प्रत्येक विजयी काफ़िर ने तोड़ा और नष्ट-भ्रष्ट किया और अंततः संडास का स्थान तक बनाया। वहां के बसने वालों को अनेक बार दास बनना, कैद होना और देश त्यागना पड़ा।

खुदा ने ज़बूर की उपरोक्त आयत ४ व ५ में "बक्काऽ" घाटी वाले बैतुल्लाह (खुदा के घर) के निकट रहने वालों को आशीर्वाद दिया है उसका हज़ारों वर्ष से यह प्रभाव चला आ रहा है कि उस जाति पर और उस घर पर किसी अन्य जाति का अधिकार नहीं हुआ।

ज़कात—(१) आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र की सब से जटिल समस्या यह है कि समाज के धनी और निर्धन वर्गों में किस प्रकार समभाव स्थिर किया जाय। ज्ञानी सोलन के समय से लेकर आज तक कोई मानव बुद्धि इस गुत्थी को सुलझा न सकी। यूरोप में निहलिस्ट (Nihilists) जिनका उद्देश्य यह है कि कुल सम्पत्ति पर समाज के लोगों का समान रूप से अधिकार तथा आधिपत्य होना चाहिये। सोश्यलिस्ट (Socialists) जिनका उद्देश्य यह है कि जीवन सामग्री पर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार समाप्त करके उसे जनता के अधिकार में दे दिया जाय। नैशनलिस्ट (Nationalists) जिनका उद्देश्य यह है कि भूमि की मिलकियत पैदावार को किसी एक व्यक्ति के अधिकार से निकाल लिया जाय। यह गिरोह इसी लिये पैदा हो गये हैं कि उपरोक्त समस्या को सुलझा सकें।

सम्पत्ति पर से उसके स्वामियों का स्वामित्व उठा दिया जाना क्रियात्मिक दृष्टि से इतना कठिन है कि संसार में कदापि उसका चलन न हो सकेगा, इसी लिए कुरान शरीफ़ ने पहले ही से उसका यह निर्णय कर दिया है—"वल्लाहो फ़ज़्ज़ला बअ्ज़ोकुम अलाबअ्ज़िन्न फ़िर्रिज़्क़े फ़मल्लज़ीना फ़ुज़्ज़ेलू बेराद्दी रिज़्केहिम् अलामा मलकत ऐमानोहुम् फ़हुम् फ़ीहे सावाउन" (नह्ल) अर्थात्—जीविका में अल्लाह ने एक को दूसरे पर बड़ाई दी है और जिनको यह बड़ाई मिली है वे अपना भाग उन लोगों को जिनके वे 'स्वामी हो चुके हैं नहीं लौटावेंगे कि सब परस्पर समान हो जायें'।"

इस्लाम ने जो मुसलमानों को संसार की सर्व-श्रेष्ठ सभ्य जाति बनाना चाहता है इस समस्या पर उचित ध्यान दिया है और उसे सदा के लिये हल कर दिया है। इस हल का नाम ही "जकात" है।

(२) जकात सं० २ हि० में मुसलमानों पर फ़र्ज़ हुई। नबी का दयालु एवं परोपकार युक्त हृदय पहले ही दीनों का सहायक, दरिद्रियों पर दया करने वाला और दुखियों का साथी था और इस्लाम में शुरू ही से दीन दुखियों की सहायता पर मुसलमानों को विशेष रूप से ध्यान देने पर उकसाया गया है और मुसलमान इसी पवित्र शिक्षा के कारण दीन दुखियों के लिए बहुत कुछ किया भी करते थे किन्तु कोई ऐसा नियम नहीं बनाया गया था जिसे एक विधानस्वरूप माना जाता हो अतः धनी लोग जो कुछ किया करते थे अपनी सज्जनता एवं उदारता के आधार पर किया करते थे। अल्लाह ने जकात के फ़र्ज़ को इस्लाम का तीसरा स्तम्भ ठहराया है।

जकात वास्तव में सहानुभूति और दया के उस गुण के नियमानुकूल प्रयोग में लाने का नाम है जो मनुष्य के हृदय में मानव समाज के हेतु स्वाभाविक रूप से मौजूद है। जकात चुका देने से चुकाने वाले को यह लाभ भी होता है कि धन का मोह मानव सदाचरण की शक्ति को नहीं दबाता, मनुष्य कृपणता के दोष से पवित्र रहता है और यह लाभ भी है कि दीन दरिद्रों को वह अपनी जाति का अंग समझने लगता है, इस लिए अधिक धन इकट्ठा हो जाने पर भी उसमें घमण्ड तथा अभिमान नहीं पैदा होता और यह लाभ भी है कि अगणित ग़रीबों को उस से प्रेम और उसकी धन सम्पत्ति से सहानुभूति पैदा हो जाती है क्योंकि वे उसके धन में अपना एक भाग समझते हैं, मानों धनी मुसलमान की सम्पत्ति एक ऐसी कम्पनी की सम्पत्ति के समान है जिसमें बड़े छोटे हिस्सों के हिस्सेदार सम्मिलित होते हैं। समाज को यह लाभ पहुंचता है कि भीख मांगने की कुप्रथा समाप्त हो जाती है।

इस्लाम ने दरिद्रियों का भाग धनवानों के उन धनों में ज़कात के नाम से नियुक्त किया है जो बढ़ने वाले धन हैं जिनमें से देना न बुरा लगता है न खलता है। बढ़ने वाले धनों में व्यापार, खेती, पशु (भेड़ बकरी, ऊँट, गाय आदि) नक़द, खानों और गड़े हुये ख़ज़ानों की गणना की गई है। १

अब यह बताना आवश्यक है कि जो नक़द व जिन्स जकात से प्राप्त हो उसके पात्र कौन लोग हैं कुरान शरीफ़ में है—

"इन्नमस्सदक़ातो लिल् फ़ुक़राय वल् मसाकीने वल् आमेलीना अलैहा वल् मुअल्लेफ़तो क़ुलूबोहुम् व फ़िर्रिक़ाबे वल् ग़ारेमीना वब्निस्सबील"

अनुवाद—जकात और सदक़े (दान) का धन (१) भिकारियों और (२) दरिद्रियों के लिये है (भिखारियों और दरिद्रियों की व्याख्या तथा उनका अन्तर इस्लामी धर्म-शास्त्रों में देखो)

* ज़कात की जिन्स (वस्तु) और मिक़्दार (परिमाण) फ़िक़ः की पुस्तकों में लिखी हुई है वहाँ देखना चाहिये?

(३) और ज़कात वसूल करने वालों के लिये जिनके वेतन दिये जाएंगे।), (४) और उन लोगों के लिए जिनके हृदयों की इस्लाम के निमित्त उत्सुकता बढ़ाना हो (अर्थात् नवमुस्लिम लोग), (५) और दासों की मुक्ति के लिए, (६) और ऐसे ऋणी व्यक्तियों का ऋण चुकाने के लिये जो स्वयं न चुका सकते हों, (७) और अल्लाह के मार्ग में (अर्थात् अन्य सदकर्मों के लिए)* (८) और यात्रियों के लिए।

जिन आठ बातों पर ज़कात का विभाजन किया गया है उनसे विदित होता है कि ज़कात के लागू किये जाने से देश, समाज तथा व्यक्तिगत आवश्यकताओं को कैसी उत्तमतासहित पूरा किया गया है।

ज़कात की उपरोक्त विभाजन तालिका के नम्बर ५ पर विशेष ध्यान दीजिए कि इस्लाम ने इस्लाम राज्य की सारी आमदनी को आठ भागों में बांट कर एक भाग दासों की मुक्ति पर खर्च करना निश्चय कर दिया है। जो लोग इतिहास का पूरा ज्ञान रखते हैं वे जानते हैं कि गुलामी प्रथा संसार के समस्त सभ्य देशों जैसे चीन, भारतवर्ष, मिस्र, टर्की, ईरान तथा यूरोप आदि में हजारों वर्ष से प्रचलित थी। दयालु मसीह ने गुलामी के खिलाफ एक शब्द भी नहीं कहा बल्कि पोलोस ने तो उसकी पुष्टि की, वे कहते हैं—"हे दासो! तुम उनसे जो शरीर की दृष्टि से तुम्हारे स्वामी हैं अपने हृदयों की स्वच्छता सहित डरते रहो और कपकपाते हुए ऐसे आज्ञाकारी बनो जैसे यीसु मसीह के"। (अफ़सियून ६। ५) इसी प्रकार देखो १ तमृत।ऊस ६ / १ व २ तथा पतरस २ /१८।

सो यह इस्लाम ही है जिस ने संसार में सर्व-प्रथम दासों की सहायता के लिए प्रचार आरम्भ किया और इस बारे में भिन्न २ साधन नियुक्त किये।

१—दासों की मुक्ति को पुण्य का एक बड़ा साधन बताया—"वस्सायलाना व फ़िरिक़ाबि" (बक़र: रु० १२)।

२—दासों की मुक्ति को मुक्ति का साधन बताया 'फ़लक़तहमल् अक़बतो वमा अद्राका मल अक़बता, फ़क्को रक़बतिन्' (बलद रु० १)

३—ग़ुलामों की मुक्ति को कुछ अपराधों का दण्ड तथा पापों का प्रायश्चित ठहराया—जैसेः— धोखे में क़त्ल कर डालने की तीन अवस्थाओं में जब कि—

(क) मारा जाने वाला मुसलमान हो।

(ख) मारा जाने हारा मुसलमान हो परन्तु शत्रु क़बीले का हो।

(ग) मारा जाने वाला ग़ैरमुस्लिम और उस जाति का हो जिस से संधि हो चुकी हो। इन तीनों सूरतों में खूनी को एक दास मुक्त करना चाहिए। (सू० निसा रु० १२)

(घ) शपथ तोड़ने का प्रायश्चित्त——दास का मुक्त करना (सूरय-मायदः रु० १३)

(ण) ज़िहार का प्रायश्चित्त——(सू० मुजादिलः रु० १)

(च) रमज़ान का एक रोज़ा तोड़ने का प्रायश्चित्त————(हदीस शरीफ़)

* इसका विवरण भी फ़िक़: में देखिए।

(छ) स्वामी दास को अधिक मारे उसका प्रायश्चित्त———————— हदीस शरीफ़)

फिर इन सब के बाद भी इस्लामी राज्य की आय का आठवां भाग सदा के लिए इसी कार्य के निमित्त अलग कर दिया गया है।

उन्नीसवीं शताब्दी में इंगलैंड ने दासों की मुक्ति पर लाखों रुपये व्यय कर दिये थे। यह ऐसे गौरव की बात समझी जाती है कि यूरोप का कोई देश इसकी बराबरी नहीं कर सकता किन्तु इस्लाम की इस ईश्वरीयाज्ञा को देखो कि तेरह सौ वर्ष पहिले से इस काम के निमित्त कुल आय का आठवां भाग नियुक्त कर दिया गया है। क्या कोई न्याय प्रिय हृदय ऐसा होगा जो इस्लाम की इस श्रेष्ठता से इनकार करे?

बैंक और गरीबी—ज़कात की उपरोक्त तालिका के नम्बर २ पर भी विचार करना चाहिए। वर्तमान काल में कर्जदारों की सुगमता के लिए बैंक खोले गये हैं परन्तु बैंकों के खोले जाने का एक परिणाम यह हुआ है कि सैकड़ों जायदादें गरीबों के क़ब्जे से निकल कर बैंकों के पास चली गई हैं और कुछ विशेष लोगों को छोड़कर जनता में गरीबी और दीनता बढ़ती जा रही है। बिना ब्याज के ऋण का मिलना असम्भव हो गया और इन्हीं कठिनाइयों के कारण कुछ लोगों ने सूद के जायज होने की विधियां ढूँढ निकालने में बाल की खाल निकाली है

परन्तु इस्लाम का उपकार देखो कि उसने क़र्ज से बर्बाद होने वालों के बचाव का कैसा आश्चर्य-जनक प्रबन्ध किया है।

निस्सन्देह ब्याज के हराम होने की व्यवस्था इस्लाम ही का काम है जिसने कर्जदारों की मुक्ति के लिए ऐसा अच्छा प्रबन्ध किया है।

अब ज़कात के बारे में यह हदीस याद रखना चाहिये—अनुवाद—'यह दान का धन लोगों का मैल कुचैल होता है, मुहम्मद और उनके कुटुम्बियों के लिए यह हलाल (लीन) नहीं है"। इस आदेश में नबी के साथ उसका कुटुम्ब चाचा, फूफियां, चचेरे भाई और उनकी सारी संतान और उन सब के दास दासियां भी शामिल हैं जिसमें कि किसी व्यक्ति को आँहज़रत के बारे में किसी प्रकार का संदेह न हो सके।

रमज़ान सं० २ हि०—रमज़ान के रोजे (व्रत) भी हिजरत के दूसरे वर्ष फ़र्ज हुए, और साल में एक महीने के रोजे रखना इस्लाम का चौथा स्तम्भ ठहराया गया।

१—रोजे स्वास्थ्य को बढ़ाते हैं।

२—अमीरों को गरीबों की हालत का ज्ञान हो जाता है।

३—पेटभरों और भूखों को एक स्थान पर खड़ा कर देने से समाज में समानता के नियम की पुष्टि होती है।

४—आध्यात्मिक शक्तियां प्रबल और इन्द्रिय-वासनायें शिथिल हो जाती हैं।

५—कुरान शरीफ़ ने खास तौर पर यह बताया है कि रोजे संयम की शक्ति को बढ़ाते हैं। देखिए—"लअलकुम तत्तकून" (जिसमें कि तुम संयमी अर्थात् ईश्वर से डरने हारे बन जाओ।)

संयम की दृष्टि से इन बातों पर विचार करो कि रोजेदार (व्रतधारी) को बड़ी प्यास लगी हुई है, एकान्त स्थान में शीतल जल उसके सामने रखा हुआ है किन्तु वह पीता नहीं, रोजेदार को बड़ी भूख लगी है, भूख के कारण शरीर में दुर्बलता और कमजोरी महसूस होरही है, भोजन मौजूद है, कोई व्यक्ति उसे देखता भी नहीं किन्तु वह भोजन नहीं करता। मन मोहिनी प्रिय पत्नी पास मौजूद है, कामवासना उसकी सुन्दरता से लाभ उठाने को उकसाती है, प्रेम ने एक दूसरे पर मोहित कर रक्खा है किन्तु रोजेदार उससे बचता है।

कारण यह है कि खुदा की आज्ञा का आदर सम्मान उसके हृदय में ऐसा जम गया है कि कोई बात भी उस पर प्रबल नहीं ठहरती। परमात्मा की ऐसी महत्ता एवं श्रेष्ठता के हृदय में अंकित होने का कारण रोजह है।

यह स्पष्ट है कि जब एक विश्वासी ईश्वरादेश के कारण एक जायज, हलाल और उचित अभिलाषा भी छोड़ देने का स्वभाव पैदा कर लेता है तो वह खुदा के हुक्म से हराम, नाजायज और अनुचित अभिलाषाओं को अवश्य ही छोड़ देगा और उन पर अमल करने का कदापि साहस न करेगा यही वह सदाचार की उच्चता है जिसे रोजेदार के भीतर पैदा और स्थिर कर देना इस्लामी विधान का ध्येय है। चुनांचि हदीस शरीफ़ में है—अनुवाद "जो रोजे वाला झूठ बोलना, व्यर्थ की बकवास और अनुचित कार्य्यों का करना नहीं छोड़ता तो परमात्मा को उसके खाना पीना छोड़ने की कुछ परवाह नहीं है" दूसरी हदीस में है:—(अनुवाद) जब कोई व्यक्ति किसी दिन रोजा रक्खे तो न तो कोई बुरा शब्द जबान से निकाले न बकवास तथा शोर गुल करे और यदि कोई व्यक्ति उसे गाली दे अथवा झगड़ा करे तो कहदे कि मैं रोजेदार (व्रतधारी) हूं। (अर्थात् गाली का उत्तर देना अथवा बखेड़ा करना मेरे लिये किसी तरह उचित नहीं।)

रमजान का महीना चन्द्र गणित पर रक्खा गया है क्योंकि जब आधे संसार में शीतकाल होता है तो दूसरे अर्धभाग पर ग्रीष्मकाल होता है। चांद के हिसाब से महीना अदल बदल कर आने से समस्त संसार के मुसलमानों के लिये समानता स्थिर हो जाती है परन्तु यदि सूर्य के हिसाब से कोई महीना नियुक्त किया जाता तो आधे संसार के मुसलमान सदैव गर्मी का कष्ट सहन कर रोजा रखते और यह बात विश्वव्यापी धर्म के नियमों के प्रतिकूल होती।

रोजा रखना कठिन नहीं है किन्तु जिस व्यक्ति की कामवासनाएं प्रबल हों जो इच्छाओं की पूर्ति और शरीर की सजावट ही को जीवन का उद्देश्य समझता हो उस के लिये रोजा रखना निश्चय ही कठिन है।

इस्लाम में रमजान के रोजों का फ़र्ज़ होना बल्कि इस्लाम का एक स्तम्भ होना ही सिद्ध करता है कि इस्लाम कितना संयम तथा आध्यात्मिक बल बढ़ाने, मन के बुरे विचारों तथा काम वासनाओं को दबाने वाला है। *

* मसीह ने फ़रमाया जब तू रोज़ा (व्रत) रक्खे अपने सिर पर चिकनाई लगा और मुंह धो जिस में कि मनुष्य पर नहीं बल्कि तेरे पिता पर जो गुप्त रूप में भी देखता है, रोज़े वाला (व्रतधारी) ज़ाहिर हो और तेरा पिता जो गुप्त में भी देखता है प्रकट रूप से भी प्रतिफल दे। (मत्ती ६। १७ व १८)

सं० ३ हि० के रमज़ान महीने में इमाम हसन पैदा हुए जो हज़रत अली और बीबी फ़ातिमः के पहलौठे पुत्र हैं।

सं० ४ हि० की बरकतों में से बड़ी बरकत यह है कि शराब के हराम होने की घोषणा की गई। हज़रत अनस का क़थन है कि कुछ लोग अबूतल्हः के घर में बैठे थे, मैं उन्हें शराब पिला रहा था, इतने में मनादी होने लगी कि शराब हराम हो गई। अबूतल्हः ने सुनते ही कह दिया कि जितनी शराब शेष है उसे बाहर फेंक दो। उस दिन मदीने की गलियों में शराब बह निकली थी।

आज संसार के भिन्न २ देशों में भिन्न २ जातियां टेम्प्रिसं सोसाइटियों द्वारा शराब रोकने के यत्न में लगी हुई हैं। इन समस्त जातियों पर इस्लाम की इस शिक्षा का भारी उपकार है क्यों कि इस्लाम ही वह धर्म है जिसने शराब को चाहे थोड़ी हो अथवा बहुत पूर्णतयः हराम ठहरा दिया है।

इस्लाम ने शराब का नाम "उम्मुल् ख़बाइस" (कुकर्मों की माता) रक्खा है। मनुष्य के शरीर पर, आचार विचार पर, देश की शान्ति और प्रबन्ध पर, क़बीलों के व्यवहार और स्वभाव पर, सेना की शक्ति और सैनिकों के आज्ञा पालन पर जो कुप्रभाव शराब का देखा और अनुभव किया गया है उससे स्पष्ट है कि "उम्मुल् ख़बाइस" कैसा उचित नाम है।

कुछ लोग इस्लाम की सत्यता पर पर्दा डालने के लिये कहा करते हैं कि इस्लाम ने काम-वासना की उत्तेजना द्वारा लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने का लालच दिया है उनको थोड़ा विचार करना चाहिये कि शराब को हराम ठहराने वाला धर्म काम बासना का कितना विरोधी होगा और जिस धर्म में ही शराब ही हराम हो उसे स्वीकार करने में व्यभिचारियों को कितनी झिझक होगी।

इसी सं० ४ हि० के शाबान महीने में इमाम हुसैन पैदा हुए जो मुहर्रम की दसवी तिथि सं० ६१ हि० में करबला के क्षेत्र में शहीद हुए थे। उनकी शहादत ने यह सिद्ध कर दिया है कि इस्लाम के वास्तविक प्रमियों को सत्यानुमोदन में धन, मर्यादा और प्राणों की भी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। इमाम हुसैन ने इस युद्ध में धैर्य, दृढ़ता, सत्यवादिता, ईश्वर प्रियता और सत्यधर्मानुसरण के ऐसे अनुपम दृश्य तथा उच्चादर्श उपस्थित किए जिन के उदाहरण इतिहास में नहीं मिल सकते। यह सब कुछ आँहज़रत की शिक्षा दीक्षा और तपोबल के प्रभाव का सुफल था।

समामः बिन असाल का मुसलमान होना—आँहज़रत ने कुछ सवार नज्द की ओर भेजे थे, वे लौटते समय समामः बिन असाल को पकड़ लाये थे सेना वालों ने उसे मस्जिद नबवी के खम्बों से बाँध दिया था। नबी ने वहां आकर पूछा समामः क्या हाल है? समामा ने कहा मुहम्मद! मेरा हाल अच्छा है यदि आप मेरे क़त्ल किये जाने की आज्ञा देंगे तो यह आज्ञा एक खूनी के लिये होगी और यदि आप क्षमा करेंगे तो एक कृतज्ञ पर करुणा प्रकट करेंगे और यदि धन की आवश्यकता है तो जितना चाहिये बतला दीजिए।

दूसरे रोज़ नबी ने समामः से फिर वही प्रश्न किया समामः ने कहा मैं कह चुका हूँ कि यदि

आप उपकार करेंगे तो एक कृतज्ञ व्यक्ति पर करेंगे।" तीसरे दिन नबी ने समामः से फिर वही प्रश्न किया उसने कहा कि मैं उत्तर दे चुका हूँ। नबी ने हुक्म दिया समामः को छोड़ दो।

समामा मुक्त होकर एक खजूर के बाग़ में गया जो मस्जिद नबवी के निकट ही था। वहाँ जाकर स्नान किया फिर मस्जिद नबवी में लौट कर आ गया और आते ही कलमः पढ़कर मुसलमान हो गया। समामः ने कहा या रसूलुल्लाह क़सम है अल्लाह की कि समस्त संसार में आप से अधिक किसी व्यक्ति से मुझे घृणा न थी परन्तु अब तो आप ही मुझे सब से बढ़कर प्रिय मालूम होते हैं। खुदा की क़सम आप के नगर से मुझे अत्यन्त घृणा थी परन्तु आज तो वह मुझे सब स्थानों से अधिक उत्तम जान पड़ता है। खुदा की क़सम आप के धर्म से बढ़कर मुझे और किसी धर्म से शत्रुता न थी परन्तु आज तो आप का धर्म ही मेरा प्रियतम हो गया है।

समामः ने यह भी कहा कि मैं अपने घर से मक्के को उमरा के लिए जा रहा था मार्ग में पकड़ लिया गया अब उमरा के बारे में क्या आज्ञा होती है? नबी ने उसे इस्लाम स्वीकार करने पर आशीर्वाद और उमरा पूरा करने की आज्ञा दी।

समामः मक्के पहुँचा तो वहां के एक व्यक्ति ने पूछा कहो तुम "साबी" बन गये? समामः ने कहा नहीं मैं मुहम्मद रसूलुल्लाह पर ईमान लाया हूँ और मैंने इस्लाम स्वीकार कर लिया है, और यह याद रखना कि अब यमामह से तुम्हारे पास गेहूँ का एक दाना भी नहीं आने पायेगा जब तक कि नबी की आज्ञा नहीं होगी। *

समामः ने अपने देश में पहुंचते ही मक्के की ओर आने वाला अनाज बन्द कर दिया। ग़ल्ले के रुक जाने से मक्के में हाहाकार मच गई और अंत में उन्हें आँहज़रत ही से प्रार्थना करनी पड़ी। नबी ने समामः को लिख दिया कि अनाज जाने दो। यद्यपि इन दिनों मक्के वाले आँहज़रत के प्राणघातक शत्रु थे। इस घटना से न केवल यही सिद्ध होता है कि नबी ने कैसे एक व्यक्ति को प्राणक्षमा प्रदान की जो स्वयं भी अपने को खूनी और मृत्यु-दन्ड का पात्र मानता था † और न केवल यही सिद्ध होता है कि नबी के संयम और सदाचार का कैसा गहरा प्रभाव लोगों पर पड़ता था कि समामः जैसा व्यक्ति जो इस्लाम और मदीने और आँहज़रत से घृणा एवं शत्रुता रखता था तीन दिन बाद प्रसन्नता पूर्वक मुसलमान हो गया था, बल्कि नबी की नेकी, हृदय की कोमलता, पवित्रता तथा दयालुता का प्रमाण इस

* सहीह बुख़ारी किताबुल् मग़ाज़ी में अबू हुरैरः से।

† समामा के पकड़े जाने का कारण इस रवायत में नहीं बताया गया है किन्तु यह स्पष्ट है कि उसे अवश्य ही किसी अपराध के बाद ही पकड़ा गया होगा। स्वयं समामः के शब्दों पर विचार कीजिये वह अपने को प्राण दन्ड का अपराधी मानता है। नबी ने जब उसे बिना किसी शर्त के और बिना किसी बदले के और बिना धर्म परिवर्तन के मुक्त कर दिया तो उसके हृदय पर आंहज़रत के सदाचार तथा उपकार का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह मुसलमान होगया।

तरह मिलता है कि मक्के के जिन काफ़िरों ने आँहज़रत को मक्के से निकाला था और बद्र, उहद, खन्दक में नबी और मुसलमानों को नष्ट करने के लिये सारी शक्ति समाप्त कर चुके थे उनके लिये रहमतुल् लिल्आलमीन यह भी पसंद नहीं करते कि उनका अनाज रोक दिया जाये और उनको परेशान करके अपना आज्ञाकारी बनाया जाये।

हुदैबियः की संधि सं० ६ हि०—इस वर्ष नबी ने अपना एक स्वप्न मुसलमानों को सुनाया, फ़रमाया "मैंने देखा कि मानो मैं और मुसलमान मक्के पहुंच गये हैं और काबे का तवाफ़ कर रहे हैं"। इस स्वप्न के सुनने से मुसलमानों को उस शौक़ ने जो काबे के तवाफ़ का उनके दिलों में था बेचैन कर दिया और उन्होंने उसी वर्ष आँहज़रत को मक्के की यात्रा के लिये आमादा कर लिया। मदीने से मुसलमानों ने युद्ध की कोई सामग्री साथ में नहीं ली, और क़ुर्बानी के ऊँट साथ लिए और यात्रा भी ज़ीक़ाद के महीने में की जिस में अरब प्राचीन से चली आने वाली प्रथानुसार युद्ध कदापि न किया करते थे और जिस में प्रत्येक शत्रु को भी बिला रोक टोक के मक्के में आने की इजाज़त हुआ करती थी। जब मक्का १६ मील रह गया तो आंहज़रत ने हुदैबियः स्थान से क़ुरैश के पास अपने आने की सूचना भेज दी और उनसे आगे बढ़ने की आज्ञा भी चाही।

उस्मान बिन अफ़्फ़ान दूत बना कर भेजे गये। उनके जाने के बाद इस्लामी क़ाफ़ले में यह ख़बर फैल गई कि क़ुरैश ने हज़रत उस्मान को क़त्ल अथवा क़ैद कर दिया है। इस लिये नबी ने इस निशस्त्र और बे सरोसामान जत्थे से प्राणों की बैअ़त ली * कि यदि युद्ध करना ही पड़ा तो सुदृढ़ रहेंगे †। बैअ़त करने वालों की संख्या चौदह सौ थी ‡। क़ुरान शरीफ़ में है कि "लक़द रज़ियल्लाहो अनिल् मोमेनीना इज़ योबायेऊनका तहतश्शजरता" इस बैअ़त में आँहज़रत ने अपने उलटे हाथ को उस्मान का सीधा हाथ ठहराया और उनकी ओर से अपने हाथ पर बैअ़त ली। इस बैअ़त का वृत्तांत सुन कर क़ुरैश डर गये और उनके सरदार एक के बाद एक करके हुदैबियः में आये।

उर्वा बिन मसऊद § जो क़ुरैश की ओर से आया था उसने लौट कर क़ुरैश से कहा—हे जाति वालो! मुझे कई बार नज्जाशी (हबश के बादशाह) कैसर, (रूम के बादशाह) किस्रा (ईरान के बादशाह) के दरबारों में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है किन्तु मुझे कोई भी ऐसा बादशाह दिखाई न दिया जिसका आदर सम्मान उसके दरबार वालों के हृदयों में ऐसा हो जैसा कि मुहम्मद के साथियों

* बुख़ारी में अब्दुल्लाह बिन ज़ैद से।

† बुख़ारी में इब्ने उमर से।

‡ सहीह बुख़ारी में बराऽ और जाबिर से।

§ यह उर्वा जो आज क़ुरैश का एलची बनकर आया था थोड़े वर्षों पश्चात् स्वयं मुसलमान होगया था और अपनी जाति में इस्लाम का प्रचार करने के लिये इस्लाम का एलची बनकर गया था।

के दिल में मुहम्मद का है। मुहम्मद थूकता है तो उसका थूक भूमि पर गिरने नहीं पाता किसी न किसी के हाथ पर गिरता है और वह व्यक्ति उस थूक को अपने मुख पर मल लेता है। जब मुहम्मद कोई आज्ञा करता है तो उसे पूरा करने के लिये सब एक दूसरे से आगे रहना चाहते हैं। जब वह वजू करता है तो वजू किये हुए जल पर वे ऐसे गिर पड़ते है मानो लड़ाई हो पड़ेगी। जब वह बात करता है तो सब के सब चुप हो जाते है। उनके हृदय में मुहम्मद का इतना आदर सम्मान है कि वे उसके सामने आँख उठाकर नहीं देखते, मेरी सम्मति में तो जिस तरह हो सके उससे संधि कर लो ⁂। कुरैश सोच समझ कर संधि के लिए तैयार हुये। संधि की निम्नलिखित शर्तें तै हुईं।—

१—दस वर्ष तक परस्पर संधि रहेगी, दोनों ओर आने जाने में किसी की रोक टोक नहीं होगी।

२—जो क़बीले चाहें कुरैश से मिल जांए और जो क़बीले चाहें मुसलमानों की ओर शामिल हो जाँय। मित्र कबीलों के अधिकार भी यही होंगे।

३—आगामी वर्ष मुसलमानों को काबे के तवाफ़ (परिक्रमा) की आज्ञा होगी, उस समय हथियार उनके शरीर पर न हों चाहे यात्रा में उनके साथ हों।

४—यदि कुरैश में से कोई व्यक्ति नबी के पास मुसलमान होकर चला जाये तो नबी उस व्यक्ति को कुरैश के मांगने पर लौटा देंगे किन्तु यदि कोई व्यक्ति इस्लाम छोड़ कर कुरैश से जा मिले तो कुरैश उसे न लौटायेंगे।

अन्तिम शर्त सुनकर अबूबक्र सिद्दीक के सिवाय समस्त मुसलमान घबरा उठे। उमर फ़ारूक़ इस बारे में अधिक उत्तेजित थे परन्तु नबी ने हँस कर इस शर्त को भी स्वीकार कर लिया।

यह सन्धिपत्र हज़रत अली ने लिखा था। उन्होंने आदि में लिखा "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" सुहैल जो कुरैश की ओर से प्रतिनिधि था बोला खुदा की कसम हम नहीं जानते कि रहमान किसे कहते हैं। "बिस्मेका अल्लाहुम्मा" लिखो। नबी ने वही लिख देने की आज्ञा देदी। हज़रत अली ने फिर लिखा "यह समझौता मुहम्मद" "रसूलुल्लाह" और कुरैश के बीच तै पाया है" सुहैल ने इस पर भी आक्षेप किया और आँहज़रत ने उसके कहने पर "मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह" लिखने का हुक्म दिया *।

सन्धि पर कब अमल करना चाहिये— सन्धि-पत्र की अन्तिम शर्त के विषय में कुरैश का यह विचार था कि इस शर्त से डर कर कोई व्यक्ति भविष्य में मुसलमान नहीं होगा। किन्तु यह शर्त अभी तै हो हुई थी और सन्धि पत्र लिखा ही जा रहा था, दोनों ओर से अभी

⁂ बुखारी बाबुश्शुरूते फ़िल् जिहाद पृष्ठ ७८ में इब्ने मख़्ज़मा से।

* बुखारी शरीफ़। यही सुहैल जो मुहम्मद के पवित्र नाम के साथ "रसूलुल्लाह" लिखे जाने पर आक्षेप करता है थोड़े वर्षों बाद हार्दिक इच्छा सहित मुसलमान हो जाता है। नबी की वफ़ात के बाद उसने इस्लाम की सत्यता पर ऐसा ओजस्वी भाषण दिया जो हज़ारों मुसलमानों के ईमान की पुष्टि का कारण बना। निस्सन्देह यह इस्लाम का आश्चर्य जनक प्रभाव है कि वह कट्टर शत्रुओं को क्षण भर में मोहित कर लेता है।

हस्ताक्षर नहीं हुए थे कि अबूजन्दल उसी स्थान पर पहुँच गया। अबूजन्दल मक्के में मुसलमान हो गया था। कुरैश ने उसे क़ैद कर रक्खा था, और अब वह अवसर पाकर जंजीरों सहित भागकर इस्लामी जत्थे में पहुँचा था। सुहैल ने कहा कि इसे हमारे हवाले किया जाये। नबी ने फ़रमाया कि सन्धिपत्र के पूर्ण हो जाने पर उसके विरुद्ध न होगा अर्थात् जब तक सन्धि-पत्र पूरा न हो जाये उसकी शर्तं पर अमल नहीं हो सकता। सुहैल ने बिगड़ कर कहा तब हम सन्धि ही नहीं करते। अंतकार नबी ने आज्ञा देदी और अबूजंदल कुरैश के हवाले कर दिया गया।

कुरैश ने मुसलमानों के कैम्प में उसके हाथ पैर बांधे, पाँव में जञ्जीर डाली और खींच कर ले गये। नबी ने जाते समय केवल इतना ही फ़रमाया कि "अबूजन्दल अल्लाह तेरी मुक्ति के लिए कोई मार्ग निकाल देगा *" अबूजन्दल का अपमान तथा कुरैश का अत्याचार देखकर मुसलमानों में क्रोध तथा जोश, तो बहुत कुछ पैदा हुआ किन्तु नबी का हुक्म समझ कर धैर्य से काम लिया।

आक्रमण कारियों को क्षमा प्रदान—नबी अभी हुदैबियः ही में ठहरे हुए थे कि ८० व्यक्ति तनईम पहाड़ी से प्रातः काल ही जबकि मुसलमान नमाज़ पढ़ रहे थे इस इरादे से उतरे कि मुसलमानों को नमाज़ के अवसर पर क़त्ल करदें किन्तु ये सब पकड़ लिये गये और नबी ने दया एवं क्षमा करते हुये उन्हें छोड़ दिया। इसी घटना पर क़ुरान की यह आयत उतरी "व होवल्लज़ी कफ़्फ़ा ऐदीहुम् अनकुम् व ऐदीकुम् अनहुम् बेबत्ने मक्कता-मिन बादे अन अज़फ़राकुम अलैहिम (सू० फ़तह आयत २३) अर्थात् खुदा वह है जिसने मक्के की घाटी में तुम्हारे शत्रुओं के हाथ तुम से रोक दिये और तुम्हारे हाथ भी (उन पर काबू पाने के बाद) उन से रोक दिये गये।

यह यात्रा अत्यन्त भलाइयों एवं लाभों का कारण सिद्ध हुई। आँहज़रत ने शत्रुओं के साथ सन्धि करने में सज्जनता, उदारता, बुद्धिमत्ता और आक्रमणकारी शत्रुओं की क्षमता में रह्मतल्लिल्-आलमीनी के प्रकाश को प्रकाशमान कर दिखाया।

नबी हुदैबिया से लौट गये। इसी सन्धिपत्र के बाद सूरय फ़तह हुदैबियः में उतरी। उमर फ़ारूक़ ने पूछा या रसूलुल्लाह क्या यह सन्धिपत्र हमारे लिये फ़तह (विजय) है फ़रमाया हाँ †।

अबूजन्दल ने मक्के के क़ैदखाने में पहुंच कर सत्यधर्म का प्रचार आरम्भ कर दिया। जो कोई उसकी निगरानी पर रक्खा जाता वह उसे एकेश्वरवाद की महत्ता समझाता, अल्लाह की बड़ाई वर्णन करके ईमान की शिक्षा देता। खुदा का करना कि अबूजन्दल अपने सच्चे इरादे में सफल होता और वह व्यक्ति मुसलमान हो जाता। कुरैश इस दूसरे ईमान लाने वाले को भी क़ैद कर देते। अब यह दोनों मिलकर धर्म प्रचार का काम उसी बन्दीघर में करते। इस प्रकार अबूजन्दल के कैद होकर मक्के पहुँच जाने का फल यह निकला

* सहीह बुखारी पृ० ८०।

† बुखारी में अबू वाइल से।

कि एक वर्ष में तीन सौ व्यक्ति ईमान ले आये *। अब कुरैशियों को पश्चाताप हुआ कि हमने क्यों सन्धिपत्र में इन ईमान वालों को लौटाने की शर्त लिखवाई। फिर उन्हों ने मक्के के कुछ चुने हुए व्यक्तियों को नबी की सेवा में भेजा कि हम सन्धि-पत्र की इस शर्त को छोड़ना चाहते हैं। इन नये मुसलमानों को आप अपने पास बुलवा लीजिए। नबी ने सन्धिपत्र के विरुद्ध करना स्वीकार नहीं किया। उस वक्त मुसलमान भी समझे कि सन्धि-पत्र की वह शर्त जो ऊपरी दृष्टि से असह्य प्रतीत होती थी उनका स्वीकार कर लेना कितना लाभ दायक सिद्ध हुआ।

परिणाम—अबूजन्दल की घटना से प्रत्येक व्यक्ति जो सिर में दिमाग़ और दिमाग़ में समझ रखता है वह जान सकता है कि इस्लाम की सत्यता एक दैवी शक्ति द्वारा फैल रही तथा सत्य वादियों के हृदयों में विश्वास जमा रही थी। जन्म भूमि से दूर हो जाना, नातेदारों से छूट जाना, क़ैद, अपमान, भूख प्यास, भय, लालच, तलवार और फाँसी आदि संसार की कोई वस्तु, और कोई भाव उनको इस्लाम से न रोक सकता था।

सन्धि का वास्तविक लाभ—इमाम जहरी ने समझौते की पहिली धारा के विषय में लिखा है कि परस्पर आने जाने की रोक टोक उठ जाने से यह लाभ हुआ कि लोग मुसलमानों से मिलने जुलने लगे और इस प्रकार उनको इस्लाम की सत्यता तथा वास्तविकता मालूम करने के अवसर मिले और इसी कारण इस वर्ष इतने अधिक

* अबूजन्दल के समान एक व्यक्ति अबूबसीर था वह मुसलमान होकर मदीने पहुँचा। कुरैश ने उसे लौटाने के लिए दो व्यक्ति नबी की सेवा में भेजे। हज़रत ने अबूबसीर को उनके हवाले कर दिया। मार्ग में अबूबसीर ने उन में से एक को धोखा देकर मार डाला दूसरा नबी के पास सूचना देने के लिए आया। उसके पीछे ही अबूबसीर भी पहुँचा। नबी ने उसे उपद्रवी ठहराया। इस से भयभीत होकर वह वहाँ से भागा। कुरैश ने अबूजन्दल और उसके साथ ईमान लाने वालों को मक्के से निकाल दिया। अबूजन्दल को चूंकि मदीने आने की आज्ञा नहीं थी इस लिये उसने मक्के में शाम के मार्ग में एक पहाड़ी पर कब्ज़ा कर लिया। कुरैश का जो क़ाफ़िला आता जाता उसे लूट लेता। (क्योंकि कुरैश युद्ध के एक फ़रीक़ थे) अबूबसीर भी उस से जा कर मिल गया।

एक बार अबुल आस बिन रुबैअ का क़ाफ़िला भी शाम से आया। अबूजन्दल अबुल आस को जानता था। आँहज़रत की पुत्री सय्यदह जैनब का उस से विवाह हुआ था (यद्यपि अबुल आस के मुश्रिक रहने के कारण विच्छेद हो चुका था। अबूजन्दल ने इस क़ाफ़िले को भी लूट लिया किन्तु किसी की जान से न मारा इस कारण कि उन में अबुलआस था। अबुलआस वहाँ से सीधा मदीने आया और हज़रत जैनब द्वारा इस घटना की सूचना हज़रत तक पहुँचाई। आपने इस मामले को सहाबियों की सम्मति पर छोड़ दिया सहाबियों ने अबुलआस के पक्ष में फ़ैसला दिया। जब अबूजन्दल को इस फ़ैसले की सूचना मिली तो उन्हों ने सारा सामान यहाँ तक कि रस्सी और ऊँटों की मुहार तक अबुलआस को लौटा दी। अबुलआस मक्के पहुँचा सब लोगों का रुपया पैसा और असबाब लौटा दिया फिर मनादी करा दी कि यदि किसी का कोई हक़ मुझ पर रह गया हो तो बतलादे सब ने कहा तू बड़ा अमीन (विश्वस्त) है। अबुलआस ने कहा अब मैं जाता हूँ और मुसलमान होता हूँ मुझे भय था कि यदि इस से पहिले मुसलमान हो जाता तो लोग अभियोग लगाते कि हमारा माल मार कर मुसलमान हो गया है। नबी ने अबूजन्दल और उस के साथियों को भी अब मदीने बुलवा लिया जिस से कि वह कुरैश को न लूट सकें।

लोगों ने इस्लाम स्वीकार किया कि इस से पहले किसी वर्ष इतने मुसलमान न हुए थे।

मुसलमानों का काबे के तवाफ़ के लिए जाना और उसके परिणाम सं० ७ हि०— हुदैबियः सन्धिपत्र की दूसरी धारा के अनुसार मुसलमान इस वर्ष मक्के पहुंच कर उमरा करने का अधिकार रखते थे इस लिये अल्लाह् का रसूल दो हज़ार सहाबियों को लेकर मक्के पहुंचा। मक्के वालों ने आँहज़रत को मक्के में आने से तो न रोका किन्तु स्वयं घरों में ताले लगाकर बूक़ुबैस पहाड़ी की चोटी पर जिसके नीचे मक्कः बसा हुआ है चले गये और पहाड़ पर से मुसलमानों के काम देखते रहे।

खुदा का नबी तीन दिन तक उमरे के लिए मक्के में रहा, फिर पूरे काफ़िले के साथ मदीने को लौट आया।

इन अधर्मियों पर मुसलमानों के सच्चे जोश और उपासना की प्रभाव युक्त विधि, उनकी धर्म प्रियता का (कि खाली नगर में किसी की एक पाई की भी हानि न हुई थी) आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा जिसने सैकड़ों व्यक्तियों को इस्लाम की ओर झुका दिया।

यहूदियों का चौथा षड्यन्त्र खैबर का युद्ध, मुहर्रम सं० ७ हि०— खैबर मदीने से शाम (देश) को ओर तीन मन्ज़िल पर एक बस्ती का नाम है, यह यहूदियों की बस्ती थी। आबादी के आस पास मज़बूत क़िले बनाये गये थे। नबी को हुदैबियः की यात्रा से मदीने आये हुये अभी थोड़े ही दिन (एक मास से भी कम) गुज़रे थे कि यह सुनने में आया कि खैबर के यहूदी एक बार फिर मदीने पर आक्रमण करने वाले हैं। * अहज़ाब के युद्ध का बदला लेने और अपनी खोई हुई मर्यादा एवं शक्ति को देश में पुनः स्थापित करने के लिये वे एक भारी युद्ध की तैयारी कर चुके थे। उन्हों ने बनू ग़त्फ़ान क़बीले के चार हज़ार योद्धा वीरों को भी अपने साथ मिला लिया था। उनके बीच यह समझौता होगया था कि यदि मदीना विजय होगया तो खैबर की आधी पैदावार सदा बनू ग़त्फ़ान को दी जाती रहेगी।

मुसलमान घेरे की सख्ती को जो गत वर्ष उन्हें अहज़ाब के युद्ध में भोगनी पड़ी थी अभी तक भूले नहीं थे अतः वे सब इस पर सहमत हो गये कि इस आक्रमण कारी शत्रु को आगे बढ़कर रोकना चाहिये।

नबी ने इस युद्ध में केवल उन्हीं सहाबियों को साथ चलने की आज्ञा दी थी जो "लक़द रज़ियल्लाहो अनिल् मोमेनीना इज़ योबायऊनका तह्तश्शजरते फ़अ्लेमा मा फ़ी क़ुलूबेहिम" † के सुसमाचार से सुशोभित थे और जिनको "वअ़द कोमुल्लाहो मग़ानेमा कसीरतन्त ताख़ोज़ूनहा" ‡ का सुसमाचार भी मिल चुका था। उनकी संख्या १४००

* तबक़ात-कबीर इब्ने साद। पृ० ७।

† 'खुदा उन मोमिनों से प्रसन्न हुआ जो पेड़ के नीचे तेरे हाथों पर इस्लाम की दीक्षा ले रहे थे, खुदा ने उनके आन्तरिक भावों को जान लिया'।

‡ खुदा ने तुम से बड़ी २ विजयों का वादा किया है जो तुम प्राप्त करोगे।

थी जिनमें से केवल दो सौ घुड़सवार थे।

सेना के अध्यक्ष अकासः * बिन मुहसिन असदी और उमर बिन खत्ताब † थे। बीस सहाबियः (स्त्रियां) भी सेना में सम्मिलित थीं जो रोगियों और घायलों की देख रेख तथा सेवा सुश्रूषा के निमित्त साथ हो गई थीं।

इस्लामी सेना ख़ैबर के निकट रात के समय पहुँच गई थी किन्तु नबी का स्वभाव यह था कि रात को युद्ध आरम्भ नहीं करते और न कभी "शबखून" ‡ डाला करते थे, इस लिए इस्लामी सेना ने मैदान में पड़ाव डाल दिया। युद्ध के लिये इस स्थान को एक अनुभवी योद्धा हज़रत हुबाब ने चुना था। यह क्षेत्र ख़ैबर वालों और बनूग़त्फ़ान के बीच में पड़ता था §। इस युक्ति से यह लाभ पहुँचा कि जब बनूग़त्फ़ान ख़ैबर के यहूदियों की सहायता के लिए निकले तो उन्हों ने इस्लामी सेना को अपने सामने पाया अतः चुप चाप अपने घरों को लौट गये।

हज़रत ने आज्ञा दी थी कि सेना का बड़ा कैम्प इसी स्थान पर रहेगा और लड़ने वाले जत्थे कैम्प ही से जाया करेंगे। सेना के भीतर शीघ्रता पूर्वक एक मस्जिद बनाई गई ❥ और युद्ध के साथ २ धर्म-प्रचार का कार्य भी आरम्भ कर दिया गया। हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान इस कैम्प के अध्यक्ष नियुक्त हुए।

ख़ैबर के गढ़ जो बस्ती के दाहिनी और बाईं ओर थे उनकी संख्या दस थी जिन में दस हज़ार वीर रहते थे ▮। हम इन को तीन भागों पर विभाजित कर सकते है ▯। गढ़ों के नाम इन नामों से प्रसिद्ध थे—

१—नाइम २—नितात ३—सअ्ब बिन मुआज़ ४—ज़ुबैर	ये चारों गढ़ नितात के गढ़ कहे जाते थे।
५—शन्न ६—बिरे ७—उब्बी	ये तीनों शन्न के गढ़ के नाम से प्रसिद्ध थे।
८—क़मूस तबरी ९—वतीह १०—सलालिम	ये तीनों क़तूबियः के गढ़ पुकारे जाते थे।

महमूद बिन मुस्लिमः को आक्रमण करने हारे जत्थों का सेनापति बनाया गया और उन्हों ने नितात क़िले पर युद्धारम्भ कर दिया। आँहज़रत स्वयं भी आक्रमण करने हारी सेना में सम्मिलित

* अकासा की गणना बड़े सहाबियों में होती है। नबी ने उन्हें सुसमाचार सुनाया था कि वे बे रोक टोक स्वर्ग में जाएंगे। ये बद्र, उहद, खन्दक तथा अन्य युद्धों में सम्मिलित हुए थे। हज़रत सिद्दीक के ख़िलाफ़त काल में ४५ साल की आयु में शहीद हुए।

† मदारिजुन्नुबुव्वत पृ० २६०।

‡ बुखारी में हज़रत अनस से।

§ तारीख़ तबरी पृ० ६२।

❥ सहीह बुखारी में सुवैद बिन नोमान से।

▮ फ़तहुलबारी। कुछ ग्रन्थों में गढ़ों की संख्या ७ व ६ भी लिखी है।

▯ मौ० करामत अली लिखित "सीरते मुहम्मदिय्या"।

थे बाकी लोग हज़रत उस्मान की अध्यक्षता में कैम्प में रहे।

महमूद बिन मुस्लिमः पाँच रोज तक बराबर धावा बोलते रहे परन्तु गढ़ विजय न हुआ। पाँचवें अथवा छटे रोज़ की घटना है कि महमूद युद्ध क्षेत्र की गर्मी से तनिक सुसताने के लिए क़िले की दीवार के साये में लेट रहे। कनानः नामक यहूदी ने उन्हें बेख़बर पाकर एक पत्थर उनके सिर पर मारा जिससे वे शहीद हो गये। तब फ़ौज की कमान उनके भाई मुहम्मद बिन मुस्लिमः ने सँभाली और शाम तक वीरता पूर्वक लड़ते रहे। मुहम्मद बिन मुस्लिमः का प्रस्ताव यह था कि यहूदियों के बग़ीचों को काटा जाय क्योंकि उन लोगों को एक एक पेड़ एक एक बालक के समान प्यारा है इस से किले वालों पर प्रभाव डाला जा सकता है। इस प्रस्ताव पर अमल शुरू ही किया गया था कि अबूबक्र ने नबी की सेवा में आकर निवेदन किया कि यह इलाक़ा अवश्य ही मुसलमानों द्वारा विजय होने वाला है फिर हम उसे अपने हाथों क्यों नष्ट करें। नबी ने इस परामर्श को स्वीकार किया और इब्ने मुस्लिमः के पास बग़ीचे काटने से रोकने की आज्ञा भेज दी।

शाम को मुहम्मद बिन मुस्लिमः ने अपने भाई की शहादत की घटना स्वयं ही हज़रत की सेवा में आकर वर्णन की। आंहज़रत ने फ़रमाया "कल सेना का झण्डा उस व्यक्ति को दिया जायगा जिस से अल्लाह और रसूल प्रेम रखते हैं और अल्लाह विजय प्रदान करेगा"। यह ऐसी सूचना थी जिसे सुनकर सेना के बड़े २ वीर योद्धा आगामी दिन की कामन पाने की तीव्र अभिलाषा करने लगे।

इस रात सेना की रक्षा का काम हज़रत उमर को दिया गया था। उन्होंने गश्त करते हुये एक यहूदी को पकड़ा और उसी समय आंहज़रत के पास लाये। हज़रत तहज्जुद की नमाज पढ़ रहे थे जब उससे छुट्टी पाई तो यहूदी से बात चीत की। यहूदी ने कहा यदि उसे और उसके स्त्री बच्चों को जो क़िले के भीतर हैं मुक्त कर दिया जाय तो वह युद्ध के बहुत से भेद बतला सकता है। यह वचन उसे दे दिया गया यहूदी ने बतलाया कि नितात के यहूदी आज रात को अपने स्त्री बच्चे शस्त्र क़िले में भेज रहे हैं और नक़द और सामान नितात क़िले में गाड़ रहे हैं, मुझे वह स्थान मालूम है जब मुसलमान नितात क़िले को विजय कर लेंगे तो मैं वह स्थान बतला दूंगा। यह भी बतलाया कि शस्त्र क़िले के तहख़ानों में गढ़ तोड़ने के बहुत से यन्त्र मौजूद हैं जब मुसलमान क़िला विजय कर लेंगे तो मैं वह तहख़ाने भी बतला दूंगा।

प्रातःकाल होते ही नबी ने हजरत अली को बुलाया लोगों ने कहा कि उनकी आंखें दुखने आ गई हैं और आंखों में दर्द भी बहुत होता रहा है। हज़रत अली आये तो नबी ने अपना थूक अली की आंखों में लगा दिया उसी समय आंखें खुल गईं। न सुर्ख़ी बाक़ी रही न पीड़ा। फिर कहा "जाओ ईश्वर के मार्ग में युद्ध करो, पहिले इस्लाम का निमन्त्रण दे देना फिर युद्ध करना, अली! यदि तुम्हारे हाथ पर एक व्यक्ति भी मुसलमान हो जाय तो यह काम बहुत कुछ धन प्राप्त होने से उत्तम होगा"।

हजरत अली ने नाइम क़िले पर चढ़ाई की क़िले का प्रसिद्ध सरदार मुरहब मुक़ाबिले के लिये

क्षेत्र में निकला वह अपने आप को हजार वीरों के बराबर कहा करता था। उसने आते ही यह कवित्त पढ़ना प्रारम्भ किया :—

अनुवाद—खैबर जानता है कि मैं हथियार सजाने वाला, अनुभवी वीर मुरहूहब हूँ, जब लोगों की बुद्धि मारी जाती है तब मैं वीरता दिखाया करता हूँ।

उसके मुक़ाबिले के लिये हजरत आमिर निकले वह भी इस आशय का कवित्त पढ़ते जाते थे :—

अनुवाद—खैबर जानता है कि मैं हथियार चलाने में निपुण योद्धा हूँ, मेरा नाम आमिर है।

मुरहूहब ने तलवार से वार किया, हजरत आमिर ने उसे ढाल पर रोका और मुरहूहब के शरीर के निचले भाग पर वार किया परन्तु उनकी तलवार लम्बाई में छोटी थी उनके ही घुटने पर लगी जिसकी चोट से वे शहीद होगये।

फिर हजरत अली निकले, आप की कविता से क्षेत्र गूंज उठा आप कह रहे थे—

मैं वह हूँ कि मेरी माता ने मेरा नाम "हैदर" (बिफरा हुआ शेर) रक्खा है, मैं अपनी तलवार की कृपा से तुम्हें बड़े २ प्याले प्रदान करूँगा, मैं शेर बबर, कठोर आक्रमणकारी और क्षेत्र का धनी हूँ। *

हजरत अली ने पहला हाथ ही ऐसा मारा कि तलवार मुरहूहब के लोहे के खोद को काटती, सिर के दो टुकड़े करती हुई गर्दन तक जा पहुंची।

फिर मुरहूहब का भाई यासिर निकला उसे ज़ुबैर बिन अव्वाम ने ख़ाक में सुला दिया। उसके पश्चात् हज़रत अली ने हल्ला बोल दिया और क़िला विजय हो गया।

उसी दिन "सऽब" क़िले को हज़रत हुबाब ने † घेरा डालने से तीन दिन बाद जीत लिया। इस गढ़ से मुसलमानों को जौ, खजूर- छुहारे, मक्खन, जैतून का तेल, चर्बी और कपड़े भारी परिमाण में मिले। सेना को रसद की कमी से जो कष्ट हो रहा था वह दूर हो गया। इसी क़िले से क़िला तोड़ने वाले यन्त्र भी निकले जिस की सूचना यहूदी जासूस दे चुका था। उसके अगले दिन नितात का गढ़ भी जीत लिया गया।

अब ज़ुबैर नामक क़िले पर जो एक पहाड़ी टीले पर बना हुआ था धावा बोला गया। दो रोज बाद एक यहूदी इस्लामी सेना में आया उसने कहा यह क़िला तो तुम महीने भर में भी न जीत सकोगे। मैं एक भेद बतलाता हूँ इस किले में पानी एक जमीन दोज नाले द्वारा जाता है। यदि पानी का रास्ता बन्द कर दिया जाये तो विजय सम्भव है। मुसलमानों ने पानी पर क़ब्जा कर लिया। अब क़िले वाले क़िले से निकल कर खुले मैदान में आकर लड़े, और मुसलमानों ने उन्हें परास्त कर के क़िले पर आधिपत्य जमा लिया।

फिर उब्बी नामक क़िले पर धावा बोला गया इस क़िले वालों ने सख्त मुकाबिला किया उन में

* तबरी भाग ३ पृ० ६४।

† हुबाब बद्र के युद्ध में ३३ वर्ष के थे। बद्र के युद्ध के लिये क्षेत्र के बारे में हज़रत ने उनकी सम्मति को पसन्द फ़रमाया था। हज़रत उमर की ख़िलाफ़त के ज़माने में इनकी मृत्यु हुई।

से एक योद्धा निकला जिस का सामना हज़रत हुबाब ने किया और उसका सीधा बाज़ू काट डाला। वह क़िले की ओर भागा आपने दूसरा बार किया तो उसके पैरों की रग कट गई वह गिर पड़ा और मारा गया। क़िले से एक और योद्धा निकला उधर से एक मुसलमान ने मुक़ाबिला किया परन्तु वह मुसलमान शहीद हुआ। फिर अबूदुजानः निकले उन्हों ने जाते ही उसके पैर काट दिये और फिर क़त्ल कर डाला। यहूदियों पर धाक जम गई वे भयभीत हो गये और बाहर निकलने से रुक गये। हज़रत अबूदुजानः आगे बढ़े मुसलमानों ने उनका साथ दिया अल्लाहो अकबर कहते हुए गढ़ की दीवार पर चढ़ गये और गढ़ जीत लिया, गढ़ वाले भाग गये। इस गढ़ से बकरियाँ और कपड़े और अन्य सामान बहुत सा मिला।

अब मुसलमानों ने बिर्र के गढ़ पर धावा बोला इस क़िले वालों ने मुसलमानों पर इतने तीर बरसाये और इतने पत्थर गिराये कि मुसलमानों को भी मुन्जनीक़ से काम लेना पड़ा। यह मुन्ज-नीक़ वही थे जो सऽब नामक गढ़ से मिले थे। मुन्जनीक़ों से क़िले की दीवारें गिराई गईं और क़िला विजय हो गया।

खालिद बिन वलीद का इस्लाम लाना— इन इस्लाम लाने वालों में (इस्लाम के प्रसिद्ध जेनरल) खालिद बिन वलीद भी थे जो उहुद के युद्ध में अधर्मियों की सेना के सेनापति थे और मुसलमानों को उन्हों ने बड़ी हानि पहुँचाई थी। यह वही खालिद हैं जिन्होंने आगे चल कर इस्लामी सेनापति होकर झूठे मुस्लिमः को हराया, सम्पूर्ण इराक़ और शाम देश का आधा भाग विजय किया था। मुसलमानों के ऐसे जानी दुश्मन और ऐसे वीर योद्धा का स्वयं आकर मुसलमान होना इस्लाम की सच्चाई का एक मुऽ-जिज़ा है।

अम्र बिन आस का इस्लाम लाना सं० ८ हि०— इन्हीं इस्लाम लाने वालों में अम्र बिन आस भी थे। इन्हीं को मुसलमानों से शत्रुता और राज-नैतिक विषयों में पूर्ण योग्यता रखने के कारण उस डिपोटेशन का अध्यक्ष बनाया गया था जो हबश के बादशाह के पास इस लिए भेजा गया था कि वह हबश में गये हुए मुसलमानों को कुरैश के हवाले कर दे। इन्हीं अम्र बिन आस ने हज़रत उमर के ज़माने में मिश्र देश विजय किया था। ऐसे बुद्धिमान और राजनीतिज्ञ तथा विजयी योद्धा का मुसलमान हो जाना भी इस्लाम का एक आश्चर्य जनक प्रभाव है।

इन्हीं इस्लाम लाने वालों में उस्मान बिन तल्हा भी थे जो कऽबे के उच्चाधिकारी एवं प्रबंधक थे। काबे की चांबियाँ भी इन्हीं के पास रहती थीं। जब यह प्रसिद्ध सरदार नबी की सेवा में मदीने जा पहुंचे तो हज़रत ने फ़रमाया "आज मक्के ने अपने जिगर के टुकड़े हमको दे डाले"।

अद्दी बिन हातिमताई का ईमान लाना सं० ६ हि०— इस प्रसिद्ध सरदार के इस्लाम स्वीकार करने की घटना यह हुई कि सं० ६ हि० में यमन के क़बीले बनी तै ने बग़ावत की थी। उस समय इस इलाके के हाकिम हज़रत अली थे उन्हों ने उपद्रवियों को पकड़ कर मदीने भेज दिया था। उन में लोक प्रसिद्ध हातिमताई की पुत्री भी

थी। उसने हजरत से इस प्रकार प्रार्थना की—"मैं अपनी जाति के सरदार की पुत्री हूँ, मेरा पिता दया और परोपकार में प्रसिद्ध था, भूखों को खाना खिलाता तथा दीन दुखियों पर दया किया करता था वह मर गया, भाई हार कर भाग गया अब आप मुझ पर दया करें" । आँहजरत ने फ़रमाया "तेरे पिता में मुसलमानों जैसे गुण थे" फिर उसके सारे परिवार सहित उसे छोड़ दिया और सफ़र खर्च तथा वस्त्रादि भी अपने पास से प्रदान किये।

अद्दी बिन हातिम स्वयं वर्णन करते हैं कि मुझे नबी के नाम से बड़ी घृणा थी क्योंकि मैं ईसाई धर्म का अनुयायी तथा अपनी जाति का सरदार था। मेरी जाति युद्ध में लूटे हुए धन का एक चौथाई भाग मुझे दिया करती थी। मैं अपने मन में कहा करता था कि मैं सच्चे धर्म पर भी हूँ अपने इलाके का हाकिम भी हूँ, फिर मुझे मुसलमान होने की क्या आवश्यकता है। मैंने अपने शुतर खाने के दारोगा से कह रक्खा था कि दो उत्तम ऊँट जो चाल के तेज हों सदैव मेरे मकान पर मौजूद रखा करे और जब उसे इस इलाके में मुसलमानों के आने की सूचना मिले मुझे तुरन्त ही बताये। एक दिन दारोगा आया कहा श्रीमान! मुहम्मदी सेना के आजाने पर जो कुछ करने का इरादा हो कर डालिए क्योंकि मुझे दूर से कुछ झण्डे दिखाई दे रहे हैं। यह सुन कर मैंने ऊँट मँगवाये, स्त्री बच्चों तथा धन दौलत को लादा और शाम देश को चल दिया। मेरी बहिन आँहजरत से मुक्ति प्राप्त करके मेरे पास शाम ही में पहुंची। उसने अपनी मुक्ति की सारी कहानी सुनाई, मेरी बहिन बड़ी समझदार और बुद्धिमान थी। मैंने पूछा कि उस व्यक्ति (आँहजरत) के विषय में तुम्हारी क्या सम्मति है? उसने कहा कि मेरी सम्मति यह है कि तू शीघ्र ही उसके पास चला जा यदि वह पैग़म्बर है तो प्रथम श्रेणी में रहने के गर्व को क्यों खोया जाये और यदि वह सम्राट है तो उसके पास जाने से तू अपमानित न होगा। क्योंकि तू तूही है। (अर्थात् तू स्वयं ही अपनी योग्यताओं में अद्वितीय है) बहिन की सम्मति पाकर मैं मदीने में आया उस समय आँहजरत मस्जिद में थे, मैंने जाकर सलाम किया फ़रमाया कौन? मैंने कहा अद्दी बिन हातिम। नबी मुझे साथ लेकर अपने घर चले। मार्ग में एक खूसट बुढ़िया मिली उस ने हजरत को ठहरा लिया आप देर तक उसके पास खड़े रहे और वह अपनी लम्बी कहानी सुनाती रही। मैंने अपने दिल में सोचा यह व्यक्ति बादशाह तो कदापि नहीं।

फिर हजरत घर में पहुँचे, एक चमड़े का गद्दा जिस में खजूर के पट्ठे भरे हुए थे नबी ने मेरे आगे फेंक दिया; फ़रमाया इस पर बैठो, मैंने कहा नहीं हुजूर बैठें फ़रमाया नहीं तुम ही बैठ जाओ। मैं गद्दे पर बैठ गया और हजरत जमीन पर बैठे। अब फिर मेरे मन में यह बात उठी कि यह बादशाह कदापि नहीं।

अब नबी ने फ़रमाया तुम तो "रकोसी"* हो मैंने कहा हां फ़रमाया तुम तो अपनी जाति से ग़नीमत तथा पैदावार में चौथाई लिया करते हो? मैंने कहा हां, नबी ने फ़रमाया ऐसा करना तो

* रकोसी ईसाइयों के एक प्राचीन सम्प्रदाय का नाम है।

तुम्हारे धर्म में जायज़ नहीं, मैंने कहा सत्य है। अब मैंने मन में सोचा कि यह अवश्य नबी है, सब कुछ जानता है इससे कुछ छुपा हुआ नहीं है। नबी ने फिर फ़रमाया "अदी ! कदाचित इस धर्म में आने से तुम्हें यह बात रोक रही है कि सब लोग गरीब हैं, ख़ुदा की क़सम ! इनके पास इतना धन आने वाला है कि कोई लेने वाला शेष न रहेगा। अदी इस धर्म में आने से कदाचित तुम्हें यह बात भी रोक रही है कि हम लोगों की संख्या थोड़ी है, और हमारे शत्रु बहुत हैं ख़ुदा की क़सम वह समय निकट आ रहा है कि जब तुम सुन लोगे कि कादसिया से एक स्त्री चलेगी, मक्के का हज्ज करेगी और उसे किसी का भय न होगा। अदी ! इस धर्म में आने से कदाचित तुम्हें यह बात भी रोक रही है कि राज्य आजकल अन्य जातियों के हाथों में है ख़ुदा की क़सम ! वह दिन आ रहा है जब तू सुन लेगा कि बाबिल का सफ़ेद महल (नौशेरवाँ का दीवानखाना) मुसलमानों के हाथों पर विजय होगा। अदी बतला कि "ला इलाहा इल्लल्ला" के कहने में तुझे क्या रुकावट है ? क्या अल्लाह के सिवाय कोई और भी पूज्य देव हो सकता है ? अदी बतला "अल्लाहो अकबर" कहने में तुझे क्या रुकावट है। क्या अल्लाह से भी कोई बड़ा है"। अदी का कथन है कि इस भाषण के बाद मैं मुसलमान हो गया। मेरे इस्लाम स्वीकार करने से आँहज़रत बड़े प्रसन्न चित्त दिखाई देते थे।

अदी कहता है कि इस घटना को पूरे दो वर्ष बीते थे और तीसरा चल रहा था कि मैंने बाबिल के महिलों को विजय होते देख लिया और एक बुढ़िया को क़ादसियः से अकेले हज्ज के निमित्त मक्के आते भी देख लिया और मुझे आशा है कि तीसरी बात भी होकर रहेगी *।

हज्ज—१—इस्लाम का पाँचवाँ स्तम्भ हज्ज है। स्मरण रहे कि इस्लाम प्रेम का वह संदेश है जो बिछुड़े हुए को मिलाता, गैरों को अपना और अपनों को सत्यवादी बना देता है। इस्लामी व्यवस्था का उद्देश्य भी यही है कि भिन्न २ व्यक्तियों को एक जाति बनाकर एक कलमे पर एकत्रित कर दिया जाये।

(क) मुहल्ले वालों में प्रेम एवं एकता पैदा करने और उसे स्थिर रखने के लिए पाँचों नमाज़ों के समय उनका मुहल्ले की मस्जिद में इकट्ठा होना "वाजिब" (आवश्यक) ठहराया गया है।

(ख) नगर वालों में परस्पर प्रेम तथा मेल जोल बढ़ाने के लिए आठवें दिन एक बार उनका जुमा मस्जिद में इकट्ठा होना और मिल कर नमाज़ पढ़ना आवश्यक ठहराया गया है।

(ग) नगर वालों और आस पास के देहात वालों में परस्पर जान पहिचान और प्रेम सम्बन्ध स्थिर करने के लिए साल में दो बार दोनो ईदों की नमाज़ों को आवश्यक ठहराया गया है।

दोनों अवसरों पर देहात वाले नगर में आते हैं और नगर वाले नगर से बाहर निकल कर उनसे मिलते और मिल जुल कर ईश्वरोपासना करते हैं।

समस्त इस्लामी संसार में धर्म का नाता मज़बूत

* तारीख़ तबरी। अदी बिन हातिम ने सं० ६७ हि० में १२० वर्ष की आयु पाकर स्वर्गधाम की यात्रा की।

करने, भिन्न २ जातियों, भिन्न २ गोत्रों, भिन्न २ भाषाओं, भिन्न २ रंगतों और भिन्न २ देशों के लोगों को विश्व के एक मात्र धर्म की एकता में सम्मिलित होने के लिए जीवन भर में एक बार उन लोगों पर काबे का हज्ज फ़र्ज़ किया गया है जो वहाँ जाने की सामर्थ्य रखते हैं।

(२) हज्ज में सब के लिए वह सादा और बिन सिला वस्त्र जो मानव समाज के पितामः हज़रत आदम का था नियुक्त किया गया है, जिस में एक ही रसूल, एक ही क़ुरान, एक ही काबे पर ईमान रखने वाले एक रूप तथा एक ही वस्त्र में एक ही स्थान पर दिखाई दें और वाह्य रूप को देखने वाले नेत्र भी वास्तविक एकता रखने वालों में कोई बाहिरी भिन्नता न देख सकें।

(३) हज्ज के लिए वह स्थान चुना गया है जिसे यहूदियों, ईसाइयों, साबियों तथा मुसलमानों के पिता हज़रत इब्राहीम ने संसार का सर्व प्रथम पूज्य-स्थान बनाया था। चूंकि उपरोक्त जातियों की जन संख्या संसार की अन्य जातियों से अधिक है अतः इस स्थान के चुने जाने का अनुमोदन बहुमत एवं प्राचीनता दोनों दृष्टियों से होता है।

(४) हज्ज का एक उद्देश्य इस्लामी प्रताप का प्रकट करना है और मुसलमानों को यात्रा से जो लाभ हो सकते हैं वे भी इसी उद्देश्य के आधीन आ जाते हैं।

एक राजा का जो उद्देश्य दरबारों के स्थापन से है, एक जेनरल का जो उद्देश्य सैनिक निरीक्षण से है, एक कान्फ्रेंस का जो उद्देश्य वार्षिक अधिवेशन में प्रतिनिधियों के आने से है, किसी व्यापार मंडल का जो उद्देश्य अंतर-राष्ट्रीय प्रदर्शनियों से है वे सब हज्ज में पाये जाते हैं। और इससे उनकी पूर्ति तथा प्राप्ति हो जाती है। पुरानी इमारतों की खोज, प्राचीन चिन्हों का अनुसन्धान, जातियों के इतिहास तथा भाषाओं की छान बीन करने वालों और भूगोल सम्बन्धी विद्वानों को जिन बातों की टोह रहती है वे सब बातें भी हज्ज से पूरी हो जाती हैं।

इस्लाम में हज्ज सं० ९ हि० में फ़र्ज़ हुआ। इसी वर्ष नबी ने हज़रत अबूबक्र को "अमीरुल् हाज्ज" (हाजियों का अध्यक्ष) बनाया, तीन सौ सहाबियों को उनके साथ भेजा जिस में कि वह उन सब को हज्ज कराएं। उनके पीछे हज़रत अली को भी भेजा कि वे सूरय तौबः की घोषणा करदें। अबूबक्र सिद्दीक ने लोगों को हज्ज कराया और हज़रत अली ने सूरय तौबः की प्रथम चालीस आयतों को इन आज्ञाओं सहित पढ़कर सुनाया कि इस वर्ष के बाद कोई मुश्रिक (खुदा का साझी ठहराने हारा) काबे के भीतर न आने पायेगा * और कोई व्यक्ति नंगा होकर काबे का तवाफ़ (परिक्रमा) न कर सकेगा †।

सं० १० हि०—इस वर्ष नबी ने हज्ज का इरादा किया और चारों ओर सूचना भेज दी गई कि नबी हज्ज के लिये जाने वाले हैं। इस ख़बर के पाते ही जत्थों के जत्थे इकट्ठा होने लगे इस में प्रत्येक श्रेणी तथा प्रत्येक क़बीले के लोग थे। ज़ुल हुलैफ़ा में नबी ने अह्राम बाँधा और यहीं से

* देखो यसइयाह पर्व ३५ पाठ ८ "वह जो पवित्र है उस पर से गुज़र न करेगा वह उन्हीं के लिये है"।
† सहीह बुख़ारी में अहबी हुररा से।

"लब्बैका अल्लाहुम्मा लब्बैका लाशरीका लका लब्बैक" की ध्वनि बलन्द की और अह्राम सहित मक्के को चल दिए। इस पवित्र काफ़िले के साथ मार्ग में प्रत्येक स्थान से जत्थों के जत्थे सम्मिलित होते जाते थे *। आँहज़रत मार्ग में जब किसी टीले से गुज़रते थे तीन २ बार ऊँची आवाज़ से "अल्लाहो अकबर" कहते जाते थे †।

जब मक्के के निकट पहुँचे तो "ज़ीतुवा" ‡ में थोड़ी देर ठहरे और फिर उन सब लोगों को लेकर मक्के में दाख़िल हुये और दिन में काबे का तवाफ़ करके अल्लाह के जलाल को प्रकट किया §।

काबे के तवाफ़ से छुट्टी पाकर सफ़ा और मर्वा की पहाड़ियों पर तशरीफ़ ले गये उनकी चोटियों पर चढ़कर और काबे की ओर मुँह करके अल्लाह की एकता और उसकी बड़ाई वर्णन की और इस प्रकार स्तुति की:—(अनुवाद) अल्लाह के सिवाय कोई उपासना के योग्य नहीं, वह एक है, कोई उसका साझी नहीं, भूमि उसी की है और स्तुति भी उसी के लिए उचित है, वह सब बातों की सामर्थ्य रखता है, ख़ुदा जिसके अतिरिक्त उपासना के कोई योग्य नहीं एक है उसी ने अपने बचन को पूरा किया, उसी ने अपने सेवक

* हुज्जतुल्ला ल् बालिग़ा पृ० २५३।

† सहीह बुख़ारी क़िताबुश्शहादत में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से। अब देखो यसइयाह पर्ब्ब ४२ पाठ ११ "जंगल और उसकी बस्तियाँ, क़ीदार के बसे हुए गाँव अपनी आवाज़ ऊँची करेंगे। सलऽ के बसने वाले एक गीत गायेंगे, पहाड़ों की चोटियों पर से ललकारेंगे।

‡ उस समय "इन्नका बिल् वादिल् मुक़द्दसे तुवा" की शान इस सेनाध्यक्ष पर झलक रही थी।

§ इस घटना के सम्बन्ध में यसइयाह नबी की पुस्तक में ख़ुदा ने काबे को मुख़ातिब करके कहा है "उठ! प्रकाशमान हो कि तेरा प्रकाश आया और ख़ुदा का जलाल तुझ पर उदय हुआ। देख पृथ्वी पर अंधकार छा जायगा और कालिमा जातियों पर, किन्तु प्रभु तुझ पर उदय होगा और उसका प्रताप तुझ पर प्रकट होगा। और जातियाँ तेरे प्रकाश में और सम्राट तेरे उदय प्रकाश में चलेंगे। अपनी आँखें उठाकर चारों ओर देख वे सब के सब इकट्ठे होते हैं, वे तुझ पास (तेरे निकट) आते हैं, तेरे पुत्र दूर से आयेंगे और तेरी पुत्रियाँ गोद में उठाई जायेंगी। तब तू देखेगी और प्रकाशमान होगी, हाँ तेरा मन उछलेगा और व्यापक होगा क्योंकि समुद्र का फैलाव तेरी ओर फिरेगा और जातियों की सम्पत्ति तेरे पास इकट्ठा होगी। ऊँठ बहुत से आकर तुझे छुपालेंगे, मदियान और ईफ़ा के युवक ऊँट, वे सब जो सबा के हैं आयेंगे, वे सोना और लुबान लायेंगे और प्रभु की स्तुति का सुसमाचार सुनायेंगे"।

नबी का मक्के से विदा होना, मक्के के लिए दुःख तथा काबे के लिये वेदना का कारण था किन्तु अब पूर्ण प्रताप सहित एकेश्वरवाद का प्रचार व पुष्टि करते हुए पुनः मक्के में दाख़िल होना और काबे का तवाफ़ करना निस्सन्देह काबे के लिए दुगनी प्रसन्नता का कारण है। प्रथम तो बिछुड़े हुये धर्म भाई परस्पर मिले दूसरे सत्यधर्म का प्रताप बढ़ा। स्मरण रहे कि मदियान हज़रत इब्राहीम के पुत्र का नाम था जो कतूरा बीबी से पैदा हुए थे और ईफ़ा मदियान के पुत्र का नाम था, सबा बिन यक़सान भी हज़रत इब्राहीम के पौत्र थे (उत्पत्ति पर्ब्ब २५ पाठ १ से ४ तक) ये सब अरब में बसे थे। इस हज में वे सब क़बीले आये थे जिनके पूर्वज मदियान, इफ़ा तथा सबा थे। इस लिये भविष्य वाणी (जिस में स्पष्ट-रूप से पता व चिन्ह दिया गया था) ठीक २ पूरी हुई।

की सहायता की, उसी ने स्वयं समस्त सेनाओं को पराजित किया §।

आठवीं ज़िलहिज्जा को नबी मक्के से चल कर मिना में ठहरे। ज़ुह्र, अस्र, मग़रिब, इशा और फ़ज्र की नमाज़ें मिना ही में पढ़ीं। ९ ज़िलहिज्जा को आंहज़रत सूर्योदय के बाद नमूरा की घाटी में आकर उतरे इस घाटी की एक ओर "अरफ़ात" और दूसरी ओर मुज़्दलफ़ः है। दिन ढलने पर यहां से चलकर अरफ़ात में आये, सारा मैदान लोगों से खचाखच भरा हुआ था और प्रत्येक व्यक्ति परमात्मा की स्तुति, अराधना तथा पूजा में व्यस्त था। * यह समारोह एक लाख चालीस हज़ार व्यक्तियों पर सम्मिलित था, जो सबके सब ईश्वरी-याज्ञाओं का पालन करने के लिये इकट्ठा हुये थे।

आंहज़रत ने पहाड़ी पर चढ़कर और ऊंट पर सवार होकर यह खुत्बः दिया। †

§ इन पवित्र शब्दों में अल्लाह की स्तुति को दर्शाया गया है। कुछ वर्ष पूर्व यही मुहम्मद इसी मक्के में अकेले थे फिर उनके निमन्त्रण पर एक एक दो दो व्यक्ति उनके साथ मिलते गये। वे सब इसी सफ़ा पहाड़ी के मैदान और अरक़म नामक सहाबी के घर में गुप्त रूप से इकट्ठा हुआ करते थे, फिर कुछ संख्या और बढ़ी तो देश ने उनका विरोध किया, तब कुछ हबश चले गये कुछ रह गये तो कैद खानों में डाले गये। स्वयं आँहज़रत तीन वर्ष तक घिरे रहे अन्ततः मक्के में मुसलमानों का रहना असम्भव हो गया, फिर सब लोग मक्के से मदीने चले गये। आँहज़रत रात को अंधेरे में गये, एक मित्र के अतिरिक्त उस समय कोई मनुष्य साथ न था। शत्रुओं को उनके बच निकलने का शोक हुआ। उनके जा बसने की जगह पर भी पूरे नौ वर्ष तक बराबर आक्रमण करते रहे, अंत में सब थक थकार बैठ रहे। अब वही मुहम्मद हैं वही मक्का है वही अरब है कि पहाड़ों की चोटियों से एकेश्वरवाद की ध्वनि सुनी जा रही तथा ईश्वरीय सहायता तथा विजय के गीत गाये जा रहे हैं। एक अकेले व्यक्ति का ऐसी भारी शत्रुता, ऐसी मक्कारियों, ऐसे अत्याचारों और ऐसे युद्धों का सामना करने के बाद ऐसी अद्वितीय विजय एवं सफलता प्राप्त करना ईश्वर के उस वचन पर ही निर्भर हो सकता है जो उसने अपने एक सेवक को दिया था। यसइयाह में है कि "सलऽ (मदीने) के बसने वाले एक गीत गायेंगे, पहाड़ों की चोटियों पर से ललकारेंगे (४२। ११)।

* तुम भूमि पर केवल उसी की स्तुति करो (यसइयाह)।

† देखो यौहन्ना पर्व्व १४।

(क) "फिर जो मैंने दृष्टि डाली तो देखा कि वहाँ सैहून-पहाड़ पर खड़ा था और उसके साथ एक लाख चवालीस हज़ार" बरें से संकेत नबी की ओर है जो परमात्मा के बाद सब से श्रेष्ठ है। सैहून से मुराद है पवित्र पहाड़ी यह अरफ़ात की पहाड़ी की ओर संकेत है। एक लाख चवालीस हज़ार की संख्या उन सहाबियों की है जो हज्ज में आँहज़रत के साथ थे।

(ख) 'जिनके हाथों पर उसके पिता का नाम लिखा था' यह पाठ "सीमाहुम् फी वुजूहेहिम् मिन अस्सरिस्सुजूद" का अनुवाद है।

(ग) "फिर मैंने आकाश से एक आवाज़ सुनी जो बहुत पानियों के शोर और बहुत गरजने की आवाज़ के समान थी और मैंने बरबत बजाने वालों की आवाज़ जो बरबत बजाते थे सुनी"।

इन में स्तुति की आवाज़ का जिक्र किया है क्योंकि बनी इस्राईल बरबत और बाजे के साथ अपनी दुआयें पढ़ा करते थे।

हज्जतुल् वदाअ़ का प्रसिद्ध खुत्बः—

अनुवाद—परमात्मा की स्तुति के बाद फरमाया "लोगो ! मैं सोचता हूँ कि मैं और तुम फिर कभी इस स्थान पर इकट्ठा नहीं होंगे । ‡ लोगो ! तुम्हारे लोहू, तुम्हारे धन सम्पत्ति और तुम्हारी मर्यादायें एक दूसरे पर ऐसी ही हराम है जैसा कि तुम आज के दिन की, इस नगर की और इस महीने की हुरमत (आदर सम्मान) तथा पवित्रता करते हो । लोगो ! तुम्हें निकट भविष्य में खुदा के सामने जाना है और वह तुमसे तुम्हारे कर्मों के बारे में पूछेगा । सावधान ! मेरे बाद कुमार्ग पर न पड़ जाना कि एक दूसरे की गरदनें काटने लगो । § लोगो ! अज्ञानता की प्रत्येक बात को मैं अपने पावों के नीचे रौंदता हूँ । अज्ञानता के समय के समस्त क़त्ल सम्बन्धी झगड़ों को मैं समाप्त करता हूँ । पहिला खून जो मेरे परिवार का है अर्थात् इब्ने रबीआ बिन हारिस का खून जो बनी सअ्द में दूध पीता था और हुज़ैल ने उसे मार डाला था वह मैं छोड़ता हूँ । अज्ञानता के समय का ब्याज भी मलियामेट (नष्टप्राय) कर दिया गया । पहिला ब्याज अपने कुटुम्ब का जो मैं मेटता हूँ वह अब्बास बिन अब्दुल् मुत्तलिब का ब्याज है यह सब का सब छोड़ दिया गया ।

लोगो ! अपनी स्त्रियों के सम्बन्ध में खुदा से डरते रहो ईश्वर के नाम पर ही तुमने उन्हें धर्म पत्नी बनाया है और खुदा के वचनाधीन हो तुमने उनका शरीर अपने लिये हलाल ठहराया है । तुम्हारा हक़ स्त्रियों पर इतना है कि वे तुम्हारे

तथा धर्मात्माओं के आगे मानो नया गीत गा रहे
(घ) "और वे तख़्त के आगे और उन चारों प्राणियों
जो ईश्वरीय धर्म-ग्रन्थ वालों के लिए नई थी ।
थे" । नये गीत से अरबी भाषा की ओर संकेत किया गया है
जो पृथ्वी से मोल लिए गये थे इस गीत को न
(ण) "और कोई उन एक लाख चवालीस के अतिरिक्त
सीख सका" ।
नबी की ज़बान से इस खुत्बे के सुनने का गौरव एक लाख चवालीस हज़ार ही को मिला था ।
न फँसे कि कुमार हैं" ।
(च) 'ये वे लोग हैं जो स्त्रियों के साथ अपवित्रता में
"वल्लज़ीना हुम् लेफ़ुरूजेहिम हाफ़ेज़ून" ,वे अपने लज्जित
मुसलमानों का यह गुण कुरान शरीफ़ में है कि
अंगों की रक्षा करते हैं
वह जाता है" सहाबियों का यह गुण क़ुरान शरीफ़ में इन
(छ) "वे हैं जो बर्रे के पीछे जाते हैं जहाँ कहीं
वह उस अनपढ़ नबी का अनुसरण करते हैं ।
शब्दों में हैं "अल्लज़ीना यत्तबेऊन न्नबिय्यल् उम्मी"
मनुष्यों में मोल लिये गये हैं" यह गुण क़ुरान में इन शब्दों
(ज) "वह खुदा और बर्रे के लिये पहिले पहल
मिनल् मुहाजेरीना वल् अन्सार" ।
में वर्णन किया गया है" वस्साबेक़ूनल् अव्वलूना
क्योंकि वे खुदा के आगे निर्दोष हैं" । यह गुण क़ुरान में
(झ) "और उनके मुख में मक्कारी नहीं पाई गई
"इन्नल्लज़ीना यग़ुज़्ज़ूना अस्वातोहुम् इन्दा रसूलुल्लाहे उलायकल्लज़ीन-
इन शब्दों में वर्णन किया गया है ।
मतहनल्लाहो क़ोलूबोहुम् लित्तक़्वा लहुम् मग़्फ़ेरतुन व अजरुन अज़ीम" ।

‡ मादनुल् आमाल हदीस न० ११०७ ।

§ सहीह बुख़ारी में अबी बक्र से ।

बिछौने पर दूसरों को न आने दें किन्तु यदि वे ऐसा करें तो उनको ऐसी मार मारो जो हलकी हो, स्त्रियों का हक़ तुम पर यह है कि तुम उनको भली पूर्वक खिलाओ और पहिराओ।

लोगो! मैं तुम में (तुम्हारे पास) वह चीज छोड़ चला हूँ कि यदि उसे दृढ़ता पूर्वक थामे रहोगे तो कभी कुपथगामी न होगे वह अल्लाह की पुस्तक कुरान है।

लोगो! न तो मेरे बाद कोई पैग़म्बर है और न कोई नई उम्मत पैदा होने वाली है। भली पूर्वक सुन लो कि अपने प्रभु की अराधना करो, पाँचों वक्त की नमाज पढ़ो, साल भर में एक महीने (रमजान) के रोजे रक्खो, अपने धनों की जकात सहर्ष देदिया करो, काबे का हज्ज करो और अपने अध्यक्षों तथा हाकिमों के आज्ञाकारी बने रहो, जिस का प्रतिफल यह है कि तुम अपने प्रभु के स्वर्ग में दाखिल होगे। * लोगो! प्रलय के दिन तुम से मेरे बारे में पूछा जायगा, मुझे बतला दो कि क्या उत्तर दोगे? सब ने कहा हम इस की साक्षी देते हैं कि आपने अल्लाह की आज्ञायें हमें पहुँचा दीं, आपने पैगम्बरी और नुबुव्वत का हक़ (धर्म) पूरा कर दिया, आपने हमें खोटे खरे के बारे में भली पूर्वक बतला दिया। (उस समय) नबी ने अपनी अंगूठे के पास वाली उँगली को उठाया आकाश की ओर उंगली उठाते थे फिर लोगों की ओर झुका देते थे (और फरमाते थे) हे खुदा सुन ले (तेरे बन्दे क्या कह रहे हैं) हे खुदा गवाह रहना (कि यह लोग क्या गवाही दे रहे हैं) हे खुदा साक्षी रहना। (कि ये लोग कैसा स्पष्ट इक़रार कर रहे हैं) †। देखो जो लोग मौजूद हैं वह उन लोगों में जो मौजूद नहीं हैं इसका प्रचार करते रहें। सम्भव है कि कुछ सुनने वालों की अपेक्षा वे लोग जिन में प्रचार किया जाये इन बातों को अधिक याद रखने और उनकी रक्षा करने हारे सिद्ध हों"। ‡ पाठक इस खुत्बे को पढ़ें और फिर विचार करें कि इस अन्तिम खुत्बे में पैग़म्बर-इस्लाम ने (१) कुरान शरीफ़ के आधीन कर्म करने हारे को यह पक्का वचन दिया है कि वह कुपथगामी न होगा।

(२) मुसलमानों के परस्पर अधिकारों को, उनके प्राणों तथा धन सम्पत्ति को स्वरक्षित कर दिया है।

(३) स्त्रियों के अधिकारों पर सुदृढ़ता पूर्वक तथा अति स्पष्ट शब्दों में आकर्षित किया है।

(४) अपने बारे में अपनी उम्र भर की सुकृत्यों पर हमारे पूर्वजों से मानो मुहरें लगवाली हैं।

(५) प्रत्येक मुसलमान पर धर्म प्रचार का उत्तर दायित्व लागू किया है।

यही वे नियम तथा आज्ञायें हैं जिन्हें कार्यान्वित करके ही मुसलमान लोक परलोक की उन्नति तथा श्रेष्टता प्राप्त कर सकते हैं और जिनका छोड़ना और ठुकराना लोक-परलोक की क्षति का कारण है।

---

* मादनुल आमाल हदीस नं० ११०८ व ११०९ अबी उमामा से।

† सहीह मुस्लिम में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से।

‡ सहीह बुखारी में हज़रत अबू बक्र से।

आंहज़रत जब खुत्बः (धार्मिक भाषण) दे चुके तो उसी स्थान पर क़ुरान शरीफ़ की यह आयत उतरी * अलयौमा अक्मलतो लकुम दीनोकुम व अत्मम्तो अलैकुम निऽमती व रज़ीतो लकोमुल् इस्लामा दीना" अर्थात् आज † मैंने तुम्हारे धर्म को तुम्हारे लिये पूर्ण कर दिया, और तुम पर

* सहीह बुख़ारी में उमर बिन ख़त्ताब से।

अब मकाशेफ़ात का पर्ब्ब १४ पढ़िये जिसके १ से ५ पर्यन्त पाठ पिछले किसी पन्ने पर लिखे गये हैं, छठा पाठ अब लिखा जाता है—"और मैंने एक फ़रिश्ते को अनन्त इंजील लिये हुये देखा कि आकाश के बीचों बीच उड़ रहा है जिस में कि पृथ्वी के रहने वालों और समस्त जातियों और सम्प्रदायों और भाषा वालों और लोगों को सुसमाचार सुनाये"।

पादरी हूपर साहेब एम० ए० ने ब्रह्मविद्या के विद्यार्थियों तथा सर्व साधारण ईसाइयों के निमित्त मकाशेफ़ात का भाष्य लिखा है जिसे क्रिश्चियन नालेज सोसाइटी पंजाब ने छपवाया है। उक्त पादरी साहेब इस पुस्तक के पृ० १४० पर उपरोक्त आयत के अन्तर्गत लिखते हैं—ईसाइयों का एक सम्प्रदाय फ़्रान्सिसकी के नाम से पुकारा जाता है, वह इस पाठ से एक अनन्त इंजील की भविष्य वाणी निकालता है। यह सम्प्रदाय कहता है कि वर्तमान इन्जील इस अनन्तइन्जील के समक्ष पुराने अहदनामे (Old Tastment) के समान मन्सूख़ (समाप्त) होजा-यगी। वे लोग अनन्त शब्द पर अधिक ज़ोर देते थे। उनका गुरु "यहोयाक़ीम" था। यहाँ हूपर साहेब की राय लिखने से हमारा अभिप्राय केवल यह है कि ईसाइयों ने अनन्त इन्जील के नाम से किसी दूसरी पुस्तक का प्रादुर्भाव समझा है। वह पुस्तक क़ुरान शरीफ़ है और चूंकि "अक्मलतो लकुम् दीनोकुम" वाली आयत "यौमुल् हज्ज" में उतरी थी अतः योहन्ना ने हज्ज के मैदान के मकाशिफ़े के वक़्त ही इस अनन्त इन्जील को देखा। आकाशों के बीचों बीच फ़रिश्ते के उड़ने का अभिप्राय यह है कि क़ुरान शरीफ़ की शिक्षा उन समस्त देशों में शीघ्र ही फैल जायगी जो भूमध्य रेखा के आस पास होंगे अर्थात् संसार के बसे हुये तथा उन्नत देशों में क़ुरान का प्रचार जल्दी हो जायगा और जो देश ध्रुवों के निकट हैं उन में प्रचार कुछ देर में होगा।

† शब्द "आज" केवल नबी की पैग़म्बरी के काल ही की ओर संकेत नहीं करता है बल्कि उसका मतलब हज़ारों वर्ष पहिले के समय से है। इस "आज" का मतलब समझने के लिये नये तथा पुराने अहदनामों (सुसमाचार) को पढ़िये। हज़रत मूसा की पाँचवीं पुस्तक "इस्तिसना" है उसका अन्तिम पर्ब्ब ३३ वाँ है, वह इस प्रकार आरम्भ होता है—"यह वह आशीर्वाद है जो ख़ुदा के सेवक मूसा ने अपनी मृत्यु से पहिले बनी इस्राईल को प्रदान किया और उसने कहा कि ख़ुदावंद सीना से आया, और सईर से उन पर उदय हुआ, फ़ारान ही के पहाड़ से वह प्रकाशमान हुआ, दस हज़ार पवित्रों के साथ आया, और उसके सीधे हाथ में एक आतशी शरीअत (प्रज्वलित विधान) उनके लिये थी"। ईसाई विद्वान सहमत हैं कि यह भविष्य वाणी है और मुसलमान भी यही मानते हैं और उनका मतलब यह है कि मूसा अपने बाद के आने वालों को शौक़ और इन्तिज़ार में रख कर विदा हो जाते हैं।

अपनी करुणा (भी) पूर्ण कर दी, और मैंने	तुम्हारे लिये दीन इस्लाम पसन्द किया" ।

प्राचीन सुसमाचार (Old Testamant) की अन्तिम पुस्तक मलाकी नबी की पुस्तक है जो हज़रत मूसा से १०५४ वर्ष बाद की है। इस पुस्तक के अन्तिम पर्व का आरम्भ इस तरह होता है—"देखो मैं अपने रसूल को भेजूंगा और वह मेरे आगे। मेरे मार्ग को ठीक करेगा और वह खुदावन्द जिनकी खोज में तुम हो, हाँ समय का रसूल जिससे तुम प्रसन्न हो वह अपनी हैकल (मन्दिर) में अचानक आयेगा, देखो वह अवश्य आयेगा, सेनाओं का प्रभु कहता है" । इस से विदित हुआ कि पुराने अहदनामे की अन्तिम पुस्तक भी हमें इन्तिज़ार में ही छोड़कर समाप्त होती है।

अब नया अहदनामा (New Testamant) आरम्भ होता है, जिसे इन्जील भी कहते हैं। इन्जील को देखो हज़रत मसीह (यीसु खीष्ट) ने अपने सब से अन्तिम धर्मोपदेश में यह शब्द प्रयोग किये हैं—मेरी बहुत सी बातें हैं कि मैं कहूं परन्तु अब तुम उनको सहन नहीं कर सकते पर जब वह सत्यता का आत्मा आवेगा तो वह तुम्हें सारी सचाई का मार्ग बतलावेगा क्यों कि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ वह सुनेगा सो कहेगा और तुम्हें भविष्य की बातें बतलावेगा और वह मेरी महिमा प्रगट करेगा" (देखो योहन पर्व १६ पाठ १२ से १४ तक);।

उपरोक्त पाठों से भलीभाँति सिद्ध हो जाता है कि तौरेत और इन्जील दोनों हमें इन्तिज़ार में छोड़कर अलग हो जाती हैं, और केवल क़ुरान शरीफ़ ही वह पुस्तक है जो इस इन्तिज़ार को खत्म करती है और अन्तिम शाही आज्ञा 'अल् यौमा अकमल्तो लकुम" की घोषणा करती है। 'आज' का शब्द हज़ारों वर्षों के इन्तिज़ार करने वालों को सुसमाचार सुनाता तथा धर्म की पूर्ति की खबर देकर प्रसन्न चित्त बनाता है।

जब साइंस के विद्वान लोकोत्पत्ति के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हैं तो कहा करते हैं कि यह सृष्टि हज़ारों परिवर्तनों तथा हज़ारों वर्षों के बाद वर्तमान स्थिति को प्राप्त हुई है। मानों सृष्टि की अवस्था ऐसी पूर्ण जान पड़ती है कि उससे उत्तम कोई और नकशा भी हमारे ध्यान में नहीं आसकता क्योंकि वह हज़ारों वर्षों की बनावट और सजावट का सुपरिणाम है। इसी प्रकार हम अति दृढ़ता पूर्वक यह कहते हैं कि क़ुरान शरीफ़ का शब्द "अलयौम" अर्थात आज भी यही बतला रहा है कि मानव समाज के लिये उत्तम तम धर्म का यह पूर्ण रूप भी अगणित भिन्न २ जातियों प्रदेशों तथा विधानों के बाद हज़ारों वर्ष व्यतीत हो जाने पर व्यक्त हुआ है और अब उसका हक़ है कि वह प्रत्येक जाति प्रत्येक देश तथा प्रत्येक व्यक्ति को अनन्त सुसमाचार सुनाये, और दयालु कृपालु परमात्मा की दया व कृपा और करुणानिधान प्रभु के प्रेम की खुशखबरी प्रत्येक दुखी हृदय पापी को पहुँचाये, और सब के लिए रक्षा, क्षमा और आशीर्वाद के द्वार खोल दे, सब को अनन्त गुरु और ईश्वरीय पथप्रदर्शन प्रदान करे, और सब साधनों के इकट्ठा हो जाने पर घोषणा करदे कि आज धर्म पूर्ण होगया, आज ईश्वरीय करुणा के भर पूर खज़ाने मानव समाज के हवाले कर दिये गये।

पाठकवृन्द ! मैं इस स्थान पर हज़रत मसीह की भविष्यवाणी के सम्बन्ध में भी कुछ निवेदन करना चाहता हूं। इसके सम्बन्ध में मैंने कई विद्वान पादरियों से वार्तालाप किया है। उनमें से जो सज्जन इस पेशगोई को हमारे नबी के सम्बन्ध में नहीं मानते वे कहते हैं कि यह पेशगोई १२ हवारियों (यीशु के शिष्यों) पर उस दिन प्रगट हो चुकी है जिसका उल्लेख "आमाल" (प्रेरितों की क्रिया) के दूसरे पर्व में है। उस दिन पवित्रात्मा हवारियों पर उतरा था, वे भिन्न २ बोलियाँ बोलने लगे थे, प्रत्येक के सिर पर अग्नि की लपटें चमकती दिखाई देती थीं। मैंने उत्तर दिया कि उस दिन जो कुछ हुआ उसे सेंट पितर हमसे तुमसे पहिले ही बता चुका है। ठीक उसी समय जब कि पवित्रात्मा सब हवारियों तथा पितर पर विद्यमान था। प्रेरितों की क्रिया पर्व्व २ के पाठ १४ व १५ व १६ पढ़ो "तब पितर ने इन ग्यारहों के साथ खड़े होकर अपनी आवाज़ ऊँची की और उनसे कहा कि हे यहूदियो और यरूशलीम के सब निवासियो यह जानो और मन लगाकर मेरी बातें सुनो कि ये जैसा कि तुम समझते हो नशे में नहीं क्योंकि अभी पहर ही दिन चढ़ा है बल्कि यह वह बात है जो योएल नबी द्वारा बताई गयी है"। सो जब संट पितर पवित्र आत्मा की सहायता से बतला चुका कि उस दिन की घटना योएल (यूनुस) नबी की पेशगोई से सम्बन्धित है, मसीह की पेशगोई से नहीं, तो किसी पादरी को हक़ नहीं कि उसे मसीह की पेशगोई से सम्बन्धित बताये। यह बाहरी साक्षी है अब भीतरी तर्कयुक्त साक्षी भी स्वयं मसीह के शब्दों में समझ लीजिए, योहन की इन्जील पर्व्व १६ के पाठ १२ का सारांश यह है कि "जो बातें यीसु ने नहीं बतलाईं वह बातें आने वाला सत्यता का आत्मा बतलायेगा" किन्तु उस दिन हवारियों द्वारा कोई नई शिक्षा प्रगट नहीं हुई।

पाठ १६ में है कि वह सत्यता का आत्मा आने वाली बातें बतलायेगा, किन्तु उस दिन हवारियों अथवा पवित्रात्मा ने कोई भविष्य की बात नहीं बतलाई। पाठ १४ में है कि "वह सत्यता का आत्मा यीशु की महिमा प्रगट करेगा" परन्तु उस दिन हवारियों ने मसीह के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। साफ़ बात यह है कि मसीह की पेशगोई स्पष्ट रूप से हमारे नबी पर पूरी उतरती है क्योंकि पाठ १२ में है कि 'मेरी और बातें हैं कि मैं कहूँ परन्तु अब तुम उन्हें सहन नहीं कर सकते, ऐसी बातें जो मसी ने नहीं कहीं और आँहज़रत ने कही हैं बहुत सी हैं, क़ुरान और इन्जील पढ़िए सैकड़ों उदाहरण मिलेंगे।

मसीह ने पाठ ३ में फरमाया है कि "वह तुम्हें सारी सच्चाई का मार्ग बतायेगा" इसी के अनुसार क़ुरान शरीफ़ में है "वल्लज़ीना जाऽ बिस्सिदक़" (अर्थात मुहम्मद वह है 'जो सारी सच्चाई लेकर आया है) "यालमो-हुमुल किताबो वल् हिकमा" (अर्थात मुहम्मद संसार को धर्म तथा ज्ञान की शिक्षा देता है) खुली हुई बात है कि जो धर्म व ज्ञान का गुरू, धर्म व ज्ञान की पूर्ण शिक्षा देता हो सारी सच्चाई उसी के पास होगी।

मसीह ने इसी पाठ में फरमाया है "वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ वह सुनेगा उसे कहेगा" क़ुरान शरीफ़ में आँहज़रत का एक गुण इन्हीं शब्दों में वर्णन किया गया है—मा यन्तेको अनिल् हवा इन हुवा

की ओर से जिबह् किये। यह कुर्बानी मिना स्थान	पर की गई थी जो हजरत इब्राहीम के समय से

इल्लावहयुय्यू'हा, अल्लमाहू शदीदुल कोवा" (अर्थात मुहम्मद अपनी इच्छा से कुछ नहीं बोलता जो कुछ वह सुनता है यह तो वही है जो उसके पास भेजी गयी है और पूर्ण सामर्थ्यवान (परमात्मा) ने उसे सिखलाई है।"

मसीह ने पाठ १४ में कहा है "वह मेरी महिमा करेगा" चुनांचे कुरान शरीफ़ और हदीसों की सब पुस्तकों में वह शब्द मौजूद हैं जो आँहजरत की जबान से मसीह की महिमा के बारे में निकले हैं। बहुत से यहूदी नबी की सेवा में आते थे जो यह कहते थे कि हम लोग आपको सच्चा रसूल मानने को तैयार हैं किन्तु हम मसीह को सच्चा नहीं मान सकते। इस पर हजरत साफ़ फ़रमा देते थे कि जो कोई मसीह पर ईमान नहीं लाता वह मुझ पर ईमान नहीं लाता। इस शिक्षा का यह परिणाम निकला कि आज प्रत्येक मुसलमान सच्चे दिल से मसीह की महिमा प्रगट करता है और उन्हें सच्चा रसूल मानता है। इस तरह ३३ करोड़ मुसलमान संसार में मसीह की साक्षी दे रहे हैं। यद्यपि इस्लाम से पूर्व ईसाइयों के पास एक भी बाहर का साक्षी मौजूद न था और अब भी मुसलमानों के अतिरिक्त कोई उनकी साक्षी नहीं देता जिससे सत्यवती मरियम की पवित्रता, मसीह की उत्पत्ति और मसीह के मोजिजों का अनुमोदन होता हो। ईसाई सज्जन सोचें कि 'वह मेरी महिमा करेगा' का प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध होना इससे अधिक और क्या हो सकता है।

हाँ पाठ १३ का एक वाक्य रह गया। मसीह ने बतलाया कि वह तुम्हें भविष्य की खबरें देगा। जिन ईसाई विद्वानों ने कुरान और हदीसों को पढ़ा है वे कहा करते हैं कि आँहजरत ने कोई पेशगोई नहीं की। जब मैं यह बात उनमें से किसी के मुख से सुनता हूँ तो मुझे यह शोक होता है कि उसे हमारे ग्रन्थों के बारे में कितना कम ज्ञान है और यह आश्चर्य होता है कि जब उसे ज्ञान नहीं तो ऐसा दावा वह क्यों करता है। यदि मैं आँहज़रत की भविष्य वाणियों को इस जगह लिखने बैठूँ तो एक अलग ग्रन्थ बन जायेगा इसलिये इस विषय पर ईश्वर ने चाहा तो कभी अलग पुस्तक लिखूँगा। इस जगह संक्षेप में उल्लेख करना इसलिए आवश्यक है कि पाठ १३ के बारे में मसीह के कथन की पुष्टि हो जाये।

पहिली पेशगोई—मक्के वाले नबी और मुसलमानों के जानी दुश्मन थे उन्हों ने मुसलमानों और इस्लाम के मलियामेट (नष्ट भ्रष्ट) करने में यथा सम्भव कोई यत्न उठा न रक्खा था। उनकी शत्रुता ऐसी सख्त और लगातार थी कि ऐसा अनुमान करने का कोई आधार न पाया जाता था कि यही लोग एक दिन इस्लाम के अनुयायी, मुसलमानों के भाई, और आँहज़रत के सेवक बन जायेंगे परन्तु क़ुरान ने पहिले ही से यह पेशगोई कर दी थी "वे इस्लाम की सचाई को कुछ समय के बाद जान लेंगे" यह भविष्य वाणी स्वयं हज़रत के जीवन ही में विघटित हो गई और सब मक्के वाले मुसलमान हो गये, जिन में खालिद बिन वलीद जैसे सूरमा भी थे जो उहद के युद्ध में मुसलमानों को परास्त करने में सफल हुए थे और अम्र बिन आस जैसे भी थे जो मुसलमानों को कैद कराने के लिये हबश के बादशाह के पास गये थे और उसमान बिन अबू तलहा जैसे भी थे जो आँहज़रत को काबे में ईश्वरोपासना के लिए भी घुसने न देते थे।

कुर्बानी की जगह बनी चली आती है। कुर्बानी	करके नबी काबे में पधारे फिर तवाफ़ किया।

दूसरी पेशगोई—अरब के समस्त क़बीलों और सब धर्मों के अनुयाइयों ने इस्लाम के झुठलाने पर सहयोग किया था। मूर्तिपूजक, मजूस, साबी, यहूदी, ईसाई, नास्तिक, यद्यपि परस्पर विरोध रखते थे किन्तु वे सब हज़रत को झुठलाने और इस्लाम को नष्ट करने पर सहमत थे। कोई लक्षण ऐसा न था कि ऐसे भिन्न २ धर्मों एवं विचारों वाले क्यों कर इस्लाम की सचाई को मानने वाले बन जायेंगे किन्तु कुरान ने यह पेशगोई कर दी थी कि "हम उन्हें शीघ्र ही अपने चिन्ह उनके आस पास और स्वयं उनके भीतर भी ऐसे दिखला देंगे कि उन पर यह बात स्पष्टता खुल जायगी कि इस्लाम सत्यधर्म है"। (सू० ४१ रु० ६) यह पेशगोई अपनी पूरी ताक़त से विघटित हुई और नबी के शुभ जीवन ही में अरब के प्रत्येक सम्प्रदाय, प्रत्येक क़बीले ने इस्लाम की सचाई को समझा, देखा, जाना और अंततः उस पर सब ईमान ले आये।

तीसरी पेशगोई—ईरानी सरकार, रूमी सरकार के साथ युद्ध कर रही थी, रूमी पराजित हो गये। ईरानी अग्नि पूजक और रूमी अह्ले किताब ईसाई थे। ईरानियों से मक्के के मूर्तिपूजकों को और रूमियों से मुसलमानों को सहानुभूति थी। जब ईसाई सरकार हार गई तो मक्के के मूर्ति-पूजक खूब उछले कूदे और इसे अपने लिये इस बात का सगुन समझने लगे कि हम मुसलमानों पर भी विजयी हो जायेंगे। मुसलमानों को इन बातों से बहुत दुःख पहुँचा। कुरान शरीफ़ ने पेशगोई की "ईसाई अपने देश की सीमा पर हार गये हैं परन्तु वे कुछ वर्षों में अपने शत्रुओं पर विजयी हो जायेंगे"। (सू० रूम रु० १) जहाँ तक बुद्धि तथा अनुभव से काम लिया जा सकता और जहाँ तक अनुमान किया जा सकता था इस पेशगोई का किसी को विश्वास नहीं हो सकता था न अधर्मियों को हुआ। क्यों कि ईसाई ऐसे हारे थे कि कुछ वर्षों तक वह पनप भी न सकते थे। उब्बी बिन खलफ़ ने अत्यन्त शरारत से काम लेकर कुरान को झुठलाने की गरज़ से घोषणा कर दी कि यदि यह पेशगोई सच्ची निकली तो मैं तीन सौ ऊँट हार जाऊँगा। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ने धर्म की सचाई प्रगट करने की गरज़ से उससे शर्त लगाली। उपरोक्त आयत उतरने से ठीक आठवीं वर्ष वही हुआ जो कुरान ने बतलाया था। अबूबक्र सिद्दीक ने शर्त जीत ली। यह वह पेशगोई है जिसकी ताईद रूम और ईरान का इतिहास भी करता है। स्मरण रहे कि कुरान की इस आयत में शब्द "बिज़्आ" प्रयोग किया गया है, अरबी भाषा में "बिज़्आ" इकाइयों पर बोला जाता है अर्थात् १ से ६ तक की गणना इस में होती है। सारांश यह कि ६ वर्ष के भीतर ही रूमी विजयी होंगे।

चौथी पेशगोई—"पैगम्बरी के प्रादुर्भाव का आरम्भिक काल था, वही" (ईश्वरीय वाणी) आरम्भ होकर रुक गयी थी। काफ़िरों ने नबी को खिजाने के लिये कह दिया कि मुहम्मद का खुदा रूठ गया, मुहम्मद को उसने छोड़ दिया। इस घटना पर खुदा का जो वचन नबी की सन्तावना के लिये उतरा उसमें एक पेशगोई भी की गयी थी फ़रमाया गया "आपका भविष्य आपके भूतकाल से उत्तम होगा" (सू० जुहा रु० १) कुरान की इस

आयत का आशय यह है कि नबी बराबर उन्नति को प्राप्त होते रहेंगे और आपकी सफलता लगातार होती ही रहेगी। सो आँहज़रत के समस्त जीवन को देख लीजिए यह भविष्यवाणी कैसी ठीक उतरती है। ज़ाहिर है कि कोई भी व्यक्ति अपने जीवन के सम्बन्ध में ऐसी खुली हुई भविष्यवाणी शत्रुओं के समक्ष मुक़ाबले के समय नहीं कर सकता जब तक कि वह स्वयं ख़ुदा की ओर से न हो। उपरोक्त आयत में शब्द "आख़ेरत" आया है यह शब्द उस जीवन पर भी बोला जाता है जो प्रलय के बाद आरम्भ होगा अतः मुसलमानों का ईमान इस पेशगोई के बारे में यह भी है कि आँहज़रत की श्रेष्ठता एवं महिमा परलोक में समस्त मनुष्यों पर पूर्ण रूप से प्रगट होगी और चूँकि लौकिक जीवन में यह भविष्य वाणी बराबर पूरी होती रही है अतः मुसलमानों का उपरोक्त विश्वास भी एक विशुद्ध तथा मज़बूत आधार पर आधारित है।

पाँचवीं पेशगोई— हज़रत के पुत्र का देहान्त हो गया था। शत्रु हर्ष प्रगट करने लगे कि अब मुहम्मद का नाम लेवा भी न रहा। क़ुरान शरीफ़ ने पेशगोई की "इन्ना अ'तैनाकल् कौसर"— और फ़रमाया "इन्ना शानियका हुवल अब्तर" (सू० कौसर रु० १) कौसर शब्द में वह समस्त खुले और छुपे दैवी पुरस्कार शामिल हैं जो हज़रत को मिले थे अथवा परलोक में मिलेंगे। और "उम्मते मुहम्मदिया" की वह संख्या भी इसी में शामिल है जो दिन भर में बीसियों बार हज़रत के नाम पर दरूद तथा सलाम भेजती है, और आपकी सच्चाई की साक्षी देती है और आपके पवित्र नाम का प्रचार करती है। आज संसार का कोई देश, पृथ्वी का कोई भाग, मुसलमानों से खाली नहीं किन्तु सत्यधर्म के उन शत्रुओं का नाम ऐसा मलियामेट हुआ कि कोई भी नहीं जानता यह पेशगोई आज भी पूरी सच्चाई के साथ संसार में प्रकाश फैला रही है।

छठी पेशगोई—मुसलमान मक्के से बाहर निकाले जाते थे। वे बे घरबार तथा बे धन सम्पत्ति हो जाते थे। सारा देश शत्रु बना हुआ था और मानो ऐसा जान पड़ता था कि अब शीघ्र ही ये लोग संसार से समाप्त हो जायेंगे। उस समय क़ुरान शरीफ़ ने पेशगोई के तौर पर यह घोषणा की कि ख़ुदा तुममें से विश्वासियों व सद्कर्मियों को यह बचन देता है कि उन्हें भूमि का ख़लीफ़ा (ईश्वरीय राज का प्रतिनिधि) बनाया जायेगा जैसा कि ख़ुदा ने तुमसे पहिले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया" (सू० नूर,रु० ७) मुसलमानों से पहिले जो लोग धर्मप्रिय जाति कहलाते थे वे बनी इस्राईल हैं। अल् अर्ज़ (अर्थात् ईश्वरीय बचन वाली भूमि) के सम्बन्ध में इब्राहीम, इस्हाक़ याक़ूब, मूसा और दाऊद को ख़ुदा ने बचन दिया कि वह सदा के लिये इब्राहीम की संतान को दी गयी है (उत्पत्ति पर्ब्ब २४ पाठ ७) हज़रत इब्राहीम के बाद यह बचन,बनीइस्राईल के साथ प्रगट होता रहा। वही हज़ारों वर्ष तक इस भूमि के स्वामी रहे। क़ुरान ने बतलाया कि अब वह बचन इब्राहीम की दूसरी शाख अर्थात मुसलमानों के साथ पूरा किया जायेगा। इस पेशगोई ने हज़ारों वर्ष के इतिहास को बदल डाला और शाम का देश अबूबक्र और उमर के ख़िलाफ़त काल में मुसलमानों को मिल गया। आज तेरह सौ वर्ष का इतिहास इस पेशगोई की सच्चाई

को मान रहा है और प्रत्येक विरोधी के लिये एक खुला हुआ चिन्ह है कि शाम (सीरिया) देश किसके पास है और पृथ्वी का स्वामी अपना पक्का बचन किस जाति के साथ पूरा कर रहा है।

सातवीं पेशगोई—विरोधियों ने मुसलमानों पर आक्रमण किया, मुसलमानों ने जिन क़बीलों से सन्धि की थी वे शत्रुओं की संख्या, शक्ति, वैभव तथा ऐश्वर्य को देख कर मुसलमानों का साथ देने से हट गये थे। प्रभु ने अपनी गुप्त सहायता से मुसलमानों को शत्रुओं के हमले से बचाया तब सन्धि करने वाले क़बीले हज़रत की सेवा में उपस्थित हुए और अपना अपराध स्वीकार करते हुए क्षमा चाही। उनके लिए कुरान में यह आज्ञा उतरी "अच्छा! तुम्हें भविष्य में एक और अधिक शक्ति-शाली जाति का सामना करने के लिए बुलाया जायेगा, उससे युद्ध होगा, या वह मुसलमान हो जायगी" (सू० फ़तह रु० २) (यदि तुम उस समय सहायता करोगे तो यह अपराध क्षमा कर दिया जायेगा)। नबी के पवित्र जीवन का अन्त होते ही ईरानी राज्य दक्षिणी अरब में और रूमी राज्य उत्तरी अरब में अपने खोये हुए राज्य को लौटाने के उपाय अमल में लाने लगे। हज़रत के ख़लीफ़ा अबूबक्र सिद्दीक़ ने अपनी रक्षा के लिये इन शक्तियों को कमज़ोर कर देना आवश्यक समझा अतः पहले रूमी सरकार के साथ इराक़ व शाम में फिर ईरानी सरकार के साथ फ़ार्स व ख़ुरासान में युद्ध हुआ। इन युद्धों में अरब के वे सब क़बीले जो पहिले "मुख़ल्लफ़ीन" की उपाधि पा चुके थे और जिनका अपराध क्षमा किया जाना कुरान ने आगामी युद्ध की सहायता पर निर्भर ठहरा दिया था शामिल हुए थे।

इस आयत के साथ अब यह आयत भी पढ़ लेना चाहिये (अनुवाद) "ख़ुदा ने तुम मुसलमानों को बड़ी२ ग़नीमतों का वचन दिया है, उन में से यह तो पहिली ग़नीमत है जो शीघ्र ही मिल गई है" फिर फ़रमाया "इसके अतिरिक्त और भी ग़नीमतें हैं, जिनकी प्राप्ति की तुम में सामर्थ्य नहीं किन्तु ख़ुदा ने उन पर घेरा डाल दिया है"। (सू० फ़तह रु० ३) इस के बाद उत्तम प्रदेशों में मुसलमानों को भारी विजय प्राप्त होती रही।

अब उधारणार्थ हदीस की पुस्तकों की पेशगोइयों में से एक पेशगोई लिखता हूं। पाठकों को यह स्मरण रहना चाहिये कि हमारे ईसाई भाई हदीसों के उद्धरण नहीं मानते। वे कहा करते हैं कि ये पुस्तकें हज़रत के जीवन के पश्चात इकट्ठा की गयीं। ख़ुदा करे कि वे मुसलमानों ही के व्यवहार से कुछ सीखें कि हम क्योंकर चारों इन्जीलों के उद्धरण सुनते और मानते हैं केवल इसलिये कि ईसाई उन्हें मानते हैं और ठीक समझते हैं, यद्यपि ईसाई ग्रन्थों में सर्वसम्मति से यह मान लिया गया है कि यह सब पुस्तकें मसीह से बहुत समय पश्चात रची गयीं और ईसाई विद्वानों के निकट उनके रचेता, व उनके रचनाकाल तथा कुछ लेखों के सम्बन्ध में बहुत कुछ संदेह और मत भेद तथा भिन्नता मौजूद है।

ख़ैर अब मैं हदीस लिखता हूं (अनुवाद)—"मस्तूरद कर्शी ने अमू बिन आस (स० ४३ हि०) के आगे कहा मैंने रसुलुल्लाह से सुना आप फ़रमाते थे प्रलय उस वक़्त होगी जब रूमी (यूरोपियन) लोग सब लोगों से

अधिक होंगे। अमू ने कहा देख तू क्या कहता है ? मस्तूरद ने कहा मैं तो वही कहता हूं जो रसूलुल्लाह से सुना है अमू ने कहा तब तो ठीक है। निस्सन्देह उनमें चार गुण हैं:—

(१) वे आपत्ति के समय शान्तिपूर्ण व सहनशील बने रहते हैं।

(२) विपत्ति के बाद शीघ्र ही संभल जाते हैं।

(३) भागने के बाद सर्वप्रथम पुनः आक्रमण करते हैं।

(४) दीन, दुखी, अनाथ तथा दुर्बलों के प्रति अन्य लोगों से उत्तम हैं। एक पाँचवाँ गुण और है जो अति उत्तम है। वे शासकों के अत्याचार को सब लोगों से बढ़कर रोकते हैं।" विदित हो कि यह हदीस "मुस्लिम" की है इमाम मुस्लिम का देहांत रजब स० २६१ हि० में हुआ था अतः प्रत्येक विरोधी को भी इतना अवश्य मानना पड़ेगा कि यह भविष्यवाणी मुसलमानों में तीसरी शताब्दी में फैल चुकी थी। यह वह समय था जब सारे संसार पर इस्लामी झण्डा फहरा रहा था। विद्या, ज्ञान, शक्ति संस्कृति तथा राजनीति में मुसलमान सर्वोपरि थे। उस समय यह कहना कि यह सारी श्रेष्टता धूल में मिल जायगी और संसार में यूरोपीय जातियों का राज्य स्थापित हो जायेगा, बिलकुल बुद्धि के प्रतिकूल बात थी और मुसलमानों के लिए असगुन भी था। किन्तु इमाम मुस्लिम ने उसे अपनी पुस्तक में लिख दिया क्यों कि उनको विशुद्ध रीति से ज्ञात हो गया था कि यह आँहज़रत का कथन है। अब शताब्दियों पीछे यह पेशगोई प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त हो रही है। आज कोई बतलाये कि कौन सा देश है जो ईसाई राज्य के आधीन होने से अथवा उसके प्रभाव या कूटनीति से पृथक है। अतः इस पेशगोई के ठीक होने पर क्या एतराज़ किया जा सकता है। जब यह पेशगोई सत्य हैं तो मसीह ने योहन्न पर्ब्ब १६ पाठ १२ में हमारे नबी के जो लक्षण बतलाये हैं वह भी ठीक निकले। इतना लिखने से अभिप्राय यह है कि ईसाई भाई हज़रत मसीह के कथन को मानें और हज़रत मुहम्मद (स०) का अनुसरण करें जिनकी सूचना प्रत्यक्ष लक्षणों सहित इन्जील में दी गई है।

३—पढ़ो यसूइयाह पर्ब्ब ६ पाठ ७—"क़ीदार की सब भेड़ें तेरे पास इकट्ठा होंगी, नबोत के भेंढें तेरी सेवा में उपस्थित होंगे। वे मेरी स्वीकृति के निमित्त मेरे आल्टर पर चढ़ाये जायेंगे और मैं अपने शौकत के घर को श्रेष्टता प्रदान करूंगा"।

पाठको! नबीत व क़ीदार हज़रत इस्माईल के पुत्रों के नाम हैं। (देखो उत्पत्ति पर्ब्ब २५ पाठ १३) क़ुरैश के क़बीले क़ीदार की संतान हैं और अन्य बहुत से क़बीले नबीत की संतान हैं। इस पाठ में बतलाया है कि अरब के सारे क़बीले उस वक़्त क़ुर्बानी करेंगे। इस पाठ में अल्लाह ने क़ुर्बानी के स्थान को अपना मज़हब बतलाया है इससे विदित होता है कि क़ुर्बानी का यह वह स्थान है जहाँ की क़ुर्बानी परमात्मा स्वीकार करता है और इस स्थान को प्राचीन काल से "इलाही क़ुर्बान गाह" होने का गौरव प्राप्त है। उपरोक्त पाठ में यह भी कहा गया है कि "मैं अपने शौकत के घर को श्रेष्टता दूँगा" सो विदित हो कि "शौकत का घर" शब्द "बैतुल हराम" का अनुवाद

आदर्श का पुनः प्रचलन, नास्तिकों की कुप्रथाओं का खण्डन, एकेश्वरवाद की घोषणा, इस्लामी शिक्षा का सार्वजनिक प्रचार।

चूंकि नबी ने उम्मत को इस हज्ज में अन्तिम धर्मोपदेश दिया था इसलिए इस हज्ज का नाम "हज्जतुलबलाग़" भी है, और चूंकि इस हज्ज में हज़रत ने उम्मत को अन्तिम शिक्षाएं प्रदान की थीं इसलिए इसका नाम "हज्जतुलवदाऽ" भी है।

अतएव आँहज़रत इस भारी सफलता और एक लाख चालीस हज़ार धर्मात्माओं के समक्ष ईश्वर की एकता की शिक्षा और उसी के अनुसार कर्म की ताकीद और अन्य आज्ञाओं का प्रचार करने के बाद प्रसन्नता पूर्वक मदीने की ओर चले। मार्ग में बुरैदः अस्लमी ने अली मुर्तज़ा के विरुद्ध कुछ शिकायतें आप से कीं। शिकायतें हज़रत अली के उस व्यवहार के सम्बन्ध में थीं जो यमन के राज्य में हज़रत अली ने गनीमत का माल बाँटने में बरता था।

ग़दीर का खुत्बः—वास्तविक में बुरैदः की समझ का कुसूर था इसलिये नबी ने "खुम्म-ग़दीर" पर एक ओजस्वी भाषण दिया, और उसमें अहूले बैत (निज घर वालों) के आदर सम्मान को प्रकट किया, और हज़रत अली का हाथ पकड़कर फ़रमाया "मन कुन्तो मौलाहो फ़अलिय्युन्न मौला" जिसका मैं मौलास्वामी हूँ अली भी उसका मौला है।

इस खुत्बे के बाद उमर फ़ारूक़ ने अली मुर्तज़ा को इस सम्मान पर बधाई दी और बुरैदः ने अपना सारा जीवन अली के प्रेम तथा अनुसरण में बिताया। अंततः यह धर्मात्मा जमल के युद्ध में शहीद हुआ था।

सं० ११ हि०— यह वह सन है जिसमें अल्लाह के रसूल ने पैग़म्बरी का हक़ पूरा २ अदा करके अपने भेजने हारे की ओर प्रस्थान किया। वफ़ात से ६ महीने पहिले यह सूरत उतरी थी— "इज़ा जाऽ नसरुल्लाहे वल् फ़त्हो वराऐतन्नसा यदूख़ोलूना फ़ी दीनिल्लाहे अफ़वाजा, फ़सब्बिह बेहम्दे

है और अल्लाह ने काबे का नाम कुरान शरीफ़ में यही बतलाया है फ़रमाया—"अल्लाह ने बैतुल हराम (काबे) को शौकत का घर बनाया जिस में कि मख़लूक़ (जनता) वहाँ आकर ठहरे"।

अरब के क़बीलों का नाम, मिना का पता, और साथ ही बैतुल्लाह का उल्लेख यह ऐसी बातें हैं जो पेशगोई को आँहज़रत के लिये विशेष करती हैं।

यसइयाह के पर्व ६० के १ से ६ पाठ को हम इसी लेख के आरम्भ में लिख चुके हैं अब पर्व के पूर्व भाग को मिला कर पढ़ो। पाठ ५ में मदियान, ईफ़ा और सबा के नाम भी हैं और ये सब क़बीले हज्ज में मौजूद थे। पाठ ५ में सबा के सोना और लुबान लाने का ज़िक्र है। सबा यमन देश का नाम है क्यों कि सबा ही ने इसे बसाया था। जिस साल आँहज़रत ने यह हज्ज किया था उस साल हज़रत अली यमन के शासक और इस्लामी प्रचारक थे। वे हज्ज के निमित्त यमन से सीधे मक्के आये थे और सबा (यमन देश) का कर उन्हों ने इसी जगह (अर्थात् मक्के ही में) नबी की सेवा में उपस्थित किया था। यह ऐसी स्पष्ट पेशगोई है कि हमारे ईसाई मित्र कोई बहाना नहीं ढूंढ सकते।

रब्बेका वस्तग़फ़िर्हो इन्नहू काना तव्वाबा" अर्थात (हे पैगम्बर) अल्लाह की सहायता और विजय पहुँच गयी और लोगो के जत्थों पर जत्थे ईश्वरीय धर्म में प्रविष्ट होते देख लिये तो अब अल्लाह की स्तुति कीजिए, वही है जिसकी ओर झुकना है।" नबी समझ गये कि इस साल में कूच की यह सूचना दी गई है।*

सं० १० हि० के रमज़ान में नबी ने २० दिन "इऽतेकाफ़" (मस्जिद के एकांत स्थान में ईश्वर की तपस्या के लिए बैठना) किया, यद्यपि प्रत्येक वर्ष केवल १० दिन किया करते थे। † अपनी प्रिय पुत्री फ़ातेमा बतूल को इसका कारण यही बताया था कि मुझे अपनी मृत्यु निकट जान पड़ती है। ‡

हज्जतुल्वदाऽ के प्रसिद्ध ख़ुत्बे में भी हुजूर ने फ़रमा दिया था कि मैं निकट ही संसार छोड़ने वाला हूँ। §

सं० ११ के "सफ़र" मास में हुजूर ने पर-लोक गमन की तैयारी आरम्भ कर दी। एक दिन हुजूर उहद गये और उहद के शहीदों के झुण्ड पर नमाज़ पढ़ी, वहाँ से लौटकर मिम्बर पर खड़े होकर फ़रमाया" लोगो! मैं तुमसे आगे जाने वाला हूँ और साक्षी देने वाला हूँ। ख़ुदा की कसम मैं अपने हौज़ को यहाँ से देख रहा हूँ। मुझे देशों के ख़ज़ानों की तालियाँ देदी गयी हैं। मुझे यह भय नहीं रहा है कि तुम मेरे बाद मुशरिक हो जाओगे, किन्तु भय यह है कि मुनाफ़सत (परस्पर एक दूसरे से बढ़ जाने का प्रयत्न) न करने लगो। ⁑

फिर बकीऽ के क़बरुस्तान में आधी रात के समय पधारे और मृतकों के लिए दुआ की। × दोनों स्थानों पर "इन्ना बेकुम सलाहेक़ून" + का वाक्य पढ़ा मानों उन्हें अपने आने का सुसमाचार सुनाया।

फिर मुसलमानों को इकट्ठा किया और फ़रमाया—"शाबाश! मुसलमानों!! अल्लाह तुमको अपनी करुणा में रक्खे, तुम्हारी व्याकुलता को दूर करे, तुमको जीविका दे, तुम्हारी सहायता करे तुम्हें बड़ाई प्रदान करे, तुम्हें शान्ति पूर्वक रक्खे मैं तुमको अल्लाह से डरने की वसीअत करता हूँ और अल्लाह ही को तुम्हारा रक्षक ठहराता हूँ, और तुमको उसी से डराता हूँ क्योंकि मैं खुला हुआ डरानेहारा हूँ। देखो! अल्लाह की बस्तियों में और उसके बन्दों के सम्मुख बड़प्पन तथा अभिमान

---

* तिब्रानी में जाबिर से।

† सहीह बुख़ारी में अबू हुरैरः से।

‡ बुख़ारी में हज़रत फ़ातेमा से।

§ सहीहैन में हज़रत जाबिर से।

⁑ सहीह बुख़ारी में उक़्बः बिन आमिर से। मुनाफ़सत एक दूसरे से बढ़ निकलने के प्रयत्न को कहते हैं।

× सहीह बुख़ारी में, दारमी से।

\+ ज़रक़ानी।

को ग्रहण न करना । अल्लाह ने मुझसे और तुम सबसे फ़रमाया है "यह अन्त का घर हम उन लोगों को देते हैं जो पृथ्वी पर खराबी और उपद्रव का इरादा नहीं करते और उत्तम प्रतिफल तो संयमियों के लिए हैं।" फिर यह आयत पढ़ी "अलैसा फ़ी जहन्नमा मसवल्लिल् मुतकब्बेरीन" क्या घमण्ड करने हारों का ठिकाना नर्क नहीं है ? अन्त में फ़रमाया "तुम सबको आशीर्वाद, और उन सबको जो इस्लाम द्वारा मेरा अनुसरण करें।"

रोग का आरम्भ—२९ सफ़र सोमवार का दिन था, आँहज़रत एक जनाज़े से लौटे आरहे थे, मार्ग ही से सिर में दर्द आरम्भ हो गया। फिर तेज़ बुखार चढ़ आया। अबू सईद खुदरी का कथन है कि जो रूमाल हुजूर ने पवित्र सिर से बाँध रक्खा था मैंने उसे हाथ लगाया, सेंक सी लगती थी, शरीर ऐसा गर्म था कि मेरा हाथ सहन न कर सका, मैंने आश्चर्य प्रकट किया। फ़रमाया नबियों से बढ़कर किसी को पीड़ा नहीं होती इसीलिए उनका प्रतिफल भी सबसे बढ़ा हुआ होता है।

रोग की अवस्था में भी ११दिन तक मस्जिद में आकर स्वयं नमाज़ पढ़ाते रहे। रोग के सब दिन १३ अथवा १४ थे।

अन्तिम सप्ताह—अन्तिम सप्ताह नबी ने बीबी आयशः के घर पूरा किया था। उम्मुल् मोमेनीन हज़रत आयशः फ़रमाती हैं कि जब कभी आँहज़रत अस्वस्थ हुआ करते थे तो यह दुआ पढ़ा करते थे और अपने हाथ शरीर पर फेर लिया करते थे "इज़ हब्लल् बासा रब्बन्नासे वश्फ़े अन्त श्शाफ़ी ला शिफ़ाऽ इल्ला शिफ़ाओका शिफ़ाअन्न ला योग़ादेरो सक़मा" अर्थात "हे मनुष्यमात्र के पालनहार प्रभु ! भय को दूर करदो और नीरोग्यता प्रदान करो, स्वास्थ देने हारा तू ही है और उसी स्वास्थ्य का नाम स्वास्थ्य है जो तू प्रदान करता है। ऐसा स्वास्थ्य प्रदानकर कि कोई कष्ट शेष न रहे।" उन दिनों मैंने यही दुआ पढ़ी और हज़रत के हाथों पर फूंक कर चाहा कि उनके हाथों को पवित्र शरीर पर फेर दूं। हज़रत ने हाथ हटा लिए और फ़रमाया "अल्लाहुम्मग़फ़िर्ली वल् हक़्नी बिर्रफ़ीक़िल अऽला।*

वफ़ात से पांच दिन पहिले—बुध का दिन था कि नबी ने "मग़ज़ब" † में बैठ कर सात कुओं की सात मशकों का जल सिर पर डलवाया, इस उपाय से कुछ आराम मिला, तबियत कुछ हलकी जान पड़ी, तो मस्जिद में पधारे फ़रमाया "तुमसे पहिले एक जाति हुई है जो नबियों और धर्मात्माओं की क़ब्रों की पूजा किया करते थे तुम ऐसा न करना।"

फ़रमाया "उन यहूदियों, उन ईसाइयों पर खुदा लानत करे जिन्होंने नबियों की क़ब्रों को पूजा की जगह बना लिया" ‡ फ़रमाया "मेरी क़ब्र को मेरे बाद मूर्ति न बना देना कि उसकी पूजा करो" § फ़रमाया "उस जाति पर अल्लाह का अत्यन्त क्रोध है जिन्होंने नबियों की क़ब्रों को पूज्य स्थान बना

* बुख़ारी में अब्दुल्लाह बिन उत्बः बिन मसऊद से।

† मग़ज़ब पत्थर के तग़ार अथवा ताँबे के टब को कहते हैं।

‡ सहीहैन में उर्वा से।

§ मोता इमाम मालिक में अताबिन यसार से।

लिया है, देखो मैं तुम्हें इससे रोक रहा हूँ, देखो मैं प्रचार कर चुका, परमात्मा तू साक्षी रहना, परमात्मा तू इस पर साक्षी रहना।" फिर नमाज पढ़ाई, फिर मिम्बर पर बैठकर § परमात्मा की स्तुति के बाद फ़रमाया "मैं तुमको अन्सार के निमित्त वसीअत करता हूँ, ये लोग मेरे शरीर के वस्त्र और मेरे गहरे साथी रहे हैं इन्होंने अपने धर्म का पूरा पूरा पालन किया है, और अब उनके हक़ बाक़ी रहे हैं। उनमें से अच्छा कर्म करने वालों का आदर करना और भूल चूक करने वालों को क्षमा करना।" ‡

फ़रमाया "एक बन्दे के आगे लोक और उसका सर्वस्व रक्खा गया किन्तु उसने परलोक ही को चाहा"। इस बात को हज़रत अबूबक्र ने समझा उन्हों ने कहा "हमारे माता-पिता, हमारी सम्पत्ति, हमारा सर्वस्व आप पर न्यौछावर हों *।"

वफ़ात से चार दिन पहिले—बृहस्पतिवार की घटना है कि रोग अत्यन्त बढ़ गया। उसी अवस्था में आप ने लोगों से फ़रमाया "लाओ तुम्हें कुछ लिख दूँ कि तुम मेरे पश्चात् कुपथगामी न हो जाओ" ? कुछ लोगों ने कहा कि "हज़रत पीड़ा से व्याकुल हैं, क़ुरान हमारे पास है और यह हमारे लिये काफी है"। इस पर परस्पर मत-भेद हुआ। कोई कहता था कि लिखने की सामग्री ले आओ कि ऐसा लेख लिखा जाए, कोई कुछ और कहता था। यह शोर बढ़ा तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि सब उठ जाओ †।

इस के बाद उसी दिन आँहज़रत ने तीन वसीयतें फ़रमाईं।

(१) यहूदियों को अरब से बाहर निकाल दिया जाये।

(२) डिपोटेशनों का आदर सत्कार उसी प्रकार किया जाये जैसा कि मेरी ओर से किया जाता रहा है।

तीसरी वसीयत सुलैमान की इस रवायत में वर्णित नहीं हुई ▯ किन्तु सहीह बुखारी में अब्दुल्लाह बिन अबी ओकी की रवायत में है कि नबी ने क़ुरान शरीफ़ के बारे में वसीयत की थी। ✱

उस दिन मग़रिब तक की सब नमाज़ें नबी ने स्वयं पढ़ाई थीं। मग़रिब की नमाज में "वल्मुर्सिलात" सूरत पढ़ी। इस सूरत की अन्तिम आयत है "फ़बेअय्ये हदीसिन्न बअ्दहू योमेनून" अर्थात् क्या कुरान शरीफ़ के बाद किसी और वाणी पर ईमान लाओगे।

इशा की नमाज के लिए हुज़ूर ने मस्जिद में तीन बार जाने का इरादा किया किन्तु जब वज़ू करने बैठे मूर्छित हो हो गये। अन्त में फरमाया "अबूबक्र नमाज़ पढ़ावें"। इस आज्ञा पर अबूबक्र ने आँहज़रत के जीवन में १७ नमाज़ों में

§ ज़रकानी भाग ८। मिम्बर पर यह आप का अन्तिम बार बैठना था।

‡ ज़रकानी भाग ८।

* सहीह बुख़ारी में हज़रत आयशा से।

† सहीह बुख़ारी।

▯ सहीह बुख़ारी में सुलैमान से, वह सईद बिन जुबैर से, वह इब्ने अब्बास से।

✱ सहीह बुख़ारी में इब्ने अब्बास की माता उम्मे फ़ज़्ल से।

इमामत की।*

दो अथवा एक दिन पूर्व—शनिवार अथवा रविवार की घटना है कि अबूबक्र की इमामत में ज़ुह्र की नमाज़ पढ़ी जाने वाली थी कि नबी हज़रत अब्बास तथा हज़रत अली के कंधों पर सहारा दिये हुए जमाअत में शामिल हुये। अबूबक्र पीछे हटने लगे तो नबी ने इशारे से फ़रमाया कि पीछे मत हटो। फिर सिद्दीक़ के बराबर बैठ कर नमाज़ में शामिल हो गये। अब अबूबक्र तो आँहज़रत की इक़्तिदा (अनुसरण) करते थे और शेष सब लोग अबूबक्र की तक्बीरों पर नमाज़ पढ़ रहे थे†।

वफ़ात से एक दिन पहिले—रविवार को सब दासों को मुक्त कर दिया इनकी संख्या कुछ रवायतों में ४० बताई गई है। घर में सात दीनार नक़द मौजूद थे वे दीन दुखियों को बाँट दिये गये। उसी दिन शाम को हज़रत आयशः ने चिराग़ के लिये तैल पड़ोसिन से उधार मंगवाया था अस्त्र मुसलमानों के नाम दे दिये थे।❦ आप की ज़िरह एक यहूदी के पास ३० साऽ (एक साऽ=पौने चार सेर) जौ के बदले गिरों थी▯

अन्तिम दिन—सोमवार के दिन फ़ज्र की नमाज़ के समय नबी ने वह पर्दा उठाया जो हज़रत आयशः (के हुजूरे) और मस्जिद नबवी के बीच में पड़ा हुआ था। उस समय नमाज़ हो रही थी। थोड़ी देर तक आप इस पवित्र दृश्य को, जो हुज़ूर की पवित्र शिक्षा का फल था देखते रहे, इस दृश्य से मुख पर प्रफुल्लता और होंठों पर मुस्कान थी। उस समय पवित्र मुख क़ुरान का पन्ना जान पड़ता था। +

सहाबियों का शौक़ और बेचैनी से यह हाल हो गया था कि आप ही के प्रकाशमान मुख की ओर देखते रहें। अबूबक्र यह समझे कि हज़रत का इरादा नमाज़ में आने का है, वे पीछे हटने लगे तो हुज़ूर ने हाथ के इशारे से फ़रमाया कि नमाज़ पढ़ाते रहो, यही इशारा सबकी शांति का कारण हुआ। फिर हुज़ूर ने पर्दा छोड़ दिया। यह पूरी नमाज़ हज़रत अबूबक्र ही ने पढ़ाई।❃

इसके बाद हुज़ूर पर फिर किसी दूसरी नमाज़ का समय नहीं आया।

दिन चढ़ा तो प्रिय पुत्री फ़ातेमः बतूल को बुलाया। कान में कुछ बात कही, वह रो पड़ीं फिर

---

* सहीहैन में उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से। अबी मूसा से सहीह बुख़ारी में रवायत है कि हुज़ूर ने इन शब्दों को तीन बार दुहराया।

† सहीहैन में उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से।

❦ बुख़ारी में उम्मुल् मोमिनीन श्रीमती जुवैरियः के भाई उमर बिन हारिस से।

▯ बुख़ारी में अस्वद से, वह हज़रत आयशा से।

\+ सहीहैन में हज़रत अनस से। चेहरे के लिए क़ुरान के पन्ने की तशबीह (उपमा) अनस ही की रवायत में है। क़ुरान के पन्ने पर बहुधा सुनहरा काम होता है हुज़ूर के मुख पर रोग के कारण पीलापन छाया हुआ था इस लिए चमक और रंग में सोने की और पवित्रता के लिये क़ुरान की उपमा दी गई है।

❃ बुख़ारी और मुस्लिम।

कुछ और बात कही वह हँस पड़ीं। बतूल पाक से रवायत है कि "पहिली बात हुज़ूर ने यह फ़रमाई थी कि "अब मैं संसार को छोड़ रहा हूँ" और दूसरी बात यह फ़रमाई थी कि "घर के लोगों में तुम ही मेरे पास सबसे पहिले पहुंचोगी" (अर्थात पहिले तुम्हारी मृत्यु होगी)।‡

उसी दिन हुज़ूर ने फ़ातेमः को "सय्यदह निसाइल् आलमीन" होने का सुसमाचार सुनाया।§

सय्यदः ने हुज़ूर की हालत देखकर कहा "कितनी वेदना है, कैसी पीड़ा है" फ़रमाया "तेरे पिता को आज के बाद कोई पीड़ा न होगी।"‖

फिर हज़रत हसन व हज़रत हुसैन को बुलाया दोनों को प्यार किया और उनके बारे में प्रेम एवं आदर की वसीयत फ़रमाई।* फिर धर्मपत्नियों को बुलाया और उन्हें शिक्षायें दीं।† फिर अली को बुलाया, उन्होंने आपका पवित्र सिर अपनी गोद में रख लिया, उनको भी शिक्षा दी। उस समय थोड़ा सा थूक उड़कर हज़रत अली के पवित्र मुख पर पड़ गया था।

इस अवसर पर फ़रमाया "अस्सलातो, अस्सलातो, वमा मलकत ऐमानोकुम" (अर्थात-नमाज, नमाज, और तुम्हारे दास) हज़रत अनस कहते हैं कि नबी की अन्तिम वसीयत यही थी, हज़रत आयशा फ़रमाती हैं कि यही शब्द हुज़ूर कई बार दुहराते रहे।⁂

वफ़ात (मृत्यु) का समय—अब मृत्यु पीड़ा आरम्भ हुई। उस समय हुज़ूर की पीठ को हज़रत आयशा सहारा दिये हुए थीं। पानी का प्याला सिरहाने रक्खा हुआ था, नबी प्याले में हाथ डालते और मुख पर मल लेते थे। मुख कभी लाल हो जाता कभी पीला पड़ जाता था। ज़बान से फ़रमाते थे "ला इलाहा इल्लल्लाह, इन्नल् मौते सकरातुन।"§§ इतने में अब्दुलरहमान बिन अबूबक्र आगये उनके हाथ में ताज़ी मिस्वाक (दतवन) थी हुज़ूर ने उस पर दृष्टि डाली तो हज़रत आयशः ने मिसवाक को अपने दाँतों से नर्म बनाकर दे दिया। हुज़ूर ने मिसवाक की।" फिर हाथ को ऊँचा किया। और पवित्र ज़बान से फ़रमाया 'अल्लाहुम्मर्रफ़ीकल् आला' (अर्थात हे अल्लाह! मेरे उच्चतम साथी।) उसी समय हाथ लटक गया और पुतली ऊपर को उठ गयीं।□

‡ सहीह बुख़ारी में उर्वा से, और वह हज़रत आयशा से।

§ बुख़ारी में हज़रत आयशा से। कुछ रवायतों से यह विदित होता है कि यह घटना अन्तिम दिन की नहीं बल्कि अन्तिम सप्ताह की है।

‖ बुख़ारी में हज़रत अनस से।

* मदारिजुन्नुबुव्वत।

† ज़र्क़ानी।

⁂ बुख़ारी में अनस से।

§§ सहीह बुख़ारी। अर्थात अल्लाह के सिवाय कोई पूजा के योग्य नहीं, मृत्यु में कड़वाहट हुआ ही करती है।

□ सहीह बुख़ारी में हज़रत आयशा से।

१३ रबीउल् अव्वल सं० ११ हि० सोमवार के दिन १० बजे* का समय† था कि पवित्रात्मा ने चोला छोड़ दिया। उस समय चाँद के हिसाब से हुजूर की आयु ६३ वर्ष ४ दिन की थी। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन, अफ़इन्न मित्ता फ़होमुल् खालेदून"।

हजरत फ़ातेमा ने इस वेदना पूर्ण घटना पर कहा—

"प्रिय पिता ने अल्लाह के निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया, और जन्नतुल् फ़िर्दौस" (स्वर्ग के सबसे उत्तम स्थान) जा पहुँचे। हाय, जिब्रील को मृत्यु की सूचना कौन पहुँचा सकता है"

फिर बोलीं "प्रभो! फ़ातेमा की आत्मा को मुहम्मद की आत्मा के निकट पहुँचा दो, प्रभो मुझे रसूलुल्लाह के दर्शन से प्रसन्न करो, और हे प्रभु मुझे इस वेदना के फलस्वरूप प्रलय में रसूलुल्लाह की शफ़ाअत से वञ्चित न रखना"

हजरत आयशा ने कहा—

"हाय, वह नबी जिसने गरीबी को अमीरी के सामने और दीनता को ऐश्वर्य के समक्ष ग्रहण किया, हाय वह धर्मात्मा जो गुनहगार उम्मत की चिंता में कभी रात भर सुख की नींद नहीं सोया, जिसने सदैव दृढ़ रहते हुए धैर्य पूर्वक इन्द्रियों को परास्त किया, जिसने निषिद्ध कर्मों की ओर आँख उठाकर भी न देखा, जिसने दीन हीन व्यक्तियों पर भलाई एवं उपकार के द्वार कभी बन्द न किए, जिसने अपने दिल में शत्रुओं की ओर से पहुंचाये जाने वाले दुखों और कष्टों का किंचित मात्र भी ध्यान न आने दिया, हाय वह जिसके मोती जैसे दाँत पत्थर से तोड़े गये, जिसके पवित्र माथे को घायल किया गया—वह आज इस संसार से विदा हो गया।"‡

सहाबी मृत्यु की खबर सुनकर चकित तथा हक्का बक्का होकर रह गये। कुछ विमूढ़ से होगये, कोई जंगल को निकल भागा, कोई जहाँ खड़ा था वहीं खड़ा रह गया।

उमर फ़ारूक़ को विश्वास ही न होता था कि अल्लाह का रसूल इस लोक से विदा होगया।

अबूबक्र सिद्दिक घर में गये, पवित्र शरीर को देखा, मुख से मुख लगाया, माथे को चूमा, आँसू बहाये, फिर जबान से कहा, "मेरे माता पिता श्रीमान पर से न्योछावर हों, खुदा की क़सम अल्लाह आप पर दो मृत्यु न लायेगा। यही एक मृत्यु थी जो आपके लिये लिखी हुई थी।"§ फिर मस्जिद में आये और वफ़ात की घोषणा सम्बन्धी खुत्बः पढ़ा। ईश्वर की स्तुति के बाद फ़रमाया (अनुवाद) "विदित हो कि जो कोई व्यक्ति तुममें से मुहम्मद की पूजा करता हो तो वे तो वफ़ात पागये और जो कोई अल्लाह की पूजा करता हो तो निस्सन्देह अल्लाह जीवता है, उसे कभी मृत्यु नहीं।

* सहीह बुखारी।

† तारीख़ अबुल फ़िदा। कुछ रवायतों में है कि वह ही समय था जिस समय नुबुव्वत मिली थी। कुछ रवायतों में है कि वही समय था जिस समय मदीने पहुँचे थे।

‡ मदारिजुन्नुबुव्वत, शाह अब्दुलहक़ दिहलवी लिखित।

§ सहीह बुखारी में अब्दुल्लाह बिन अब्बास से।

अल्लाह ने स्वयं फरमाया है-कि (क़ुरान की आयत पढ़ी कि) मुहम्मद तो एक पैग़म्बर हैं उनसे पहिले भी पैग़म्बर हो चुके हैं यदि वह मर गया अथवा शहीद होगया तो क्या तुम उलटे पाँव फिर जाओगे हाँ जो कोई ऐसा करेगा तो अल्लाह का कुछ न बिगाड़ सकेगा और अल्लाह कृतज्ञ व्यक्तियों को उत्तम प्रतिफल देने हारा है।"*

ग़ुस्ल तथा क़फ़न—नबी को ग़ुस्ल देते समय हज़रत अली यह कह रहे थे (अनुवाद)-"मेरे माता पिता आप पर न्यौछावर हों, आपकी मृत्यु से वह चीज़ जाती रही जो किसी दूसरे की मृत्यु से न गयी थी अर्थात पैग़म्बरी और गुप्त ख़बरें और प्रभु की आकाशवाणी समाप्त होगयी। आपकी मृत्यु एक ऐसा संकट है कि अब सब दुखों की ओर से हृदय पत्थर हो गया है और एक ऐसा सार्वजनिक संकट है जिसमें सब लोग बराबर हैं। यदि स्वयं आप ने धैर्य की आज्ञा न दी होती और रोने धोने से न रोका होता तो हम आँसुओं को आप पर से बहा देते, तब भी इस वेदना का कोई इलाज न होता, और यह घाव सदा हरा ही रहता, और हमारी यह दशा भी इस घोर विपत्ति के समक्ष कुछ मूल न रखती। इस दुख का कोई इलाज नहीं, और यह शोक तो जाने वाला ही नहीं। मेरे माता पिता हुज़ूर पर न्यौछावर हों, परमात्मा के यहाँ हमारा ज़िक्र कर दीजिएगा और हमें अपने हृदय से बिसारिएगा नहीं।"†

नबी को तीन कपड़ों में कफ़नाया गया।‡

जनाज़े की नमाज़—पवित्र शव उसी स्थान पर रक्खा रहा जहाँ वफ़ात हुई थी। जनाज़े की नमाज़ पहिले कुटुम्बियों ने फिर मुहाजिरों ने फिर अनसार ने पढ़ी। प्रथम पुरुषों ने फिर स्त्रियों ने फिर बालकों ने। इस नमाज़ में इमाम कोई न था। हुजरा (कोठरी) छोटा था अतः दस २ व्यक्ति भीतर जाते थे जब एक जत्था नमाज़ पढ़कर बाहर जाता तब दूसरा जत्था भीतर जाता।§ यह क्रम उस रोज़ शेष दिन और सारी रात फिर दूसरे दिन बराबर जारी रहा। इसलिए पवित्र शव बुद्धवार की रात में अर्थात वफ़ात् से लगभग ३२ घंटे बाद दफ़नाया गया‖। "इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन" (अर्थात् सब अल्लाह ही की ओर से आये हैं और सबको उसी की ओर जाना है।)

—०—

* सहीह बुख़ारी में अबूसलमा से।

† निहजुलबलग़ात पृ० २०५

‡ मुस्लिम शरीफ़ की नूदी कृत टीका।

§ तिर्मिज़ी की रवायत में है कि जनाज़े की नमाज़ पढ़े जाने की यह तजवीज़ हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ने बतलाई थी जिस से हज़रत अली सहमत हो गये थे।

‖ शेख़ याक़ूब कुलैनी लिखित काफ़ी। इस्लामी तिथि सूर्यास्त के बाद आरम्भ होती है मैंने इसी लिए मंगल व बुद्धवार की बीच वाली रात को बुद्धवार की रात लिखा है। मुल्ला बाक़र ने इसी को मंगल की शाम लिखा है। समय को ठीक ठीक समझने के लिए घंटों का शुमार किया गया है।

छठा अध्याय

आंहज़रत के सदाचार

जो घटनायें लिखी जा चुकी है उनसे संक्षेप में उन कठिनाइयों का अनुमान भली पूर्वक हो सकता है जिनका सामना आंहज़रत को अपनी पैग़म्बरी के प्रकटन, अपनी शिक्षाओं के प्रचार, और उन शिक्षाओं के ग्रहण कर्ताओं की रक्षा में करना पड़ा। एक देश में जहां कोई राज तथा कोई क़ानून न हो, जहां रक्तपात तथा अपघात साधारण बात समझी जाती हो, जहां के बसने वाले अत्याचार और बर्बरता में भेड़ियों के समान और मूर्खता में पशुओं से गये बीते हों, एक ऐसे दावे का पेश करना जो सारे देश में आश्चर्य जनक और समस्त क़बीलों में विरोधाग्नि भड़काने वाला हो, कुछ सरल न था। फिर उस दावे का ऐसी स्थिति में सफल होना कि करोड़ों व्यक्ति उसके तीव्र विरोध में तन, मन, धन से सहयोग दे रहे हों, ईश्वरीय सहायता का एक खुला हुआ प्रमाण है।

पिछली घटनाओं में आंहज़रत के सदाचरण और गुणों की चमक ऐसी स्पष्ट है जैसे रेत में कुन्दन। इन घटनाओं से यह भी पता लगता है कि सामर्थ्य-असमर्थ्य की परस्पर विपरीत अवस्थाओं में भी समान रूप से संयम का सीधा सादा जीवन वही बिता सकता है जिसके हृदय पर ईश्वरीय प्रेरणा की ऐसी छाप लग चुकी हो जिसने उसे लोक सम्बन्धी बन्धनों से मुक्त कर दिया हो।

आंहज़रत के जीवन की पवित्र घटनायें प्रत्येक देश तथा प्रत्येक जाति व सम्प्रदाय के लिये उत्तम आदर्श हैं। इस अध्याय में मैं संक्षेपरूप से हज़रत के सदाचरण का उल्लेख करूंगा।

मुहम्मदी सदाचार—यह एक ऐसा शब्द है जो उच्च कोटि के महात्माओं तथा धर्मात्माओं के आचार व्यवहार को प्रकट करने के लिए उत्तम रूप में बोला जाता है। मैं इस जगह पैग़म्बरों के गुणों तथा आँहज़रत की विशेषताओं का वर्णन नहीं करूँगा, केवल वे साधारण बातें लिखूँगा जिनको कोई सद्पुरुष अपने लिये आदर्श बना सकता है। "क़द् काना लकुम् फ़ी रसूलुल्लाहे उसवतुन् हसना" अर्थात् तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह का उत्तम आदर्श मौजूद है"।

आँहज़रत अन पढ़े थे और पैग़म्बरी के प्रादुर्भाव के समय तक आप को किसी विद्वान की संगति भी प्राप्त नहीं हुई थी। तीर फेंकना, बर्छा चलाना, घोड़े की सवारी, कविता, और वंशावली का जानना उस समय की ऐसी विद्यायें थीं जिन्हें शरीफ़ घरानों का प्रत्येक युवक प्रसिद्ध तथा सम्मानित होने के लिये अवश्य सीख लिया करता था और जिन के बिना कोई व्यक्ति देश अथवा जाति में कोई सम्मान युक्त स्थान प्राप्त ही न कर सकता था। नबी ने इन विद्याओं में से किसी को भी (सीख कर) प्राप्त नहीं किया था और न किसी पर अपनी रुचि प्रगट की थी।

आँहज़रत के विषय में फ्रेंच प्रोफ़ेसर सेडयो लिखता है:—"आँहज़रत मिलनसार और हँस-मुख (चिहरे वाले) थे। बहुधा मौन रहा करते थे। ईश्वर स्मरण में तल्लीन रहा करते थे। खेल तमाशों से दूर रहते, और छछोरपन से घृणा

करते थे। उत्तम सम्मति तथा उच्च-बुद्धि वाले व्यक्ति थे। न्याय के विषय में निकटवर्ती और दूरवर्ती नातेदार दोनों आप की दृष्टि में बराबर थे। दीन-दुखियों से प्रेम करते, ग़रीबों में रहकर खुश होते, किसी भिकारी को उसकी ग़रीबी के कारण तुच्छ न समझते और किसी राजा को उसके ऐश्वर्य के कारण बड़ा न जानते थे। अपने पास बैठने वालों का मन प्रसन्न रखते थे। मूर्खों की बातों पर धैर्य से काम लेते। किसी से स्वयं पृथक न होते जब तक कि वही न चला जाता। सहाबियों से अत्यन्त प्रेम रखते। पवित्र भूमि पर विना बिछौने और गद्दे तकिये के बैठ जाते। अपने जूते को स्वयं गाँठ लेते। अपने वस्त्र भी स्वयं जोड़ गाँठ लेते *। अधर्मियों एवं शत्रुओं से भी प्रसन्नता पूर्वक मिलते थे †।"

इमाम ग़िज़ाली लिखते हैं:—"आँहज़रत स्वयं पशुओं को चारा डाल देते। ऊँट को बांधते। घर में सफ़ाई कर लेते। बकरी दुह लेते। सेवक के साथ भोजन करते। सेवक को उसके काम काज में सहायता पहुँचाते। हाट बाज़ार से स्वयं जाकर चीज़ें मोल ले आते। खुद ही उसे उठा भी लाते। प्रत्येक छोटे बड़े को पहिले सलाम करते। जो कोई साथ हो लेता उसके हाथ में हाथ देकर चला करते। स्वामी और सेवक, तुर्की और हब्शी में तनिक भी भेद भाव न रखते। रात दिन का एक ही वस्त्र रखते। कैसा ही दीन-हीन व्यक्ति दावत के लिए कहता स्वीकार कर लेते। जो भोजन सामने रख दिया जाता सहर्ष खा लेते। रात के खाने में से सवेरे के लिये और सवेरे के खाने में से शाम के लिये न उठा रखते। सदाचारी, कृपालु और हँसमुख व्यक्ति थे किन्तु ज़ोर से हँसते न थे। व्याकुल रहते थे किन्तु खिन्नता न थी। उदार हृदय के व्यक्ति थे किन्तु छिछोरपन न था। प्रभाव शाली थे किन्तु स्वभाव में कड़ापन न था। दान शील थे किन्तु फ़ुज़ूल खर्च न थे। प्रत्येक जीव पर दयावान रहते थे। किसी से कुछ लालच न रखते थे सिर को बहुधा (नम्रता पूर्वक) झुकाए रहते थे ‡।"

शाह वली उल्लाह साहेब लिखते हैं:—"जो कोई व्यक्ति आँहज़रत के सामने अचानक आ जाता वह भय भीत हो जाता, और जो कोई पास आ बैठता मोहित हो जाता §। कुटुम्बियों और सेवकों पर अत्यन्त दयावान रहते। हज़रत अनस ने दस वर्ष तक सेवा की इस समय में उन्हें कभी उफ़ तक न कहा। जिह्वा पर कभी कोई अश्लील बात अथवा गाली नहीं आती थी, किसी को श्राप न देते, हाथ अथवा ज़बान से कभी किसी को दुःख न पहुंचाया। कुटुम्ब के सुधार और जाति की भलाई पर अधिक ध्यान रखते। प्रत्येक वस्तु तथा प्रत्येक व्यक्ति के आदर सम्मान का भली पूर्वक ध्यान रखते थे। ईश्वरीय राज्य की ओर सदैव दृष्टि रखते थे। +"

* खुलास-य-तारीख़ुल् अरब पृ० ४२।

† शिफ़ाय-अयाज़ पृ० ३११।

‡ इमाम ग़िज़ाली लिखित कीमियाय-सआदत पृ० २८०।

§ यह वाक्य हज़रत अली की कविता के एक पद का अनुवाद है।

+ हुज्जतुल्लाहुल् बालेग़ह।

सहीह बुखारी में है:—"आँहज़रत सदाचारियों को सुसमाचार सुनाते। पापियों को (कुफल से) डराते। बेखबरों की शरण थे। खुदा के बन्दे भी थे रसूल भी थे। अपने सब कामों को ईश्वर पर छोड़ने वाले थे। न तो कठोर स्वभाव के थे न कठोर शब्द बोलते थे। चिल्लाकर भी न बोलते थे। बुराई का बदला बुराई से न लेते। क्षमा चाहने हारे को क्षमा प्रदान कर देते। अपराधी को माफ़ कर देते। उनका उद्देश्य धर्मों की त्रुटियों तथा खराबियों को दूर कर देना था। उनकी शिक्षा अंधों को आँखें, बहरों को कान प्रदान करती, तथा हृदयों के पर्दे उठा देती है। आँहज़रत में प्रत्येक सद्गुण और प्रत्येक सदाचार विद्यमान था। उदारता और धैर्य उनका वस्त्र, पुण्य उनका स्वभाव था, संयम उनका अन्तःकरण, ज्ञान उनका वचन, न्याय उनका चरित्र, उनका धर्मविधान सत्यता पर निर्भर, उनका मार्ग इस्लाम, ईश्वर का पथ प्रदर्शन उनका पथ प्रदर्शक, वे अंधकार को दूर करने हारे, गुमनामों को उठाने वाले, कायरों को प्रसिद्ध कर देने वाले, कमी को अधिकता से और दरिद्रता को ऐश्वर्य से बदल देने हारे हैं"। *

बोलना—आँहज़रत बहुधा चुप रहा करते थे। बिना आवश्यकता कभी बात न करते।

* यसइयाह नबी की पुस्तक का पर्व्व ४२ आंहज़रत के सम्बन्ध में हैं। इस पर्व्व के निम्नलिखित पाठ पाठक पढ़ें। १—देखो मेरा बन्दा जिसे मैं सँभालता, मेरा भक्त जिससे मेरा मन प्रसन्न है, मैंने अपना आत्मा उस पर रखा, वह जातियों के बीच न्याय चलाएगा।

२—वह न चिल्लाएगा न अपनी आवाज ऊंची करेगा और न अपनी आवाज़ बाज़ारों में सुनाएगा।

३—वह मसले हुए सेंठे को न तोड़ेगा और दहकती हुई बत्ती का न बुझाएगा, वह न्याय को प्रचलित करेगा कि सदैव स्थिर रहे।

४—उसका पतन न होगा और न मसला जायगा, जब तक कि सच्चाई को भूमि पर स्थापित न करे और समुद्री देश उसके धर्म विधान का मार्ग न देखें।

५—खुदावन्द खुदा जो आकाशों को पैदा करता और उन्हें तानता है और पृथ्वी को और उन्हें जो उससे निकलते हैं फैलाता है, और उन लोगों को जो उस पर साँस लेते और उनको जो उस पर चलते हैं, आत्मा प्रदान करता है वह यह कहता है।

६—मैं (खुदावन्द) ने तुझे सच्चाई के लिए बुलाया है, मैं ही तेरा हाथ पकडूंगा और तेरी रक्षा करूंगा और लोगों की प्रतिज्ञा और जातियों के प्रकाश के लिये तुझे दूंगा।

७—कि तू अंधों की आंखें खोले, और बन्धुओं को क़ैद से निकाले, और उनको जो अंधेरे में बैठे हैं बन्दीग्रह से छुड़ा दे। पूरा अध्याय पठनीय है। पादरी कहते हैं कि यह शब्द मसीह के लिए है, किन्तु यह शब्द तो उसके लिए हैं जिसे खुदा मेरा बन्दा कहता है और पादरियों को इनकार है वह स्वीकार नहीं करते कि मसीह खुदा का बन्दा है। पाठ ११ में जंगल का वर्णन है और कीदार का नाम मौजूद है जो हमारे नबी के बाबा का नाम था।

आप के बोल में मिठास और बात में ज्ञान तथा आकर्षण होता था। बात चीत ऐसी रसीली होती थी कि सुनने वाले को मुग्ध कर देती, यह गुण ऐसा स्पष्ट था कि शत्रु भी उसे मानते थे और मूर्ख इसी का नाम जादू रक्खा करते थे। वाणी ऐसी सुन्दर होती, कि उसके शब्दों तथा अर्थों में कोई त्रुटि न होती थी। शब्द एक एक करके बोलते कि यदि सुनने वाला चाहता तो शब्दों को गिन सकता था *।

हँसना, रोना—हज़रत कभी खिल-खिलाकर न हँसते थे। मुस्कुराना ही आप का हँसना था। तहज्जुद की नमाज़ में बहुधा आप रो पड़ते थे। कभी किसी प्रेमी के मरने पर आँखों में आँसू भर आते थे। आँहज़रत के पुत्र हज़रत इब्राहीम का बालपन ही में देहान्त हो गया था, जब उन्हें क़ब्र में रक्खा गया तो हुज़ूर की आँखों में आँसू भर आये फ़रमाया—(अनुवाद) नेत्र भीग रहे हैं, हृदय शोक से व्याकुल है, फिर भी हम वही बात कहते हैं जो हमारे प्रभु को भली लगे। इब्राहीम हमें तेरे कारण वेदना हुई।"

एक बार अपनी नातिन को, जो साँस तोड़ रही थी गोद में उठाया, उस समय आपकी आँखों में आँसू भर आये। सऽद ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! यह क्या? फ़रमाया यह वह दया है जो परमात्मा अपने बन्दों के हृदयों में भर देता है, और अल्लाह भी अपने उन्हीं बन्दों पर दया करेगा जो दयालु हैं। (बुख़ारी में उसामा बिन ज़ैद से)

एक बार इब्ने मस्ऊद आँहज़रत को क़ुरान-शरीफ़ सुना रहे थे जब वह इस आयत पर पहुंचे "फ़कैफ़ा इज़ा जिऽना मिन कुल्ले उम्मतिन्न बेशहीदिन्न, व जिऽनाबेका अला हाओ लाय शहीदा" अर्थात् तब कैसी होगी जब प्रत्येक जाति पर खुदा एक साक्षी खड़ा करेगा और आपको हे मुहम्मद! हम सब जातियों पर साक्षी बनायेंगे"। फ़रमाया "बस ठहरो" इब्ने मस्ऊद ने आँख उठा कर देखा तो हज़रत के नेत्रों से अश्रुधारा बह रही थी। (बुख़ारी में इब्ने मस्ऊद से)।

भोजन के बारे में शिक्षा—रात को भूखा सोने से रोकते और ऐसा करने को बुढ़ापे का कारण बताते †। भोजन करके तुरन्त सो जाने से भी रोकते थे ‡। भोजन कम करने की ओर आकर्षित करते, फ़रमाते थे कि मेदे का एक तिहाई भाग भोजन के लिये, एक तिहाई जल के लिये और एक तिहाई स्वयं मेदे के लिये छोड़

फिर सल्ऽ का उल्लेख भी है जो मदीने का प्राचीन नाम है और मदीने में जो पहाड़ी है वह अब तक इसी नाम से पुकारी जाती है। पाठ १३ में उस पुरुष को योद्धा बतलाया गया है। पाठ १७ में ज़िक्र है कि मूर्तिपूजकों को उसके कारण निरादर होना पड़ेगा आदि आदि। यह सारे चिन्ह मसीह पर ठीक नहीं उतरते बल्कि आँहज़रत पर ठीक उतरते हैं। हज़रत काब भी इस स्थान को आँहज़रत ही के लिए बतलाया करते थे।

* ज़ादुल मआद भा० १ पृ० ४७।

† ज़ादुल मआद भाग २ पृ० ७८

‡ ,, ,, ,, ,, ८७

देना चाहिये *। फलों और साग भाजी का प्रयोग उनकी सुधारक वस्तुओं के साथ बताया करते थे। †

रोग और रोगी—छूत की बीमारियों से बचाव रखते, और स्वस्थ व्यक्तियों को उससे सावधान रहने की आज्ञा देते ‡। रोगी को अनुभवी तथा योग्य चिकित्सक से इलाज कराने की आज्ञा देते थे §। और परहेज़ करने का हुक्म देते ×। और मूर्ख वैद्य की चिकित्सा को रोकते और उसे रोगी की क्षति का उत्तरदाई ठहराते ▯। हराम पदार्थों को दवा के तौर पर ग्रहण करने से रोकते और फ़रमाते कि अल्लाह ने हराम पदार्थों में तुम्हारे लिये स्वस्थता नहीं रक्खी है। ❦

रोगियों को देखने जाना—सहाबियों में जो कोई बीमार हो जाता, उसे देखने जाते। बीमार के पास बैठ जाते, उसे तसल्ली देते, रोगी से पूछते कि उसे किस चीज़ की इच्छा है। यदि वह चीज़ उस के लिये हानिकारक न होती, तो उसका प्रबन्ध कर दिया करते। एक यहूदी बालक आँहज़रत की सेवा किया करता था उसके बीमार होने पर उसे भी देखने तशरीफ़ ले गये। ❃

चिकित्सा—रोग में स्वयं चिकित्सा करते और दूसरों को इलाज करने का आदेश देते, फ़रमाते हैं "ख़ुदा के बन्दो"! दवा करो क्योंकि प्रभु ने प्रत्येक रोग की औषधि पैदा की है, केवल एक रोग की नहीं। पूछा गया वह क्या ? फ़रमाया अन्तिम वृद्धावस्था +।

ख़ुत्बः (भाषण)—भूमि अथवा मिम्बर (मञ्च) पर खड़े होकर या ऊँट ऊँटनी पर सवार होकर ख़ुत्बः (धार्मिक भाषण) दिया करते थे। इस ख़ुत्बे को आप तशह्हुद (प्रभु-महिमा) से आरम्भ करते और इस्तिग़फ़ार (क्षमा की प्रार्थना) पर समाप्त करते थे। कुरान शरीफ़ की आयतें ख़ुत्बे में अवश्य हुआ करती थीं तथा धार्मिक शिक्षायें दी जाती थीं। ख़ुत्बे में वह बातें भी अवश्य वर्णन की जाती थीं जिनकी मुसलमानों को आवश्यकता होती। गरज़ कि सामाजिक तथा आवश्यक सभी बातें ख़ुत्बे में हुआ करती थीं। (ज़ादुल्मआद पृ० ४६ भा० १)। ऐसे ख़ुत्बे केवल जुमे के दिन पर ही निर्भर न होते बल्कि जब आवश्यकता तथा अवसर होता तब ही लोगों को अपने पवित्र वचनों से लाभान्वित फ़रमाते।

* ज़ादुल मआद भाग २ पृ० ७
† ,, ,, ,, ,, ३५
‡ ,, ,, ,, ,, ५०
§ ,, ,, ,, ,, ४६
× ,, ,, ,, ,, ३५
▯ ,, ,, ,, ,, ४७
❦ ,, ,, ,, ,, ५३। सहीह बुख़ारी में इब्ने मसऊद से।
❃ ,, ,, ,, ,, १४३
\+ ,, ,, ,, ,, ५। मुसनद इमाम अहमद।

खुत्बे के वक्त कभी हाथ में असा (लाठी) होता, कभी कमान, भाषण देते समय कभी उनसे टेक भी लगा लिया करते, खुत्बे के समय तलवार कभी हाथ में न होती थी न उस पर टेक लगाया करते। अल्लामा इब्ने क़य्यिम कहते हैं कि मूर्खों का कथन है कि नबी मिम्बर पर तलवार लेकर खड़े हुआ करते थे मानो यह संकेत था कि इस्लाम तलवार द्वारा फैलाया गया है। अल्लामा कहते हैं मूर्खों का यह कथन ग़लत है (१) तलवार पर खुत्बे में टेक लगाना सिद्ध नहीं (२) खुत्बे का आरम्भ मदीने में हुआ था और मदीना क़ुरान द्वारा विजय हुआ था न कि तलवार द्वारा। फिर अल्लामा कहते हैं कि इस्लाम तो वही (ईश्वरीय वाणी) द्वारा फैला है।*

दान तथा भेंट—दान पुण्य की कोई चीज़ नबी कदापि न लेते थे। हाँ भेंट स्वीकार कर लेते थे। प्रेमी सहाबी तथा मिलने वाले ईसाई, यहूदी जो वस्तुयें भेंट स्वरूप भेजते थे उन्हें क़ुबूल फ़रमा लेते थे, और स्वयं भी उन्हें उपहार भेजते, परन्तु ईश्वर का साझी ठहराने हारों (मुशरिकों) की भेंट को कभी स्वीकार न करते।†

मिस्र के बादशाह मुक़ौक़िस के भेजे हुए खच्चर पर हुज़ूर ने सवारी ली। हुनैन के युद्ध में वही खच्चर आपकी सवारी में था किन्तु आमिर बिन मालिक के भेजे हुए घोड़े को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और फ़रमाया कि हम मुशरिक की भेंट स्वीकार नहीं करते।

जो क़ीमती उपहार आपके पास आया करते उन्हें आप बहुधा अपने साथियों में बाँट दिया करते।

अपनी प्रशंसा—अपनी ऐसी प्रशंसा जिससे किसी दूसरे नबी में कोई कमी सिद्ध होती हो कभी पसन्द न करते और फ़रमाते "पैग़म्बरों में एक के समक्ष दूसरे की कोई त्रुटि न ढूँढो"।

नबी एक विवाह के उत्सव में गये वहाँ छोटी २ कन्यायें अपने पूर्वजों के गुणगान कर रही थीं, उन्होंने यह भी गाया कि "हमारे बीच ऐसा नबी है जो कल की बात आज बता देता है" नबी ने फ़रमाया यह न कहो जो पहिले कह रही थीं वही कहे जाओ।"‡

धर्मांधता और सुधार—नबी के पुत्र इब्राहीम का देहान्त हो गया। उस दिन सूर्य ग्रहण भी था, लोग कहने लगे इब्राहीम की मृत्यु के कारण सूर्य को ग्रहण लगा। हज़रत ने लोगों के सामने खुत्बः दिया उसमें यह भी फ़रमाया कि सूर्य अथवा चन्द्रमा को किसी की मृत्यु के कारण ग्रहण नहीं लगा करते।×

सार्वजनिक लाभ का विचार—जब क़ुरैश ने इस्लाम के प्रादुर्भाव से पूर्व काबे की इमारत बनायी तो उन्होंने कुछ तो इब्राहीमी इमारत में से

* ज़ादुल मआद भाग १ पृ० ४६

† ,, ,, ,, २ ,, १६१।

‡ सहीह बुख़ारी में रुबैअ बिन्त मऊज़ से।

× बुख़ारी में मुग़ीरा बिन शाबा से।

अन्दर की जगह बाहर छोड़ दी फिर कुर्सी इतनी ऊँची रक्खी कि बिना सीढ़ी के काम न चले और काबे में दरवाजा भी एक ही रक्खा। आँहजरत ने एक दिन अपनी धर्मपत्नी हजरत आयशा से फ़रमाया "क़ुरैश को मुसलमान हुए थोड़े ही दिन हुए हैं नहीं तो मैं इस इमारत को गिरा देता। काबे में दो द्वार रखता एक आने का एक जाने का।"*

२—जब धर्म कपटियों की शरारतें और धोखे बाजियाँ सीमा से बाहर निकल गयीं, तो हजरत उमर ने निवेदन किया कि इन्हें मृत्यु दण्ड देना चाहिए। हजरत ने फ़रमाया नहीं अज्ञानी कहेंगे कि मुहम्मद अपने मित्रों को मारने लगा।

मनुष्यता और पैग़म्बरी—आँहजरत उन ईश्वरादेशों को जो पैग़म्बरी द्वारा प्रकट होते और उन कर्मों तथा कथनों को जो एक मनुष्य होने के नाते आपसे जाहिर होते सदैव स्पष्ट रूप से अलग अलग दिखाने की चेष्टा करते थे।

१—एक बार फ़रमाया मैं मनुष्य हूँ। मेरे सामने झगड़े बखेड़े आते हैं। कुछ व्यक्ति दूसरे फ़रीक़ के मुकाबिले में अपने मतलब को उत्तम ढंग से प्रगट करते हैं जिससे सन्देह होता है कि वे सच्चे हैं, और उसी के हक़ में फ़ैसला कर देता हूँ। सो यदि किसी व्यक्ति को किसी मुसलमान के भाग में से उस फ़ैसले के अनुसार कुछ मिलता हो तो समझ ले कि वह अग्नि का टुकड़ा है अब चाहे ले अथवा छोड़ दे।†

२—बुरैरा दासी से उसके पति मुग़ीस के प्रति आपने सिफ़ारिश की जिससे वह आजाद (स्वतन्त्र) होजाने के कारण प्रथक हो चुकी थी। उसने पूछा या रसूलुल्लाह! क्या आप हुकम दे रहे हैं? फ़रमाया नहीं मैं सिफ़ारिश कर रहा हूँ। तब वह बोली मुझे मुग़ीस की आवश्यकता नहीं।"‡

मदीने वाले नर खजूर का बौर मादीन खजूर पर डाला करते थे। आप ने फ़रमाया इसकी क्या ज़रूरत है? मदीने वालों ने यह उपाय छोड़ दिया। परिणाम यह निकला कि दरख्तों में फल कम लगे। लोगों ने इस बारे में आँहजरत से निवेदन किया फ़रमाया "संसार के काम तुम मुझसे अधिक जानते हो जब मैं कोई काम धर्म का बतलाया करूँ तो उसका अनुसरण किया करो।"

बालकों से प्रेम—बालकों के पास से गुज़रते तो उनको स्वयं "अस्सलामो अलैकुम" कहा करते।§ उनके सिर पर हाथ रखते और उन्हें गोद में उठा लेते।

बृद्धों पर दया—मक्का विजय होने के बाद अबूबक्र सिद्दीक अपने बृद्ध, दुर्बल तथा नेत्रों से हीन पिता को आँहजरत की सेवा में इस्लाम स्वीकार कराने लाये। नबी ने फ़रमाया "तुमने इन्हें क्यों कष्ट दिया मैं स्वयं इनके पास चला जाता।"

विद्वान का सम्मान—सअद बिन मुआज़ को जो खाई खोदने में बहुत घायल होगये थे, बनी

* बुख़ारी में इब्ने ज़ुबैर से।
† बुख़ारी, उम्मे सल्मा से।
‡ बुख़ारी, इब्ने अब्बास से।
§ बुख़ारी में, अनस से।

क़ुरैज़ः के यहूदियों ने अपना पञ्च मानकर बुलाया था। जब वह मस्जिद तक पहुंचे तो आपने अपने सहाबियों से जो औस क़बीले के थे फ़रमाया "क़ूमू-इला सय्यदोकुम" (अर्थात-अपने सरदार का स्वागत करो) लोग गये और उनको आगे बढ़कर ले आये।

२—हस्सान बिन साबित इस्लाम के पक्ष और विरोधियों के उत्तर में कविता बनाकर लाते तो उनके लिए मस्जिद नबवी में मिम्बर रख दिया जाता जिस पर चढ़कर वह कविता सुनाते थे।

सेवक के लिए प्रार्थना—अनस बिन मालिक ने दस वर्ष तक मदीने में हज़रत की सेवा की। इस ज़माने में आपने कभी उनसे न कहा कि यह काम क्यों किया और यह क्यों नहीं किया? एक दिन उनके लिए प्रार्थना की "प्रभो! इसे धन भी बहुत दे, संतान भी बहुत दे, और जो कुछ इसे प्रदान कर उसमें बरकत भी बहुत दे"। *

सामाजिक सभ्यता—१—सभा में पाँव फैला कर न बैठते। २—जो कोई मिल जाता उसे स्वयं पहिले सलाम करते। ३—स्वयं पहिले हाथ मिलाते। ४—सहाबियों को उनके उपनामों से पुकारते। (अरब में आदर सहित बुलाने की यही प्रथा थी) ५—किसी की बात कभी न काटते। ६—यदि नफ़्ल नमाज़ पढ़ते होते और कोई व्यक्ति पास आ बैठता तो नमाज़ को संक्षिप्त कर देते, और उसकी आवश्यकता पूरी कर देने के बाद फिर नमाज़ में लग जाते। ७—बहुधा मुस्कुराते रहते। † ८—आँहज़रत की एक ऊँटनी का नाम अज़्बा था कोई जानवर उससे आगे नहीं बढ़ सकता था, एक देहाती अपनी सवारी पर आया और अज़्बा से आगे निकल गया, मुसलमानों को यह बहुत खला, आँहज़रत ने फ़रमाया "संसार में परमात्मा की नीति यही है, किसी को ऊँचा उठाता है तो उसे नीचा भी दिखा देता है।" ‡

९—एक व्यक्ति आया, उसने नबी को "या ख़ैरुलू बरिय्या" (उत्तम उत्पत्ति) कह कर पुकारा। नबी ने फ़रमाया "यह शान तो हज़रत इब्राहीम की है। ⁂ १०—एक व्यक्ति आया, वह हज़रत के प्रताप से भय भीत होगया। आपने फरमाया "कुछ चिन्ता न करो मैं बादशाह नहीं हूँ। मैं कुरैश की एक निर्धन स्त्री का पुत्र हूँ जो सूखा माँस खाया करती थी"। ×

दया तथा कृपा—१—हज़रत आयशः कहती हैं कोई व्यक्ति भी सदाचरण में हुज़ूर जैसा न था! चाहे कोई सहाबी बुलाता अथवा घर का कोई व्यक्ति, नबी उसके उत्तर में "लब्बैका" (हाज़िर) ही फ़रमाया करते थे ❦। २—नफ़्ल नमाज़ छुप कर पढ़ते थे जिसमें आपका अनुसरण करने पर

---

* बुख़ारी में अनस से।
† शिफ़ाय-क़ाज़ी अयाज़ पृ० ५४।
‡ सहीह बुख़ारी।
⁂ सहीह बुख़ारी, हज़रत आयशः से।
× सहीह बुख़ारी। ग़रीब लोग सूखा माँस ही खाया करते थे।
❦ शिफ़ाय क़ाज़ी अयाज़ पृ० ५३।

उतनी तपस्या दूभर न हो जाये। ३—जब किसी विषय में दो सूरतें सामने आजातीं तो सरल सूरत को ग्रहण करते थे *। ४—अल्लाह से प्रार्थना की कि जिस किसी को मैं बुरा भला कहूँ अथवा श्राप दूँ वह बुरी बात अथवा श्राप उसके निमित्त पापों का प्रायश्चित्त और दया तथा क्षमा का साधन बना दिया जाये। ५—फरमाया-एक दूसरे की बातें मुझे न सुनाया करो, मैं चाहता हूँ कि संसार से जाऊँ तो सब की ओर से मेरा हृदय साफ हो †। ६—धर्मोपदेश कभी २ देते, जिसमें कि लोग उकता न जायें ‡। ७—एक बार सूर्य-ग्रहण पड़ा, आप कुसूफ की नमाज़ में रोते थे और प्रार्थना में फ़रमाते थे हे प्रभु! तूने बचन दिया है कि इन लोगों को दण्ड न दिया जायेगा जब तक मैं उनके बीच मौजूद रहूँ, और जब तक यह क्षमा माँगते रहें, § अब हे परमात्मा मैं मौजूद हूँ और सब क्षमा माँग रहे हैं।

प्रत्येक नबी के लिए एक २ दुआ थी वह माँगते रहे और दुआ क़ुबूल होती रही। मैंने अपनी दुआ को अपनी उम्मत के निमित्त प्रलय के दिन के लिए सुरक्षित रख छोड़ा है।"

न्याय और दया—यदि दो व्यक्तियों के बीच झगड़ा होता तो नबी न्याय करते थे। और यदि किसी का झगड़ा स्वयं आप के साथ होता तो दया से काम लेते थे।

१—फ़ातेमा नामक एक स्त्री ने मक्के में चोरी की। लोगों ने उसामा से जो हज़रत को बहुत प्रिय थे सुफ़ारिश कराई। नबी ने फ़रमाया "क्या तुम ईश्वर की सीमाओं में सुफ़ारिश करते हो? सुनो यदि मुहम्मद की पुत्री फ़ातेमा ने भी चोरी की होती तो भी मैं यही दण्ड देता ‡‡।"

२—सवाद बिन अम्र कहते हैं कि वह एक रोज़ आँहज़रत के सामने रंगीन कपड़ा पहिन कर गये हज़रत ने "हुत हुत" फ़रमाया और छड़ी से उनके पेट में चोंका भी दिया। मैंने कहा या रसूलुल्लाह! मैं तो बदला लूंगा हज़रत ने तुरन्त अपना पेट नंगा करके मेरे आगे कर दिया। +

शत्रुओं पर दया—१—मक्के में भीषण अकाल पड़ा, यहाँ तक कि लोगों ने मृतक का माँस तथा हड्डियाँ भी खाना आरम्भ कर दिया। अबू सुफ़ियान बिन हरब (जो उन दिनों नबी का प्राणघातक शत्रु बना हुआ था) नबी की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा "मुहम्मद! आप तो नातेदारों के साथ दया तथा उपकार करने की शिक्षा लोगों को दिया करते हैं, देखिये आप के नातेदार और आप की जाति के लोग मर रहे हैं खुदा से दुआ कीजिये, आप ने दुआ की, खूब वर्षा हुई।

* सहीह बुख़ारी हज़रत आयशा सिद्दीक़ा से।

† शिफ़ाय क़ाज़ी अयाज़ पृ० ५९।

‡ बुख़ारी, इब्ने मस्ऊद से।

§ ज़ादुल मआद भाग १ पृ० ४१।

‡‡ बुख़ारी में हज़रत आयशा से।

\+ शिफ़ा-क़ाज़ी अयाज़, पृ० २११

२—समामा बिन असाल ने नज्द से मक्के को जाने वाला अनाज बन्द कर दिया इस लिये कि मक्के वाले आँहज़रत के शत्रु हैं। नबी ने उसे ऐसा करने से रोक दिया।

हुदैबिया के मैदान में हज़रत मुसलमानों के साथ सवेरे की नमाज़ पढ़ रहे थे। सत्तर अस्सी व्यक्ति चुपके से तनईम की घाटी से उतरे कि मुसलमानों को नमाज़ की अवस्था में ही क़त्ल कर दें। ये सब पकड़ लिये गये किन्तु नबी ने उन्हें बिना बदला लिये अथवा कोई दण्ड दिये मुक्त कर दिया।

उपकार—भिखारी को कभी न दुत्कारते, ज़बान पर इनकार का शब्द भी न लाते, यदि कुछ भी देने को पास न होता तो मँगता से ऐसी बातें करते मानो क्षमा माँग रहे हों।

२—एक भिखारी ने आकर कुछ माँगा फ़रमाया मेरे पास तो इस समय कुछ नहीं है, तुम मेरे नाम पर क़र्ज़ ले लो फिर मैं उसे चुका दूँगा। उमर फारूक़ ने कहा खुदा ने आप को यह कष्ट नहीं दिया कि सामर्थ्य से अधिक काम करें। नबी चुप हो गये। एक अनसारी बैठा हुआ था बोल उठा या रसूलुल्लाह ! खूब दीजिए आकाशों का प्रभु स्वामी है ग़रीबी का क्या डर है। आप हँस पड़े और पवित्र मुख पर प्रसन्नता की रेखाएं प्रगट हो गईं * फ़रमाया हाँ मुझे यही आज्ञा मिली है। †

३—एक बार एक मँगता को अनाज क़र्ज़ दिलाया। क़र्ज़ वाला तकाज़े के लिए आया, आप ने फ़रमाया इसे दूना अनाज दे दो। एक गुना इसके क़र्ज़ का है और एक गुना मेरी ओर से प्रदान स्वरूप। ‡

४—फ़रमाया करते यदि कोई व्यक्ति ऋणी होकर मर जाये और धन बाक़ी न छोड़े तो हम उसे अदा करेंगे और यदि कोई धन छोड़कर मरे तो वह हक़ वारिसों का है ×।

लज्जा—१—अबू सईद ख़ुदरी का कथन है कि नबी में किसी लज्जाशील कन्या से बढ़कर लज्जा थी। जब कोई ऐसी बात आपके सामने को जाती जिससे आपको घृणा होती तो चेहरे से तुरन्त ही जाहिर होजाता था।

२—हज़रत आयशः कहती हैं कि यदि किसी व्यक्ति की कोई बात आपको न भाती तो उसका नाम लेकर न रोकते बल्कि साधारण शब्दों में उस बात का निषेध प्रकट कर देते।

३—अपने कामों में अपने प्राणों पर कष्ट उठा लेते, किन्तु किसी दूसरे से लज्जा के कारण काम करने के लिए न कहते।

४—जब कोई सामने आकर क्षमा चाहता तो शर्म से गरदन नीची कर लेते।

---

* बुख़ारी शरीफ़।

† शिफ़ाय क़ाज़ी अयाज़।

‡ ,, ,, ,, में अबू हुरैरः की रवायत।

× सहीह बुख़ारी अबू हुरैरा से।

५—हजरत आयशः का कथन है कि मैंने हजरत को नंगा कभी नहीं देखा।

धैर्य्य—१—जैद बिन साना एक यहूदी था, हजरत को उसका कुछ कर्ज चुकाना था वह एक दिन आया। आते ही चादर आपके कंधों से उतार ली, शरीर के कपड़े पकड़ लिये, और टर्राने लगा कि अब्दुलमुत्तलिब वाले बड़े लीचड़ होते हैं। हजरत उमर ने उसे बड़ी सख्ती से झड़क दिया। हजरत हँस पड़े फरमाया "उमर तुम्हें उचित था कि मेरे या उसके साथ दूसरे ढंग का व्यवहार करते, मुझसे क़र्ज चुकाने के उत्तम ढंग की बात कहते और उसे तकाजा करने का अच्छा व्यवहार सिखाते"। फिर हुजूर ने यहूदी महाजन से कहा "अभी तो वादे में तीन दिन बाकी हैं" फिर उमर से फरमाया "इसका क़र्ज चुका दो, बीस सा॰ अधिक देना क्योंकि तुमने इसे डराया धमकाया भी था।

२—एक देहाती आया, उसने आपकी चादर को जो मोटे किनारे की थी झटका दिया। वह किनारा हज़रत की गरदन में गड़ गया और उस का चिन्ह पड़ गया। अब उस देहाती ने यह कहा "मुहम्मद यह ख़ुदा का धन जो तुम्हारे पास है न तुम्हारा है न तुम्हारे बाप का है, उसमें से एक ऊँट के बोझ भर मुझे भी दिलाओ।" नबी ने थोड़ा चुप रहने के बाद कहा "धन निस्सन्देह ख़ुदा का है और मैं उसका दास हूँ" अंत में आज्ञा दी कि एक ऊँट के बोझ भर जौ और एक ऊँट के बोझ भर खजूरें इसे दी जाएं। *

३—तायफ में आँहजरत धर्म प्रचार के लिए गए। वहाँ के रहने वालों ने हुज़ूर पर कीचड़ फेंकी। इतने पत्थर मारे कि हुज़ूर लोहू से तरबतर और बेहोश होगये। फिर भी यही फ़रमाया कि "मैं इन लोगों की बरबादी नहीं चाहता क्योंकि यदि यह ईमान नहीं लाते तो आशा है कि इनकी संतान मुसलमान होजायगी।" ×

क्षमा—१—श्रीमती आयशः का कथन है कि हज़रत ने अपने बारे में कभी किसी से बदला नहीं लिया।

२—उहद के युद्ध में काफिरों ने आँहजरत के दाँत तोड़े, सिर फोड़ा, आप एक गढ़े में गिर गये थे। सहाबियों ने अर्ज किया इनको श्राप दीजिए। आपने फरमाया "मैं श्राप देने के लिए नबी बना कर नहीं भेजा गया हूँ खुदा ने मुझे रहमत (करुणा) बना कर, और लोगों को अपने दरबार में बुलाने के लिए भेजा है। इसके बाद यह दुआ की "हे प्रभु! मेरी जाति को मार्ग पर ले आइए, वे जानते नहीं हैं।" ‡

३—एक पेड़ के नीचे हजरत सोगये। तलवार पेड़ की एक शाखा में लटकादी। गौरस नामक एक शत्रु आया, तलवार निकाल कर हजरत को जगाया और बोला "अब तुमको कौन बचाएगा" फरमाया "अल्लाह" वह चक्कर खाकर गिर पड़ा।

* सहीहैन में हज़रत अनस से तथा शिफ़ा पृ० ४८।

× सहीह बुख़ारी।

‡ शिफ़ा॰ पृ० ४७।

हज़रत ने तलवार उठा ली फरमाया "अब तुझे कौन बचा सकता है ?" वह चकित रह गया। फरमाया "जाओ मैं बदला नहीं लिया करता"*।

४—हब्बार ने आँहज़रत की पुत्री जैनब के बर्छा मारा, वह हौदज से नीचे गिर गयीं और गर्भपात होगया। अंत में यही उनकी मृत्यु का कारण हुआ। हब्बार ने क्षमा चाही और आपने उसे क्षमा कर दिया। ❀

५—फरमाया "मूर्खता के समय से जिन बातों पर क़बीलों में लड़ाई झगड़े चले आ रहे हैं, मैं उन सब बातों को समाप्त करता हूँ। और सबसे पहिले अपने परिवार के खून का दावा और चाचा का ऋण छोड़ता हूँ। ×

सचाई और अमानत—१— प्राणघातक शत्रु भी आप के इन गुणों को मानते थे। सादिक (सत्यवादी) और अमीन (विश्वस्त) बचपन ही से आँहज़रत के नाम पड़ गये थे। इन्हीं गुणों के कारण पैगम्बरी के प्रादुर्भाव से पहिले भी लोग अपने मामले निबटाने के लिए आपके पास लाया करते ‡।

२—एक दिन अबूजिहल ने कहा "मुहम्मद ! मैं तुझे झूठा नहीं समझा किन्तु तेरी शिक्षा मेरे हृदय पर जमती नहीं है। †

३—हिजरत की रात में काफ़िरों ने नबी को मार डालने की सलाह की थी किन्तु हुज़ूर ने अपने प्रिय भाई हज़रत अली को इस लिए पीछे छोड़ दिया कि जो अमानतें उन काफ़िरों की आप के पास थीं उन्हें अदा करके आयें।

पवित्रता और संयम—आँहज़रत स्वयं फरमाते हैं मूर्खता के समय की प्रथाओं में से मैंने किसी प्रथा में भाग नहीं लिया। केवल दो बार इरादा किया था परन्तु खुदा ने मुझे बचा लिया। १० वर्ष से कम आयु थी मैं ने उस चरवाह से जिसके साथ मैं बकरियाँ चराता था, कहा यदि तुम मेरी बकरियाँ देखे रहो तो मैं मक्के (बस्ती के भीतर) जाऊँ, जैसे अन्य नवयुवक कहानियाँ कहते सुनते हैं मैं भी कहानियाँ कहूँ सुनूं। इस इरादे से मैं नगर के भीतर आया। पहिले घर ही पहुँचा था कि वहाँ ढोलक बाजे बज रहे थे, उस घर में विवाह था। मैं देखने लगा, ऐसी नींद आई कि मैं सो गया। जब सूर्य उदय हुआ तो आंख खुली। एक बार और इसी इच्छा से गया था किन्तु इस बार भी पहिले की तरह नींद आगई और समय कट गया। इन दो घटनाओं को छोड़ कर, मैं ने मूर्खता के समय की किसी प्रथा में सम्मिलित होने का इरादा भी नहीं किया ▯।

पैग़म्बरी के प्रादुर्भाव से पूर्व की घटना है कि जैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल ने नबी की दावत की।

* सहीह बुख़ारी तथा शिफ़ाऽ पृ० ४७।

❀ सहीह बुख़ारी में, मक्का विजय होने का वर्णन।

× सहीह बुख़ारी, मक्कः विजय होने का खुत्बः।

‡ शिफ़ाऽ पृ० ४१।

† शिफ़ाऽ पृ० ४१।

▯ ,, ,, ६०।

खाने में माँस भी था । आपने फरमाया "मैं वह मास नहीं खाता जो मूर्तियों अथवा देवताओं पर चढ़ा हुआ हो, मैं तो केवल वही मांस खाया करता हूँ जिस पर जिबह के समय अल्लाह का नाम लिया गया हो । *

तप—१—आँहजरत की एक दुआ यह थी "प्रभु ! मैं एक दिन भूखा रहूँ और एक दिन खाने को मिले, भूख में तेरे आगे गिड़गिड़ाया करूं और तुझसे मांगा करूं और खाकर तेरी स्तुति किया करूं । ×

२—श्रीमती आयशः का कथन है "एक २ महीने लगातार हमारे चूल्हे में आग नही जलती थी, नबी का परिवार जल तथा खजूरों पर जोवन निर्वाह करता था" [] ।

३—हजरत आयशः कहती हैं "नबी ने मदीने आने के बाद तीन दिन तक बराबर गेहूँ की रोटी कभी नहीं खाई" । §

४—जब नबी की मृत्यु हुई तो उस समय आपकी जिरह एक यहूदी (महाजन) के पास थोड़े से जौ के बदले गिरौं थी । ‡

५—जब हुजूर इस लोक की अन्तिम रात बिता रहे थे उस समय श्रीमती आयशः सिद्दीका ने पड़ोसिन से चिराग़ के लिए तैल उधार मँगवाया था । +

६—दुआ फरमाया करते "हे प्रभु ! मुहम्मद की संतान को केवल इतना दीजिए कि जितना वे पेट में डाल लें।"

स्मरण रहे कि यह स्थिति विवशता के कारण नहीं थी, आपने जान बूझकर पैदा की थी, और उससे हुजूर का यह आशय भी नहीं था कि किसी हलाल चीज़ के ग्रहण करने अथवा उससे लाभ उठाने में कोई रुकावट पैदा करें । ऐसे विचाराधीन केवल एक बार नबी ने शहद खाना छोड़ा था उसका कारण भी यह हुआ कि एक बीबी (धर्मपत्नी) ने शहद की बू को अपनी तबियत के खिलाफ़ बताया था । उस पर अल्लाह ने नबी से फ़रमाया कि इतनी खिचावट नहीं करना चाहिए।

स्त्रियों की सहायता और उनके आराम का ध्यान—उम्मुल मोमेनोन श्रीमती सफ़िय्या एक यात्रा में साथ थीं । वे शरीर को चादर से ढाँककर ऊँट को पिछली सोट पर नबी के साथ बैठा करतीं थीं । जब वह ऊँट पर सवार होने लगतीं तो हुजूर अपना घुटना आगे बढ़ा देते, सफ़िय्या अपना पाँव हज़रत के घुटने पर

---

* बुख़ारी में हज़रत अब्दुलाह से ।

× शिफ़ाऽ पृ० ६२ ।

[] बुख़ारी शरीफ़ में, हज़रत आयशा से ।

§ " " " " ।

‡ " " " " ।

+ " " " " ।

रखकर ऊँट पर चढ़ जाया करतीं। *

२—एक बार ऊंट का पाँव फिसल गया, नबी और श्रीमती सफ़िय्या दोनों गिर पड़े। अबू तल्हा दौड़कर आये और नबी की ओर झुके, नबी ने फ़रमाया तुम पहले स्त्री की ख़बर लो। †

३—एक यात्रा में ऊंटों के कुजावों में स्त्रियाँ बैठी हुई थीं। सारबान जो ऊँटों की मुहार पकड़कर चलते हैं "हुदा ख्वानी" ‡ करने लगे। नबी ने फ़रमाया देखो काँच के शीशों को तोड़ फोड़ न देना ▯।" इस कथन में आँहज़रत ने स्त्रियों को काँच से तशबीह (उपमा) दी है। मतलब यह है कि वे आराम, इहतियात और नर्मी की पात्र है।

क़ैदियों की देखरेख—युद्ध के क़ैदियों की देखरेख अतिथियों के समान की जाती थी। बद्र के युद्ध के जो कैदी मदीने में कुछ दिनों मुसलमानों के पास क़ैद रहे उनमें से एक का कथन है "ख़ुदा मुसलमानों पर दया करे, वह अपने स्त्री बच्चों से अच्छा हमें खिलाते थे और अपने परिवार से पहिले हमारे आराम का प्रबन्ध किया करते थे।"

जब क़ैदी पकड़कर लाये जाते तो नबी सर्व प्रथम उनके वस्त्र का प्रबन्ध करते। +

वरज़िश—वरज़िश का शौक दिलाया करते थे। रुकाना अरब का प्रसिद्ध पहलवान था, वह अपने पछड़ जाने को इस्लाम स्वीकार करने की शर्त ठहराता था नबी ने उसे तीन बार पछाड़ दिया था। ⌸

धनुर्विद्या—निशाने बाज़ी का भी लोगों को शौक दिलाया करते थे। उसकी मश्क के लिये लोगों को दो भागों में बाँट दिया करते। एक बार फ़रमाया "तीर चलाओ मैं उस पार्टी की ओर हूँ, यह सुनकर दूसरी पार्टी ने तीर चलाने से हाथों को रोक लिया, कारण पूछा गया उन्होंने कहा जब उस पार्टी में रसूलुल्लाह शामिल हैं तो उनके मुक़ाबिले में हम तीर कैसे चला सकते हैं। फ़रमाया अच्छा तीर चलाओ मैं तुम सब के साथ हूँ।" ×

घुड़-दौड़—घोड़ों की दौड़ आपकी आज्ञा से कराई जाती। लम्बी दौड़ ४–६ मील की और हल्की एक मील की होती थी। ▥

जन संख्या—आँहज़रत ने आज्ञा दी कि "इस्लाम लाने वालों के नाम लिखे जायें" आज्ञा पालन की गई। उस समय मुसलमानों की संख्या १५०० थी, इस संख्या पर मुसलमानों ने अल्लाह का शुक्र अदा किया और बहुत प्रसन्न हुए। मुसलमान कहते थे अब हम डेढ़ हज़ार हो गये हैं अब हमें क्या डर है, हम ने तो वह समय देखा

* सहीह बुख़ारी हज़रत अनस से।
† " " " "।
‡ हुदा ऐसी आवाज़ से कविता पढ़ने को कहते हैं जिससे ऊँट तेज चलने लगते हैं।
▯ सहीह मुस्लिम।
\+ सहीह बुख़ारी में हज़रत जाबिर से।
⌸ शिफ़ाय आयज़ पृ० ३४।
× सहीह बुख़ारी में हज़रत मुस्लिमा से।
▥ सहीह बुख़ारी में इब्ने उमर से।

है जब हम में से कोई अकेला ही नमाज़ पढ़ा करता था, और उसे चारों ओर से शत्रुओं का भय लगा रहता था *। इस रवायत से यह विदित नहीं होता कि यह जन संख्या किस सम्वत् की है। सहीह बुख़ारी की अन्य रवायतों से यह तो विदित होता है कि यह तीसरी जन संख्या थी। पहिली बार मुसलमानों की संख्या ५०० दूसरी बार ६०० व ७०० के बीच में थी।

पैग़म्बरी की शिक्षायें—नबी की पवित्र शिक्षायें विश्वास, सुभाव, समाज, अराधना, मुक्ति तथा बन्धन सम्बन्धी विषयों में एक असीम समुद्र के समान हैं। नबी की बड़ाई और इस्लाम की प्रतिष्ठा इन्हीं शिक्षाओं पर निर्भर है। मैं इस स्थान पर उनका केवल नमूना उपस्थित करूँगा, हाँ यदि परमात्मा ने चाहा तो इस पुस्तक के तीसरे भाग में विस्तार पूर्वक लिखा जायेगा।

ख़ुदा का हक़ बन्दों पर और बन्दों का हक़ ख़ुदा पर—१—ख़ुदा का हक़ बन्दों पर यह है कि बन्दे उसी की उपासना करें और किसी शक्ति (अथवा पदार्थादि) को भी उसका साझी न ठहरायें।

२—बन्दों का हक़ ख़ुदा पर यह है कि जब वह ख़ुदा का हक़ चुकाएं तो ख़ुदा उन्हें दण्ड न दे †।

ईश्वरीय करुणा—नबी ने फ़रमाया "ख़ुदा ने पुस्तक में जो उसके पास अर्श पर है यह लिख रक्खा है "मेरी करुणा मेरे क्रोध से अधिक है"। ‡

माता पिता की सेवा—एक व्यक्ति ने नबी के पास आकर अर्ज़ किया" जिहाद (धार्मिक युद्ध) करना चाहता हूँ" आपने पूछा तेरे माता पिता हैं? वह बोला हाँ। फ़रमाया "उन्हीं की सेवा में जिहाद (असीम प्रयत्न) कर"×

परस्पर सहायता—फ़रमाया एक "मुसलमान दूसरे मुसलमान के लिये ऐसा है जैसे नीव की ईटें, एक से दूसरे को शक्ति मिलती है।" फिर अपने एक हाथ की उंगलियों को दूसरे हाथ की उंगलियों में डालकर दिखाया अर्थात मुसलमान इस प्रकार मिले जुले रहते हैं। ※ (अर्थात रहना चाहिए)

मुसलमान कौन है?—फ़रमाया "मुसलमान वह है जिसकी जबान (जिह्वा) और हाथ से मुसलमान बचे रहें"।※

ईमान का कमाल—फ़रमाया "तुममें कोई व्यक्ति धर्मात्मा नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिये वही न चाहे जो स्वयं अपने लिए चाहता है।"+

फ़रमाया तीन बातें ऐसी हैं कि जिस व्यक्ति

---

* सहीह बुख़ारी में हज़रत हुज़ैफ़ा से।

† सहीह बुख़ारी में मुआज़ बिन जबल से।

‡ ,, ,, किताबुल् ख़ुल्क़ में अबी हुरैरः से।

× सहीह बुख़ारी किताबुल् अदब में इब्ने उमर से।

※ ,, ,, किताबुल्मज़ालिम में अबी मूसा से।

※ ,, ,, किताबुल् ईमान में हज़रत अब्दुल्लाह से।

\+ सहीह बुख़ारी किताबुल् ईमान में हज़रत अनस से।

में होंगी वह ईमान की मिठास चख लेगा।

१—खुदा और खुदा के रसूल का प्रेम उसे सबसे अधिक हो। २—किसी से उसका प्रेम ईश्वर के लिए हो निज स्वार्थ के लिये न हो। ३—कुफ्र में पड़ जाने को ऐसा बुरा जानता हो जैसा अग्नि में गिर जाने को समझता है।*

सदकर्म—लोगों ने हजरत से पूछा 'अल्लाह को कौन सा कर्म अधिक प्रिय है? फ़रमाया जो सद्कर्म सदैव किया जाये, चाहे वह थोड़ा ही हो फिर फरमाया "कर्म (तपस्या) इतना ही किया करो जिसे सरलता पूर्वक कर सको।"‡

कड़े परिश्रम की तपस्या—१ आँहजरत ने एक घर में रस्सी लटकती देखी। पूछा यह क्या है? लोगों ने कहा अमुक स्त्री ने लटका रक्खी है' वह रात को तपस्या करती हुई जब ऊँघने लगती है तो उससे लटक पड़ती है। फ़रमाया "इसे खोल दो, तपस्या उस समय तक करो कि मन की प्रफुल्लता शेष रहे" ×

२—बनी असद की एक स्त्री के विषय में आँहजरत से कहा गया कि वह रात भर तपस्या में तल्लीन रहा करती है। फ़रमाया 'ऐसा न करो, सामर्थ्य भर तपस्या करो।'§

३—अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस से हजरत ने पूछा "मैंने सुना है कि तुम रातों को बराबर जागते हो और दिन को बराबर व्रत रखते हो? अब्दुल्लाह ने कहा 'हाँ' फ़रमाया "अब ऐसा न करना, व्रत भी रक्खो और कुछ वक्त के लिये छोड़ भी दो। रात को उपासना के निमित्त जागो भी और सोओ भी। देख! तेरे शरीर का भी तुझ पर हक़ है, तेरी आँख का भी तुझ पर हक़ है, तेरी स्त्री का भी तुझ पर हक़ है।"+

परिश्रम की प्रशंसा और माँगने की बुराई—नबी ने फ़रमाया यदि कोई व्यक्ति लकड़ियों का गट्ठा पीठ पर लाया करे तो यह उसके लिये इस से उत्तम है कि वह लोगों से माँगा करे और लोग उसे दे दिया करें।▯

किन लोगों पर संदेह करना चाहिए—फ़रमाया रेस के योग्य दो व्यक्ति हैं (१) जिसे प्रभु ने धन दिया और वह अपने धन को उचित बातों पर व्यय करता है। (२) जिसे प्रभु ने ज्ञान दिया फिर वह स्वयं उस पर चलता और दूसरों को उसकी शिक्षा देता है।‡

उत्तम सदाचार की शिक्षा—सत्यवादिता

* सहीह बुख़ारी किताबुल् ईमान में हज़रत अनस से।

‡ सहीह बुख़ारी किताबुल् रिक़ाक़ में।

× ,, ,, किताबुल् नवाफ़िल में अनस से।

§ ,, ,, ,, में हज़रत आयशः से।

\+ ,, ,, किताबुल्निकाह में अब्दुल्लाह से।

▯ सहीह बुख़ारी में अबी हुरैरः से।

‡ बुख़ारी में इब्ने मस्ऊद से।

ग्रहण करो, परस्पर प्रेम बढ़ाओ, लोगों को खुदा की ओर से सुसमाचार सुनाओ, (स्वयं) कर्म किसी को स्वर्ग में नहीं ले जा सकता।*

दुराचार से बचो—सावधान! कुसंदेह को अपना स्वभाव न बनाना, इसमें झूठ ही झूठ होता है। निराधार बातों पर कान न धरो, दूसरों के ऐब न ढूंढो, परस्पर द्वेषभाव न रक्खो, किसी से मुँख न चुराओ, हे प्रभु भक्तो! परस्पर भाई २ बनकर रहो। (जैसा कि तुम सब उसी के सेवक हो)।†

पड़ोसी और अतिथि का हक़—जो व्यक्ति खुदा पर और क़यामत पर विश्वास रखता है उसे चाहिए कि अपने पड़ोसी को कष्ट न दे। और उसे चाहिए कि अतिथि का आदर सत्कार किया करे।‡

वार्तालाप और चुप रहना—जो व्यक्ति खुदा पर और क़यामत पर विश्वास रखता है उसे चाहिए कि बात कहे तो भलो कहे नहीं तो चुप रहे।❦

मुक्ति की ज़मानत—यदि कोई व्यक्ति मुझे उस चीज की जो उसके जबड़ों के बीच है (अर्थात जिह्वा की) और उसकी जो उसकी टाँगों के बीच है (अर्थात लज्जित अंग की) ज़मानत दे (सारांश यह कि उन पर धर्म का नियन्त्रण बनाये रखे) तो मैं उसके प्रति स्वर्ग का ज़ामिन बनता हूँ।⁑

धैर्य व कृतज्ञता की शिक्षा—यदि ऐसे व्यक्ति पर तुम्हारी दृष्टि पड़े जो धन सम्पत्ति अथवा सौन्दर्य में तुमसे बढ़कर है तो ऐसे व्यक्ति को भी देखो जो इन बातों में तुमसे कम है।×

बलवान कौन है?—बलवान वह नहीं है जो दूसरों को पछाड़ देता है, बलवान तो वह है जो क्रोध के समय अपने आपको थाम (रोक) लेता है।+

इस्लामी प्रचारकों का कर्तव्य—मुआज़-बिन जबल और अबू मूसा को नबी ने यमन देश में इस्लाम धर्म के प्रचार के लिये नियुक्त फ़रमाया। चलते समय उन्हें यह शिक्षा दी "लोगों के लिये सुगमता चाहना, उन्हें कठिनाइयों में न डालना, उन्हें सुसमाचार सुनाना, धर्म से उन्हें घृणा न होने पाये, और तुम परस्पर मिल जुलकर रहना।▯

प्रेम का प्रभाव—जिसे जिसके साथ प्रेम है

* बुखारी में श्रीमती आयशा से।

† ,, ,, अबी हुरैरा से।

‡ ,, ,, ,, ,, ।

❦ ,, ,, ,, ,, ।

⁑ ,, ,, सहल बिन सअद से।

× बुखारी में अबी हुरैरा से।

\+ ,, ,, ,,

▯ बुखारी किताबुलबिर्र में।

वह उसके साथ होगा।*

कैदियों और बीमारों से बर्ताव—बन्दियों को मुक्त कराओ, भूखों को भोजन कराओ, बीमारों की देखरेख करो।†

वृक्ष लगाने का पुण्य—यदि किसी मुसलमान ने वृक्ष लगाया जिसका फल किसी मनुष्य अथवा जानवर ने खाया तो लगाने वाले के लिये यह दान समान होगा।‡

पशुवों से सहानुभूति—नबी ने फ़रमाया एक व्यक्ति जारहा था उसे ज़ोर की प्यास लगी। कुआं मिला, कुएँ के भीतर उतरकर उसने पानी पिया, जब बाहर निकला तो देखा कि एक कुत्ता प्यास से ज़बान बाहर निकाले भीगी भूमि को चाट रहा है, वह पुनः कुएँ में उतरा अपना (चमड़े का) मोज़ा पानी से भरकर लाया और कुत्ते को पानी पिलाया। खुदा ने उसके इस कर्म को स्वीकार किया और उसके पाप क्षमा कर दिये। सहाबियों ने यह सुनकर पूछा या रसूलल्लाह क्या पशुवों के बारे में भी हमें प्रतिफल मिलेगा? नबी ने फ़रमाया प्रत्येक प्राणी जिसके कलेजे में नमी है (अर्थात जीवित है) उसके बारे में तुम्हें प्रतिफल मिलेगा।

दासियों को शिक्षा देना—यदि किसी के पास दासी हो तो वह उसे विद्या सिखाए, अच्छे व्यवहार सहित रक्खे, फिर स्वतन्त्र करदे, फिर उसे धर्मपत्नी बनाले तो उसे दुगना प्रतिफल मिलेगा।§

कन्याओं को शिक्षा देना—अब्दुल्लाह मर गया है, छोटी २ लड़कियाँ छोड़ गया है, इस निमित्त मैंने एक विधवा से विवाह किया कि वह उन्हें शिक्षा दे।¶

मुनाफ़िक़ (धर्मकपटी) कौन है?—चार अवगुण जिस व्यक्ति में हों वह धर्मकपटी है यदि चार में से कोई एक है निफ़ाक़ का एक लक्षण उसमें है (१) बोले तो झूठ बोले (२) वादा करे तो खिलाफ़ करे (३) प्रतिज्ञा करे तो पूरी न करे (४) झगड़ने लगे तो अश्लील बातें बकने लगे।+

मुहाजिर कौन है?—ईश्वर के मार्ग में हिजरत (देश परित्याग) करने वाला वह व्यक्ति है जो खुदा की रोकी हुई चीज़ों से प्रथक हो जाता है।×

प्रलय के दिन दैवीशरण किसे प्राप्त होगी—(१) न्याय प्रिय समृाट (२) वह जो युवावस्था में ईश्वर भक्त रहा हो (३) जिसे एकाँत में

* बुख़ारी किताबुल् बिर्र में इब्ने मस्ऊद से।
† ,, ,, अदब में हज़रत अनस से।
‡ ,, ,, ,, ,, ,,।
§ बुख़ारी में अबू मूसा से।
¶ बुख़ारी में हज़रत जाबिर से।
\+ बुख़ारी में अब्दुल्लाह बिन उमर से।
× ,, ,, अबी हुरैरा से।

प्रभु स्मरण हो और उसके नेत्र आँसुओं से भर आयें (४) जिसका मन मस्जिद (पूज्यस्थान) में लगा रहता हो (५) जिनका परस्पर प्रेम प्रभुनाते हो (६) जिसे कोई सुन्दर कामनी अपनी ओर बुलाये और वह कह दे कि मैं खुदा से डरता हूँ। (७) जो गुप्त रूप दान करता हो, उसके उल्टे हाथ को खबर न हो कि उसके सीधे हाथ ने क्या दिया। ये हैं वे सात व्यक्ति जिन्हें खुदा क़यामत (प्रलय) के दिन अपनी शरण में ले लेगा जब कि कहीं शरण न मिल सकेगी।

अमीर की आज्ञा पालन करना—यदि किसी को अपने अमीर (शासक) की कोई बात बुरी लगे तो उसे चाहिये कि धैर्य से काम ले क्यों कि यदि कोई बालिश्त भर अपने शासक की आज्ञा पालन में कमी करेगा तो वह ऐसी मृत्यु को प्राप्त होगा जैसे इस्लाम से पूर्व काल की मृत्यु होती थी*। तुम लोग मेरे बाद ऐसी स्थितियाँ और ऐसी बातें देखोगे जिन्हें तुम पसन्द न करोगे। पूछा गया ऐसी स्थिति की सूरत में क्या आज्ञा है, फ़रमाया तुम उनका हक़ अदा करते रहना और अपने हक़ों के बारे में ख़ुदा से दुआ माँगते रहना †।

जनता का प्रतिनिधित्व—फ़रमाया "तुम लौट जाओ। इस विषय को हमारे समक्ष तुम्हारे नेता पेश करें ‡। प्रभाव-शाली व्यक्तियों ने आँहज़रत से आकर निवेदन किया कि सब लोग इस बात पर प्रसन्न हैं और उन्हों ने हमें अपना प्रतिनिधि बना दिया है। ⁑

समझौते वाले ग़ैरमुस्लिमों की रक्षा—यदि कोई मुसलमान किसी ऐसे ग़ैर मुस्लिम को जिससे समझौता किया जा चुका है क़त्ल करेगा तो वह स्वर्ग की सुगन्ध भी न पा सकेगा, यद्यपि स्वर्ग की सुगन्ध चालीस वर्षीय यात्रा की दूरी से आने लगती है। ▯

जीवन का मूल्य—किसी व्यक्ति को मौत की अभिलाषा नहीं करनी चाहिये, यदि वह सदाचारी है तो इस कारण कि सदाचार में और वृद्ध हो और यदि दुराचारी है तो इस कारण कि कदाचित वह भगवत इच्छा प्राप्त कर सके। §

स्वास्थ्य का मूल्य—दो दैवी आशीर्वाद हैं जिनको बहुधा लोग नहीं जानते (१) स्वास्थ्य (२) विभुता। ×

ऋण चुकाने की महत्ता—नबी को एक व्यक्ति का ऊँट देना था। वह माँगने आया, हज़रत ने उसके ऊँट से उत्तम ऊँट मोल लेकर उसे दे दिया और लोगों से फरमाया "सदाचारी और भला वह है जो ऋण को सहर्ष तथा उत्तम ढंग से चुका देता है। +

---

* बुख़ारी में इब्ने अब्बास से।
† ,, ,, इब्ने मस्ऊद से।
‡ ,, किताबुल् अहकाम में।
⁑ ,, मस्ऊद से।
▯ ,, अब्दुल्लाह बिन उमर से।
§ ,, किताबुत्तिब में अबी हुरैरा से।
× ,, इब्ने अब्बास से।
\+ ,, अबी हुरैरा से।

धनाढ्यता की परिभाषा—धनाध्यत्तता धन वाहुल्यता से प्राप्त नहीं होती है। कुवेर वह है जिसका मन धनी है *।

मानव समानता—अरब के किसी व्यक्ति को अजम के किसी व्यक्ति पर और अजय के किसी व्यक्ति को अरब के किसी व्यक्ति पर कोई श्रेष्टता प्राप्त नहीं है और न काले को गोरे पर न गोरे को काले पर श्रेष्टता प्राप्त है। श्रेष्टता का कारण तो केवल संयम है। †

दया—जो कोई दूसरे पर दया नहीं करता उस पर दया नहीं की जायगी। ×

पैत्रिक धन की महत्ता—तेरा वारिस कंगाल हो और लोगों के आगे हाथ फैलाता फिरे, इससे उत्तम यह है कि तू उसे धनी छोड़ कर मरे। ▯

स्त्री के साथ व्यवहार—स्त्री को ऐसा समझो जैसा पसली की हड्डी। इस हड्डी को यदि सीधा करने का यत्न करोगे तो टूट जायगी और यदि उससे काम लेना चाहोगे तो वह टेढ़ी रह कर ही काम देगी। ❦

स्त्री का पद घर में—स्त्री अपने पति के घर में, और संतान पर हाकिम है। ❋

क़ुरान के ज्ञाता का पद—क़ुरान शरीफ़ का ज्ञाता धर्मात्मा है और वह फ़रिश्तों के साथ होगा। ‡

ख़ुदा के निकट उत्तम बोल—दो बोल हैं जो दयालु परमात्मा को अति प्रिय हैं, ज़बान पर हलके हैं, कर्मों की तराज़ू पर भारी हैं "सुब्हानल्लाह व बेहम्दी सुब्हानल्लाहिल् अज़ीम"। +
(अर्थात—अल्लाह पवित्र है, समस्त स्तुति उसी के लिये है, अल्लाह पवित्र है और वही सबसे बड़ा और महान है"।)

—०—

क़ुरान शरीफ़

हमारे नबी की जीवनी कोई विद्वान यदि विस्तार पूर्वक लिखेगा तो उसके लिये क़ुरान पर दृष्टि डालना अनिवार्य होगा। मेरी तरह संक्षिप्त वृत्तांत लिखने वाले को भी क़ुरान की शिक्षाओं का एक नमूना पेश करना ही पड़ेगा, चाहे वह क़ुरान की विशेषताओं और ज्ञान युक्त आदेशों के विषयों को छोड़ ही क्यों न दे। कारण यह कि क़ुरान की शिक्षाओं का नमूना पेश किये बिना आँहज़रत के

* बुख़ारी में अबी हुरैरा से।
† ज़ादुल मआद भाग २ पृ० १८९।
× बुख़ारी में जरीर इब्ने अब्दुल्लाह से।
▯ ,, ,, साद बिन अबी वक़ास से।
❦ ,, ,,।
❋ ,, ,, इब्ने उमर से।
‡ ,, क़िताबुत्तौहीद में।
\+ ,, ,, अबीहुरैरा से।

जीवन चरित्र की पुस्तक अपूर्ण ही रह जायगी। हज़रत आयशः से किसी ने पूछा कि हज़रत का आचरण कैसा था ? श्रीमती जी ने उत्तर दिया "क़ुरान हज़रत का आचरण है।"

हमारा विश्वास है कि क़ुरान ईश्वर की वाणी है किन्तु संसार वालों को इस ईश्वरीय वाणी का परिचय नबी द्वारा ही प्राप्त हुआ है।

यह पवित्र वाणी तेईस वर्ष की मुद्दत में आँहज़रत पर प्रगट हुई, और जो शब्द आपने पढ़कर सुनाये उन्हीं शब्दों में वह आज संसार में प्रचारित, ज़बानों पर प्रचलित, हृदयों में जमी हुई और दिमागों पर छाई हुई है।

यह पवित्र वाणी प्रत्येक भूभाग पर विद्यमान है ! संसार के प्रत्येक भाग पर करोड़ों व्यक्ति प्रतिदिन पाँच बार इसके भिन्न २ अंशों को अवश्य पढ़ लेते हैं।

जब से इसका प्रादुर्भाव हुआ इसे उन्नति ही प्राप्त होती रही। उस समय से लेकर जब कि सर्व प्रथम इसे श्रीमती खदीजा ने सुना प्रतिदिन इसके मानने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। कोई देश, कोई ऋतु, कोई रीति रिवाज, किसी स्थान के मानने अथवा न मानने वालों की अनुकूल व प्रतिकूल स्थितियाँ उसकी उन्नति को न रोक सकीं।

भिन्न २ देशों तथा भिन्न २ भाषाओं में उसके अशुद्ध अनुवाद भी किये गये, उसकी सच्ची व स्पष्ट शिक्षाओं की ग़लत टीका टिप्पणी भी की गयी किन्तु ऐसा कोई उपाय उसके प्रचार को न रोक सका तथा उसकी उन्नति की व्यापकता को सीमित न कर सका।

क़ुरान जिस भाषा में उतरा उसी में अब तक मौजूद है और एक विश्व उसके प्रकाश से प्रकाशित है। किन्तु संसार के दूसरे धर्म ग्रन्थ तौरेत ज़बूर, इन्जील, इन्जीलके पत्र, वेद, ज़न्द पाज़न्द आदि इस गुण से खाली हैं। ये पुस्तकें जिस भाषा में उतरीं उस भाषा और उसके भाषियों का चिन्ह आज संसार में शेष नहीं है।

क़ुरान स्वयं ही उन सब आक्षेपों का वर्णन करता है जो उसके प्रकट होने के समय उस पर अथवा नबी पर लगाये गये। अतः वह अपने लिए स्वयं एक सच्चा इतिहास बन गया है, जिसमें तसवीर के दोनों रूप दिखा दिए गए हैं। क़ुरान ने इस विषय में अपनी सत्यता एवं पुष्टता का विश्वास जिस साहस से प्रदर्शित किया है संसार की किसी अन्य धर्मपुस्तक ने वैसा नहीं किया।

क़ुरान शरीफ़ की शिक्षा ऐसी गहरी सच्चाई लिए हुए है कि जिन धर्मों तथा जातियों ने उसे खुल्लम खुल्ला नहीं माना उन्होंने भी अपनी धर्म पुस्तकों में जो सैकड़ों वर्ष पहिले अथवा बाद की हैं इसी शिक्षा के मौजूद होने का दावा किया है। मेरी इस बात की पुष्टि उस समय हो जायगी जब आप यहूदी, ईसाई, पारसी, बौद्ध तथा हिन्दू धर्मों के हालात क़ुरान के प्रकट होने से पहिले व बाद के पढ़ेंगे और क़ुरान के आविर्भाव के पश्चात उनकी उन्नति के इतिहास का मननपूर्वक अध्ययन करेंगे और यह देखेंगे कि उस देश में इस परिवर्तन तथा क्रान्ति से पूर्व क़ुरान की शिक्षाओं का प्रचलन हो चुका था अथवा नहीं।

अब चाहे कोई क़ुरान शरीफ़ के प्रभाव को स्वीकार करे जैसा कि ब्रह्म-समाज के प्रवर्तकों के

सम्बन्ध में कहा जाता है अथवा रोमन कैथोलिक वाले लूथर पर कटाक्ष करते हैं कि उनकी शिक्षाएं क़ुरान से ली गयी हैं, और चाहे कोई कुरान के प्रभाव को न स्वीकार करे जैसा कि अधिकांश सम्प्रदाय नहीं मानते तथापि क्रियात्मिक रूप में उन्होंने क़ुरानी शिक्षाओं को अवश्य ही अपनाया है और अपना रहे हैं, और प्रत्येक उन्नत जाति विवश है कि क़ुरानी शिक्षा को अपनाती रहे। जहाँ तक मेरा ज्ञान है क़ुरान शरीफ़ ही एक ऐसी पुस्तक है जो "अकमल्तो लकुम् दीनोकुम् व अत्मम्तो अलैकुम् निऽमती" (आज तुम्हारा दीन पूर्ण और दैवी आशीर्वाद अन्तिम रूप से प्रदान कर दिया गया) का सुसमाचार सुनाती है।

नीचे कुछ आयतों का अनुवाद × दिया जा रहा है। इस से अधिक कुछ लिखना इस पुस्तक के विषय से पृथक होगा क्यों कि मैं तो एक ऐसी संक्षिप्त और सुगम पुस्तक लिखना चाहता हूँ जिसे पढ़ लेने के बाद पढ़ने वाला महर्षि नबी और महान कुरान के बारे में थोड़ा बहुत ज्ञान प्राप्त कर सके। मुसलमान भी कृपया सोचें कि क़ुरान शरीफ़ किस आदर्श के मुसलमान बनाना चाहता है।

ब्रह्म विद्या

ब्रह्मज्ञान—"अल्लाह के नाम से आरम्भ जो अति दयालु, अनन्त कृपालु है।" "इन्द्रियां तथा बुद्धि, ब्रह्म ज्ञान (स्वयं ही) प्राप्त नहीं कर सकते। किन्तु प्रभु को इन सब का ज्ञान (स्वयं ही) है।" (सू ६ः रु० १३) *।

"कोई वस्तु ईश्वर तुल्य नहीं और वह बन्दों की प्रार्थनाओं को सुनता और उनकी स्थितियों को देखता है"। (४२ : २)।

"अल्लाह ईमान वालों से प्रेम रखता है उन्हें अन्धकार से निकाल कर प्रकाश में ले आता है।" (२ः)

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं उसपर आलस्य और नींद का कोई प्रभाव नहीं होता। आकाशों एवं पृथ्वी में जो कुछ है सब उसी का है। ऐसा कौन है जो उसकी आज्ञा विना उस से सुफ़ारिश कर सके। ख़ुदा ही लोगों के अगले पिछले वृत्तान्त को जानता है और कोई उसके ज्ञान को घेर नहीं सकता। लोग उतना ही ज्ञान प्राप्त कर सकते है जितना प्रभु चाहे, उसकी कुर्सी (सिंहासन) आकाशों तथा पृथ्वी को घेरे हुए हैं। उसे आकाशों व पृथ्वी का थाम रखना थका नहीं देता। वह अति महान अति श्रेष्ठ है।" (२ : ३४)

"तेरे प्रभु ने अपने लिये करुणा को लिख लिया है। वह प्रभु, एक अकेला, सब का स्वामी, पवित्र है। न उसने किसी को जाना न वह किसी से जाना गया। और कोई भी उसके तुल्य नहीं।" (११२ : १)

सत्यधर्म—"यह ख़ुदा की बनाई हुई प्रकृति है जिस पर उसने लोगों को उत्पन्न किया है ईश्वर

× मूल पुस्तक में 'आयतों' के मूल शब्द भी दिये गये हैं। (अनुवादक)

* पहला नम्बर कुरान की सूरत का और दूसरा नम्बर सूरत के हिसाब से रुकू का है। (अनुवादक)

की बनावट में कोई अदल बदल नहीं होती। यही सीधा दीन है किन्तु बहुधा लोग इसे नहीं जानते"। (३० : ४)

"अल्लाह का रंग चढ़ाना है, हाँ अल्लाह से उत्तम और कौन रंग चढ़ा सकता है"। (२ : १६)

"खुदा ने तुम्हारे लिये धर्म का वह मार्ग नियुक्त किया है जिसकी आज्ञा नूह को दी गई और फिर मुहम्मद पर उसकी वही (ईश्वरीय वाणी) भेजी, और इब्राहीम, मूसा तथा ईसा को भी उसी की आज्ञा दी थी कि धर्म पर स्थिर रहो और उस में भिन्नता पैदा न करो"। (४२ : २)

सदकर्म की वास्तविकता—"ईश्वर के पास मास अथवा लोहू कदापि नहीं पहुंचता, ईश्वर के पास तुम्हारी भक्ति पहुँचती है"। (२२:५)

धर्म का उद्देश्य मानवता की पूर्ति है— "प्रभु यह नहीं चाहता कि तुम्हें कठिनाई में डाले वह तो यह चाहता है कि तुम्हें पवित्र करे और पूर्ण आशीर्वाद प्रदान करे जिस में कि तुम कृतज्ञता प्रगट करो"। (५:२)

"नमाज कुकर्म, निर्लज्जता, तथा निषेध कार्य्यों से रोक देती है और अल्लाह का जिक्र (ईश्वर स्मरण) तो इससे भी बढ़ कर (लाभप्रद) है।" (२९:५)

नबी का कर्तव्य—"हमने तुम्हारे पास नबी को भेजा जो तुम ही में से है। वह हमारी आयतें तुम को सुनाता, (दुराचार से) तुम्हें पवित्र करता, पुस्तक और ज्ञान की शिक्षा देता है और ऐसी विद्यायें सिखाता है जिन्हें तुम नहीं जानते"। (२:१८)

नबी लोगों को भली बातों के करने की आज्ञा देता और बुरी बातों के करने से रोकता है, और पवित्र वस्तुओं को हलाल (लीन) ठहराता और अपवित्र वस्तुओं को हराम (अलीन) ठहराता है, और उनके बोझ दूर कर देता और उनकी जंजीरें काट देता है। (७ : १९)

कर्मों का फल लोक में भी मिलता है और परलोक में भी—यदि इन बस्तियों के रहने वाले ईमान ले आते और संयम ग्रहण करते तो हम उन पर आकाशों तथा पृथ्वी की बरकतें खोल देते किन्तु वे तो ईश्वरीय आज्ञा को झुठलाने लगे अतः हमने उन्हें उनके कर्मों के कारण पकड़ा। (७ : १२)

"यदि वे लोग तौरात और इन्जील और उस शिक्षा पर जो उनपर उतारी गई थी स्थिर रहते तो आकाश तथा पृथ्वी की ओर से भोजन पाते।" (५ : १९)

"जो विपत्ति तुम्हें प्राप्त हुई वह स्वयं तुम्हारे अपने हाथों लाई हुई है और खुदा तो तुम्हारी बहुत सी बातें क्षमा कर देता है। (४२ : ४)

"कोई व्यक्ति भी नहीं जान सकता कि खुदा ने अपने बन्दों के लिये क्या क्या वस्तुएं गुप्त रूप जुदा रक्खी हैं जिन से उनके नेत्र ठण्डे (प्रसन्न) हो जायेंगे, यह उनके कर्मो का प्रतिफल है। (३२ : २)

ईश्वरीय नियमों में परिवर्तन नहीं होता—"ईश्वरीय नियमों में कोई परिवर्तन नहीं होता।"

"ईश्वरीय मर्यादा में एर फेर की जगह नहीं।" (३५:५)

"दयालु परमात्मा की सृष्टि में तुझे कोई त्रुटि दिखाई नहीं देगी। तनिक आँख उठाकर देख क्या तुझे कोई दराड़ भी दिखाई देती है। पुनः आँख उठाकर देख, बार बार देख तेरी दृष्टि थककर और असफल होकर लौट आयेगी।" (६७:१)

मनुष्यों को अपने कर्म ही का फल मिलता है—"मनुष्य को वही मिलता है जो उसकी कमाई है।" (५३:१)

"तुम्हारा प्रयत्न खूब सफल हुआ।" (७६:१)

"वह जाति जा चुकी, जो कुछ उसने कमाया था उसे मिलेगा। और जो तुम कमाओगे सो तुम्हें मिलेगा।" (२:१६)

धैर्य तथा संयम का पद—"यदि तुम धैर्य धरो और संयम ग्रहण करो तो यह महान साहस का कार्य है।"

ज्ञान की महत्ता—"और जिसे ज्ञान दिया गया उसे भारी भलाई प्रदान की गयी।"

धैर्य का फल—"जब बनी इस्राईल ने धैर्य ग्रहण किया तो हमने उनमें पथप्रदर्शक पैदा किए जो हमारी इच्छानुसार लोगों का पथप्रदर्शन करते थे"। (३२:३)

लालच की बुराई—"काफ़िरों की अनेक जातियों को जो हमने लौकिक आनन्द दे रक्खे हैं तू उनकी ओर आँख उठाकर न देख।"

लौकिक सुख में परमात्मा को न भूलना—"हे क़ारून! तू सांसारिक अभिमान से चूर होकर अपनी मुक्ति के मार्ग को न भूल।" (२८:८)

आत्मघात से बचना—स्वयं अपने आपको हलाकत (मृत्यु तथा विनाशता) में न डालो।"

"मिथ्यारोपण वही किया करते हैं जो खुदा की आयतों पर विश्वास नहीं रखते।" (१६:१४)

निषेध वस्तुएँ—"हे मुहम्मद! सुना दीजिये कि मेरे प्रभु ने इन सब चीज़ों को हराम (अलीन) कर दिया है १—समस्त अश्लील बातों व कर्मों को चाहे प्रगट हों अथवा गुप्त। २—पाप को। ३—अनाधिकार बग़ावत को। ४—खुदा के साथ साझी ठहराने को, जिसके लिये कोई तर्क ही नहीं ५—और खुदा पर ऐसी बात जोड़ लेने को जिसे तुम नहीं जानते।" (७:४)

ईश्वरोपासना—"हमने खुदा का रंग (गुण) ग्रहण किया है, क्या खुदा से भी अधिक उत्तम कोई रंग देने वाला है, और हम तो केवल उसी की उपासना करते हैं। (२:१६)

लिपि तथा विद्या की प्रशंसा—"मैं लेखनी की और उसकी लिखी हुई विद्याओं की शपथ खाता हूँ।" (६८:१)

बुद्धिमानों के लिए दैवी चिन्ह—आकाशों व पृथ्वी की उत्पत्ति, रात दिन के भेद (आने जाने), नावें और जहाज़, जो व्यापार सम्बन्धी वस्तुएं लेकर नदियों व समुद्रों में चलते हैं, आकाश की ओर से ईश्वर द्वारा जल उतारने में और उससे मृतक भूमि को पुनः जीवन प्रदान करने में, भूमि पर सब प्रकार के जीव जन्तु पैदा करके उन्हें फैला देने में, विभिन्न प्रकार की हवाओं के चलने में और उन बादलों में जो आकाश तथा पृथ्वी के

बीच ईश्वराज्ञाधीन बने हुये हैं, निस्सन्देह इन सबमें बुद्धिमानों के लिये ईश्वरीय सत्ता व सामर्थ्य के स्पष्ट चिन्ह हैं।" (२ : २०)

बार बार क़सम खाने की मनाई—"तू किसी ऐसे तुच्छ की बात न मान जो बहुत क़समें (सौगन्द) खाने वाला है।" (६८ : १)

"प्रभु नाम को सौगन्द का निशाना न बनाओ।" (२ : २८) शपथ की रक्षा करो।" (५ : १२)

शांतप्रियता का निमन्त्रण—"ईमान वालो! इस्लाम में (जिस पर शांति आधारित है) पूर्ण रूप से दाखिल हो जाओ और शैतान (दुष्टात्मा) के पगचन्हिों पर मत चलो, वह तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है।" (२ :२८)

"लोगों के बीच सन्धि करा दिया करो।" (२ : २८)

"परस्पर झगड़े बखेड़ों का निबटेरा कर लिया करो।" (८ : १)

क्षमा—"उचित है कि क्षमा करो और जाने दो, क्या तुम नहीं चाहते कि परमात्मा तुम्हें क्षमा प्रदान करे।" (२४ : ३)

सत्य-धर्म की सत्यता स्वयं प्रकट हो जाती है—"हम अपनी सामर्थ के चिन्ह जो समस्त विश्व में फैले हुए हैं और स्वयं भी उनके भीतर विद्यमान हैं अवश्य उन्हें दिखा देंगे, अन्ततः उन्हें विदित हो जायगा कि यह शिक्षा सर्वथा सत्य है।" (४१ : ६)

राज नीति सम्बन्धी नियम

न्यायाधीशों के लिये ज्ञान का होना जरूरी है—"हजरत दाऊद व हजरत सुलैमान की घटना वर्णन कीजिए जब वह एक खेत के विषय में निर्णय कर रहे थे जिस को रात के समय उनकी जाति की भेड़ें चर गईं थीं। हम उनके फैसले को देख रहे थे, सो इस मामले में हम ने हजरत सुलैमान को विशेष बुद्धि प्रदान की, दोनों को हमने राज्य तथा ज्ञान प्रदान किया था।" (२१ : ६)

शान्ति भंग करने का निषेध—"किसी भूमि में सुधार हो जाने के बाद उपद्रव न मचाओ।" (७ : ३)

अत्याचार पतन का कारण है—"कितने नगरों को हमने उनके अत्याचार के कारण नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और उनकी विनाशता उपरान्त एक दूसरी जाति ला खड़ी की।" (२१ : २)

सुधार और भलाई—"ऐसा नहीं कि तेरा प्रभु बसे हुए नगरों को उनके बसने हारों की भलाई और सुधार प्रियता के होते हुए भी अनीति से नष्ट-भ्रष्ट कर डाले।" (११ : १०)

युद्ध के लिये तैयार रहना ही युद्ध से बचने का उपाय है—"जहाँ तक सम्भव हो अपनी शक्ति बढ़ाओ और घोड़ों को युद्ध के लिए तैयार रक्खो। जिसमें कि तुम उन लोगों के हृदयों पर भय जमा सको जो परमात्मा के शत्रु हैं और तुम्हारे भी शत्रु हैं।" (८ : ८)

परामर्श द्वारा राज करना—"राज्य के कामों में परामर्श कर लिया करो।" (३७ :)

"मुसलमानों का राज्य परामर्श द्वारा होना चाहिये।" (४२ : ४)

"हे अध्यक्षो! राजकाज में तुम व्यवस्था तथा योजनाएं उपस्थित करो, तुम्हारी उपस्थिति के बिना मैं किसी कार्य का निर्णय नहीं करूँगा।" (२७ : ३)

शिक्षा दीक्षा

विद्या तथा ज्ञान की बातों को सुनना और उन्हें व्यवहार में लाना—"हे पैग़म्बर! उन बन्दों को सुसमाचार सुना दीजिए जो (विद्या तथा ज्ञान की) बातों को सुनते हैं और उसके उत्तम रूप को ग्रहण करके उसका अनुसरण करते है। यही वे लोग हैं जिन्हें ख़ुदा ने मार्ग पर लगाया और यही यथार्थ में बुद्धिमान हैं।" (६ : ६)

अन्य धर्मावलम्बियों से ज्ञान की बातें जानना—"क्या तुम्हारे पास कुछ ज्ञान है? सो उसे हमारे निमित्त प्रगट करो।" (६ : १८)

धर्म प्रचार का कार्य क्रम

धर्म प्रचार के लिये एक जमाअत का होना आवश्यक है—"तुम में एक ऐसा जत्था अवश्य होना चाहिये जो लोगों को नेकी (भलाई) की ओर बुलाए और सदकर्मों की आज्ञा दे और कुकर्मों से रोके। ऐसे ही लोग सफल होंगे।" (३ : ११)

प्रत्येक सम्प्रदाय का व्यक्ति इस जामाअत में सम्मिलित हो सकता है—"प्रत्येक जत्थे व सम्प्रदाय में से कुछ लोग इस अभिप्राय से क्यों नहीं खड़े होते कि धर्म का ज्ञान प्राप्त करें और जब ज्ञान प्राप्त करलें तो अपनी जाति से इस प्रकार सहानुभूति प्रदर्शित करें कि लोगों को ईश्वर अनिच्छित बातों से रोकें जिसका फल यह निकलेगा कि जाति बुरी बातों से बचने लगेगी।" (६ : १५)

आचार विचार की शुद्धता

स्त्री का एक गुण—शृङ्गार तथा आभूषणों में पलती है और लड़ाई झगड़ों से पृथक रहती है।" (४३ : २)

पति-पत्नी—"स्त्रियाँ अपने पतियों के लिए और पुरुष अपनी पत्नियों के लिये वस्त्र हैं।" (२ : २३)

वस्त्र मनुष्य को गर्मी सर्दी से बचाता है। वस्त्र मनुष्य के सौन्दर्य तथा श्रंगार का साधन बनता है। वस्त्र से पहिनने वाले की सभ्यता व सदाचार का अनुमान किया जा सकता है। वस्त्र, पहिनने वाले की त्रुटियों को छुपाता है, इसी प्रकार स्त्री पुरुष का परस्पर सम्बन्ध होना चाहिए। वे काल की गर्म सर्द गति से एक दूसरे का बचाव करें, एक दूसरे का सौन्दर्य तथा श्रंगार परस्पर प्रेम द्वारा उन्नति को प्राप्त होता रहे, स्त्री को देखकर उसके पति की सभ्यता और पति को देखकर उसकी स्त्री के सदाचार व सुघड़पन का अनुमान किया जा सके, वे परस्पर एक दूसरे के साथी और भेदी रहें।

"प्रभु ने तुम्हीं में से तुम्हारे लिये स्त्रियाँ पैदा कीं जिसमें कि उनके द्वारा सान्त्वना प्राप्त करो। और स्त्री पुरुष के बीच परमात्मा ने प्रेम और

दया का सञ्चार कर दिया है" (३० : ३)

"पुरुष स्त्रियों के रक्षक है।" (४ : ६)

"स्त्रियों के पतियों पर उसी भांति अधिकार हैं जैसे पतियों के स्त्रियों पर हैं, और पुरुषों को उन पर (थोड़ी) श्रेष्ठता है।" (२ : २८)

प्रेम की पराकाष्ठा ईमान (विश्वास) है—"मोमिन (विश्वासी) खुदा के प्रेम में अति अधिक दृढ़ है।" (२ : २०)

"ईमान वालों और ज्ञान प्रदान किये गये लोगों का पद प्रभु ऊँचा कर देता है।" (५८ : २)

मनुष्य की श्रेष्ठता—निस्सन्देह हमने मनुष्य को श्रेष्ठता प्रदान की है और उन्हें सवार करके जल थल में फिराया (अर्थात् भूमि और समुद्रों में यात्रा करने के साधन बताए), और नाना प्रकार के भोजन पदार्थ प्रदान किये, और अपनी अधिकांश सृष्टि पर उसे श्रेष्ठता दी।" (१७ : १७)

मनुष्य का श्रेष्ठ होना ही शिर्क का खण्डन है—"हजरत मूसा ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हारे लिए कोई और उपास्यदेव ढूंढ लाऊं? यद्यपि उसने तुम्हें समस्त सृष्टि पर श्रेष्ठता प्रदान की है।" (७ : १६)

मनुष्य को शिक्षा ग्रहण करना चाहिए—"हाय, मुझसे इतना भी तो न हो सका कि इस कौए की तरह अपने भाई के शव को मिट्टी में छुपा देता, यह सोचकर उसे लज्जा आई।" (:)

देखने वाले के लिए प्रत्येक वस्तु में एक चिन्ह है—"पृथ्वी व आकाशों में ईश्वरीय सामर्थ्य के कैसे २ चिन्ह स्पष्ट हैं जिनसे (अधिकांश) लोग मुंह फेरकर गुजर जाते हैं।" (:)

यात्रा से ज्ञान की वृद्धि होती है—"उन्होंने विश्व में फिरकर यात्रा क्यों नहीं की, जिससे उनको सोचने समझने वाला हृदय और सुनने वाले कान प्राप्त होते।" (२२ : ६)

अन्धा वह है जिसका हृदय अन्धा है—"यथार्थ बात यह है कि आखें अंधी नहीं होतीं बल्कि वह दिल अन्धे होजाते हैं जो उनके सीनों में छुपे हुए हैं।" (२२ : ६)

लीन अलीन और अलीन लीन नहीं हो सकता—"हे लोगो! खुदा ने पृथ्वी पर जो पवित्र व हलाल (लीन) चीजें पैदा की हैं उन्हें खाओ पियो और शैतान (दुष्टात्मा) के पगचिन्हों पर मत चलो।" (२ : २१)

शिक्षा इसी लोक में ग्रहण की जा सकती है—"जो व्यक्ति इस लोक में अंधा रहा सो परलोक में वह और अधिक अंधा और पथ-भ्रष्ट होगा।" (:)

ईमान द्वारा ही उच्च पद प्राप्त हो सकता है—"अपने आपको तुच्छ न समझो और शोक व चिन्ता न करो। यदि तुम ईमान वाले हो तो तुम्हें अवश्य ही श्रेष्ठता तथा आदर सम्मान प्राप्त होगा। (३ : १४)

संस्कृति

समस्त प्राणियों में एक नियम—"समस्त

भूमि पर कोई ऐसा चलने हारा पशु और कोई भी पक्षी ऐसा नहीं है जिनके तुम्हारे ही समान दल व जत्थे न हों। हमने अपनी पुस्तक में किसी वस्तु का वर्णन नहीं छोड़ा। फिर इन सबको अंततः खुदा ही की ओर इकट्ठा होकर जाना है।" (६:४)

सब कुछ मनुष्य के लाभ के लिए—"प्रभु वह है जिसने तुम्हारे लाभ के हेतु भूमि के सारे पदार्थ उत्पन्न किए।" (२ : ३)

भिन्न २ योग्यताएं—"प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वभावानुसार कर्म करता है।"

"क्या तुम नहीं देखते कि आकाश तथा पृथ्वी की समस्त उत्पत्ति (जैसे) सूर्य, चन्द्रमा, तारे पहाड़, वृक्ष, जानवर तथा बहुत से ऐसे मनुष्य ईश्वर के आज्ञाकारी हैं। (फिर भी) बहुत से ऐसे लोग रह जाते हैं जिन्हें दण्ड दिया जाना उचित ठहरा है।" (२२ : २)

"जिस व्यक्ति ने (ईश्वर के नाम पर) कुछ दान दिया, और खुदा से डरता रहा, और दैवी भलाइयों की पुष्टि की, उसे हम सुगमता सहित सुगम मार्ग (इस्लाम धर्म पर अर्थात प्राकृतिक पथ पर) चलाएंगे, किन्तु (इसके विपरीत) जिसने कृपणता की और अवज्ञा में पड़ा और खुदा की भलाइयों को झुठलाया तो हम उसे (अपनी कृपा से वञ्चित करके) कठिन मार्ग (जो प्रकृति के विपरीत होने के कारण कठिन है) सुगम कर देंगे।" (९२ : १)

संस्कृति के स्थापन व प्रबंध के लिये भिन्न २ श्रेणियां और उनका उत्तर दायत्व—"खुदा वह है जिसने तुम्हें पृथ्वी पर (सृष्टि के पदार्थों को काम में लाने के निमित्त) अपना खलीफा (प्रतिनिधि) बनाया, (और प्रबन्ध की उत्तमता के हेतु) किसी को पदवी में किसी से बढ़ा दिया कि तुम्हारी परीक्षा करे, उस बात में जो तुम को दी है, (कि तुम ईश्वर प्रदत्त शक्तियों तथा योग्यताओं से काम लेकर स्वयं अपने आप को ईश्वर का प्रतिनिधि सिद्ध करते हो अथवा उन्हें दबाकर निकृष्टता के पात्र ठहरते हो) निस्संदेह तेरा प्रभु शीघ्र दण्ड देने हारा है। निश्चय ही वह क्षमा करने हारा दयालु है।" (६ : ३०)

न्याय और अधिकारों की समानता—"और खुदा ने एक मीज़ान (तुला) नियुक्त की कि तुम उस मीज़ान में मर्यादा भंग न करो। न्याय सहित तौल को ठीक ठीक रक्खो और इस मीज़ान में किसी प्रकार की घटी न करो।" (५५ : १)

उत्तम व्यक्ति वह है जो मानव समाज का कल्याण करता है—तुम लोग (विश्व में) अन्य जाति गणों में एक उत्तम जाति हो, (क्यों कि तुम समस्त मनुष्यों को धर्म तथा प्रकृति अनुसार) भले कार्य करने की आज्ञा देते हो और बुरे कार्यों से रोकते हो और प्रभु पर पूर्ण विश्वास रखते हो।" (३ : १२)

भ्रातृत्व—"सब मुसलमान परस्पर भाई भाई है।" (४९ : १)

धन सम्पत्ति की परिभाषा—"और तुम अपने धन, जिसे खुदा ने तुम्हारे जीवन की पुष्टता के हेतु बनाया है निर्बुद्धियों के हाथ में न दिया करो।" (४ : १)

कङ्गाली की बुराई—"शैतान (दुष्टात्मा) तुम्हें कङ्गाली की वाचा देता है और (वह कृपणता की) निर्लज्जता की आज्ञा देता है, (इसके विपरीत) खुदा अपने अनुग्रह और प्रदान की आशा दिलाता है और ख़ुदा बहुत व्यापकता वाला तथा जानने हारा है।" (२ : ३७)

लालच और कंजूसी—"और जिनको अपने प्राणों के लालच से खुदा ने बचाया वही (परलोक में) सफल होंगे।" (६४ : २)

"दयालु परमात्मा के बन्दों का एक गुण यह भी है कि जब वह व्यय करने लगते हैं तो न तो व्यर्थ ही व्यय करते है और न कृपणता दिखाते हैं, बल्कि मध्यस्थ मार्ग ग्रहण करते हैं।" (२५ : ५)

समुद्री व्यापार लाभदायक है—"और वे नावें और जहाज, (भी ईश्वरीय सामर्थ्य के चिन्ह हैं) जो मनुष्यों को लाभ देने हारी व्यापारिक) वस्तुओं को लेकर नदियों व समुद्रों में (बराबर) चलते हैं।" (२ : २०)

उत्तम और शेष रहने वाली भलाइयाँ किन लोगों के लिए हैं—"उत्तम और शेष रहने वाला प्रतिफल उन लोगों के लिये है जो (१) विश्वास लाते और अपने प्रभु पर भरोसा रखते हैं। (२) और जो लोग बड़े २ पापों और निर्लज्जता, अश्लीलता की बातों से बचते रहते हैं। (३) और जब उन्हें क्रोध आता है तो क्षमा कर देते हैं। (४) और जो अपने प्रभु की आज्ञाओं को स्वीकार कर लेते हैं। (५) और नमाज़ (उपासना) में स्थिर रहते हैं। (६) और जो परस्पर परामर्श द्वारा काम करते हैं। (७) और जो ईश्वर-प्रदत्त जीविका में से व्यय करते हैं। (८) और जो दूसरे की ओर से अनीति होने पर पलटा लेते हैं, और बुराई का बदला उसी के समान बुराई करना है। (९) हाँ जो (दूसरे की अनीति) क्षमा करदे और उससे भलाई करे तो उसका प्रतिफल ईश्वर के पास है। अल्लाह अत्याचारियों को मित्र नहीं रखता। (१०) (तथापि) जो कोई (दूसरे से) अत्याचार का बदला लेता है तो उस पर कोई अभियोग नहीं। (११) अभियोग तो उन लोगों पर है जो मानव समाज पर अत्याचार करते हैं और देश में उपद्रव फैलाते हैं ऐसे लोगों के लिये दुखदायक दण्ड है। (१२) जो व्यक्ति (दूसरे की अनीति पर) धीरज धरता और (उसे) क्षमा कर देता है, तो निस्संदेह यह बड़े साहस का कार्य है।" (४२ : ४)

सुब्हानल्लाहे व बेहम्देही, सुब्हानल्लाहिल् अलिय्यिल अज़ीम।

इति

—०—

लेखक—क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान—

अनुवादक—क़ाज़ी आबिद अली



रह्मतुल्लिल् आलमीन

सेन्ट्रल जमईय्यत-तब्लीगुल इस्लाम अम्बाला ने

स्वर्गीय श्री मौलवी क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान मन्सूरपुरी (सिशन जज, पटियाला स्टेट)

लिखित इस पुस्तक का

क़ाज़ी आबिद अली बिल्हौरी से अनुवाद कराया।

और

मुहम्मद अब्दुल् हय्यी

प्रधान मन्त्री सेन्ट्रल जमईय्यत-तब्लीगुल इस्लाम इन्डियन यूनियन ने

सदर दफ़्तर नाजिर बाग, कानपुर से प्रकाशित किया।